पाराशर धर्मशास्त्र

(पाराशरस्मृति)

મૂલ અને ભાષાંતર

ભાષાંતર કર્તા

શાસ્ત્રી પ્રાણજીવન હરિહર.

ગુજરાતી પ્રિન્ટિંગ પ્રેસઃ—મુંબઈ.

સંવત્ ૧૯૬૮. ઈ. સ. ૧૯૧૨.

મૂલ્ય રૂ. ૧॥.

PRINTED AND PUBLISHED
BY I. S. DESAI
GUJARATI PRINTING PRESS
SASSOON BUILDINGS—FORT,
BOMBAY.

प्रस्तावना.



भगवान् पराशर ऋषि पण मनु, याज्ञवल्क्य वगेरेनी पेठे महान् सिद्ध पुरुष हता. वाजसनेयि शाखामां जे वंश ब्राह्मण भणेलुं छे, तेमां वेदसंप्रदाय प्रवर्तक गुरु शिष्यनी परंपरामां पराशरना पुत्र तथा पौत्रनुं नाम सांभळवामां आवे छे. ते उपरांत भगवान् याज्ञवल्क्ये पण धर्मशास्त्रना कर्ताओनी गणनामां पराशरने पण धर्मशास्त्रना कर्ता तरिके गणाव्या छे. पराशरनी उत्पत्तिविशे महाभारतना आदिपर्वना १७८ मा अध्यायमां आप्रमाणे वर्णन करवामां आव्युं छे; पराशर वसिष्ठना पौत्र अने शक्तिना पुत्र थता हता, अने अढार पुराणना तथा महाभारतना कर्ता वेदव्यासना पिता थता हता. तेमना पिता शक्तिने शापने लीधे राक्षसावेशमां आवेलो कल्माषपाद राजा खाइ गयो हतो; ते समये तेमना पुत्र पराशर गर्भमां हता. वसिष्ठ पोताना पुत्रने राक्षस खाइ गयो छे एम जाणीने पोताने निर्वंश मानी, निराश थइ गया अने आत्महत्या करवा माटे तेमणे नदीमां झंपापात कर्यो. परंतु नदीए तेमने बाहार काढी नाख्या. ते पछी वसिष्ठ पोताना आश्रम तरफ आवता हता. ते समये तेमना पुत्रनी वहू अदृश्यन्ती, जे वनमां तप करती हती, अने जेना उदरमां शक्तिनो गर्भ हतो ते, वसिष्ठनी पाछळ पाछळ आवती हती. अने तेना उदरमां रहेलो शक्तिनो गर्भ, अंगो साथे वेदनुं अध्ययन करतो हतो. वेदाध्ययननो ध्वनि सांभळीने वसिष्ठे पाछळ जोयुं तो एक स्त्रीने पोतानी पाछळ पाछळ आवती दीठी, एटले तेमणे ते स्त्रीने पूछ्युं "हे कल्याणि ! तुं कोण छुं अने आ वेदाध्ययन कोण करे छे?" पेली स्त्रीए उत्तर आप्यो;—"हुं तमारा पुत्रनी वहू छुं अने तमारा पुत्रनो गर्भ जे मारा उदरमां छे ते वेदाध्ययन करे छे." ते वचन सांभळीने वसिष्ठे जाण्युं के "हुं निर्वंश

---

१ घृतकौशिकः पाराशर्यायणात्। पाराशर्यायणः पाराशर्यात्। पाराशर्योजातूकर्ण्यात्।

२ पराशरव्यासशंख... धर्मशास्त्रप्रयोजकाः।

थयो नथी." मुमुर्षु थयेला मुनि वसिष्ठने गर्भमां रहेला पौत्रे वंश टकी रह्यानी आशा आपीने जीवता राख्या ते उपरथी तेनुं जगतमां पराशर एवुं नाम पड्युं. आ पराशर मुनि बदरिकाश्रममां रहेता हता. ते सिद्ध पुरुष क्यारे जन्म्या हता, कोनी पासे अध्ययनादि कर्युं हतुं, ते क्यारे निर्वाण पाम्या हता, ते विशे काल निर्णय करवो अशक्य छे; परंतु श्रीमद्भागवतना प्रथम स्कंधमां वेदव्यासनी उत्पत्ति विशे एक श्लोक छे, ते उपरथी पराशर द्वापर युगमां हता, एम सिद्ध थाय छे. ए श्लोक आ प्रमाणे छे;—

द्वापरे समनुप्राप्ते तृतीये युगपर्यये ।
जातः पराशराद्योगी वासव्यां कलया हरेः ॥

त्रीजो द्वापर युग आव्यो त्यारे पराशरथी सत्यवतीमां श्रीहरिना अंशरूप व्यास जन्म्या हता. आ वचन उपरथी सिद्ध थाय छे के, पराशर द्वापर युगमां हता.

पाराशरस्मृति.

एक समये ऋषिओने कलियुगना धर्म जाणवानी इच्छा थइ; ते उपरथी तेओ हिमालय पर्वत उपर शिष्यमंडळ साथे वास करीने रहेला भगवान् वेदव्यासनी पासे आव्या; अने तेमने धर्मविशे प्रश्न कर्यो. एटले तेमणे ऋषिओने कह्युं के; हुं कंइ सर्व धर्मनो वेत्ता नथी; माटे तमे सौ धर्मसंबंधी प्रश्न मारा पितानेज पूछो. आम कहीने पंडे ऋषिओने साथे लइने बदरिकाश्रममां पोताना पितानी पासे गया अने तेमने प्रार्थना करीके, अमे मनु वगेरेनां रचेलां धर्मशास्त्रो श्रवण कर्यां छे; सर्वे धर्म सत्य युगमां उत्पन्न थया हता, अने कलियुगमां ते सर्व धर्म नाश पाम्या छे; माटे हे पराशर ऋषि! आप अमने कलियुगने उचित एवा चारेय वर्णना स्थूल तथा सूक्ष्म धर्म कहो ! ऋषिओनी धर्मजिज्ञासा श्रवण करीने पराशर मुनिए तेओने प्रथम चारेय युगनुं सामर्थ्य कह्युं अने पछी कलिने अनुसरीने चारेय वर्णना धर्मो तथा प्रायश्चितो कह्यां. ते धर्मोपदेश पाराशर

१ परासुः स यतस्तेन वसिष्ठः स्थापितो मुनिः । गर्भस्थेन ततोलोके पराशरइति स्मृतिः । महाभारत आदिपर्व ।

स्मृति अथवा तो पाराशरसंहिताने नामे जगतमां प्रख्यात थयो छे. भगवान् पराशरे कलियुगने उद्देशीने धर्मो तथा प्रायश्चित्तो कह्यां छे, तेथी तेमणे कहेला धर्मो तथा प्रायश्चित्तो कलियुगमां विशेष मान्य गणाय छे. आ पाराशर संहिताना उपोद्‌घात प्रकरणमां पण एज अभिप्रायथी कह्युं छे के,— "कलौ पाराशराः स्मृताः। कलियुगमां पराशरे कहेला धर्मने प्रमाण मानवा" आ रीते पराशर स्मृतिनी उत्पत्ति थइ छे.

पाराशरस्मृतिना कर्ता कोण ?

आ पाराशर स्मृतिमां 'पराशरवचः' 'पराशरमतम्' 'पराशरोऽब्रवीत्' आवां आवां मूळ स्मृतिमां वाक्यो आवे छे ते उपरथी केटलाएकने एवी शंका थवानो संभव छे के, आ पाराशर स्मृति पराशरना नामथी बीजाए रचेली हशे. कारण के जो पराशरे रचेली होय तो पराशर पंडे पोतानुं नाम शामाटे लखे ? परंतु आवी शंका करवी अयोग्य छे. आ पाराशर स्मृतिमांज एवां वचनो नथी, परन्तु मनुनी रचेली मनुस्मृतिमां पण 'मनुरब्रवीत्' वगेरे वचनो छे, तेथी ते बीजानी रचेली सिद्ध थती नथी परंतु मनुनीज रचेली मनाय छे अने उपनिषदोए तथा ब्राह्मण ग्रंथोए मनुए रचेली छे एम मान्य पण कर्युं छे. पूर्वे एवो संप्रदाय हतो के; आचार्य शिष्योनी पासे श्रौत स्मार्त धर्मनुं प्रवचन करता हता अने शिष्यो ते श्रवण कर्या. पछी पोताना शिष्योने तेनुं प्रवचन करता हता. आम उत्तरोत्तर शास्त्रोनुं प्रवचन थतुं हतुं. आ वात मनुस्मृतिना प्रथम अध्यायना ५९–६० मा श्लोकथी स्पष्ट थाय छे.

मनुए पोताना भृगु वगेरे शिष्योने मनुस्मृति भणावी हती अने भृगुए ते पोताना शिष्योने भणावी हती ते उपरथी ते भृगुसंहिता पण कहेवाय छे. छतां मनुस्मृतिना आद्य उपदेष्टा भगवान् मनु छे, ते उपरथी ते मनुस्मृति कहेवाय छे. भृगु ऋषिए पण शिष्योने मनुस्मृतिनो उपदेश आपती वखते प्रसंगे प्रसंगे 'मनुरब्रवीत्' आम कहीने भगवान मनुने मोटाइ आपी छे, तथा पोतानुं प्रवचन सप्रमाण छे आम सूचव्युं छे. ते प्रमाणेज पराशरे पण पोताना पुत्र तथा शिष्य एवा वेदव्यासने पराशर स्मृतिनो उपदेश कर्यो छे

अने तेमणे पोताना शिष्योने तेनो उपदेश कर्यो छे तथा उपदेश करती वखते व्यासे प्रसंगे प्रसंगे पराशरनो नामनिर्देश कर्यो छे ते तेनी प्रशंसार्थ कर्यो छे तथा पोतानो धर्मोपदेश सप्रमाण छे, आम दर्शाववामाटे कर्यो छे. आ उपरथी सिद्ध थाय छे के, सांप्रत कालमां आपणने उपलब्ध थयेली पाराशर स्मृति भगवान् पराशरनीज रचेली छे अने तेमना पुत्र तथा शिष्य महात्मा वेदव्यासे तेमनी पासेथी भणीने तेने प्रसिद्धिमां मूकी छे.

पाराशरस्मृतिनुं प्रामाण्य.

वेद अपौरुषेय छे माटे ते स्वतःप्रमाण छे; तेने प्रामाण्यमाटे बीजा प्रमाणनी जरूर नथी. आ विषयने जैमिनिए पूर्वमीमांसाना "तत्प्रमाणं बादरायणस्यानपेक्षत्वात्" (१–१–५) वेदने मूलप्रमाणनी अपेक्षा (गरज) नथी; कारण के ते स्वतःप्रमाण छे; अने ए वात बादरायणने (व्यासने) पण संमत छे. " आ सूत्रमां विस्तारथी प्रतिपादन कर्यो छे. परंतु ऋषि मुनिओना रचेला धर्मशास्त्रना ग्रंथोने मूल प्रमाणनी जरूर छे; कारण के ते ग्रंथो पुरुषोना रचेला छे. मूल प्रमाण एटले प्रथम प्रमाण, जे प्रमाणने आधारे मनुष्य वाक्यनो प्रयोग करे छे ते प्रमाण. दृष्टांतमां जेम कोइ पुरुष प्रथम नदीना तीर ऊपर पांच फळ जुवे छे अने पछी बीजाने कहे छे के; 'नदीना तीर ऊपर पांच फळ छे.' आ वाक्यने माटे प्रत्यक्ष ए मूल प्रमाण छे अने ते मूल प्रमाणने आधारे वक्ता वाक्यनो प्रयोग करे छे, तेथी तेनो वाक्यप्रयोग प्रमाण गणाय छे. तेम पाराशरनां रचेलां धर्मशास्त्रने पण मूल प्रमाणनी जरूर छे. परंतु तेवुं मूल प्रमाण मळतुं नथी. प्रत्यक्ष प्रमाणने मूलप्रमाण तरिके मानिए, परंतु ते पण मूल प्रमाण थइ शकतुं नथी; कारण के पाराशर धर्मशास्त्रना विषयरूप धर्म अतीन्द्रिय (इन्द्रियोथी जाणी शकाय नहि तेवो) छे; तेथी प्रत्यक्ष प्रमाणथी सिद्ध थइ शकतो नथी. इन्द्रियो अने तेना विषयोनो संयोग थवाथी जे ज्ञान थाय छे ते प्रत्यक्ष ज्ञान कहेवाय छे. धर्म अतीन्द्रिय छे, माटे ते प्रत्यक्ष प्रमाणथी सिद्ध थइ शकतो नथी; तेम अनुमान प्रमाणथी पण सिद्ध थइ शकतो नथी; कारण के अनुमान प्रमाणने सिद्ध करवा माटे प्रत्यक्ष प्रमाणनी

जरूर पडे छे, तेम अमुक पुरुषनां वाक्यरूप धर्मशास्त्रने पण प्रमाण मानी शकाय नहि. कारण के पुरुषो विप्रलंभक (धूर्त) होय छे तेथी तेओ यथार्थ भाषण करता नथी; माटे पुरुषनां वचनो प्रमाण गणातां नथी. कदाच कोइ कहे के सर्वे पुरुषो कंइ विप्रलंभक होता नथी: घणा पुरुषो यथार्थवक्ता पण होय छे. अस्तु, परंतु तेओना बोलवामां संशय अने विपर्यय नामना दोष होय छे; तेने लीधे पण मनुष्योनां वचन प्रमाण गणातां नथी.

कोइ कहे के; स्मृतिनां वचनोनुं मूल विधिवचनो छे; माटे स्मृतिवचनोने प्रमाण गणवां जोइए. हा ! ए वात खरी छे. परंतु ज्यां सूधी मूल विधिवचनो मळे नहि त्यां सूधी स्मृतिवचनो प्रमाण गणाय नहि. शौचने माटे तथा आचारने माटे प्रत्यक्षरीते विधिवचनो आपणा सांभळवामां अवतां नथी, छतां तेवां वचनोने माटे विधिवचनो अवश्य होवां जोइए. वेदनी अनेक शाखाओ छे अने ते सर्वे हमणा आपणा जाणवामां आवती नथी, तेथी प्रत्येक स्मृतिनां मूलवचनो आपणने उपलब्ध थतां नथी, परंतु ते होवानो संभव छे. अहीं आ अनुमान उपर कोइ शंका करे के, तमे जेम स्मृतिवचनोने माटे मूल विधिवचनोनुं अनुमान करो छो, तेमज शाक्य (बौद्ध) वगेरेए रचेला चैत्यवन्दन आदि ग्रंथोने माटे पण विधिवचनोनुं अनुमान करवुं जोइए अने तेम करवा जतां अतिप्रसंग उभो थशे. आनुं समाधान आ प्रमाणे छे:— मनु विगेरेए रचेली स्मृतिओ अने शाक्य विगेरेए रचेली स्मृतिओनी वच्चे मोटी विषमता छे. वेदे पंडेज साक्षात् मनु विगेरेनी स्मृतिने प्रमाण तरिके स्वीकारी छे. तैत्तिरीय संहितामां मनुस्मृतिने माटे आ प्रमाणे कह्युं छे:—' यद्वै किञ्च मनुरवदत्तद्भेषजम् ' तै. सं. २-२-१०-२ मनुए जे कंइ कह्युं छे ते भेषज (औषधरूप) छे. आ रीते मनुस्मृतिनां वखाणमाटे जेम वेदमां वचनो मळे छे तेम शाक्य वगेरेनी स्मृतिना वखाण करनारुं कोइ पण वचन वेदमां मळतुं नथी. माटे अनुमान करवाथी अतिप्रसंग थशे नहि.

अहीं कोइ शंका करे के; ' यद्वै किञ्च मनुरवदत्तद्भेषजम् ' ए वचन

---

१ वृक्षने जोइने आ वृक्ष छे के पुरुष छे आवी रीतनुं उभय ज्ञान थाय तेनुं नाम संशय अने देहने विशे आ आत्मा छे आवी रीतनुं उलटुं ज्ञान थाय तेनुं नाम विपर्यय.

अर्थवाद वाक्य छे. माटे तेनुं स्वार्थमा तात्पर्य नथी, पण विधेयार्थनी स्तुति करवामां तात्पर्य छे. सोमारुद्र नामनी एक इष्टि छे तेमां चरुहोमना प्रसंगमां अतिदेश वचनथी सामिधेनी नामनी ऋचाओ भणवानो प्रसंग प्राप्त थतां, वच्चे बे विधिवचन आ प्रमाणे विधान करे छे के "मानवी ऋचौ धाय्ये कुर्यात्" 'मनुसंबंधी बे ऋचा भणीने समिधनो होम करवो.' (तै. सं. २-२-१-२) आ रीते बे मनुनी ऋचानुं विधान करीने पछी ते विधिनी स्तुति करवामाटे 'यद्वै किञ्च' आ अर्थवाद वाक्य भणवामां आव्युं छे. आ वाक्य मनुस्मृतिनी प्रशंसा करतुं नथी, परंतु मानवी ऋचानी स्तुति करे छे. माटे वेदमां स्मृतिनुं प्रामाण्य कह्युं नथी, तेथी मनु वगेरेनी स्मृतिओ पण शाक्य विगेरेनी स्मृतिओनी पेठेज प्रमाण विनानी छे. केटलाएक स्मृति ग्रंथोने माटे आ प्रमाणे पण शंका करे छे के:-"प्रायेणानृतवादित्वात्पुंसां भ्रान्त्यादिसंभवात् । चोदनाऽनुपलब्धेश्च श्रद्धामात्रात्प्रमाणता ॥ पुरुषो घणुं करीने असत्यवादी होय छे अने सत्य भाषण करनाराओमां पण भ्रान्ति,

---

१ विधि, मन्त्र, नामधेय, निषेध अने अर्थवाद एम पांचप्रकारनां वचनोथी वेद भरेलो छे. तेमां जे वाक्य स्तुति अथवा तो निन्दा करनारां होय ते अर्थवादवाक्य कहेवाय. मीमांसामां अर्थवादविशे आ रीते व्याख्या करी छे. 'प्राशस्त्यनिन्दान्यतरपरं वाक्यमर्थवादः' प्रशंसा अथवा तो निन्दा ए बेमांथी एकने कहेनारुं वाक्य अर्थवादवाक्य कहेवाय छे. ए अर्थवाद त्रण प्रकारनो छे. 'विरोधे गुणवादः स्यादनुवादोऽवधारिते। भूतार्थवादस्तद्धानादर्थवादस्त्रिधा मतः।' ज्यां अर्थवादमां बीजां प्रमाणोथी विरोध आवतो होय त्यां गुणवाद थाय. जेम के "आ यूप" (यज्ञस्तंभ) आदित्य छे. यज्ञनो स्तंभ लाकडानो होय छे, तेने आदित्य एटले सूर्य कहेवो ए प्रत्यक्षरीते विरुद्ध छे. माटे आ यूप आदित्य छे एटले आदित्यमां जेम कान्तिरूप गुण छे, तेम आ यूपमां पण कान्तिरूप गुण छे, आने गुणवाद कहे छे. जे वात बीजा प्रमाणोथी जाणी शकाती होय तेवी वातने कहेनारुं वाक्य अनुवाद वाक्य कहेवाय. 'जेम अग्नि हिमनुं (थंडीनुं) औषध छे' ए वात लौकिक प्रमाणोथी सिद्ध छे अने तेनेज आ वाक्य पण कहे छे. माटे आ वाक्य अनुवाद वाक्य कहेवाय. जेने बीजां प्रमाणोनी साथे विरोध न होय, तेम बीजां प्रमाणोथी जे जाणवामां पण आवतो न होय ते भूतार्थवाद कहेवाय. जेमके 'इन्द्रे वृत्रने वज्र मार्युं' आ वाक्यने कोइ पण प्रमाणनी साथे विरोध नथी; तेम बीजां प्रमाणोथी ते जाणवामां पण आवतुं नथी. माटे आ वाक्य भूतार्थवाद छे. आ रीते त्रण प्रकारनो अर्थवाद मीमांसामां वर्णव्यो छे.

विपयर्य वगेरे दोषो जोवामां आवे छे. तेम शौच तथा आचारने माटे पण विधि वचनो उपलब्ध थतां नथी माटे पौरुषेय ग्रंथोने केवळ श्रद्धाथीज प्रमाण मानवावां जोइए. अस्तु: आ शंकानुं समाधान आ प्रमाणे छे:-

मनुस्मृतिने माटे तो वेदमां प्रमाण मळे छे, माटे तेने प्रमाणनी जरुर नथी; परंतु आ पाराशर धर्मशास्त्रने तो प्रमाणनी जरूर छे. वेदमां जेवो मनुनो महिमा वर्णव्यो छे तेवो पराशरनो महिमा वर्णव्यो नथी. माटे पराशरनी रचेली स्मृतिने प्रमाण मानवी ए एक विचारनो विषय छे. आनुं समाधान आ प्रमाणे छे:-स्मृतिग्रंथो पंडेज प्रमाणभूत छे; तेने प्रमाण न मानवामां जे हेतुओ आपवामां आवे छे ते सर्वे मिथ्या छे. असत्यभाषण, संशय अने विपयर्यादिक दोषो तथा विधिवचनोनी अनुपलब्धि (अलाभ), आ त्रण हेतुने लीधे,पुरुषोए रचेला ग्रंथो प्रमाण गणाता नथी ए वात सत्य छे. परंतु आ त्रणे हेतुओ मनु, पराशर वगेरेमां मिथ्या छे. धर्मशास्त्रना कर्ता मनु, पराशर वगेरे जन्मथीज सिद्ध छे. तेओ असत्य भाषण करे अथवा तो तेओमां संशय अने विपर्यय दोष होय एवी शंकाने अवकाशज नथी; तेथी उपर कहेला हेतुओ तेओमां घटता नथी. मनु पराशर वगेरे जन्मथीज सिद्ध हता. वेदना मन्त्रोमां, अर्थवाद वचनोमां, इतिहासोमां, अने पुराणोमां पराशर वगेरे महात्मा पुरुषोनुं वर्णन करवामां आव्युं छे ते तेना सिद्धपणानुं ज्ञापक छे. जो मन्त्र, अर्थवाद विगेरेने प्रमाण मानवामां आवे नहि तो मनु पराशर वगेरे पण न हता एम ठरे; अने तेथी आश्रयासिद्धि नामनो दोष आवे. उत्तरमीमांसाना देवताधिकरणमां अर्थवादनुं स्वार्थमां तात्पर्य छे के केम ते उपर विचार करतां कह्युं छे के, ज्यां गुणवाद वचन न होय तथा अनुवाद वचन न होय तेवां भूतार्थवाद वचनो स्वार्थमां पण प्रमाण गणाय छे. पूर्वमीमांसाना प्रथम अध्यायना बीजा पादना प्रथम अधिकरणमां अर्थवाद स्वार्थमां प्रमाण नथी एम कह्युं छे ते, गुणवादना तथा अनुवादना विषयमां कह्युं छे. माटे ' यद्वै किञ्च ' ए अर्थवाद वाक्य छे अने ते विधेयार्थनी स्तुति करनारुं छे. ते अनुवादरूप पण नथी तेम गुणवादरूप पण नथी; परंतु भूतावादरूप छे. माटे, ते विधिनी स्तुति करनारुं पण छे अने स्वार्थमां प्रमाण-

भूत पण छे. माटे, शाक्य वगेरेए करेलो आक्षेप मिथ्या छे. आ सर्व अभिप्रायने ध्यानमां लइने चतुर्विंशतिमत नामना ग्रंथमां कह्युं छे के; शाक्य विगेरेनां वाक्यो आदर आपवा योग्य नथी. "अर्हच्चार्वाकवाक्यानि बौद्धादिपठितानि तु । विप्रलंभकवाक्यानि तानि सर्वाणि वर्जयेत् ॥ अर्हतनां वाक्यो, चार्वाकनां वाक्यो, बौद्ध वगेरेनां वाक्यो तथा धूर्त पुरुषोनां वाक्यो आ सर्व वाक्योने प्रमाण मानवां नहि".

हवे पराशरनो महिमा क्यां क्यां वर्णव्यो छे तेनुं अवलोकन करीए. पराशरनो महिमा वेदमां पण वर्णव्यो छे, "सहोवाच व्यासः पाराशर्यः"। 'ते पराशरना पुत्र व्यास बोल्या' (तै. आ. १–१–३–३७) आ श्रुतिवचनमां व्यासनी पराशरना पुत्र तरीके स्तुति करवामां आवी छे. ज्यारे सर्व तरफथी जेनो महिमा मान्य थयो छे एवा वेदव्यासनी पण स्तुति करवा माटे तेने पराशरना पुत्र तरिके कह्या छे, तो पछी पराशर पंडे अचिन्त्य महिमावाळा होय एमां तो केहेवुंज शुं ? वाजसनेयि शाखामां वंश ब्राह्मण छे. तेमां वेदसंप्रदायना प्रवर्तक गुरुशिष्यनी परंपरा आपी छे. ते परंपरामां पराशरना पुत्रनुं तथा पौत्रनुं आ प्रमाणे नाम सांभळवामां आवे छे. "घृतकौशिकः पाराशर्यायणात्, पाराशर्यायणः पाराशर्यात्, पाराशर्यो जातूकर्ण्यात् ।" 'पाराशर्यायणथी घृतकौशिक थया, पाराशर्यथी पाराशर्यायण थया, जातूकर्ण्यथी पाराशर्य थया ' आ श्रुतिवचने करीने पण पराशर मनुना समानज सिद्ध पुरुष छे एम सिद्ध थाय छे. आ रीतेज वशिष्ठ, अत्रि, याज्ञवल्क्य वगेरे पण श्रुतिमां प्रसिद्ध छे. "ऋषयो वा इदं प्रत्यक्षं नापश्यन् । तं वशिष्ठः प्रत्यक्षमपश्यत् ।" (तै. सं. ३–५–२–५) 'ऋषिओए एने प्रत्यक्ष दीठा नहि. वशिष्ठे तेने प्रत्यक्ष दीठा' "अत्रिरददा दौर्वाय प्रजां पुत्रकामाय ।" (तै. सं. ७–१–८–१) 'अत्रिए पुत्रनी कामनावाळा और्वने प्रजा आपी. ' " अथ ह याज्ञवल्क्यस्य द्वे भार्ये बभूवतुः याज्ञवल्क्यने बे भार्या हती ।" आवी रीते श्रुतिओमां पराशर वगेरे ऋषिओनां जे नाम सांभळवामां आवे छे, ते तेमनुं सिद्धपणुं दर्शावनारां छे.

केटलाएक कहे छे के;-स्मृतिमां प्रतिपादन करेला धर्मनां मूलभूत वैदिक

विधिवचनो मळतां नथी. परंतु एम कहेवुं मिथ्या छे. पांच महायज्ञने माटे श्रुतिमां आ प्रमाणे वचन छे. 'पञ्च वा एते महायज्ञाः सतति प्रतायन्ते सतति सन्तिष्ठन्ते,–देवयज्ञः पितृयज्ञो भूतयज्ञो मनुष्ययज्ञो ब्रह्मयज्ञः' (तै. आ. २-१०-७) पांच महायज्ञो नित्य करवा. ते पांच महायज्ञो आ प्रमाणे छे; देवयज्ञ, पितृयज्ञ, भूतयज्ञ, मनुष्ययज्ञ अने ब्रह्मयज्ञ. आ प्रमाणे ज शौचादिकने माटे पण मूल श्रुतिवचनो उपलब्ध थाय छे. कुमारिलभट्ट स्मृतिओना प्रामाण्यनो विचार करतां कहे छे के; 'शाखानां विप्रकीर्णत्वात्पुरुषाणां प्रमादतः। नानाप्रकरणस्थत्वात्स्मृतेर्मूलं न दृश्यते' ॥ वेदनी अनेक शाखाओ छे अने ते सर्व छुटी छुटी थइ गइ छे. वळी पुरुषो पण प्रमादी होय छे तेथी तेओ अमुक स्मृतिवचननुं अमुक श्रुतिवचन मूळ छे. अने ते अमुक वेदनी अमुक शाखामां छे एम शोधवाने अशक्त छे, तेथी स्मृतिनां मूळ वचन आपणा जाणवामां आवतां नथी. माटे स्मृतिनां वचनो निर्मूल छे आम जाणवुं नाहि. परंतु सर्वे स्मृतिवचनोनां मूळभूत श्रुतिवचनो छे. कुमारिलभट्ट कहे छे के, 'वैदिकैः स्मर्यमाणत्वात्तत्परिग्रहदाढर्यतः । संभाव्यवेदमूलत्वात्स्मृतीनां मानतोचिता ॥' वेद जाणनाराओ स्मृतिओने रचे छे, दृढतापूर्वक धर्मशास्त्रोने अनुसरे छे तथा स्मृतिओनुं मूळ वेद छे आम पण संभवे छे. ते उपरथी स्मृतिओने प्रमाण मानवी योग्य छे. मनु पण आज अर्थने अनुसरतुं कहे छे;–[1] 'श्रुतिं पश्यन्ति मुनयः स्मरन्ति च तथा स्मृतिम् । तस्मात्प्रमाणमुभयं प्रमाणैः प्रमितं भुवि ॥ मुनिओ श्रुतिओना द्रष्टा छे अने वेदोनुं स्मरण करीने स्मृतिग्रंथोनी रचना करे छे. ते माटे पृथ्वी उपर बन्ने शास्त्रने प्रमाणोथी मान्य करवामां आव्यां छे. 'योऽवमन्येत ते मूले हेतुशास्त्राश्रयाद्द्विजः । स साधुभिर्बहिष्कार्यो नास्तिको वेदनिन्दकः' ॥ (मनु अध्याय २-११) जे द्विजजातिनो पुरुष नास्तिकनां तर्कशास्त्रनो आधार लइने धर्मना मूळरूप श्रुतिनी तथा स्मृतिनी निन्दा करे छे, ते वेदनी निन्दा करनाराने नास्तिक जाणवो; अने महात्मा पुरुषोए एने ज्ञातिमांथी बाहार करवो.

---

१ आ श्लोक वर्तमानकालनी मनुस्मृतिमां नथी.

अनुशासन पर्वमां पण कह्युं छे के 'धर्मं जिज्ञासमानानां प्रमाणं प्रथमं श्रुतिः । द्वितीयं धर्मशास्त्रं तु तृतीयं लोकसंग्रहः' ॥ धर्म जाणवानी इच्छावाळा पुरुषोने प्रथम प्रमाण श्रुति (वेद) छे; बीजुं प्रमाण धर्मशास्त्र छे; अने त्रीजुं प्रमाण शिष्टाचार छे. आ पराशर विरचित पाराशर स्मृति पण वेदमूलक छे. अर्थात् वेदोक्त धर्मने ज प्रतिपादन करनारी छे. अने जन्मसिद्ध एवा पराशर ऋषिए वेदोनुं स्मरण करीने आ स्मृतिने रची छे, माटे प्रमाणरूप छे.

धर्म बे प्रकारनो छे. एक एतल्लोकप्रधान अने बीजो परलोकप्रधान. जे धर्मनुं आचरण करवाथी धननो लाभ, कीर्तिनो लाभ, विजय वगेरे लौकिक फळ मळे छे ते एतल्लोकप्रधान धर्म कहेवाय छे; अने जे धर्मनुं आचरण करवाथी स्वर्गादिक लोकनी प्राप्ति थाय छे ते परलोकप्रधान धर्म कहेवाय छे. वर्णधर्म, आश्रमधर्म, प्रायश्चित्तधर्म ए सर्वे धर्म आचरण करवाथी पुण्यनी प्राप्ति थाय छे अने ते द्वारा परलोक आदिनो पण लाभ थाय छे. माटे ते परलोकप्रधान धर्म कहेवाय छे अने व्यवहारना आचरणथी धनलाभ, कीर्तिलाभ, विजय वगेरे लौकिक फळ मळे छे माटे ते एतल्लोकप्रधान धर्म कहेवाय छे. आ धर्मशास्त्रमां भगवान् पराशरे परलोकप्रधान एवा वर्णाश्रम धर्मनो तथा निषिद्धाचरणथी लागतां पापने दूर करनारा प्रायश्चित्त धर्मनो विचार कर्यो छे. परंतु लोकप्रधान एवा व्यवहारनो विचार कर्यो नथी.

लौकिक, अलौकिक धर्मनुं स्वरूप.

व्यवहार ए एतल्लोकप्रधान धर्म कहेवाय छे छता तेमां पण जो अन्याय करवामां आवे छे तो पातक लागे छे. अने तेथी नरक आदि मळे छे. माटे व्यवहारनुं केवळ लौकिक फळ ज नथी, परंतु पारलौकिक फळ पण छे. मनु कहे छे के;—

लौकिकधर्मने पण पारलौकिकधर्म साथे सबंध छे.

" अदण्ड्यान्दण्डयन्राजा दण्ड्यांश्चैवाप्यदण्डयन् ।
अयशो महदाप्नोति नरकं चाधिगच्छति ॥ " अ.८—१२८

" जे राजा दण्ड नहि करवायोग्य पुरुषोने दंडे छे अने दंडवा योग्य

पुरुषोने दंडतो नथी ते राजाने महान् अपयश मळे छे अने ते नरकमां पडे छे. "

" सभा वा न प्रवेष्टव्या वक्तव्यं वा समञ्जसम् ।
अब्रुवन्विब्रुवन्वापि नरो भवति किल्बिषी ॥ " अ.८–१३

कां तो राजसभामां जवुं नहि अने जवुं तो सत्य भाषण करवुं. मनुष्य राजसभामां अन्याय थतो जोइने बोलतो नथी अथवा तो अन्यथा बोले छे तो ते पातकी थाय छे. "

" साक्ष्यनृतं वदन्पाशैर्बध्यते वारुणैर्भृशम् ।
विवशः शतमाजातीस्तस्मात्साक्षी वदेदृतम् ॥"अ. ८–८२

जे साक्षी असत्य साक्षी पूरे छे ते वरुणनी पाशोथी सो जन्म सुधी बंधाइने परवश थाय छे. माटे साक्षीए सत्य भाषण करवुं जोइए. "

आ मनुनां वचनो प्रमाणे व्यवहारमां पण अन्याय करनारा राजादिकने, अन्याय थतो जोया छतां नहि बोलनारा सभासदोने अने असत्य भाषण करनारा साक्षीओने नरकादिक मळे छे आम कह्युं छे; तेथी व्यवहारनुं पारलौकिकपणुं पण सिद्ध थाय छे. परंतु तेनुं पारलौकिक फळ गौण छे अने लौकिक फळ मुख्य छे. प्रथम तो धर्म जेम विधि (वेदवचन) प्रोक्त छे तेम व्यवहार विधिप्रोक्त नथी, परंतु लोकोना परस्परना व्यवहारथी उत्पन्न थाय छे. वळी धर्माचरण करवाथी जेम पुण्यनो लाभ थाय छे तेम व्यवहार करवाथी पुण्यनो लाभ थतो नथी परंतु धनादि लौकिक फळनो लाभ थाय छे. वळी ऋणी मनुष्य पोताना मागनाराने ऋण न आपे तो तेने पातक लागे छे, परंतु ऋण आपवाथी तेने पुण्यनो लाभ थतो नथी. मात्र जगतमां तेनी आंट वधे छे. वळी अधर्माचरण करनाराने जेम प्रायश्चित्त करवुं पडे छे तथा मरण पछी जेम नरकनी प्राप्ति थाय छे, तेम व्यवहारमां हारी जनाराने प्रायश्चित्त करवुं पडतुं नथी. तेम तेने नरकमां पण पडवुं पडतुं नथी. मात्र धननी हानि, जगतमां अपकीर्ति वगेरे थाय छे. तेथी व्यवहारपण तल्लोकप्रधान धर्म गणाय छे. माटे भगवान् पराशरे आ धर्म-

शास्त्रमां व्यवहारनुं विस्तारथी वर्णन कर्युं नथी परंतु राजाना धर्मनुं वर्णन करतां प्रसंगवशात् ' क्षितिं धर्मेण पालयन् ' ' राजाए धर्मथी पृथ्वीनुं पालन करवुं ' आम कहीने राजा प्रजाए जाणवा योग्य व्यवहारनी मात्र सूचना करी छे.

आचार तथा प्रायश्चित्तनो विचार.

परलोकप्रधान धर्म सामान्यधर्म तथा विशेषधर्म एम बे प्रकारनो छे. ते धर्मना आचरणथी पुण्यनी प्राप्ति थाय छे; अने ते द्वारा परलोकादिकनी प्राप्ति थाय छे. माटे आ धर्मशास्त्रमां प्रथम सामान्य धर्मनुं तथा विशेषधर्मनुं निरूपण कर्युं छे. अने ते भागने ' आचारकाण्ड ' एवी संज्ञा आपी छे. आचारनुं लक्षण बांधतां भगवान् पराशर कहे छे के–'आचारो धर्मपालनम्' आचार एटले धर्मनुं पालन–रक्षण. आचारमांथी भ्रष्ट थनारा पुरुषोने प्रायश्चित्त करवानो प्रसंग आवे छे. माटे आचारनो उपदेश कर्या पछी पापनां प्रायश्चित्तोनो उपदेश कर्यो छे. प्रथम त्रण अध्यायमां आचारनो विचार कर्यो छे; तेनुं नाम 'आचारकाण्ड छे अने बाकीना नव अध्यायमां प्रायश्चित्तनो विचार कर्यो छे तेनुं नाम प्रायश्चित्तकाण्ड छे. धृति, क्षमा, दम, वगेरे साधारण धर्म कहेवाय छे. जे चारेय वर्णथी पाळी शकाय छे. अने वेद भणवो भणाववो, यज्ञ करवो कराववो दान देवुं तथा लेवुं आ छ कर्म ब्राह्मणनो असाधारण धर्म छे. पृथ्वीनुं पालन वगेरे क्षत्रियनो असाधारण धर्म छे. खेती वाडी वगेरे करवां ए वैश्यनो असाधारण धर्म छे अने त्रण वर्णनी सेवा ए शूद्रनो असाधारण धर्म छे. आ रीते साधारण तथा असाधारण धर्मनो अने वैश्वदेवादिक कर्मनो पहेला अध्यायमां विचार कर्यो छे. बीजा अध्यायमां ब्राह्मण वर्णे पण आजीविकानी आपत्ति आवे त्यारे खेतीवाडी करीने तथा पोतानां क्षेत्रमां निपजतां काष्ठ वेचीने पण आजीविका करवी आवो उपदेश आप्यो छे तथा चार आश्रमोनां नाम कहीने ते ते आश्रमोना धर्मनी सूचना करी छे. त्रीजा अध्यायमां आशौचनो तथा श्राद्धविधिनो विचार कर्यो छे. आ रीते त्रण अध्यायमां आचारनो विचार कर्यो छे. चोथा अध्यायथी बारमा अध्याय सूधी प्रायश्चित्त कह्यां छे.

चोथा अध्यायमां प्रकीर्ण पापनां प्रायश्चित्त कह्यां छे. कलियुगमां औरस पुत्र उपरांत बीजा पुत्र करवा के नहि तेनो विचार कर्यो छे. तथा परिवित्तिने प्रायश्चित्त कहेवाना प्रसंगमां परिवित्ति, परिवेत्ता तथा परिवेदननी समजण आपी छे. पांचमा अध्यायमां अग्निहोत्रीने केवी रीते दाह संस्कार करवो ते विशे कह्युं छे. छठ्ठा अध्यायमां मलिनीकरणनां, संकरीकरणनां तथा उपपातकनां प्रायश्चित्त कह्यां छे अने अभडायलां अन्ननी तथा रसनी शुद्धि कही छे. सातमा अध्यायमां अवशिष्ट द्रव्योनी शुद्धि कही छे. आठमा अध्यायमां गोवधनुं सामान्य प्रायश्चित्त कह्युं छे. नवमा अध्यायमां गायोनुं रोधनाधिक करतां मरण निपजे तो तेनुं प्रायश्चित्त कह्युं छे. दशमा अध्यायमां अगम्यागमननुं प्रायश्चित्त कह्युं छे. अग्यारमा अध्यायमां अभक्ष्यना भक्षणनुं प्रायश्चित्त कह्युं छे. अने बारमा अध्यायमां बन्ने काण्डनुं परिशिष्ट तथा महापापनां प्रायश्चित्त कह्यां छे. मुख्य मुख्य अनुपातकोनुं प्रायश्चित्त कह्युं नथी, रहस्य पापनुं प्रायश्चित्त कह्युं नथी, सौम्य, पर्ण वगेरे प्रायश्चित्त पण कह्यां नथी. तेम कर्मविपाक पण कह्यो नथी. परंतु ते ते विषयनो एकदेश कोइ कोइ ठेकाणे सूचनारूपे कह्यो छे.

प्रायश्चित्त विस्तारथी कहेवानुं प्रयोजन.

कलियुगमां मनुष्य युगकृत अधर्मने लीधे, प्रमादने लीधे तथा आळसने लीधे अधर्ममां विशेष प्रवृत्ति करशे, आम धारीने भगवान् पराशरे आ शास्त्रमां प्रायश्चित्तनो विस्तारथी विचार कर्यो छे. कलियुगमां अधर्मनी प्रवृत्ति थनारी छे आम भगवान् पराशर जाणता हता अने तेमणे ज आ धर्मशास्त्रना प्रथम अध्यायमां ३० मा श्लोकथी त्रण श्लोकमां कलियुगनुं सामर्थ्य पण कह्युं छे. अने तेमां प्रथम सीदाता धर्मनुं स्वरूप दर्शावतां ते कहे छे के;—

‘ जितो धर्मो ह्यधर्मेण सत्यं चैवानृतेन च ।
जिताश्चोरैश्च राजानः स्त्रीभिश्च पुरुषाः कलौ ॥ ३० ॥

१ मोटो भाइ कुंवारो होय ने नानो भाइ परणे तो मोटो भाइ परिवित्ति अने नानो भाइ परिवेत्ता कहेवाय छे. आ विषय चोथा अध्यायना २९ मा श्लोकमां वर्णव्यो छे.

सीदन्ति चाग्निहोत्राणि गुरुपूजा प्रणश्यति ।
कुमार्यश्च प्रसूयन्ते अस्मिन्कलियुगे सदा ॥ ३१ ॥'

आ कलियुगमां अधर्मे धर्मने जित्यो छे, असत्ये सत्यने जित्युं छे, चोरोए राजाने जित्या छे अने स्त्रीओए पुरुषोने जित्या छे. अग्निहोत्र सदाय नाश पाम्यां छे. गुरुनी पूजा पण नाश पामी छे अने कुमारिकाओ छोकरां जणे छे.

आ रीते संक्षेपमां कलियुगनुं सामर्थ्य कहीने कलियुग अधर्मप्रधान युग छे आम सूचना करी छे. अने तेथी पापनी वृद्धि थवानो पण संभव छे, आम धारीने तेमणे पुरुषनी शक्तिनो तथा समयनो विचार करीने आ शास्त्रमां पापनां प्रायश्चित्तो विस्तारथी कह्यां छे.

प्रायश्चित्त शब्दनो अर्थ.

प्रायश्चित्त शब्दनो रूढीथी तथा योगथी एम उभयरीते "पापनो नाश करनार धर्मविशेष" आवो अर्थ थाय छे. शास्त्रवेत्ता निबन्धकारो कहे छे के;—प्रायश्चित्त शब्द, पापनो नाश करनारां नैमित्तिक कर्ममां रूढ छे. अर्थात् प्रायश्चित्त एटले पापनो नाश करनारुं, नैमित्तिक कर्मविशेष. अङ्गिरा प्रायश्चित्त शब्दने यौगिक शब्द माने छे ने तेनो नीचे प्रमाणे अर्थ लखे छे;—

'प्रायो नाम तपः प्रोक्तं चित्तं निश्चय उच्यते ।'
तपोनिश्चयसंयोगात्प्रायश्चित्तं तदुच्यते ॥
'प्रायशश्च समं चित्तं चारयित्वा प्रदीयते ।
पर्षदा कार्यते यत्तु प्रायश्चित्तमिति स्मृतम् ॥'

बार वर्ष सूधी व्रतादिक करवाथी पापनो अवश्य नाश थाय छे. आवा विश्वासनुं नाम चित्त कहेतां निश्चय छे; अने तेवा विश्वासपूर्वक व्रताचरणरूपी जे प्रायः कहेतां तपश्चरण तेनुं नाम प्रायश्चित्त कहेवाय छे. अथवा तो पापीनुं चित्त संताप करवाथी विषम थइ जाय छे ते विषमचित्तने ब्राह्मणसभा व्रत करावीने प्रायशः कहेतां अवश्य सरखुं करे छे तेथी प्रायश्चित्त कहेवाय छे. पापीनी पासे व्रत करावीने चित्तनी विषमता करनारां पापनो नाश करे छे, अथवा तो ब्राह्मणसभामां सर्वेनां चित्त जे

प्रमाणे समान थाय ते प्रमाणे एकमतथी विचार करीने पातकीनी पासे जे व्रत कराववामां आवे छे, तेनुं नाम प्रायश्चित्त. आ रीते प्रायश्चित्त शब्द यौगिक छे, अर्थात् प्रायस् अने चित्त आ बे शब्दोना योगथी प्रायश्चित्त शब्द थयो छे.

हवे प्रायश्चित्त नित्य कर्म छे, नैमित्तिक कर्म छे के काम्य कर्म छे तेनो विचार करीए.

प्रायश्चित्त निमित्त धर्म छे.

केटलाएक कहे छे के; प्रायश्चित्त काम्य कर्म छे. कारण के स्मृतिमां कह्युं छे के " प्रायश्चित्तैरपैत्येनः " प्रायश्चित्तो करवाथी पाप दूर थाय छे. ' वगेरे स्मृतिओमां पापक्षयनुं फळरूपे वर्णन कर्युं छे अने तेमां फलेच्छुनो अधिकार होवाथी प्रायश्चित्त काम्य कर्म छे. उदाहरण तरिके जे वरसादनी कामनावाळो होय ते जेम कारीरी याग करे छे. तेम जे पापक्षयनी कामनावाळो होय ते प्रायश्चित्त कर्म करे छे. केटलाएक प्रायश्चित्तने नैमित्तिक कर्म माने छे. कारण के पापरूपी निमित्तने लइने प्रायश्चित्त करवामां आवे छे. उदाहरण तरिके घरमां अग्नि लागे तो गृहदाहनिमित्त जेम क्षामवती इष्टि करवामां आवे छे तेम. त्यारे केटलाएक कहे छे के; प्रायश्चित्त ए नित्य कर्म छे. कारण के जेम संध्यावन्दनादि न करवाथी दोष लागे छे तेम प्रायश्चित्त पण न करवाथी दोष लागे छे. प्रायश्चित्त न करवाथी दोष लागे छे ते विशे मनु कहे छे के;—

' चरितव्यमतो नित्यं प्रायश्चित्तं विशुद्धये ।
निन्द्यैर्हि लक्षणैर्युक्ता जायन्तेऽनिष्कृतैनसः ॥' मनु अ.११-५-२

पापनी शुद्धिने अर्थे नित्य प्रायश्चित्त करवुं. जेओ प्रायश्चित्त करता नथी तेओ निन्दापात्र लक्षणोवाळा जन्मे छे. भगवान् याज्ञवल्क्य पण कहे छे के;—

' प्रायश्चित्तमकुर्वाणाः पापेषु निरता नराः ।
अपश्चात्तापिनः कष्टान्नरकान्यान्ति दारुणान् ॥' या. अ.३-२२-१.

जे पुरुषो पापने माटे पश्चात्ताप करता नथी तथा प्रायश्चित्त करता नथी. ते पुरुषो पापकर्ममां परायण रहे छे तथा भयंकर अने दुःखदायक नरकोमां पडे छे.

आ रीते कहीने प्रायश्चित्त नित्य करवानुं छे आम जणावे छे, माटे ते नित्य कर्म छे. परंतु खरी रीते जोतां तो प्रायश्चित्त नैमित्तिक कर्म छे. कारण के प्रायश्चित्त कोइपण निमित्तने लइने करवामां आवे छे. तेने माटे याज्ञवल्क्य स्मृतिमां स्पष्ट रीते कह्युं छे के;—'ब्रह्महा द्वादशाब्दानि' या. ३–२४–३ ब्रह्महत्या करनाराए बारवर्ष सुधी प्रायश्चित्त करवुं.' शास्त्रमां नैमित्तिक कर्मनां पण फळ वर्णववामां आव्यां छे ते उपरथी प्रायश्चित्त काम्य कर्म छे आवा भ्रममां पडवानुं नथी. पुत्रजन्म थया पछी इष्टि करवामां आवे छे ते जातेष्टि कहेवाय छे. अने ते नैमित्तिक कर्म छे. छतां तेनुं पण शास्त्रमां शुचित्वादिक फळ कह्युं छे. परंतु तेथी ते कर्म कंइ काम्य थइ जतुं नथी. कारण के तेमां फळनुं वर्णन नियोज्यना (कर्ताना) विशेषणरूपे कर्युं नथी. तेमज "ब्रह्महा द्वादशाब्दानि" "ब्रह्महत्या करनाराए बारवर्ष सुधी प्रायश्चित्त करवुं" इत्यादि वचनोमां पण फळनुं वर्णन नियोज्य (कर्ता) ना विशेषणरूपे कर्युं नथी. माटे प्रायश्चित्त, कारीरी वगेरे यागनी पेठे काम्य नथी. कारीरी यागना प्रकरणमां तो 'वृष्टिकामो यजेत' जेने वृष्टिनी कामना होय तेणे कारीरी याग करवो आम कह्युं छे. आ वचनमां वृष्टिरूपी फळनुं कर्ताना विशेषणरूपे जेम वर्णन करवामां आव्युं छे. तेम 'ब्रह्महा द्वादशाब्दानि' ए वचनमां फळनुं कर्ताना विशेषणरूपे वर्णन करवामां आव्युं नथी. माटे प्रायश्चित्त ए काम्य कर्म नथी. तेम ते नित्य कर्म पण नथी. कारणके; प्रायश्चित्त न करवाथी पाप उत्पन्न थाय छे एम कोइ पण शास्त्रमां कह्युं नथी. मात्र एटलुं ज कहेवामां आव्युं छे के; जेओ प्रायश्चित्त करता नथी, तेओनी निषिद्ध कर्म करवामां प्रवृत्ति थाय छे. याज्ञवल्क्य स्मृतिमां कह्युं छे के;—'पापेषु निरता नराः' जेओ प्रायश्चित्त करता नथी तेओ पापकर्ममां परायण रहे छे. नैमित्तिक कर्म पण जो करे नहि तो दोष लागे; तेने माटे महाभारत, वृद्धवसिष्ठ वगेरेनां वचनो छे. महाभारतमां कह्युं छे के;—

" सर्वस्वेनापि कर्तव्यं श्राद्धं वै राहुदर्शने ।
अकुर्वाणस्तु तच्छ्राद्धं पङ्के गौरिव सीदति ॥

ગ્રહણનાં દર્શન થાય ત્યારે સર્વસ્વ ખર્ચી નાખીને પણ શ્રાદ્ધ કરવું. જે પુરુષ ગ્રહણ સમયે શ્રાદ્ધ કરતો નથી તે ગારામાં ડુબી ગએલી ગાયની પેઠે પીડા પામે છે." શાસ્ત્રમાં નિત્ય કર્મની વ્યાખ્યા કરતાં કહ્યું છે કે; જ્યાં જીવન અધિકારી પુરુષનું વિશેષણ હોય અર્થાત્ જે કર્મ યાવત્ જીવિત કરવાનું હોય તે કર્મ નિત્ય કહેવાય છે. જેમ કે;—"યાવજ્જીવમગ્નિહોત્રં જુહુયાત્ । જીવતાં સૂધી અગ્નિહોત્રમાં હોમ કરવો " પ્રાયશ્ચિત્ત યાવત્જીવિત કરવાનું કહ્યું નથી. પરંતુ શાસ્ત્રોક્ત કર્મ થઇ શકે નહિ અથવા તો અજાણતાં અભક્ષ્યભક્ષણ વગેરે થઇ જાય તો તે નિમિત્તને ઉદ્દેશીને પ્રાયશ્ચિત્ત કરવું, આમ શાસ્ત્રમાં કહ્યું છે. માટે પ્રાયશ્ચિત્ત એ નૈમિત્તિક કર્મ છે અને શાસ્ત્રકારોએ પણ પ્રાયશ્ચિત્તની નિમિત્તધર્મમાં ગણના કરી છે. કેટલાએક અહિં શંકા કરે છે કે; ભાવથી ભાવની ઉત્પત્તિ થાય છે, પરંતુ અભાવથી કોઇપણ દિવસ ભાવની ઉત્પત્તિ થતી નથી. નિંદિત કર્મ કરવાથી પાપની ઉત્પત્તિ થાય છે એ તો યોગ્ય છે પરંતુ શાસ્ત્રોક્ત કર્મના અકરણથી (ન કરવાથી) પાપ કેવી રીતે ઉત્પન્ન થાય ? કારણ કે; અકરણ અર્થાત્ ન કરવું એ અભાવરૂપ છે માટે અભાવથી ભાવની ઉત્પત્તિ સંભવે નહિ. આ શંકાનું સમાધાન આ પ્રમાણે છે કે;—સંધ્યાવન્દન વગેરે શાસ્ત્રોક્ત કર્મનું અકરણ (નહિ કરવું) એ અગ્નિહોત્રાદિક કર્મમાં અનધિકારરૂપ અશુચિપણાનું દ્યોતક છે. અને એ વાત 'અકુર્વન્પ્રત્યવૈતિ—સંધ્યા કરતો નથી તેને દોષ લાગે છે' એ વચનવડે કહી છે. અહીં અનુષ્ઠાનના અભાવથી (સંધ્યાવન્દનાદિકના અકરણથી) ભાવરૂપ પાપની ઉત્પત્તિ થાય છે આમ કહ્યું નથી; પરંતુ સંધ્યાવન્દનાદિક નહિ કરવાં એ અનધિકારિપણાને દર્શાવનારું છે અને એ અનધિકારથી પાપની ઉત્પત્તિ થાય છે આવો તેનો અર્થ છે અને તે અનધિકારિપણું પ્રાયશ્ચિત્ત કરીને દૂર કરવું જોઇએ. કેટલાએક કહે છે કે;—'અકુર્વન્' એ ઠેકાણે 'કૃઞ્' ધાતુને લક્ષણ અર્થમાં 'શતૃ' પ્રત્યય થયો છે અને તેનો અર્થ એવો છે કે વિહિતનું જે અકરણ છે તે પૂર્વજન્મનાં નિષિદ્ધાચરણજન્ય પાપનું એક લક્ષણ છે અને તે પ્રાયશ્ચિત્તથી નાશ પામે છે.

ગૌતમ સ્મૃતિમાં પ્રાયશ્ચિત્ત કરવાવિશે બિચાર કરતાં પ્રથમ એવી

शंका करवामा आवी छे के 'न कुर्यात् नहि कर्म क्षीयते' अयाज्ययाजन, अभक्ष्यभक्षण, अवन्द्यवन्दन वगेरे करवाथी मनुष्यने पातक लागे छे. पण ते पातक दूर थइ शकतां नथी माटे तेने दूर करवा सारु प्रायश्चित्त करवां नहि. कारण के करेलां कर्म भोगव्या वगर नाश पामतां नथी. एम शास्त्रमां कह्युं छे." गीतामां पण कह्युं छे के:—

" नाभुक्तं क्षीयते कर्म कल्पकोटिशतैरपि ।
अवश्यमेव भोक्तव्यं कृतं कर्म शुभाशुभम् ॥

कर्म भोगव्या वगर करोड कल्पोए पण नाश पामतुं नथी. शुभ अथवा तो अशुभ कर्म कर्युं होय तो तेने अवश्यज भोगववुं पडे छे." कदाच कोइ कहे के; भोगव्या वगर पण पापकर्मनो नाश थाय छे तो पछी पुण्यनो पण नाश थवानो प्रसंग आवशे. आम केटलाएक शंका करे, परंतु ते शंका निर्मूळ छे. श्रुतिमां कह्युं छे के:—' पुनस्तोमेनेष्ट्वा पुनः सवनमायान्ति, अयाज्यने याजनादिक करावबाथी ब्राह्मणो नित्यकर्मना अधिकारमांथी भ्रष्ट थाय छे ते ऐकाहिक (एक दिवसे थइ शके तेवा) नामना यागथी यजन करीने पाछा नित्य कर्मना अधिकारी थाय छे. जो'नाभुक्तम्' ए शास्त्रीय वचन संकोच वगर निरंकुशपणाथी प्रवर्ते तो पातकनो क्षय दर्शावनारी सर्वे श्रुतिओ तथा स्मृतिओ निरर्थक थइ पडे. माटे पापनो क्षय करवा माटे प्रायश्चित्त करवुं ज जोइए अने एम मानतां प्रायश्चित्त कदाच काम्य धर्म थतो होय तो तेथी दोष मानवो नहि. बाळकनो जन्म थया पछी जातकर्म अने जातेष्टि करवामां आवे छे आ जातेष्टि जन्मरूपी निमित्तने लइने करवामां आवे छे. माटे नैमित्तिक धर्म कहेवाय छे. अने शुचिपणुं वगेरे कामनामाटे करवामां आवे छे तेथी काम्य पण कहेवाय छे. तेमज प्रायश्चित्त पण जो कामनाथी करवामां आवे तो तेने काम्यधर्म जाणवो.

पराशरनी दयालुता.

भगवान् पराशरे प्रायश्चित्तनो उपदेश आपतां पहेलां कलियुगनां सामर्थ्यनो तथा कलियुगनां मनुष्योनां शरीरनी शक्तिनो एम उभयनो विचार कर्यो छे. तेमणे कलियुगनां मनुष्योनी शक्तिनो विचार करतां प्रथम अध्यायमां कह्युं

छे के;—"कलौ त्वन्नादिषु स्थिताः कलियुगमां मनुष्योना प्राण अन्नादिकने आधारे रहेला छे. अर्थात् मनुष्यो अन्नना आहार उपर टकी रहेला छे. तेओ आहार वगर जीवी शकता नथी" आम धारीने तेमणे केटलाएक महाव्रतोमां (प्रायश्चित्तोमां) संकोच कर्यो छे. एटले महाव्रतोनां प्रतिनिधि व्रतो कह्यां छे. तथा ब्राह्मणोना स्वाध्यायादिक धर्ममां पण संकोच कर्यो छे. तथा युगधर्मने आधीन थवाथी वैदिक कर्ममां शिथिल थएला ब्राह्मणोनो पक्षपात करीने प्रथम अध्यायमां कह्युं छे के;—"तेषां निन्दा न कर्तव्या युगरूपा हि ते द्विजाः, ब्राह्मणो संपूर्ण वेद भण्या न होय तथा अग्निहोत्रादिक कर्म पण करता न होय तोपण तेओनी निन्दा करवी नहि. कारण के तेओ पण कलियुगना अधर्मने वश थइने कलियुगना जेवा थइ गया छे."

आ रीते दयालुता दर्शावीने पराशर ब्राह्मणोने उपदेश आपे छे के; ब्राह्मण जो संपूर्ण वेद भणी शके नहि तो तेणे वेदनो एक भाग पण भणवो तथा ब्राह्मणवृत्तिथी पोतानी आजीविका करी शके नहि तो खेतीवाडी, काष्ठ विक्रय वगेरे करीने आजीविका करवी. आम कहीने स्वाध्यायमां तथा आजीविकामां पण संकोच कर्यो छे. तथा गोहत्या करनाराए "प्राजापत्यं गोवधे स्यात्' गोवध करनाराए प्राजापत्य व्रत करवुं." आम कहीने गोहत्याना व्रतमां संकोच कर्यो छे. अने 'ब्रह्मघ्ने सेतुदर्शनम्' ब्रह्महत्या करनाराए सेतुनां (रामने माटे दक्षिण समुद्र उपर नळे बांधेली पाजनां) दर्शन करवां" आम कहीने बार वर्षसूधी करवामां आवतां ब्रह्महत्यारूपी महापातकनां व्रतनो पण संकोच कर्यो छे अने ते संकोच देश, काळ. तथा मनुष्यनां सामर्थ्यनो विचार करीने कर्यो छे.

स्मृतिविरोध परिहार.

व्यासे पराशर ऋषिने कलियुगना धर्म पूछ्या अने पराशरे तेने कलियुगना धर्म कह्या. माटे आ पाराशरस्मृतिमां जे जे धर्म कह्या छे ते ते सर्व कलियुगनाज धर्म जाणवा. आ धर्मशास्त्रना प्रथम अध्यायना चोविसमा श्लोकमां छे के; "कलौ पाराशराः स्मृताः, कलियुगमां पराशर मुनिए कहेला

धर्म मान्य गणाय छे." आ उपरांत एक कलिवर्ज्य प्रकरण छे. तेमां कलियुगमां अमुक अमुक कर्म नहि करवानो उपदेश आपवामां आव्यो छे. अने एज वात पराशरस्मृतिना 'शेषं मुनिविभाषितम्', ए वचनथी स्पष्ट करवामां आवी छे. हवे पाराशर धर्मशास्त्रमां कहेला सूतकना संकोच वगेरेनो तथा मूलवचनोमांथी उन्नीत थता—अनुमानथी जाणवामां आवता अग्निहोत्रादिक धर्मनो कलिवर्ज्य प्रकरणमां निषेध करवामां आव्यो छे.

---

१ आ नीचे लखेला श्लोको कलिवर्ज्य प्रकरण तरिके धर्मशास्त्रना संग्रहग्रंथोमां लखवामां आव्या छे. हिमाद्रि नामना ग्रंथमां आ श्लोको आदित्यपुराणमां छे एम कह्युं छे, मदनपारिजातमां आ श्लोको सारसंग्रहना छे एम कह्युं छे, कोइ ठेकाणे आ श्लोकोने देवल ऋषिनां वचनो तरिके मानवामां आव्या छे परतुं आ श्लोको अस्सल कया ग्रंथमां छे तेनो निर्णय थयो नथी. कलिवर्ज्य प्रकरण आ प्रमाणे छे;—

ब्रह्मपुराणेऽपि—

'दीर्घकालं ब्रह्मचर्यं धारणं च कमण्डलोः। गोत्रान्मातुः सपिण्डात्तु विवाहो गोवधस्तथा ॥ नरा–ऽश्वमेधौ मद्यं च कलौ वर्ज्यं द्विजातिभिः'।

ब्रह्मपुराणमां पण कह्युं छे;—

कळियुगमां द्विजवर्णोए लांबा काळसुधी ब्रह्मचर्य धारण करवुं नहि, कमंडलु धारण करवुं नहि (संन्यास लेवो नहि), माताना सगोत्रमां तथा सपिंडमां विवाह करवो नहि, (मधुपर्कमां) गोवध करवो नहि, नरमेध तथा अश्वमेध करवो नहि तथा मद्यपान करवुं नहि.

क्रतुरपि;—

'देवराच्च सुतोत्पत्तिर्दत्ता कन्या न दीयते। न यज्ञे गोवधः कार्यः कलौ न च कमण्डलुः'॥

क्रतुपण कहे छे;—

कळियुगमां देरथी पुत्रनी उत्पत्ति करावववी नहि (नियोग विधि करवो नहि,) एकने वाग्दान करेली कन्या बीजाने आपवी नहि, यज्ञमां गोवध करवो नहि तथा संन्यास पण लेवो नहि.

वायुपुराणेऽपि;—

'ऊढायाः पुनरुद्वाहं ज्येष्ठांशं गोवधं तथा। कलौ पञ्च न कुर्वीत भ्रातृजायां कमण्डलुम्'॥

वायुपुराणमां पण कह्युं छे;—

कळियुगमां एकनी साथे वाग्दान करेली कन्या बीजाने परणाववी नहि, मोटा भाइने शास्त्रोक्त वधारानो भाग आपवो नहि, यज्ञप्रसंगे गोवध करवो नहि, भाइनी स्त्री साथे नियोग करवो नहि तथा संन्यास लेवो नहि. आ पांच बाबत कळियुगमां करवी नहि.

तथा अन्येऽपि धर्मज्ञसमयप्रमाणकाः सन्ति । यथा—

'विधवायां प्रजोत्पत्तौ देवरस्य नियोजनम् । बालिकाऽक्षतयोन्योश्च वरेणान्येन संस्कृतिः ॥
कन्यानामसवर्णानां विवाहश्च द्विजातिभिः । आततायिद्विजाग्र्याणां धर्मयुद्धे न हिंसनम् ॥
द्विजस्याब्धौ तु नौयातुः शोधितस्यापि संग्रहः । सत्रदीक्षा च सर्वेषां कमण्डलुविधारणम् ॥
महाप्रस्थानगमनं गोसंज्ञप्तिश्च गोसवे । सौत्रामण्यामपि सुराग्रहणस्य च संग्रहः ॥
अग्निहोत्रहवण्याश्च लेहो लीढापरिग्रहः । वानप्रस्थाश्रमस्यापि प्रवेशो विधिचोदितः ॥
वृत्त-स्वाध्यायसापेक्षमघसङ्कोचनं तथा । प्रायश्चित्तविधानं च विप्राणां मरणान्तिकम् ॥
संसर्गदोषः स्तेनाद्यैर्महापातकनिष्कृतिः । वरातिथि-पितृभ्यश्च पशूपाकरणक्रिया ॥
दत्तौरसेतरेषां तु पुत्रत्वेन परिग्रहः । सवर्णान्याङ्गनादुष्टौ संसर्गः शोधितैरपि ॥
अयोनौ सङ्ग्रहे वृत्ते परित्यागो गुरुस्त्रियाः । अस्थिसञ्चयनादूर्ध्वमङ्गस्पर्शनमेव च ॥
शामित्रं चैव विप्राणां सोमविक्रयणं तथा । षड्भक्तानशनेनान्नहरणं हीनकर्मणः ॥
शूद्रेषु दास-गोपाल-कुलमित्रार्द्धसीरिणाम् । भोज्यान्नता गृहस्थस्य तीर्थसेवाऽतिदूरतः ॥
शिष्यस्य गुरुदारेषु गुरुवद्वृत्तिरीरिता । आपद्वृत्तिर्द्विजाग्र्याणामश्वस्तानिकता तथा ॥
प्रजार्थं तु द्विजाग्र्याणां प्रजाऽरणिपरिग्रहः । ब्राह्मणानां प्रवासित्वं मुखाग्निधमनक्रिया ॥
बलात्कारादिदुष्टस्त्रीसङ्ग्रहो विधिचोदितः । यतेस्तु सर्ववर्णेषु भिक्षाचर्या विधानतः ॥
नवोदके दशाहं च दक्षिणा गुरुचोदिता । ब्राह्मणादिषु शूद्रस्य पचनादिक्रियापि च ॥
भृग्वग्निपतनैश्चैव वृद्धादिमरणं तथा । गोतृप्तिमात्रे पयसि शिष्टैराचमनक्रिया ॥
पिता-पुत्रविरोधेषु साक्षिणां दण्डकल्पनम् । यत्र सायंगृहत्वं च सूरिभिस्तत्वतत्परैः ॥
एतानि लोकगुप्त्यर्थं कलेरादौ महात्मभिः । निवर्तितानि कर्माणि व्यवस्थापूर्वकं बुधैः ॥
समयश्चापि साधूनां प्रमाणं वेदवद्भवेत्' ।

तेम बीजा पण धर्मजाणनारा पुरुषोए कळियुगमां निषिद्ध करेला धर्मो निचे प्रमाणे छे;—

विधवामां प्रजा उत्पन्न करवा माटे दियरनी साथे भाइनी स्त्रीनो कळियुगमां नियोग करवो नहि, बाला तथा अक्षतयोनि (जेने पति साथे समागम थयो न होय तेवी ऋतुमती स्त्री) विधवा थइ होय तो तेने बीजा वरनी साथे परणाववी नहि, ब्राह्मण वगेरे द्विजोए परजातिनी कन्या साथे विवाह करवो नहि.

आततायि ब्राह्मणोनी धर्मयुद्धमां हिंसा करवी नहि, द्विज वर्ण वाहाणमां बेसीने समुद्रनी मुसाफरी करे तेने प्रायश्चित्त आपीने शुद्ध कर्या छतां पण ज्ञातिमां लेवो नहि.

घणाए एक यज्ञनी दीक्षा लेवी नहि, संन्यास धारण करवो नहि, महाप्रस्थान (शरीर पडी जाय त्यांसूधी चाल्या जवुं ते) करवुं नहि; गोयज्ञमां गवालंभ करवो नहि, सौत्रामणि यागमां सुरापान करवुं नहि, अग्निहोत्र होमवाना स्रवाने चाटवो नहि, चाटेला स्रवानो त्याग करवो, वानप्रस्थाश्रम जे शास्त्रमां कह्युं छे ते पण धारण करवुं नहि, सदाचार तथा वेदनो स्वाध्याय करनाराए सूतकमां संकोच करवो नहि, ब्राह्मणोने मरण करनारुं प्रायश्चित्त आपवुं नहि, चोर वगेरेनी साथे संसर्ग (सहवास) थइ गयो होय तो तेनुं पातक लागे नहि, महापापनुं प्रायश्चित्त कर्या छतां पापनी निवृत्ति

माटे पाराशरस्मृतिनी अने मुनिओए कहेलां कलिवर्ज्य प्रकरणनी वच्चे विरोध थवानो संभव छे. वळी मनु ब्रह्महत्याने माटे बार वर्षनुं प्रायश्चित्त करवानो उपदेश करे छे त्यारे पराशर ते पापने माटे समुद्र सेतुनां दर्शन करवानो उपदेश करे छे. मनु गौहत्यानुं प्रायश्चित्त त्रण महिना सूधी करवानुं कहे छे त्यारे पराशर तेने माटे प्राजापत्य व्रत करवानुं

थती नथी, वरने, अतिथिने तथा श्राद्धमां पितृओने उद्देशीने पशुतुं आलभन करवुं नहि,
औरस तथा दत्तकविना बीजा पुत्रोने पुत्र तरिके ग्रहण करवा नहि, पोतानी जातनी पत्नी व्यभिचारथी दूषित थइ होय तेने प्रायश्चित्तथी शुद्ध कर्या छतां पण तेनो संसर्ग करवो नहि, ... गुरुपत्नी (माता वगेरे) नो त्याग करवो नहि, (अर्थात् तेतुं पोषण करवुं) अस्थिसंचयन (चोथे दिवसे थाय छे) थी पेहेलां सूतकीने अडकवुं नहि, ब्राह्मणे यज्ञमां पशुने मारवानी क्रिया करवी नहि, सोम वेंचवो नहि, छ काळ एटले त्रण दिवसना जेने उपवास थया होय तेवा पुरुषे पण हलकां काम करनारा पुरुषना घरमांथी अन्न लावीने खावुं नहि, शूद्रजातिमांना दास, गोपाल, पोतानी कुळनी साथे मित्रता धारावनारा तथा अर्धा हळथी खेती करनारा शूद्रना घरनुं पण अन्न खावुं नहि, गृहस्थे अत्यंत दूर देशमां यात्राए जवुं नहि, शिष्ये गुरुपत्नीनी साथे गुरुनी पेठे व्यवहार करवो नहि (अर्थात् दूरथी चरण वंदनादि करवां), ब्राह्मणे शास्त्रमां कहेली आपत्काळनी आजीविकाथी वर्तवुं नहि, रोज रोज अन्न संपादन करीने आजीविका करवी तेनुं नाम अश्वस्तनिक वृत्ति कहेवाय छे तेवी वृत्तिथी पण आजीविका करवी नहि, ... ब्राह्मणोए दूर देशमां प्रवास करवो नहि, मुखथी अग्निने धमवो नहि, बलात्कार वगेरेथी जे स्त्री दूषित थइ होय तेवी स्त्रीने प्रायश्चित्त करावीने पण घरमां राखवी नहि, संन्यासीए सर्ववर्णना घरमांथी भिक्षा लेवी नहि, नवुं पाणी होय तेने दशदिवस सुधी ग्रहण करवुं नहि, गुरु आज्ञा करे ते प्रमाणे तेने दक्षिणा आपवी नहि, (कळियुगमां तेवी दक्षिणा आपी शकाय नहि,) शूद्रे ब्राह्मणादिक वर्णने माटे रसोइ वगेरे करवी नहि, वृद्ध, पातकी वगेरेए पर्वत उपरथी अग्निमां पात वगेरे करीने आत्महत्या करवी नहि, एक गाय धराय तेटला पाणीमां शिष्ट पुरुषोए आचमन करवुं नहि, पिताना तथा पुत्रना कजियामां साक्षीओने दंड करवो नहि, तत्ववेत्ता संन्यासीओने ज्यां सायंकाळ थाय त्यांज घर मानीने विश्रांति करवानुं शास्त्रमां कह्युं छे ते प्रमाणे कळियुगमां संन्यासीओए करवुं नहि, महात्मा तत्ववेत्ताओए लोकोना रक्षणमाटे कलिना आरंभमांज उपर कहेलां कर्मो करवानो व्यवस्था पूर्वक निषेध कर्यो छे अने महात्माओए करेलो ठराव वेदनी पेठे प्रमाण गणाय छे.

कहे छे. आ रीते मनुस्मृतिनी तथा पाराशरस्मृतिनी वच्चे पण विरोध उभो थवानो प्रसंग आवशे.

आ विरोधनो परिहार आ प्रमाणे छेः–कलिवर्ज्य प्रकरणमां विधिप्रोक्त अग्निहोत्रादिक धर्मनो जे निषेध करवामां आव्यो छे ते केवल साधनोना अभावने लीधे करवामां आव्यो छे. जो विधिप्रोक्त धर्मनो निषेध करवामां आवे तो विधि वचनो निरर्थक थाय. साधननो अभाव दृष्ट तथा अदृष्ट एम बे प्रकारनो छे; तेमां जे कर्म दृष्टसाधनना अभाववाळां होय तेनुं अनुष्ठान अथवा तो अननुष्ठान निंदापात्र गणातुं नथी. ज्यां अनन्यथा सिद्धिने लीधे प्रतिप्रसव विधिनुं उन्नयन करवामां आवे छे त्यां दृष्टसाधनोना अभावनी कल्पना करवामां आवे छे.

हवे आपणे केटलाएक उन्नीत धर्मनां उदाहरणोनुं अवलोकन करीए. कलिवर्ज्य प्रकरणमां दूर देशमां यात्रा करवानो निषेध करवामां आव्यो छे. परंतु आ धर्मशास्त्रना बीजा अध्यायमां ज्यां अतिथिनुं वर्णन कर्युं छे त्या अतिथिने " दूराध्वोपगतं श्रान्तम् " एवुं विशेषण आप्युं छे. एटले जे घणा दूरमार्गथी चालीने आव्यो होय अने चालवाथी जे श्रान्त थइ गयो होय ते अतिथि. आ पराशरनां वचनथी कलिमां पण दूर देशमा यात्रा करवी आम सिद्ध थाय छे.

वळी कलिवर्ज्य प्रकरणमां कलियुगमां संन्यास लेवानो निषेध करवामां आव्यो छे परंतु भगवान् पराशर संन्यासीने भिक्षा आपवाना संबंधमां कहे छे के " यतिहस्ते जलं दद्यात् संन्यासीना हाथमां जळ आपवुं." आ वचनमां जे संन्यासी शब्द कह्यो छे तेनी सिद्धि संन्यासाश्रम विना थती नथी. अर्थात् कलिमां संन्यासाश्रम छे आम सिद्ध करे छे; माटे अनन्यथासिद्ध एवो संन्यासी संन्यासाश्रमनुं उन्नयन करे छे. वळी कलिवर्ज्य प्रकरणमां कह्युं छे के " कलावाद्यन्तयोःस्थितिः कलियुगमां ब्राह्मण तथा शूद्र एम बेह वर्णनी स्थिति छे " परन्तु पराशर धर्मनो उपदेश करतां कहे छे के;–'चातुर्वर्ण्याश्रमागतम्' हवे हुं चार वर्णना तथा चार आश्रमना धर्म कहुं छुं " आ वचन उपरथी चार वर्णनी तथा चार

आश्रमनी पण कलिमां सिद्धि थाय छे. वळी कलिवर्ज्य प्रकरणमां कह्युं छे के; "ब्राह्मणे कलियुगमां अग्निहोत्र लेवुं नहि" परंतु पराशर अग्निहोत्री ब्राह्मण कार्य प्रसंगे परदेशमां जाय अने त्यां ते मरण पामे तो तेना शरीरने केवी रीते अग्निसंस्कार करवो ? ते प्रसंगनुं पांचमा अध्यायमां वर्णन करे छे. जो कलियुगमां अग्निहोत्र लेवानो निषेध होय तो पराशर अग्निहोत्री ब्राह्मणनां शरीरने दाह करवानी क्रियानो उपदेश केम करे ? माटे अग्निहोत्र धर्म पण पराशरे कहेली अग्निहोत्रीना शरीरनी दाहक्रिया उपरथी उन्नीत (सिद्ध) थाय छे. "कलियुगमां सूतकनो संकोच करवो नहि" आम कलिवर्ज्य प्रकरणमां कह्युं छे परंतु पराशरे कह्युं छे के;—"राज्ञश्च सूतकं नास्ति' राजाने सूतक लागतुं नथी" तथा "यस्य चेच्छति पार्थिवः' राजा जेनुं सूतक ओछुं करवानी इच्छा करे छे तेनुं सूतक पण ओछुं थाय छे" ते उपरांत "यजेत वाश्वमेधेन" अथवा अश्वमेध याग करवो, ए वचन उपरथी कलियुगमां यज्ञ धर्मनी पण सिद्धि थाय छे. आ रीते केटलाएक विधिप्रोक्त धर्मनो कलिवर्ज्य प्रकरणमां जे निषेध कर्यो छे ते दृष्टसाधनना अभावे कर्यो छे. परंतु तेवा धर्मनुं पाराशर धर्मशास्त्रनां वचनोथी उन्नयन थाय छे.

पराशर ऋषिए ब्रह्महत्या, गोहत्या वगेरेने माटे जे अल्प प्रायश्चित्त कह्यां छे ते मनुनां वचनना निषेधरूपे कह्यां नथी परंतु देशनुं, काळनुं तथा पुरुषनुं सामर्थ्य जोइने प्रायश्चित्तनो संकोच कर्यो छे. धर्मशास्त्रमां जे वचनने माटे निषेध किंवा अपवाद वचन होय नहिं तेवा सर्व वचनो प्रमाण गणाय छे. आ पाराशर धर्मशास्त्रनां वचनने माटे बीजा धर्मशास्त्रमां कोइ पण ठेकाणे निषेध किंवा अपवाद वचन जोवामां आवतां नथी. माटे पाराशर स्मृतिने बीजी स्मृतिनी साथे विरोध नथी. एक मुनि एक व्रतने माटे जे प्रायश्चित्त कहे छे तेनो बीजो मुनि निषेध करतो नथी परंतु तेने पण प्रमाणरूपे स्विकारे छे माटे सर्व मुनिओने सर्व मुनिओनां वचन मान्य छे आम सिद्ध थाय छे. आ पाराशर धर्मशास्त्रमां पण जे जे धर्म तथा जे जे व्रत कहेवामां आव्यां छे ते ते धर्मने तथा ते ते व्रतने बीजी स्मृतिओना धर्मनी तथा व्रतनी साथे विरोध नथी.

भगवान् पराशरे पण धर्मनो उपदेश आपती वखते प्रथम अध्यायमां कह्युं छे के;—

अहमद्यैव तत्सर्वमनुस्मृत्य ब्रवीमि वः ।

"हुं हमणाज ते सर्व धर्मशास्त्रने संभारीने तमने धर्मनो उपदेश करुं छुं." आ रीते कहेवानी प्रतिज्ञा करीने तेमणे प्रसंगे प्रसंगे बीजा ऋषिओनां मतो दर्शावीने पोतानी स्मृतिनो बीजी स्मृतिओनी साथे अविरोध दर्शाव्यो छे. आ पाराशर धर्मशास्त्रमां मनु, गौतम, व्यास, शंख, लिखित, विष्णु वगेरे धर्मशास्त्रप्रवर्तकोनां नामनो जे निर्देश छे, ते बीजी स्मृतिओनी साथे आ स्मृतिनो अविरोध दर्शावे छे.

महाव्रत करवाथी महाफल मळे छे.

घउं, कांग, कोदरा वगेरे अन्नना आहारथी जेम तृप्ति थाय छे, अग्निहोत्र, विश्वजित्, दर्शपूर्णमास, अग्निष्टोम वगेरे करवाथी जेम स्वर्गलोकनी प्राप्ति थाय छे तथा शांडिल्य, दहरादिक उपासनाथी जेम ब्रह्मविद्यानी प्राप्ति थाय छे, तेमज शास्त्रमां कहेला प्रायश्चित्तो करवाथी पापनी पण निवृत्ति थाय छे. परंतु कांग, कोदराथी जे तृप्ति थाय छे तेना करतां घउंथी अधिक तृप्ति थाय छे. तेमज अग्निहोत्रथी पण स्वर्गनो लाभ थाय छे; परंतु विश्वजित्, अग्निष्टोम वगेरेथी स्वर्गमां अधिक सुखनो लाभ थाय छे; तथा उपासनाना न्यूनाधिकपणाथी जेम न्यूनाधिक फलनो लाभ थाय छे तेम अल्प प्रायश्चित्त करवाथी पापना एक भागनो नाश थाय छे अने महाप्रायश्चित्त करवाथी पापनो क्षय थवा उपरांत स्वर्गादिक लोकमां महासुखनी प्राप्ति पण थाय छे. माटे मनुए कहेलां महाव्रतो करवाथी पापक्षय उपरांत पुण्य फलनो लाभ पण थाय छे. माटे जेने पापक्षय उपरांत अधिक पुण्य संपादन करवानी इच्छा होय तेणे महाप्रायश्चित्तो करवां.

समुच्चय अथवा तो विकल्प पक्ष.

ज्यां एक पापने माटे बे, त्रण, चार एम अधिक प्रायश्चित्त कह्यां होय त्यां समुच्चय पक्ष अथवा तो विकल्प पक्ष मानवो. एटले सर्व व्रत करवां अथवा तो एकज व्रत

करवुं. जेम स्नान, दान, जप तथा होम आ सर्व धर्म, निमित्तने लइने करवामां आवे छे तेथी ते नैमित्तिक धर्म कहेवाय छे; अने ते भिन्न भिन्न निमित्तानुसार करवामां आवे छे, परंतु ग्रहणने दिवसे ते सर्व एक साथेज करवामां आवे छे; तेमज कोइवार एक पापने माटे एक व्रत करवामां आवे छे अने कोइ वार सर्व व्रत पण करवामां आवे छे. सर्व व्रत करवाथी कर्ताने पापनो क्षय थवा उपरांत अधिक फलनो लाभ थाय छे. घणां व्रतोमांनुं एक व्रत पापनो नाश करे छे अने बीजां व्रत तपरूप होवाथी, स्वर्गादिक लोकनो लाभ आपे छे. चांद्रायणादिक व्रत तपरूप छे, माटे ते करवाथी पापक्षय थवा उपरांत स्वर्गादिक लोकनो पण लाभ थाय छे; परंतु भिक्षाचरण, बहार जती वखते जेनी हत्या करी होय तेनुं कपाल (खोपरी) हाथमां धारण करीने बहार जवुं वगेरे व्रत, तपरूप न होवाथी ते विषयमां कर्ताए विकल्प समजवो.

व्रतनां अल्पत्व महत्वनो विचार.

एक मुनिए एक पातकने माटे पंचगव्य प्राशन करवानुं कह्युं होय अने बीजा मुनिए तेज पातकने माटे मरणान्तिक प्रायश्चित्त कह्युं होय अने ते लघु प्रायश्चित्तने तथा महाप्रायश्चित्तने जो समविकल्प मानीए, एटले ते बन्नेने समान अथवा तो तेनो विकल्प मानीए तो महासाहस गणाय. आवी शंका थवानो संभव छे. आनो परिहार आ प्रमाणे छेः—व्रतनां अल्पत्वमां तथा महत्वमां परिश्रम अथवा तो इतिकर्तव्यता (अंगभूतक्रिया) कारण नथी. एटले जे व्रत करवामां विशेष परिश्रम पडे ते व्रत महान् अने जे व्रत करवामां अल्प परिश्रम पडे ते व्रत अल्प एवो नियम नथी. तेम जे व्रतमां इतिकर्तव्यता (अंगभूतक्रिया) बहु होय ते व्रत महान् अने जे व्रतमां इतिकर्तव्यता (अंगभूतक्रिया) अल्प होय ते व्रत अल्प एवो पण कंइ नियम नथी. परंतु धर्मशास्त्रना कर्ताओ जे व्रतने महान् कहे ते व्रत महान् अने जे व्रतने अल्प कहे ते व्रत अल्प (नानुं) कहेवाय छे. जे व्रत करतां अल्प परिश्रम पडे ते व्रत अल्प अने जे व्रत करतां महान् परिश्रम पडे ते व्रत महान् आवो कंइ नियम नथी. जो एम मानवामां आवे तो खेती करनारा खेडुत

लोको महाव्रत करनारा गणाय अने सिंह, व्याघ्र वगेरेनां मूत्र पंचगव्य करतां पण विशेष पवित्र तथा व्रतनां अंगभूत गणाय; कारण के ते महा-परिश्रम करवाथी मळे छे. अथवा तो जेमां इतिकर्तव्यता (अंगभूतक्रिया) विशेष होय ते महाव्रत गणातुं होय अने जेमां इतिकर्तव्यता अल्प होय ते व्रत अल्प गणातुं होय तो जलप्रवेश, अग्निमां पात वगेरे व्रत अल्प ग-णाशे, कारणके तेनी इतिकर्तव्यता अल्प होय छे. परंतु तेम नथी, शास्त्रकर्ता जे व्रतने महान् कहे ते व्रतनेज महान् मानवुं अथवा तो जे व्रतना विधिमां कायक्लेश घणो होय ते व्रतनेज महान् मानवुं अने तेथी भिन्नने अल्प मानवुं

कोइ कहे के, जेम मोटी वस्तु नानी वस्तुनो नाश करे छे, तेम नानी वस्तु मोटी वस्तुनो शामाटे नाश करे नहि ? अग्निनो तणखो नानो होय छे तथापि ते तृणना ढगने बाळी नाखे छे; तेम प्रायश्चित्त अल्प हशे तोपण ते महान् पातकनो नाश करशे. अस्तु: अग्निनो तणखो तृणना ढगने बाळीने भस्म करे छे, परंतु ते दाह्यपदार्थना संयोगथी वृद्धि पामीने तृणना ढगने बाळी नाखे छे, ते रीते कंइ व्रतनी वृद्धि थती नथी. तथापि व्रत पोतानी शक्ति अनुसार पातकना एक भागनो नाश करे छे ते प्रमाणे ज महाव्रत कर्युं होय तो तेनो एक भाग पातकनो नाश करे छे अने शेषभागथी स्वर्गादिक लोकनी प्राप्ति करे छे.

कामनाथी करेलां पातक महापातक गणाय अने तेने माटे मनुए कहेलां प्रायश्चित्त करवां अने अकामनाथी करेलां पातक लघु कहेवाय अने तेनी शुद्धि माटे पराशरे कहेलां प्रायश्चित्त करवां, आम बुद्धिने अनुसरीने व्रतोनी व्यवस्था करवी नहि; परंतु शास्त्रनां वचनोने अनुसरीने व्रतोनी व्यवस्था करवी.

व्रतव्यवस्था शास्त्रानुसारज करवी जोइये.

जो बुद्धिकृत व्यवस्थाने मान्य करवामां आवे तो पछी " कपिलो यदि सर्वज्ञः कणादो नेति का प्रमा ! " जो कपिल सर्वज्ञ छे तो कणाद नथी तेमां

प्रमाणशुं ? ए न्यायप्रमाणे बुद्धिकृत व्यवस्थाने मान्य करवी जोइशे अने तेम करवाथी अनवस्था दोषनो प्रसंग आवशे माटे कोइपण पातकनी शुद्धिमाटे व्रत–प्रायश्चित्त करवुं होयतो शास्त्रीय व्यवस्थाने अनुसरीने करवुं. मनुना अग्यारमा अध्यायना ७२ मा श्लोकमां ब्रह्महत्यानुं प्रायश्चित्त कह्युं छे; तेना उपसंहारमां कह्युं छे के;–

इयं विशुद्धिरुदिता प्रमाप्याकामतो द्विजम् ।
कामतो ब्राह्मणवधे निष्कृतिर्न विधीयते ।

"अकामनाथी (अजाणतां) ब्रह्महत्या करी होय तो तेने माटे उपर कहेली शुद्धि कही छे. परंतु कामनापूर्वक ब्राह्मणनो वध कर्यो होय तो तेने (आ) प्रायश्चित्तनुं विधान नथी."

आ वचन कामना वगर ब्रह्महत्या थइ गइ होय तेने माटे प्रायश्चित्त कहे छे; परन्तु आ वचन कामनाथी करेलां पापनी प्रायश्चित्त करवाथी शुद्धि थती नथी आम कहेतुं नथी. कारणके कामनाथी करेलां पापने माटे बमणुं, त्रणगणुं प्रायश्चित्त करवामाटे बीजां शास्त्रवचनो पण छे. बीजी सामान्य स्मृतिओ के जेमां कामनो अथवा तो अकामनो निर्देश कर्या वगर सामान्य रीते पापनां प्रायश्चित्त कह्यां छे, ते सामान्य स्मृति वचनने ज्यां सूधी विशेष वचन मळे नहि त्यां सूधी अनुसरवुं योग्य छे. भगवान पराशरे जे पातकने माटे जे व्रत करवानो उपदेश कर्यो छे ते व्रत करवाथी ते पातक नाश पामे छे आम मानवुं. परंतु तेनां वचन उपर मिथ्या तर्क करीने लोकोना मनमां भ्रम उत्पन्न करवो नहि. अर्थात् ज्यांसूधी पापनां प्रायश्चित्त माटे शास्त्रनां वचनो मलतां होय त्यां सूधी बुद्धिथी प्रायश्चित्तनी व्यवस्था करवी नहि.

हवे पाराशर स्मृति उपर कोणे कोणे टीका करी छे अने ते टीकाओ केवी छे तेनो आपणे विचार करीए. बुक्कदेव राजाना प्रधान अने कुलगुरु, पद, वाक्य तथा प्रमाणज्ञ, महासमर्थ, विद्वान् माधवाचार्ये आ पाराशर धर्मशास्त्र उपर विस्तारथी टीका लखी

माधवीया टीका.

छे; अने ते टीका माधवीया कहेवाय छे. माधवाचार्ये पराशरनां सूत्ररूप वचनोने श्रुति, स्मृतिनां वचनोथी तथा इतिहास वगेरेनां वचनोथी स्पष्ट कर्यां छे; श्रुतिओनां तथा स्मृतिओनां प्रमाणो आपीने संदिग्ध विषयोनो निर्णय कर्यो छे; वर्णधर्म, आश्रमधर्म, वर्णाश्रमधर्म, गुणधर्म तथा प्रायश्चित्तधर्मनुं शास्त्रोनां प्रमाणो आपीने विस्तारथी वर्णन कर्युं छे तथा शास्त्रनां वचनोनी विषयानुसार योग्य व्यवस्था करीने पूर्वापरनो विरोध पण दूर कर्यो छे. आवां कारणोथी तेमनी टीकाने भाष्यनी उपमा आपीए तो आपी शकाय. अथवा तो ते टीकाने धर्मशास्त्रनो एक संग्रहग्रंथ कहीए तोपण कही शकाय. भगवान् माधवाचार्य पाराशर स्मृतिना टीकाकारज नथी परंतु तेमणे व्यवहारकांड पंडे लखीने पाराशर स्मृतिनां गौरवमां वधारो कर्यो छे. तथा पाराशर स्मृतिनी टीकाना मिषथी वर्णधर्म वगेरे छए धर्मनो तथा धर्म, अर्थ, काम अने मोक्ष ए चारेय पुरुषार्थनो तथा तेना अधिकारिओनो वेद तथा शास्त्रानुसार विचार कर्यो छे.

विद्वन्मनोहरा टीका.

नंद नामना पंडिते विद्वन्मनोहरा नामनी टीका रची छे. नंद धर्माधिकारिना कुलमां जन्म्यो हतो. तेनुं नाम विनायक हतुं; ने तेना पितानुं नाम राम पंडित हतुं. तेणे पाराशरने टीका रचती वखते सायण माधवनी टीकानो आश्रय लीधो छे अने ते वात तेणे पोतानी टीकाना आरंभमांज जणावी छे. तेने माधवाचार्य तरफ अने तेणे रचेली टीका तरफ अत्यंत पूज्यबुद्धि छे, छतां तेणे टीका लखती वखते पोतानां शास्त्रीयज्ञाननो योग्यरीते उपयोग कर्यो छे. ज्यां नंदने माधवाचार्यनुं लखवुं शास्त्रविरुद्ध अथवो तो देश काल विरुद्ध लाग्युं छे, त्यां तेणे स्पष्टरीत्या माधवाचार्यथी भिन्न पडीने पोताना विचारो दर्शाव्या छे. ‘नष्टे मृते’ श्लोक उपर टीका करतां माधवाचार्ये कह्युं छे के;—‘युगान्तरविषयोयं.’ परंतु नंदपंडित ते श्लोक उपर टीका करतां कहे छे के, माधवनुं आ कहेवुं यथार्थ नथी; कारणके पाराशरे कलियुगना धर्म कह्या छे, बीजा युगना धर्म कह्या नथी. माटे आ श्लोक पण कलिपरत्वेज होवो जोइए. आ रीते तेणे कोइ कोइ स्थले

माधवनी टीकाथी विरुद्ध विचार पण दर्शाव्या छे; तथा श्रुति, स्मृति, इतिहास वगेरेनां वचनो आपीने पाराशर स्मृतिनां वचनोने घणीज उत्तम रीते समजाव्यां छे. तथा सामान्य विशेष वचनोनी व्यवस्था पण दर्शावी छे.

धर्मरत्नटीका. त्रीजी धर्मरत्न टीका छे. आ टीका धरणीधर नामना पंडिते करीछे अने ते टीका टिप्पणीरूप छे. टीकाकार आरंभमांज कहे छे के; में विद्वन्मनोहरारूप सिंधुमांथी आ धर्मरत्ननो उद्धार कर्यो छे. आ प्रमाणे धरणीधरे विद्वन्मनोहरानो आधार लीधो छे, परंतु कोइ कोइ श्लोक उपर स्वतंत्र विचार पण आप्यो छे. टिपप्णीरूप आ टीका मूळ ग्रंथनो अर्थ जाणवामां उपयोगी छे.

गुजराती भाषांतरनुं प्रयोजन. आर्योना धर्मशास्त्रना ग्रंथोमां मनुष्योए केवी रीते जीवन गाळवुं तेविशे उपदेश आपवामां आव्योछे. माटे तेना पठन पाठनथी आर्योनी अवश्य उन्नति थाय अने तेओ उत्तरोत्तर प्रेय अने श्रेयना भागी थाय परंतु धर्मशास्त्रना ग्रंथो संस्कृत भाषामां छे तेथी आर्यप्रजा तेनो यथार्थ रीते लाभ लइ शकती नथी. आर्यप्रजा तेनो लाभ ले एवा हेतुथी वेदशास्त्रसंपन्न पंडितश्री नथ्थुरामजीए तथा में मनुस्मृतिनुं गुजरातीमां भाषांतर कर्युं छे. आ भाषांतर कर्या पछी जेमां कलियुगना धर्म वर्णव्या छे एवी आ पाराशर स्मृतिनुं भाषांतर करवानी मारी इच्छा थइ हती. कलियुगमां डगल डगले मनुष्योथी पातक थइ जवानो संभव छे तथा अनार्यना संसर्गादिक थतां तेनाथी अपवित्र थवानो पण प्रसंग आवे छे. त्यारे कयुं प्रायश्चित्त करवुं तेनो विचार करवा माटे आ पाराशर धर्मशास्त्र अत्यंत उपयोगी छे. आवा उपयोगी धर्मशास्त्रनुं गुजरातीमां भाषान्तर संवत् १९२९ ना वर्षमां पंडित डाह्याभाई घेलाभाई नामना एक विद्वान् ब्राह्मणे कर्युं हतुं. पंडितजीए मूलश्लोकानुसार प्रथम गुजरातीमां आ भाषान्तर छपाव्युं हतुं अने पाछला भागमां पाराशरसंहिता छपावी हती. भाषांतरनी निचे मूल विषयना खुलासा माटे नानी नानी टिप्पणीओ पण आपी छे. 'नष्टे मृते प्रव्रजिते' श्लोक जेने सुधारावाळाओ विधवाविवाहनुं मुख्य प्रमाण माने छे ते श्लोक उपर

पंडितजीए शास्त्रीय विचार कर्योज नथी; परन्तु पोताना मनस्वी विचारो दर्शाव्या छे अने सुधारावाळाने अनुकूल मत आप्युं छे. विधवाविवाह शिवाय बीजा कोइ विषय उपर तेमणे विचार कर्यो नथी. आवी कलियुगना धर्मनो उपदेश आपनारी पाराशर स्मृति, गुजराती भाषामां अर्थ साथे बाहार पडे अने भगवान पराशरे उपदेशेला कलियुगना धर्मोनुं प्राकृत लोकोने पण ज्ञान थाय, तथा सुधारावाळाओ जे जे श्लोकनो विपरीत अर्थ समजी बेठा छे तेना उपर शास्त्रीयविचार वांचीने पोतानां मननो संदेह दूर करे, तथा वारंवार कलियुगमां युगप्रभावथी, प्रमादथी तथा आलस्यथी अधर्म थइ जतां ते दूर करवानी इच्छा धरावनाराओ पोतानी इच्छा पार पाडी शके आवां केटलांएक कारणोथी आ पाराशर धर्म शास्त्रनुं गुजरातीमां भाषांतर करवानी घणा दिवस थया मारी इच्छा हती; अने ते इच्छा गुजरातीपत्रना अधिपति रा. रा. श्रीयुत इच्छाराम सूर्यराम देशाइने दर्शावतां तेमणे पण कृतज्ञपणाथी अनुमोदन आप्युं, ते उपरथी में आ पाराशर स्मृतिनुं गुजरातीमां भाषांतर कर्युं छे.

भाषांतरनुं स्वरूप. मूल संहितानो पाठ श्रीयुत माधवाचार्यने अनुसरतो स्वीकार्यो छे; टीप्पणीओनो मोटो भाग पण माधवाचार्यनी टीकाने अनुसरीने ज लख्यो छे; कोइ कोइ ठेकाणे पंडित नंदनी तथा धरणीधरनी टीकानो पण उपयोग कर्यो छे. 'नष्टे मृते' श्लोक जेने सुधारावाळा विधवाविवाहनुं मुख्य प्रमाण माने छे ते श्लोक उपर शास्त्रानुसार विस्तारथी विचार कर्यो छे; अने तेनो विचार करवामां शास्त्री यज्ञेश्वर चीमनाजीना "आर्य विद्यासुधाकर" (ग्रंथ)नो घणे भागे आधार लीधो छे. पराशरने क्षेत्रज पुत्र मान्य छे के नथी तेनो निर्णय करवामां नंद पंडितनुं मत दर्शाव्युं छे. ते उपरांत, जननाशौच मरणाशोचनो विषय पण बीजा आशौचना ग्रंथोमांथी टीप्पणीमां दाखल कर्यो छे तथा केटलाएक धार्मिक विषयोने स्फुट करवामाटे धर्मसिंधु निर्णयसिंधु वगेरे धर्मशास्त्रना संग्रहग्रंथोमांथी पण प्रमाणो आप्यां छे; तथा आ धर्मशास्त्रनी प्रस्तावना लखवामां श्रीयुत माधवाचार्यनी उपक्रमणिकानो उपयोग कर्यो छे. ते सर्वनो तथा ग्रंथना कठिन स्थलोनो निर्णय करवामां

वेदशास्त्रसंपन्न शास्त्री महादेव गंगाधर बाक्रेए सहायता करी छे तेमनो पण उपकार मानवामां आवे छे. आ ग्रंथमां भ्रम तथा प्रमादवशथी कोइ ठेकाणे स्खलन थइ गयुं होय तो तेने सज्जनो सुधारीने वांचशे एवी आशा छे.

मुंबई-गुजरातीकार्यालय.
ज्येष्ठसुदि एकादशी
सं० १९६७ } शास्त्री प्राणजीवन हरिहर.

અનુક્રમણિકા.

અધ્યાય ૧ લો.

ગ્રન્થનો ઉપોદ્ઘાત.

ચાર વર્ણના આચાર.

અધ્યાય ૨ જો.

વિષય.	પૃષ્ઠ.	શ્લોક.

અધ્યાય ૩ જો.

જન્મ તથા મરણના સૂતકનો વિચાર.

અધ્યાય ૫ મો.

અધ્યાય ૬ ઠ્ઠો.

અધ્યાય ૭ મો.

અધ્યાય ૮ મો.

અધ્યાય ૯ મો.

અધ્યાય ૧૦ મો.

અધ્યાય ૧૧ મો.

વિષય.	પૃષ્ઠ.	શ્લોક.

અધ્યાય ૧૨ મો.

पाराशर धर्मशास्त्र

अथवा

पा रा श र स्मृ ति.

(मूल अने भाषान्तर साथे.)



अध्याय १ लो.

उपोद्घात.

अथातो हिमशैलाग्रे देवदारुवनालये ।
व्यासमेकाग्रमासीनमपृच्छन्नृषयः पुरा ॥ १ ॥

પૂર્વે હિમાલય પર્વત ઉપર દેવદારુના વનમાં એકાગ્રચિત્ત કરીને બેઠેલા વ્યાસને ઋષિઓ (આ પ્રમાણે) પ્રશ્ન પૂછવા લાગ્યા. ૧

मानुषाणां हितं धर्मं वर्त्तमाने कलौ युगे ।
शौचाचारं यथावच्च वद सत्यवतीसुत ॥ २ ॥

હે સત્યવતીના પુત્ર વ્યાસ! આ ચાલતા કળિયુગમાં લૌકિક અને પારલૌકિક હિત કરનારો ધર્મ, પાપનો નાશ કરનારાં પ્રાયશ્ચિત્તો અને (સ્નાન, આચમન આહ્નિક) આચાર જેવા હોય, તેવા અમને કહો. ૨.

૨. બીજા શ્લોકમાં આ સ્મૃતિમાં પ્રતિપાદન કરવામાં આવનારા ધર્મની સૂચના કરવામાં આવી છે. આ ગ્રંથનો વિષય ધર્મ છે, ધર્મનો ઉપદેશ કરવો, એ આ ગ્રંથનું પ્રયોજન છે, ધર્મનો જિજ્ઞાસુ આ ગ્રંથનો અધિકારી છે અને ધર્મનો પ્રતિપાદ્ય (પ્રતિપાદન કરવા યોગ્ય) ભાવ અને પ્રતિપાદક (પ્રતિપાદન કરનાર) ભાવ અહીં સંબંધ છે. આ ચાર વિષયને શાસ્ત્રકારો અનુબંધ ચતુષ્ટય કહે છે. આ અનુબંધ ચતુષ્ટયનું ઉપલા શ્લોકમાં વર્ણન કરવામાં આવ્યું છે.

तच्छ्रुत्वा ऋषिवाक्यं तु सशिष्योऽग्न्यर्कसन्निभः ।
प्रत्युवाच महातेजाः श्रुतिस्मृतिविशारदः ॥ ३ ॥

અગ્નિ અને સૂર્યના જેવા તેજસ્વી, બ્રહ્મતેજરૂપી મહાન્ તેજવડે દીપી રહેલા, શ્રુતિમાં (વેદમાં) અને સ્મૃતિમાં (ધર્મશાસ્ત્રમાં) કુશળ, શિષ્યોની સાથે બેઠેલા વ્યાસ તે ઋષિઓનું વચન સાંભળીને તેઓના પ્રતિ બોલ્યાઃ—૩.

૩. ચાર વેદના પ્રવર્તક સુમંતુ, જૈમિનિ, વૈશંપાયન, પૈલ તથા પુરાણના પ્રવર્તક સૂત, આ વ્યાસના શિષ્યો તે સમયે વ્યાસની સાથે હતા.

न चाहं सर्वतत्वज्ञः कथं धर्मं वदाम्यहम् ।
अस्मत्पितैव प्रष्टव्य इति व्यासः सुतोऽवदत् ॥ ४ ॥

હું (ધર્મનાં) સર્વ તત્ત્વોને જાણુતો નથી. માટે હું ધર્મનાં તત્ત્વ શી રીતે કહું? માટે મારા પિતાનેજ પૂછો, એમ પરાશરના પુત્ર વ્યાસે કહ્યું. ૪.

૪. 'હું ધર્મનાં સર્વ તત્ત્વોને જાણુતો નથી' એમ જે વ્યાસ કહે છે તે પોતાના પિતાની પ્રશંસા કરવા માટે કહ્યું છે તથા મને પોતાને ધર્મનો ઉપદેશ કરનારા મારા પિતા વિદ્યમાન છે તો પછી તેમને પૂછવું એ વધારે સારું છે તથા પ્રત્યેક યુગમાં કળિયુગના ધર્મ કહેવા માટે મારા પિતાજ અધિકારી છે, આવો વ્યાસનો ગૂઢ અભિપ્રાય છે.

ततस्त ऋषयः सर्वे धर्मतत्त्वार्थकाङ्क्षिणः ।
ऋषिं व्यासं पुरस्कृत्य गता बदरिकाश्रमम् ॥ ५ ॥

તે પછી કળિયુગમાં આચરણુ કરવા યોગ્ય ધર્મનાં તત્ત્વને જાણુવાની ઇચ્છાવાળા તે સર્વે ઋષિઓ ઋષિ વ્યાસને આગળ કરીને બદરિકાશ્રમમાં ગયા. ૫.

नानापुष्पलताऽऽकीर्णं फलवृक्षैरलङ्कृतम् ।
नदीप्रस्रवणोपेतं पुण्यतीर्थोपशोभितम् ॥ ६ ॥

તે બદરિકાશ્રમ અનેક પ્રકારનાં પુષ્પોથી ભરેલી લતાઓથી ભરપૂર હતો, ફળવાળાં વૃક્ષોથી શોભાયમાન હતો, નદીઓથી અને ઝરણાંઓથી યુક્ત હતો, પવિત્ર તીર્થોથી શોભાયમાન હતો, ૬

मृगपक्षिनिनादाढ्यं देवतायतनावृतम् ।
यक्षगन्धर्वसिद्धैश्च नृत्यगीतैरलङ्कृतम् ॥ ७ ॥

મૃગોના અને પક્ષીઓના શબ્દોથી ભરપૂર હતો, દેવોનાં મંદિરોથી શોભાયમાન લાગતો હતો, યક્ષોથી, ગંધર્વોથી અને સિદ્ધોથી વસાયલો

હતો તથા (ગંધર્વાદિકોએ) કરેલાં નૃત્યોથી અને ગીતોથી રમણીય લાગતો હતો. ૭

૬–૭. આ બે શ્લોકમાં આશ્રમની શોભાનું જે વર્ણન કર્યું છે, તે પરાશરની તપની સિદ્ધિનો ઉત્કર્ષ દર્શાવવામાટે કર્યું છે.

तस्मिन्नृषिसभामध्ये शक्तिपुत्रं पराशरम् ।
सुखासीनं महातेजा मुनिमुख्यगणावृतम् ॥ ८ ॥

ત્યાં ઋષિઓની સભામાં મુખ્ય મુનિઓનાં મંડળથી વીંટાયલા, સુખથી બેઠેલા શક્તિના પુત્ર પરાશરને મહા તેજસ્વી એવા વ્યાસે જોયા. ૮.

कृताञ्जलिपुटो भूत्वा व्यासस्तु ऋषिभिः सह ।
प्रदक्षिणाभिवादैश्च स्तुतिभिः समपूजयत् ॥ ९ ॥

તે સમયે વ્યાસે ઋષિઓ સહિત બે હાથ જોડીને, તેમને પ્રદક્ષિણા કરી અને નમસ્કાર કરીને સ્તુતિઓથી તે મહર્ષિની પૂજા કરી. ૯.

ततः संतुष्टहृदयः पराशरमहामुनिः ।
आह सुस्वागतं ब्रूहीत्यासीनो मुनिपुङ्गवः ॥ १० ॥

તે પછી મુનિઓની સભામાં બેઠેલા, મુનિઓમાં શ્રેષ્ઠ, મહામુનિ પરાશર મનમાં સંતુષ્ટ થઇને બોલ્યા કે, તમે ભલે આવ્યા; કહો તમારે શું પૂછવું છે? ૧૦.

कुशलं सम्यगित्युक्त्वा व्यासः पृच्छत्यनन्तरम् ।
यदि जानासि भक्तिं मे स्नेहाद्वा भक्तवत्सल ॥ ११ ॥

धर्मं कथय मे तात अनुग्राह्योस्म्यहं तव ।

વ્યાસ પોતાની કુશળ વાર્તા સારી રીતે કહીને પછી પૂછવા લાગ્યા કે, હે પિતા! તમે જો મારી ભક્તિને જાણો છો, અથવા તો તમે ભક્તવત્સલ છો; માટે સ્નેહથી મને (કળિયુગમાં કરવા યોગ્ય) ધર્મ કહો. કારણ કે હું તમારી કૃપાનું પાત્ર છું. ૧૧.

श्रुता मे मानवा धर्मा वासिष्ठाः काश्यपास्तथा ॥ १२ ॥
गार्गेया गौतमीयाश्च तथा चौशनसाः स्मृताः ।
अत्रेर्विष्णोश्च संवर्त्ताद्दक्षादंगिरसस्तथा ॥ १३ ॥

शातातपाश्च हारीताद्याज्ञवल्क्यात्तथैव च।
आपस्तम्बकृता धर्माः शङ्खस्य लिखितस्य च ॥ १४ ॥
कात्यायनकृताश्चैव तथा प्राचेतसान्मुनेः ।
श्रुता ह्येते भवत्प्रोक्ताः श्रुत्यर्था मे न विस्मृताः ॥ १५ ॥

મેં મનુએ કહેલા, વસિષ્ઠે કહેલા તથા કશ્યપે કહેલા ધર્મ સાંભળ્યા છે. ગર્ગે, ગૌતમે અને ઉશનાએ કહેલા ધર્મ પણ સાંભળ્યા છે. વળી અત્રિ, વિષ્ણુ, સંવર્ત્ત, દક્ષ, અંગિરા, શાતાતપ, હારીત અને યાજ્ઞવલ્ક્યની પાસેથી પણ ધર્મ શ્રવણ કર્યા છે. આપસ્તંબ, શંખ, લિખિત અને કાત્યાયને રચેલાં ધર્મશાસ્ત્ર પણ મેં શ્રવણ કર્યાં છે અને *પ્રાચેતસ મુનિએ કહેલા ધર્મ પણ મેં સાંભળ્યા છે તથા તમે કહેલા વેદોક્ત (અગ્નિહોત્રાદિક) ધર્મોને પણ હું વિસરી ગયો નથી. ૧૨-૧૫.

अस्मिन्मन्वन्तरे धर्माः कृते त्रेतादिके युगे।
सर्वे धर्माः कृते जाताः सर्वे नष्टाः कलौ युगे ॥ १६ ॥

આ ચાલતા મન્વંતરના તથા સત્ય, ત્રેતા અને દ્વાપરયુગના ધર્મ મેં સાંભળ્યા છે. સત્યયુગમાં સર્વે ધર્મ હતા ને મનુષ્યો સર્વ ધર્મનું આચરણ કરતા હતા, પરંતુ તે સર્વ ધર્મ કલિયુગમાં નાશ પામ્યા છે. ૧૬.

चातुर्वर्ण्यसमाचारं किञ्चित्साधारणं वद ।
चतुर्णामपि वर्णानां कर्तव्यं धर्मकोविदैः ॥ १७ ॥
ब्रूहि धर्मस्वरूपज्ञ सूक्ष्मं स्थूलं च विस्तरात् ।

માટે ચારેય વર્ણના આચાર કહો તથા સંક્ષેપમાં સાધારણ ધર્મ કહો. ચારેય વર્ણના ધર્મ જાણનારા પુરુષોનું કર્તવ્ય કર્મ કહો તથા હે ધર્મના સ્વરૂપને જાણનારા પરાશર! ધર્મનું સ્થૂલ તથા સૂક્ષ્મ સ્વરૂપ પણ વિસ્તારથી કહો. ૧૭.

૧૭. વિષ્ણુસ્મૃતિમાં સાધારણ ધર્મ આ પ્રમાણે કહ્યા છેઃ-

क्षमा सत्यं दमः शौचं दानमिन्द्रियसंयमः । अहिंसा गुरुशुश्रूषा तीर्थानुसरणं दया ॥
आत्मवत्वमलोभत्वं देवतानाञ्च पूजनम् । अनभ्यसूया च तथा धर्मः सामान्य उच्यते ॥
वि. स्मृ. २-१६-१७.

* પ્રાચેતસ એ વાલ્મીકિનું નામ છે, આમ રામાયણાદિક ગ્રંથ જોતાં જણાય છે.

ક્ષમા, સત્યભાષણ, આંતર ઇંદ્રિયોનો નિગ્રહ, બાહ્ય શુદ્ધિ, દાન, ઇંદ્રિયોનો નિગ્રહ, મન, વાણી ને કાયાથી કોઈની હિંસા કરવી નહિ, ગુરુસેવા, તીર્થયાત્રા, દયા, આત્માનું જ્ઞાન સંપાદન કરવું, અલોભપણું, દેવતાઓનું પૂજન અને કોઈની પણ ઈર્ષા કરવી નહિ તે, આ સર્વે સાધારણ ધર્મ કહેવાય છે.

બૃહસ્પતિ સ્મૃતિમાં અસાધારણ ધર્મ આ પ્રમાણે કહ્યા છેઃ-

स्वाध्यायोऽध्यापनं चापि यजनं याजनं तथा । दानं प्रतिग्रहश्चापि षट् कर्माण्यग्रजन्मनः ॥
इज्याध्ययनदाने च प्रजानां परिपालनम् । शस्त्रास्त्रधारणं सेवा कर्माणि क्षत्रियस्य तु ॥
स्वाध्यायो यजनं दानं पशूनां पालनंतथा । कुसीदकृषिवाणिज्यं वैश्यकर्माणि सप्त वै ॥
शौचं ब्राह्मणशुश्रूषा सत्यमक्रोध एव च । शूद्रं कर्म तथा मन्त्रो नमस्कारोऽस्य नोदितः ॥

વેદ ભણવો અને ભણાવવો, યજ્ઞ કરવો અને કરાવવો, દાન દેવું અને લેવું, આ ૭ બ્રાહ્મણના અસાધારણ ધર્મ છે. યજ્ઞ કરવો, વેદ ભણવો, દાન દેવું, પ્રજાનું પરિપાલન કરવું, શસ્ત્રોને તથા અસ્ત્રોને ધારણ કરવાં અને બ્રાહ્મણની સેવા કરવી, આ ક્ષત્રિયના અસાધારણ ધર્મ છે. વેદ ભણવો, યજ્ઞ કરવો, દાન દેવું, પશુઓનું પાલન કરવું, વ્યાજનો ધંધો, ખેતીવાડી અને વ્યાપાર કરવો, આ વૈશ્યના સાત અસાધારણ ધર્મ છે. બાહારની ને અંદરની પવિત્રતા, બ્રાહ્મણોની સેવા, સત્ય, ક્રોધનો ત્યાગ તથા સર્વે કર્મો વેદ મંત્રોથી નહિ કરતાં નમઃ એવા પદવડે જ કરવાં, આ શૂદ્રના અસાધારણ ધર્મ છે.

સ્થૂલ અને સૂક્ષ્મ એમ બે પ્રકારનો ધર્મ છે. જે ધર્મ મંદબુદ્ધિવાળા પણ સહજમાં સમજી શકે, તે સ્થૂલ ધર્મ કહેવાય છે. શૌચ, આચમન, સંધ્યાવંદન વગેરે ધર્મ સ્થૂલ ધર્મ છે. શાસ્ત્રવેત્તા મહાન્ પંડિતો જે ધર્મને જાણી શકે, પરંતુ બીજાઓને જેમાં અધર્મની ભ્રાંતિ થાય, તે ધર્મ સૂક્ષ્મ કહેવાય છે. જેમ કે દ્રૌપદીનો, પાંચ પતિઓની સાથે વિવાહ કરવામાં આવ્યો હતો તથા વૃક્ષની એક કન્યાને પ્રચેતાના દશ પુત્રો પરણ્યા હતા. આ સૂક્ષ્મ ધર્મ છે. યુધિષ્ઠિર રાજા જ્યારે ચારે ભાઇઓ સહિત દ્રૌપદીને પરણવા માટે તયાર થયા ત્યારે દ્રુપદ રાજાને એ અધર્મ જણાવ્યો અને તેણે યુધિષ્ઠિર રાજાને કહ્યું કે;-

"लोकवेदविरुद्धोऽयं धर्मो धर्मभृतां वर ।
कर्तुमर्हसि कौन्तेय कस्मात्ते बुद्धिरीदृशी ॥

હે ધર્મવંત્તોમાં શ્રેષ્ઠ કુંતીપુત્ર! તમે આ લોકાચારથી તથા વેદથી વિરુદ્ધ એવો ધર્મ આચરણ કરવાને યોગ્ય છો? તમારી આવી બુદ્ધિ કેમ થયેલી છે?"

म० भा० आ० १९५-२८.

જગતમાં કોઈ પણ સ્ત્રી બે પુરુષને પરણતી હોય એવો વ્યવહાર જોવામાં આવતો નથી. પશુઓમાં પણ એક ગાયને બે સાંઢ હોતા નથી પણ એક જ હોય છે અને બીજો સાંઢ ગાયના ઉપર આવે છે તો પ્રથમનો સાંઢ તેની સાથે યુદ્ધ કરે છે. વેદમાં પણ આ પ્રમાણે શ્રુતિ છેઃ एकस्य बह्वो जाया भवन्ति। नैकस्यै बहवः सह पतयः ॥

એક પુરુષને ઘણી સ્ત્રીઓ હોય છે, પરંતુ એક સ્ત્રીને એક સાથે જ ઘણા પતિઓ હોતા નથી. तै. सं.૬–૫–૪.

બ્રાહ્મણ ગ્રંથમાં પણ કહ્યું છે;–"यदेकस्मिन् यूपे द्वे रशने परिव्ययति तस्मादेको द्वे जाये विन्दते। यन्नैकां रशनां द्वयोर्यूपयोः तस्मान्नैका द्वौ पती विन्दते ॥ એક યજ્ઞસ્તંભમાં બે રશના–(દોરી) બાંધવામાં આવે છે, તેમ એક પુરુષ બે સ્ત્રીને પરણી શકે છે, પરંતુ એક દોરી બે યૂપોને–યજ્ઞસ્તમ્ભને વિશે બાંધવામાં આવતી નથી, તેમ એક સ્ત્રી બે પુરુષને પરણી શકતી નથી."

"આવું દ્રુપદનું કહેવું સાંભળીને યુધિષ્ઠિર રાજા, દ્રુપદરાજાની ધર્મસંબંધી ભ્રાંતિ દૂર કરવા માટે બોલ્યા;–"सूक्ष्मो धर्मो महाराज नास्य विद्मो गतिं वयम्। હે મહારાજ! ધર્મ સૂક્ષ્મ છે. અમે એના સ્વરૂપને જાણતા નથી."

ધર્મવ્યાધના આખ્યાનમાં પણ ધર્મના સૂક્ષ્મ સ્વરૂપનું વર્ણન કરતાં ધર્મ-વ્યાધ કૌશિક બ્રાહ્મણને કહ્યું છે કે, વિદ્યાભ્યાસ કરતાં પણ માતાપિતાની ભક્તિ શ્રેષ્ઠ છે, અભ્યાસ કર્યાં વગર પણ માતાપિતાની ભક્તિથી મને પરબ્ર-હ્મનું જ્ઞાન થયું છે. આ રીતે શાસ્ત્રમાં ધર્મના સૂક્ષ્મ સ્વરૂપનું વર્ણન કર્યું છે.

व्यासवाक्यावसाने तु मुनिमुख्यः पराशरः ॥ १८ ॥
धर्मस्य निर्णयं प्राह सूक्ष्मं स्थूलं च विस्तरात्
शृणु पुत्र प्रवक्ष्यामि शृण्वन्तु मुनयस्तथा ॥ १९ ॥

વ્યાસ બોલી રહ્યા પછી મુનિઓમાં મુખ્ય એવા પરાશર બોલ્યા;– હે પુત્ર! તથા હે મુનિઓ! હું તમને વિસ્તારથી વર્ણના ધર્મનો નિર્ણય તથા સ્થૂલ અને સૂક્ષ્મ ધર્મ વિસ્તારથી કહું છું, તે તું તથા આ મુનિઓ શ્રવણ કરો. ૧૮–૧૯.

कल्पे कल्पे क्षयोत्पत्त्या ब्रह्मविष्णुमहेश्वराः।
श्रुतिस्मृतिसदाचारनिर्णेतारश्च सर्वदा ॥ २० ॥

પ્રત્યેક કલ્પમાં બ્રહ્મા, વિષ્ણુ અને મહેશ્વર તથા શ્રુતિ, સ્મૃતિ અને સદાચારનો નિર્ણય કરનારા ઋષિઓ ઉત્પન્ન થાય છે અને પાછા નાશ પામે છે. ૨૦.

૨૦ સૃષ્ટિની ઉત્પત્તિના આરંભથી પ્રલય કાળના આરંભ સુધીનો જે કાળ, તેનું નામ कल्प કહેવાય છે. કલ્પ બે પ્રકારનો છે. એક महाकल्प અને બીજો अवान्तरकल्प. મૂળ પ્રકૃતિમાંથી જે જગતની ઉત્પત્તિ થાય છે ત્યાંથી લઇને બ્રહ્માનાં સો વર્ષ સુધીનો જે કાળ તે महाकल्प અને બ્રહ્માનો એક દિવસ એ अवांतरकल्प કહેવાય છે. બન્ને કલ્પની વચ્ચે જે ક્ષય થાય છે તે ક્ષય ચાર જાતનો છે. નિત્ય, નૈમિત્તક, પ્રાકૃતિક અને આત્યંતિક. આ ચાર પ્રલયનું કૂર્મ પુરાણમાં આ પ્રમાણે વર્ણન કર્યું છે.

योऽयं सन्दृश्यते नित्यं लोके भूतक्षयास्त्विह ।
नित्यः संकीर्त्यते नाम्ना मुनिभिः प्रतिसंचरः ।
ब्राह्मो नैमित्तिको नाम कल्पान्ते यो भविष्यति ।
महदादिविशेषान्तं यदा संयाति संक्षयम् ।
प्राकृतः प्रतिसर्गोयं प्रोच्यते कालचिन्तकैः ।
ज्ञानादात्यन्तिकः प्रोक्तो योगिनः परमात्मनि ।

આ જગતમાં નિત્ય પ્રાણીઓનો જે ક્ષય જોવામાં આવે છે, તે પ્રલયને મુનિઓ નિત્ય પ્રલય કહે છે. બ્રહ્માનો દિવસ પૂરો થઈ રહેવારૂપ નિમિત્તથી જે પ્રલય થાય છે તેને નૈમિત્તિક પ્રલય કહે છે. મહત્તત્ત્વાદિક, પ્રકૃતિમાંથી ઉત્પન્ન થયાં છે તથા તેઓનો પ્રકૃતિમાં લય થાય છે. કાળનો નિર્ણય કરનારા મુનિઓ આને પ્રાકૃતિક લય કહે છે અને આત્મજ્ઞાનથી આ જગત્ મિથ્યા છે આવો નિશ્ચય થાય છે ત્યારે છીપમાં રૂપાનો આરોપ કરવામાં આવ્યો હોય, તે આરોપ જેમ છીપનું જ્ઞાન થતાંવેંત જ નાશ પામે છે તેમ જગતનો પણ નાશ થાય છે. આને આત્યંતિક પ્રલય કહે છે. યોગીનો જ્ઞાનથી પરમાત્માને વિશે જે લય થાય છે, તે આત્યંતિક પ્રલય કહેવાય છે. (कू. पु. २–४३–५–९)

આ શ્લોકમાં બ્રહ્મા, વિષ્ણુ અને મહેશ્વરના દેહનું આદિપણું દર્શાવ્યું છે. આદિ પરમાત્મા ત્રણ ગુણની વ્યવસ્થા કરવા માટે બ્રહ્મા, વિષ્ણુ અને મહેશ્વર એવાં ત્રણ સ્વરૂપને મહાકલ્પના આરંભમાં ધારણ કરે છે અને મહાપ્રલય સમયે તે ત્રણેય સ્વરૂપનો પાછો લય થાય છે. મૈત્રેય ઉપનિષદમાં કહ્યું છે કેઃ– तस्य प्रोक्ता अग्र्यास्तनवो ब्रह्मा रुद्रो विष्णुरिति । પરમાત્માની બ્રહ્મા, રુદ્ર અને વિષ્ણુ એ ત્રણ મુખ્ય મૂર્ત્તિ કહી છે. स वा एकस्त्रिधाभूतः તે પરમાત્મા એક છે, છતાં ત્રણ ગુણવડે ત્રણ પ્રકારના થયા છે વગેરે વગેરે.

मै. उ. ५–२

न कश्चिद्वेदकर्ता च वेदं स्मृत्वा चतुर्मुखः ।
तथैव धर्मान्स्मरति मनुः कल्पान्तरेऽन्तरे ॥ २१ ॥

કોઈ પુરુષ વેદનો કર્તા નથી. બ્રહ્મા કલ્પના આરંભમાં સ્વયંસિદ્ધ વેદોનું સ્મરણ કરીને ધર્મશાસ્ત્રના ગ્રંથોની રચના કરે છે અને મનુ પોતાના મન્વંતરમાં બ્રહ્માની પાસેથી વેદોનું અધ્યયન કરીને ધર્મશાસ્ત્રની રચના કરે છે. ૨૧.

૨૧. ભગવાન્ વ્યાસે વેદો રચ્યા નથી, પરંતુ તેનો વિસ્તાર કર્યો છે. વેદો તો સ્વયંસિદ્ધ–અપૌરુષેય છે. તેમ બ્રહ્માએ પણ વેદો રચ્યા નથી, પણ તેને ઈશ્વિરે વેદો ભણાવ્યા છે. તેમ પરમાત્માએ પણ વેદની રચના કરી નથી, પરંતુ અનાદિકાળથી સ્વયંસિદ્ધ એવા વેદને પરમાત્માએ પ્રસિદ્ધિમાં આણ્યા છે. આ વિશે મીમાંસાના વેદાધિકરણમાં વિસ્તારથી સોપપત્તિક વર્ણન કરવામાં આવ્યું છે.

अन्ये कृतयुगे धर्मास्त्रेतायां द्वापरे युगे ।
अन्ये कलियुगे नृणां युगरूपानुसारतः ॥ २२ ॥

સત્યયુગમાં મનુષ્યના અન્ય ધર્મ હતા, ત્રેતાયુગમાં મનુષ્યના અન્ય ધર્મ હતા, દ્વાપરયુગમાં મનુષ્યના અન્ય ધર્મ હતા અને કળિયુગમાં મનુષ્યના અન્ય ધર્મ છે. યુગના સ્વરૂપ પ્રમાણે મનુષ્યોના ધર્મો હોય છે. ૨૨.

૨૨. આ શ્લોકમાં અન્ય શબ્દ છે તે ધર્મના સ્વરૂપને કહેનારો નથી; પરંતુ ધર્મના પ્રકારને (ભેદને) કહેનારો છે. જો અન્ય ધર્મ એટલે યુગપરત્વે બીજા ધર્મ હતા એમ કહે તો પછી યુગભેદે કરીને ધર્મમાં પ્રમાણભૂત એવાં વિધિવચનો પણ જૂદાં જ હોવાનો પ્રસંગ આવે. અમુક વિધિવચનો સત્યયુગમાં ભણવાં, અમુક વિધિવચનો દ્વાપરમાં ભણવાં, આવી વ્યવસ્થા નથી. પરંતુ વિધિવચનો તો સર્વ યુગને માટે એક જ છે. ધર્મના જૂદા જૂદા પ્રકારને માટે શાસ્ત્રમાં વચનો મળે છે. બોધાયન કહે છે કે,–

यथाकथंचिन्नित्यानि शक्त्यवस्थानुरूपतः ।
येन केनापि कार्याणि नैव नित्यानि लोपयेत् ॥

હરકોઇ કર્માધિકારી પુરુષે પોતાની શક્તિ અને અવસ્થાના પ્રમાણમાં હરકોઈ પણ પ્રકારે નિત્યકર્મ કરવાં, પરંતુ તેનો લોપ કરવો જ નહિ. આ શ્લોકમાં જે ધર્મ કર્મ ઓછાં વધતાં કરવાનું કહ્યું છે, તે પુરુષની શક્તિને અનુસરીને કહ્યું છે અને એટલા માટે જ મૂળમાં નૃણાં મનુષ્યોએ એમચ બહુવન લખ્યું છે.

આ ૨૨ મો શ્લોક, મનુસ્મૃતિમાં અ. ૧ શ્લોક ૮૫ મો છે અને મહાભારતમાં શાંતિપર્વ-મોક્ષધર્મમાં ૨૩૧ મા અધ્યાયમાં ૨૭ મો અને ૨૬૦ મા અધ્યાયમાં ૮ મો છે. મેધાતિથિ આ શ્લોકનું વ્યાખ્યાન આ પ્રમાણે કરે છેઃ—

કાળના ભેદને લઇને (ફેરફારને લઇને) પદાર્થના સ્વભાવમાં પણ ભેદ થવાનો સંભવ છે. અહીં શ્લોકમાં જે ધર્મ શબ્દ છે તે યાગાદિકનો વાચક નથી. પરંતુ પદાર્થના ગુણનો વાચક છે. પ્રત્યેક યુગમાં પદાર્થના ધર્મ અન્ય હોય છે. જેમકે વસંતમાં પદાર્થનો સ્વભાવ અન્ય (બીજો) હોય છે. ગ્રીષ્મમાં તેથી અન્ય હોય છે. વર્ષામાં તેથી અન્ય હોય છે. તેમ પ્રત્યેક યુગમાં પણ પદાર્થના ધર્મ બદલાય છે. તેથી એકદૃષ્ટ કાર્ય ત્યાગ કરીને અન્ય કાર્યને ઉત્પન્ન કરે છે એમ જાણવું નહિ, પરંતુ શક્તિનો ક્ષય થવાથી કાર્ય સંપૂર્ણ રીતે ઉત્પન્ન થતું નથી એમ જાણવું. એ વાત છેવટે युगह्रासानुपरूतः એ પદથી દર્શાવી છે. જેમ જેમ યુગનો ક્ષય થતો જાય છે તેમ તેમ પદાર્થના ગુણોમાં પણ હાનિ થતી જાય છે.

तपः परं कृतयुगे त्रेतायां ज्ञानमुच्यते ।
द्वापरे यज्ञमेवाहुर्दानमेव कलौ युगे ॥ २३ ॥

સત્યયુગમાં તપ શ્રેષ્ઠ કહેવાય છે, ત્રેતાયુગમાં જ્ઞાન શ્રેષ્ઠ કહેવાય છે, દ્વાપર યુગમાં યજ્ઞને જ શ્રેષ્ઠ કહે છે અને કળિયુગમાં દાનને જ શ્રેષ્ઠ કહે છે. ૨૩.

૨૩. આ શ્લોક મનુસ્મૃતિના અધ્યાય ૧ લાનો ૮૬ મો શ્લોક છે અને મહાભારતના શાંતિપર્વના મોક્ષધર્મમાં અધ્યાય ૨૩૧ નો ૨૮ મો અને ૨૬૦ મા અધ્યાયનો ૯ મો શ્લોક છે. પાઠમાં કંઇંક ફેર છે.

આ શ્લોકમાં પરમ પુરુષાર્થને આપનારા તથા મનુષ્યથી થઈ શકે તેવા ધર્મો યુગાનુસાર દર્શાવ્યા છે. તપ, જ્ઞાન, યજ્ઞ અને દાન એ ધર્મો સર્વે યુગોમાં અવશ્ય કરવા જોઇએ, આવી વેદની આજ્ઞા છે. તપ સર્વ ધર્મમાં શ્રેષ્ઠ છે અને તેનું ફળ પણ મહાન્ છે. પરંતુ દીર્ઘ આયુષ્યવાળા અને રોગરહિત પુરુષથીજ તપ થઈ શકે છે. સત્યયુગમાં મનુષ્યોનું આયુષ્ય ચારસો વર્ષનું હતું અને તેઓ શરીરે આરોગ્ય હતા, તેથી તપ કરવાને યોગ્ય કાળ સત્યયુગ છે આમ કહ્યું છે. આત્મજ્ઞાન તપ કરતાં સહેલું હોવાથી તેને માટે ત્રેતાયુગ કહ્યો છે. કારણ કે ત્રેતા-યુગનાં મનુષ્યો સત્યયુગના મનુષ્યો કરતાં આયુષ્ય અને આરોગ્યમાં ઉતરતાં હતાં, તેના કરતાં પણ યજ્ઞયાગ કરવામાં ઓછી મહેનત પડે છે, તેથી તેને માટે દ્વાપર યુગનો કાળ દર્શાવ્યો છે અને દાન દેવામાં શરીરને કલેશ પડતો નથી, તેમ

અંતઃકરણનો સંયમ પણ કરવો પડતો નથી. તેથી કલિયુગમાં અલ્પ આયુષ્યવાળા નિર્બળ અને રોગાવિષ્ટ પુરુષને દાન કરવાની આજ્ઞા કરવામાં આવી છે. પરંતુ આમ કહેવાથી તે તે ધર્મો અમુક યુગમાં જ કરવા માટે કહ્યાં છે, એમ સમજવું નહિ. વેદોક્ત ધર્મો સર્વ કાળને માટે એક સરખી રીતે જ અધિકારી પરત્વે ઉપદિષ્ટ કર્યાં છે. તપ એટલે ચાંદ્રાયણ આદિ વ્રત, જ્ઞાન એટલે બાહારની ઇંદ્રિયોને વશ કરીને પરમાત્માના સ્વરૂપનું દર્શન, જ્યોતિષ્ટોમ વગેરે યજ્ઞ અને સુપાત્રને શાસ્ત્રોક્ત વિધિથી ગાય, ભૂમિ વગેરે પર્વ ઉપર આપવાં, તેનું નામ દાન.

कृते तु मानवा धर्मास्त्रेतायां गौतमाः स्मृताः ।
द्वापरे शङ्खलिखिताः कलौ पाराशराः स्मृताः ॥ २४ ॥

સત્યયુગમાં મનુએ કહેલા ધર્મ માન્ય ગણાતા હતા, ત્રેતાયુગમાં ગૌતમે કહેલા ધર્મ માન્ય ગણાતા હતા, દ્વાપરયુગમાં શંખ અને લિખિતે કહેલા ધર્મ માન્ય ગણાતા હતા અને કલિયુગમાં પરાશર મુનિએ કહેલા ધર્મ માન્ય ગણાય છે. ૨૪.

૨૪. આ શ્લોકનો ભાવ એવો છે કે, સત્યયુગમાં મનુએ કહેલા ધર્મનો વિશેષ પ્રચાર હતો; તેથી તે સમયે માનવધર્મ શાસ્ત્ર વિશેષ પ્રમાણ ગણાતું હતું. તેમ પરાશરે કલિયુગના ધર્મ વિશેષ કહ્યા છે, તેથી કલિયુગમાં તેની સ્મૃતિનો વિશેષે કરીને આધાર લેવામાં આવે છે. પરંતુ એમ કહેવાથી બીજી સ્મૃતિઓ પ્રમાણરૂપ નથી એમ સમજવાનું નથી. બીજી સ્મૃતિમાં કળિયુગના ધર્મો કહેવામાં આવ્યા નથી. તે ધર્મ કહેવા માટે પરાશરે આ સ્મૃતિ રચીને બીજી સ્મૃતિઓની આકાંક્ષાને પૂર્ણ કરી છે.

त्यजेद्देशं कृतयुगे त्रेतायां ग्राममुत्सृजेत् ।
द्वापरे कुलमेकं तु कर्तारं तु कलौ युगे ॥ २५ ॥

જે દેશમાં પતિત–પાપી (વસતો હોય તે દેશનો સત્યયુગમાં ત્યાગ કરવો, ત્રેતાયુગમાં જે ગામમાં પતિત રહેતો હોય તે ગામનો ત્યાગ કરવો, દ્વાપરયુગમાં પતિત પુરુષના કુળનો–સાત પેઢીનો) ત્યાગ કરવો અને કલિયુગમાં પતિતનો જ ત્યાગ કરવો. ૨૫.

૨૫. પતિતના કુળનો ત્યાગ કરવો, એટલે તેની સાત પેઢી સુધીના પુરુષોની સાથે જમવા જમાડવાનો અને કન્યા લેવા દેવાનો સંબંધ રાખવો નહિ અને પતિતનો ત્યાગ કરવો, એટલે પાપ કરનારા પુરુષની સાથે પ્રીતિપૂર્વક ભાષણાદિક કરવું નહિ તે.

कृते सम्भाषणादेव त्रेतायां स्पर्शनेन च ।
द्वापरे त्वन्नमादाय कलौ पतति कर्मणा ॥ २६ ॥

સત્યયુગમાં પતિત સાથે સંભાષણ કરવાથીજ દોષ લાગે છે, ત્રેતાયુગમાં પતિતનો સ્પર્શ કરવાથી (અડકવાથી) દોષ લાગે છે, દ્વાપર યુગમાં પતિતનું અન્ન (રાધેલું અન્ન) લેવાથી દોષ લાગે છે અને કળિયુગમાં માત્ર પાપ કર્મ કરવાથી પુરુષ પતિત થાય છે. અર્થાત્ પતિતની સાથે સંભાષણ વગેરે કરવાથી પાતક લાગતું નથી. ૨૬.

कृते तात्कालिकः शापस्त्रेतायां दशभिर्दिनैः ।
द्वापरे त्वेकमासेन कलौ संवत्सरेण तु ॥ २७ ॥

સત્યયુગમાં (જે સમયે શાપ આપવામાં આવતો) તેજ સમયે શાપ લાગતો હતો, ત્રેતાયુગમાં દશ દિવસે શાપ લાગતો હતો, દ્વાપરયુગમાં એક મહિના પછી શાપ લાગતો હતો અને કળિયુગમાં (શાપ આપ્યા પછી) એક વર્ષ પછી શાપ લાગે છે. ૨૭.

अभिगम्य कृते दानं त्रेतास्वाहूय दीयते ।
द्वापरे याचमानाय सेवया दीयते कलौ ॥ २८ ॥

સત્ય યુગમાં સામે જઈને (દાન લેનારાને) દાન આપવામાં આવતું હતું, ત્રેતા યુગમાં બોલાવીને દાન આપવામાં આવતું હતું, દ્વાપર યુગમાં માગનારાને દાન આપવામાં આવતું હતું અને કળિયુગમાં સેવા કરનારાને દાન આપવામાં આવે છે. ૨૮.

अभिगम्योत्तमं दानमाहूयैव तु मध्यमम् ।
अधमं याचमानाय सेवादानं तु निष्फलम् ॥ २९ ॥

દાન લેનારાને ઘેર જઈને દાન આપવું એ ઉત્તમ દાન છે, બોલાવીને દાન આપવું એ મધ્યમ દાન છે, યાચના કરનારાને દાન આપવું એ અધમ દાન છે અને સેવા કરાવીને દાન આપવું, એ નિષ્ફળ દાન છે. ૨૯.

૨૯. હમણા ગૃહસ્થો તરફથી દાન કરવામાં આવે છે, પરંતુ તે દાન સેવા કરનારાઓને જ આપવામાં આવે છે અથવા તો કીર્તિને માટે દાન કરવામાં આવે છે. આવાં દાનને આ શ્લોકમાં નિષ્ફળ દાન કહ્યું છે. કારણ કે સેવા કરાવીને અથવા તો કીર્તિને માટે કરવામાં આવનારાં દાન આપનારાને સુપાત્ર બ્રાહ્મણ મળવાનો સંભવ ઘણો જ થોડો રહે છે. તેમ તેમાં શ્રદ્ધાનો પણ અભાવ

હોય છે, તેથી તેવાં દાન નિષ્ફળ થાય છે. સુપાત્રને, સંક્રાંતિ વગેરે પવિત્ર સમયમાં શ્રદ્ધાથી ગાય વગેરેનું દાન આપવામાં આવે છે તો તે દાન ઉગી નીકળે છે.

जितो धर्मो ह्यधर्मेण सत्यं चैवानृतेन च ।
जिताश्चोरैश्च राजानः स्त्रीभिश्च पुरुषाः कलौ ॥ ३० ॥

આ કળિયુગમાં અધર્મે ધર્મને જિત્યો છે, અસત્યે સત્યને જિત્યું છે, ચોરોએ રાજાને જિત્યા છે અને સ્ત્રીઓએ પુરુષોને જિત્યા છે. ૩૦.

૩૦. કળિયુગમાં લોકો અધર્મ કરતાં ડરતા નથી, પળે પળે કારણ વગર પણ જાૂઠું બોલે છે. ચોરો રાજાને ત્રાસ આપ્યા કરે છે તેથી તેઓને ઠેકાણે લાવવા માટે રાજાને મહાપરિશ્રમ વેઠવો પડે છે, માટે ચોરોએ રાજાને જિત્યા છે એમ કહ્યું છે તથા દરેક ઘરમાં સ્ત્રીઓનુંજ પ્રાધાન્ય જોવામાં આવે છે. સાધારણ કામ અથવા તો મોટું કામ કરવાનું હોય તો પણ ઘરધણિયાણીની મરજી અને સલાહ વિના ધણીથી થઈ શકતું નથી. ગૃહસ્થના ઘરમાં સ્ત્રીનો પ્રીતિપાત્ર જેટલો આગળ વધી શકે છે, તેટલો પુરુષનો પ્રીતિપાત્ર આગળ વધી શકતો નથી.

सीदन्ति चाग्निहोत्राणि गुरुपूजा प्रणश्यति ।
कुमार्यश्च प्रसूयंते अस्मिन्कलियुगे सदा ॥ ३१ ॥

આ કળિયુગમાં સદાય અગ્નિહોત્ર નાશ પામ્યાં છે, ગુરુ (માતા પિતા, સાસુ સસરા વગેરે) ની પૂજા પણ નાશ પામી છે અને કુમારિકાઓ છોકરાં જણે છે. ૩૧.

૩૧. આ કળિયુગમાં કોઈ કોઈ નગરમાં કે ગામમાં અગ્નિહોત્ર કવચિત જ હોમવામાં આવે છે. પરંતુ બહુધા તેનો લોપ થયો છે. પુત્રે માતા પિતાની કે ગુરુની અને વહુઓએ સાસુ સસરાની તથા પતિની સેવા તજી દીધી છે અને કુમારિકાઓ કહેતાં નહિ પરણેલી કન્યાઓ છોકરાં જણે છે અને તે કાનીન પ્રજાથી દેશને નુકસાન થવાનો સંભવ છે.

कृते त्वस्थिगताः प्राणास्त्रेतायां मांसमाश्रिताः ।
द्वापरे रुधिरं चैव कलौ त्वन्नादिषु स्थिताः ॥ ३२ ॥

સત્ય યુગમાં પ્રાણ હાડકામાં રહેતા હતા, ત્રેતાયુગમાં માંસમાં રહેતા હતા, દ્વાપરયુગમાં રુધિરમાં રહેતા હતા અને કળિયુગમાં અન્નાદિકમાં રહે છે. ૩૨.

૩૨. સત્યયુગમાં પ્રાણ હાડકામાં રહેતા હતા, તેથી ઘણાં વર્ષો સુધી ઋષિ મુનિઓ આહાર તજી દઇને તપ કરતાં છતાં પણ તેનાં માંસ રુધિર સુકાઈ જતાં, માથે ઝાડ ઉગી નિકળતાં, પણ તેના પ્રાણનો નાશ થતો નહતો. પરંતુ હમણા પ્રાણ અન્નપાનને આધારે રહેલા છે, તેથી અન્નનો આહાર કરવામાં આવતો નથી તો પ્રાણ નાશ પામે છે.

युगे युगे च ये धर्मास्तत्र तत्र च ये द्विजाः ।
तेषां निन्दा न कर्त्तव्या युगरूपा हि ते द्विजाः ॥ ३३ ॥

યુગ યુગના જે ધર્મો છે તેની અને તે તે યુગના બ્રાહ્મણોની નિંદા કરવી નહિ. કારણ કે બ્રાહ્મણો યુગના જેવા હોય છે. ૩૩.

૩૩. બ્રાહ્મણો યુગના જેવા હોય છે એટલે કાળને આધીન હોય છે. કળિયુગમાં સત્યાદિક ધર્મનો નાશ થાય છે અને અધર્મનો પ્રાદુર્ભાવ થાય છે, તેથી બ્રાહ્મણો પણ કળિયુગના જેવા જ જોવામાં આવે છે.

युगे युगे तु सामर्थ्यं शेषं मुनिविभाषितम् ।
पराशरेण चाप्युक्तं प्रायश्चित्तं विधीयते ॥ ३४ ॥

પ્રત્યેક યુગમાં મુખ્ય મુનિના કહેતાં બાકી રહેલા યુગના ધર્મો બીજા મુનિઓએ કહ્યા છે. તેમ જ આ કળિયુગને વિશે પણ પરાશરે પ્રાયશ્ચિત્ત ધર્મ કહ્યા છે, તેથી કળિયુગમાં પરાશરે કહેલા પ્રાયશ્ચિત્ત ધર્મ પાળવામાં આવે છે. ૩૪.

૩૪. સત્યયુગમાં મનુએ કહેલા ધર્મ મુખ્ય ગણાય છે. છતાં બીજા સ્મૃતિકારોએ પણ કેટલાએક અધિક ધર્મ કહ્યા છે. તેમ કળિયુગમાં મનુ, ગૌતમ વગેરેએ કહેલા ધર્મ માન્ય ગણાય છે, પરંતુ પરાશરે કળિયુગને માટે ખાસ ધર્મો તથા પ્રાયશ્ચિત્તો કહ્યાં છે, તેથી કળિયુગમાં પરાશરે કહેલા ધર્મ મુખ્ય મનાય છે.



चार वर्णना आचार.

अहमद्यैव तत्सर्वमनुस्मृत्य ब्रवीमि वः ।
चातुर्वर्ण्यसमाचारं शृण्वन्तु ऋषिपुङ्गवाः ॥ ३५ ॥

હું આજે જ તે સર્વ ધર્મને સંભારીને તમને કહું છું. હે મહાઋષિઓ! ચારેય વર્ણના આચારોને તમે સાંભળો. ૩૫.

૩૫. વ્યાસાદિકને શંકા થાય કે, મંદબુદ્ધિવાળા અને અલ્પ આયુષ્યવાળા કળિયુગના મનુષ્યો સર્વ ગ્રંથોનું જ્ઞાન કેવી રીતે મેળવી શકે? અને ચાર વર્ણના ધર્મને પણ કેવી રીતે જાણી શકે ? તે શંકા દૂર કરવા માટે કહે છે કે, હું હમણા જ તે સર્વ ધર્મને સંભારીને તમને કહું છું. આ શ્લોકમાં 'आचार' શબ્દ છે, તે તે શીલનો વાચક છે. યજન યાજનરૂપ ધર્મનું નામ આચાર. પરાશરે જ આ અધ્યાયના ૩૭ મા શ્લોકમાં જ આચારનો અને ધર્મનો હેતુ અને હેતુમદ્ભાવ દર્શાવવા માટે કહ્યું છે કે;–"आचारो धर्मपालकः આચાર ધર્મનું પાલન કરનારો (રક્ષણ કરનારો) છે." શ્રુતિમાં પણ ધર્મને અને આચારને ભિન્ન ભિન્ન કહેલા છે

यथाकारी यथाऽचारी तथा भवति ।

बृहदारण्यक–उ०–४–४–५

પુરુષ જે પ્રમાણે વિધિ નિષેધાત્મક ધર્મ કર્મ કરે છે તથા જે પ્રમાણે આચરણ કરે છે તેવા પ્રકારનો તે પુરુષ થાય છે. અહીં કહેવાનું તાત્પર્ય એ છે કે, ધર્મ વિધિનિષેધાત્મક તથા નિયત છે અને આચાર અનિયત છે. આચાર વખતપર ન પળાય તો તેને માટે દોષ લાગતો નથી. પરંતુ ધર્મને ન પાળવાથી દોષ લાગે છે.

पराशरमतं पुण्यं पवित्रं पापनाशनम् ।
चिन्तितं ब्राह्मणार्थाय धर्मसंस्थापनाय च ॥ ३६ ॥

પરાશર મુનિએ આ ધર્મશાસ્ત્ર ધર્માનુષ્ઠાનદ્વારા બ્રાહ્મણપણું સંપાદન કરવા માટે તથા ધર્મનો ઉપદેશ આપીને ધર્મની સ્થાપના કરવા માટે રચ્યું છે. તે પરાશરે રચેલું પુણ્યસ્વરૂપ ધર્મશાસ્ત્ર અર્થપૂર્વક વિચાર કરવાથી પાપનો નાશ કરે છે અને પવિત્ર કરે છે. ૩૬.

चतुर्णामपि वर्णानामाचारो धर्मपालकः ।
आचारभ्रष्टदेहानां भवेद्धर्मः पराङ्मुखः ॥ ३७ ॥

આચાર ચારેય વર્ણના ધર્મનું પાલન કરે છે. જેઓનું શરીર આચારથી ભ્રષ્ટ થયેલું છે, તેઓનાથી ધર્મ પરાઙ્મુખ રહે છે અર્થાત્ ધર્મ તેનાથી દૂર રહે છે. ૩૭.

૩૭. ભગવાન્ મનુએ પણ પ્રથમ અધ્યાયમાં આચારનાં વખાણ કરતાં કહ્યું છે કેઃ-

"आचारः परमो धर्मः श्रुत्युक्तः स्मार्त्त एव च ।

શ્રુતિમાં ને સ્મૃતિમાં કહેલો આચાર જ પરમ ધર્મ છે અર્થાત્ આચાર વગર ધર્મની ઉત્પત્તિ થતી જ નથી."

"आचाराद्विच्युतो विप्रो न वेदफलमश्नुते ॥

આચારભ્રષ્ટ પુરુષને વેદોક્ત કર્યાં છતાં પણ તેનાં ફળ મળતાં નથી." મનુએ આગળ વધીને કહ્યું છે કે, આચારભ્રષ્ટ પુરુષો લાંબું આયુષ્ય પણ ભોગવતા નથી. આજકાલ આર્ય પ્રજામાંથી આચારનો સર્વથા નાશ થયો છે. નાહાયા વિના ખાવું, ગમે તેનું ખાવું, ગમે તે ખાવું, અભક્ષ ભક્ષણ અને અપેયપાન કરવું, આ રીતે અનાચારી વર્તનથી ઘણા એક યુવકો અકાળે મરણશરણ થાય છે. ત્યારે કેટલાએક પોતાના પવિત્ર આચાર વિચારવાળા અને ધર્મમાટે સંકટ સહન કરીને પણ આચારને વળગી રહેલા પોતાના જાતિ ભાઇઓને વટલાવવા માટે પ્રયત્ન કરે છે. આ ખેદકારક વાર્તા છે.

षट्कर्माभिरतो नित्यं देवतातिथिपूजकः ।
हुतशेषन्तु भुञ्जानो ब्राह्मणो नावसीदति ॥ ३८ ॥

નિત્ય છ કર્મ કરનારો, દેવતા અને અતિથિનું પૂજન કરનારો તથા વૈશ્વદેવ કર્યા પછી બાકી રહેલાં અન્નનું ભોજન કરનારો બ્રાહ્મણ દુઃખી થતો નથી. (દોષપાત્ર થતો નથી.) ૩૮.

૩૮. આમાં બ્રાહ્મણ શબ્દ છે તે ચારેય જાતિનો વાચક છે. કારણ કે વેદાધ્યયન, વગેરે કર્મ ત્રણ વર્ણોનાં જ છે. પરંતુ દાન, વૈશ્વદેવ, અતિથિપૂજન વગેરે કર્મો મંત્ર ભણ્યા વગર પણ સ્ત્રી તથા શૂદ્રજાતિના પુરુષને પણ કરવાની ધર્મશાસ્ત્રમાં આજ્ઞા છે. વેદ ભણવો તથા ભણાવવો, યજ્ઞ કરવો તથા કરાવવો, દાન દેવું તથા લેવું, આ છ કર્મ બ્રાહ્મણનાં છે. તેમાં અધ્યયન, દાન અને યજ્ઞ આ ત્રણ કર્મ બ્રાહ્મણને ધર્મ અર્થે કરવાં અને અધ્યાપન, પ્રતિગ્રહ તથા યજ્ઞ યાગ કરાવવા, આ ત્રણ કર્મ આજીવિકાર્થે કરવાં તથા આપત્તિ કાળમાં ક્ષત્રિયની અને વૈસ્યની પાસેથી પણ વેદ અને શાસ્ત્ર ભણવાં, આમ ધર્મશાસ્ત્રોમાં કહ્યું છે. ક્ષત્રિય અને વૈસ્યને વેદ ભણવાનો, દાન દેવાનો તથા યજ્ઞ યાગ કરવાનો અધિકાર તથા આપત્તિ કાળમાં વેદ અને શાસ્ત્રો પણ જિજ્ઞાસુ અધિકારીને ભણાવવાં, આવી ધર્મશાસ્ત્રની આજ્ઞા છે. બ્રાહ્મણને અધ્યાપનવૃત્તિ કરવાથી જેટલો દોષ લાગતો નથી—તેટલો દોષ પ્રતિગ્રહ કરવાથી, દાન લેવાથી લાગે છે. કારણ કે અધ્યાપનનો પ્રસંગ બહુધા સંસ્કારી પુરૂષની સાથે જ પડે છે. પરંતુ પ્રતિગ્રહ કરવાનો પ્રસંગ તો સમય ઉપય પતિતની સાથે પણ આવી પડે છે. તેથી ધર્મશાસ્ત્રમાં દાન લેવાને માટે સર્વથા નિષેધ કરવામાં આવ્યો છે અને મનુ કહે છે કે;—"प्रतिग्रहसमर्थोऽपि प्रसंगं तत्र वर्जयेत् બ્રાહ્મણ પ્રતિગ્રહ કરવાને સમર્થ હોય તો પણ તેણે બનતાં સૂધી દાન લેવું નહિ," હમણા કેટલાએક બ્રાહ્મણો ધનની લાલચથી શૂદ્રોને પણ યજ્ઞયાગ કરાવે છે. તેઓ પંડે પણ

દોષના ભાગી થાય છે અને યજ્ઞયાગ કર્તાને કર્મનું ફળ મળતું નથી. દાન વિશે આગળ વિવેચન કરવામાં આવ્યું છે.

અહીં મૂળ શ્લોકમાં દેવતા શબ્દ છે, તે દેવતા કેટલા છે અને તેનું સ્વરૂપ કેવું છે, તેનો બૃહદારણ્યક ઉપનિષદના અધ્યાય ૩ જામાં વિદગ્ધ શાકલ્ય અને યાજ્ઞવલ્ક્યના સંવાદરૂપે નિર્ણય કરવામાં આવ્યો છે. તે મંત્રો આ પ્રમાણે છેઃ–

अथ हैनं विदग्धः शाकल्यः पप्रच्छ । कति देवा याज्ञवल्क्येति । स हैतयैव निविदा प्रतिपेदे । यावन्तो वैश्वदेवस्य निविद्युच्यन्ते । त्रयश्च त्री च शता त्रयश्च त्री च सहस्रेत्योमिति होवाच कत्येव देवा याज्ञवल्क्येति । त्रयस्त्रिंशदित्योमिति । होवाच कत्येव देवा याज्ञवल्क्येति । षडित्योमिति होवाच कत्येव देवा याज्ञवल्क्येति त्रय इत्योमिति होवाच कत्येव देवा याज्ञवल्क्येति द्वावित्योमिति होवाच । कत्येव देवा याज्ञवल्क्येत्यध्यर्द्ध इत्योमिति होवाच । कत्येव देवा याज्ञवल्क्येत्येक इत्योमिति होवाच । कतमे ते त्रयश्च त्री च शता त्रयश्च त्री च सहस्रेति ।

શકલ મુનિના પુત્ર વિદગ્ધે પ્રશ્ન કર્યો કે હે યાજ્ઞવલ્ક્ય! દેવતા કેટલા છે? યાજ્ઞવલ્કયે કહ્યું; આ નિવિદમાંથી–સંખ્યાને નિવેદન કરનારા મંત્રોમાંથી જ જાણી શકાય છે. જેટલા દેવતા વૈશ્વદેવના નિવિદમાં કહ્યા છે, તેટલા દેવતાઓ આ દેવતાઓની સંખ્યા ત્રણ, ત્રણસો, ત્રણ અને ત્રણ હજારની છે. એટલે ત્રણ હજાર, ત્રણસો અને છની છે. વિદગ્ધે પૂછ્યું; અસ્તુ હે યાજ્ઞવલ્કય! દેવો કેટલા છે. યાજ્ઞવલ્કયે ઉત્તર આપ્યો કે; દેવો તેત્રીશ છે. વિદગ્ધે પૂછ્યું; હે યાજ્ઞવલ્કય! અસ્તુ, દેવો કેટલા છે? યાજ્ઞવલ્કયે કહ્યું; દેવો છ છે. વિદગ્ધે પૂછ્યું; હે યાજ્ઞવલ્કય! દેવો કેટલા છે? યાજ્ઞવલ્કયે કહ્યું; દેવો ત્રણ છે. વિદગ્ધે કહ્યું; અસ્તુ, હે યાજ્ઞવલ્કય! દેવો કેટલા છે? યાજ્ઞવલ્કય બોલ્યા; દેવો બે છે. વિદગ્ધે પ્રશ્ન કર્યો; હે યાજ્ઞવલ્કય! અસ્તુ, દેવો કેવો કેટલા છે? યાજ્ઞવલ્કયે ઉત્તર આપ્યો કે; એક દેવ છે. વિદગ્ધે પ્રશ્ન કર્યો; હે યાજ્ઞવલ્કય! અસ્તુ, પરંતુ તમે પ્રથમ કહેલા ત્રણ હજાર, ત્રણસો અને છ દેવ કહ્યા, તે કયા કયા તે કહો.

•सहोवाच महिमान एवैषामेते त्रयस्त्रिंशत्त्वेव देवा इति । कतमे ते त्रयस्त्रिंशदित्यष्टौ वसव एकादशरुदा द्वादशादित्यास्त एकत्रिंशादिन्द्रश्चैव प्रजापतिश्च त्रयस्त्रिंशाविति ।

યાજ્ઞવલ્કયે કહ્યું; આ તેઓના મહિમાને માટે કહ્યું છે. પરંતુ ખરી રીતે તો તેત્રીશ દેવો જ છે. વિદગ્ધે પૂછ્યું; આ તેત્રીસ દેવો કયા છે? યાજ્ઞવલ્કયે કહ્યું;–આઠ વસુઓ, અગિયાર રુદ્રો અને બાર આદિત્યો છે. આ રીતે સર્વે મળીને એકત્રીસ દેવો થયા. તે ઉપરાંત ઇંદ્ર અને પ્રજાપતિ નામના દેવો છે. આ સર્વે મળીને તેત્રીશ દેવો છે.

कतमे वसव इत्यग्निश्च पृथिवी च वायुश्चान्तरिक्षं चादित्यश्च द्यौश्च चन्द्रमाश्च नक्षत्राणि चैते वसव एतेषु हीदं सर्वं हितमिति तस्माद्वसव इति।

આ આઠ વસુઓનાં નામો ક્યાં છે? યાજ્ઞવલ્કયે કહ્યું; અગ્નિ, પૃથ્વી, વાયુ, અંતરિક્ષ, આદિત્ય, સ્વર્ગ, ચંદ્ર તથા નક્ષત્રો. આ વસુઓ કહેવાય છે. આ દેવોમાં સર્વે દેવોનો વાસ હોવાથી તેઓને વસુ કરી કહેવામાં આવે છે.

कतमे रुद्रा इति दशेमे पुरुषे प्राणा आत्मैकादशस्ते यदास्माच्छरीरान्मर्त्यादुत्क्रामन्त्यथ रोदयन्ति तद्यद्रोदयन्ति तस्माद्रुद्रा इति।

વિદગ્ધ શાકલ્યે પૂછ્યું;–હે યાજ્ઞવલ્કય! આ ચાર રુદ્રો કહ્યા, તે કયા છે? યાજ્ઞવલ્કયે ઉત્તર આપ્યો; પુરુષમાં રહેલા દશ પ્રાણ તથા અગ્યારમો આત્મા છે. મૃત્યુ પછી તેઓ આ શરીરનો ત્યાગ કરે છે ત્યારે તેઓ रोदयन्ति કહેતાં રોવરાવે છે, તેથી તે દેવોને રુદ્રો કરીને કહેવામાં આવે છે.

कतम आदित्या इति द्वादश वै मासाः संवत्सरस्यैत आदित्या एते हीदं सर्वमाददाना यन्ति ते यदिदं सर्वमाददाना यन्ति तस्मादादित्या इति॥

વિદગ્ધ શાકલ્યે પ્રશ્ન કર્યો; હે યાજ્ઞવલ્કય! બાર આદિત્ય કયા છે? યાજ્ઞવલ્કયે કહ્યું; સંવત્સરના બાર માસ, તે આદિત્યરૂપ છે. તેઓ આ સર્વને (કર્મથી ઉત્પન્ન થતાં ફળને તથા મનુષ્યનાં આયુષ્યને) હરણ કરી ગમન કરે છે. આ રીતે आददाना यन्ति સર્વને લઇને જાય છે, તેથી તેઓને આદિત્ય કહેવામાં આવે છે.

कतम इन्द्रः कतमः प्रजापतिरिति स्तनयित्नुरेवेन्द्रो यज्ञः प्रजापतिरिति कतमः स्तनयित्नुरित्यशनिरिति कतमो यज्ञ इति पशव इति॥

શાકલ્યે પ્રશ્ન કર્યો; ઇંદ્ર કોણ છે અને પ્રજાપતિ કોણ છે? યાજ્ઞવલ્કયે ઉત્તર આપ્યો; મેઘ ઇંદ્રરૂપ છે અને યજ્ઞ પ્રજાપતિરૂપ છે. શાકલ્યે પ્રશ્ન કર્યો; મેઘ કોણ છે? યાજ્ઞવલ્કયે ઉત્તર આપ્યો; મેઘ વિદ્યુતરૂપ છે. શાકલ્યે પ્રશ્ન કર્યો; યજ્ઞ કોણ છે? યાજ્ઞવલ્કયે ઉત્તર આપ્યો; યજ્ઞ પશુરૂપ છે.

कतमे षडित्यग्निश्च पृथिवी च वायुश्चान्तरिक्षश्चादित्यश्च द्यौश्चैते षडेते हीदं सर्वं षडिति।

શાકલ્યે પ્રશ્ન કર્યો; ૭ દેવતાઓ કયા છે? યાજ્ઞવલ્કયે ઉત્તર આપ્યો; અગ્નિ, પૃથ્વી, વાયુ, અંતરિક્ષ, આદિત્ય અને સ્વર્ગ આ રીતે દેવો છે. કારણ કે આ સર્વનો ઉપર કહેલી ૭ વસ્તુમાં અંતર્ભાવ થઈ જાય છે.

कतमे ते त्रयो देवा इतीम एव त्रयो लोका एषु हीमे सर्वे देवा इति कतमौ तौ द्वौ देवावित्यन्नश्चैव प्राणश्चेति कतमोऽध्यर्द्ध इति योऽयं पवत इति।

શાકલ્યે પ્રશ્ન કર્યો; તમે ત્રણ દેવ કહ્યા, તે કયા છે? યાજ્ઞવલ્કયે ઉત્તર આપ્યો; આ ત્રણ લોકો ત્રણ દેવતાઓ છે. કારણ કે આ ત્રણ દેવતાઓને

વિશે સર્વે દેવોનો અંતર્ભાવ થાય છે. શાકલ્યે પ્રશ્ન કર્યો; હે યાજ્ઞવલ્ક્ય! તમે બે દેવો કહ્યા તે કયા? યાજ્ઞવલ્ક્યે ઉત્તર આપ્યો; અન્ન અને પ્રાણ, એ બે દેવતાઓ છે. શાકલ્યે પ્રશ્ન કર્યો; અધ્યર્દ્ધ (દોઢ) દેવ કોણ છે? યાજ્ઞવલ્ક્યે ઉત્તર આપ્યો; જે દેવ સર્વને પવિત્ર કરે છે તે અધ્યર્દ્ધ દેવ છે.

तदाहुर्यदयमेक इवैव पवतेऽथ कथमध्यर्द्ध इति यदस्मिन्निदं सर्वमध्यार्ध्नोत्तेनाध्यर्द्ध इति कतम एको देव इति प्राण इति स ब्रह्मेत्याचक्षते इति ।

શાકલ્યે કહ્યું; આ વિષયમાં મારી વિરુદ્ધતા છે. કારણ કે જે સર્વ વસ્તુને પવિત્ર કરે છે તે એકરૂપ કેમ થઈ શકે? તેને અધ્યર્દ્ધ કેમ કહી શકાય? યાજ્ઞવલ્કયે ઉત્તર આપ્યો; સ્થાવર જંગમ સર્વ તેના વિશે રહીને ઋદ્ધિ પામે છે, માટે તેને અધ્યર્દ્ધ કહેવામાં આવે છે. શાકલ્યે પ્રશ્ન કર્યો; એક દેવ કોણ છે? યાજ્ઞવલ્કયે ઉત્તર આપ્યો; એક દેવ પ્રાણદેવ છે અને એ દેવને બ્રહ્મ કહેવામાં આવે છે.

बृहदारण्यक उ. ३–९-१--९.

ટીકાકાર માધવ દેવતાનો નિર્ણય કરતાં છેવટ કહે છે કે; દેવતાનું સ્વરૂપ શ્વેતાશ્વતર ઉપનિષદમાં આ રીતે સ્પષ્ટપણે કહ્યું છેઃ–

एको देवः सर्वभूतेषु गूढः सर्वव्यापी सर्वभूतान्तरात्मा ।
कर्माध्यक्षः सर्वभूताधिवासः साक्षी चेता केवलो निर्गुणश्च ॥

श्वेत. उ. ३–११. ब्र. उ. ३.

અતિથિનું સ્વરૂપ પરાશરે પોતે જ કહ્યું છે. અતિથિના પૂજનનું ધર્મશાસ્ત્રમાં ઘણું પુણ્ય કહ્યું છે અને પ્રાચીનકાળમાં અતિથિઓનો સત્કાર આર્યાવર્તમાં ઘણા જ આદરથી કરવામાં આવતો હતો. હજી પણ નાના નાના ગામોમાં અતિથિઓના ભોજનને માટે વ્યવસ્થા કરવામાં આવે છે અને ગામ તરફથી આગંતુક બ્રાહ્મણો, બાવાઓ, સાધુઓ વગેરેને એક બે દિવસનું અન્ન આપીને તેઓનો સત્કાર કરવામાં આવે છે. ગામમાં આવેલો અતિથિ ભૂખ્યો રહેવો ન જોઈએ, આવો સનાતન કાળનો ધર્મ હજી ગામડામાં જોવામાં આવે છે.

सन्ध्या स्नानं जपो होमो देवतातिथिपूजनम् ।
आतिथ्यं वैश्वदेवं च षट् कर्माणि दिने दिने ॥ ३९ ॥

સ્નાન, સંધ્યાવંદન, ગાયત્રીનો જપ, હોમ, દેવતાનું તથા અતિથિનું પૂજન, વૈશ્વદેવનું કર્મ તથા આવેલા અતિથિનો સત્કાર, આ છ કર્મ બ્રાહ્મણાદિક વર્ણે પ્રતિદિવસ કરવાં જોઈએ. ૩૯

૩૯. ગૃહસ્થે શંકર, વિષ્ણુ, ગણપતિ, સૂર્ય અને દેવી આ પાંચ દેવનું નિત્ય પૂજન કરવું જોઇએ. તેમાં જેને જે દેવ ઇષ્ટ હોય, તેને મધ્યમાં બેસાડવા અને બીજા દેવને તેની આસપાસ બેસાડવા. બોપદેવ અને પદાર્થાદર્શ પંચાયતનની સ્થાપના કરવામાટે કહે છે કે; શિવને મધ્યમાં બેસાડવા હોય તો ઇશાન ખૂણાથી લઇને જમણી બાજુથી ચાર ખૂણામાં અનુક્રમે વિષ્ણુ, સૂર્ય, ગણુપતિ અને દેવીને સ્થાપવાં, વિષ્ણુને મધ્યમાં રાખવા હોય તો ખૂણાના ઉપરના અનુક્રમે શિવ, ગણેશ, સૂર્ય અને દેવીને સ્થાપવાં, સૂર્યને મધ્યમાં રાખવા હોય તો ખૂણાના અનુક્રમે શિવ, ગણેશ, વિષ્ણુ અને દેવીને સ્થાપવાં, દેવીને મધ્યમાં રાખવાં હોય તો ખૂણાના એ જ અનુક્રમથી વિષ્ણુ, શિવ, ગણપતિ અને સૂર્યને સ્થાપવા અને ગણપતિને જો મધ્યમાં સ્થાપવા હોય તો ઉપર કહેલા ખૂણાના અનુક્રમે વિષ્ણુ, શિવ, સૂર્ય અને દેવીને સ્થાપવાં. આ રીતે પંચાયતનને ગોઠવવાથી પૂજા કરનારો સુખી થાય છે. પણ વિપરીત રીતે સ્થાપન કરવાથી દુઃખી થાય છે.

ધર્મશાસ્ત્રમાં ગૃહસ્થને નિત્ય પાંચ પ્રકારની હિંસાનો દોષ લાગે છે, તેને માટે ભગવાન્ મનુ કહે છે કે;—

कंडनी पेषणी चुल्ली उदकुंभी च मार्जनी । पंच सूना गृहस्थस्य बध्यते यास्तु वाहयन् ।

ખાંડણીયો, ઘંટી, ચુલો, પાણીયારું અને સાવરણી આ પાંચ વસ્તુનો ગૃહસ્થ નિત્ય ઉપયોગ કરે છે, તેથી ગૃહસ્થને તે દ્વારા પાંચ પ્રકારની હિંસાનો દોષ લાગે છે.

આ પાંચ દોષ દૂર કરવા માટે ગૃહસ્થે નિત્ય પાંચ મહાયજ્ઞ કરવા જોઇએ. એ પાંચ મહાયજ્ઞ મનુસ્મૃતિમાં આ રીતે કહ્યા છે;

अध्यापनं ब्रह्मयज्ञः पितृयज्ञस्तु तर्पणम् । दैवो होमो बलिर्भौतो नृयज्ञोऽतिथिपूजनम् ॥

પોતાનો નિત્ય સ્વાધ્યાય કરવો તેનું નામ બ્રહ્મયજ્ઞ, પિતૃઓનું જળથી તર્પણ કરવું તેનું નામ પિતૃયજ્ઞ, વિશ્વેદેવોને ઉદ્દેશીને અગ્નિમાં હોમ કરવો તેનું નામ વૈશ્વદેવ, ભૂતોને ઉદ્દેશીને બળિ મૂકવા તેનું નામ ભૂતયજ્ઞ અને અતિથિનું પૂજન કરવું તેનું નામ મનુષ્યયજ્ઞ કહેવાય છે. આ પાંચ મહાયજ્ઞમાં વૈશ્વદેવ પણ એક યજ્ઞ છે અને તે દ્વિજ વર્ણના લોકોએ અવશ્ય કરવું જોઇએ. મનુ યાજ્ઞવલ્કય વગેરે, આ પાંચ મહાયજ્ઞ પુરુષે અવશ્ય કરવા અને તેથી સ્વર્ગ લોક મળે છે, એમ કહે છે.

इष्टो वा यदि वा द्वेष्यो मूर्खः पण्डित एव वा ।
वैश्वदेवे तु सम्प्राप्तः सोऽतिथिः स्वर्गसङ्क्रमः ॥४०॥

પોતાનો મિત્ર હોય કે શત્રુ હોય, મૂર્ખ હોય કે પંડિત હોય, પરંતુ

વૈશ્વદેવનું કર્મ થઈ રહ્યા પછી જે આવે છે, તે અતિથિ (સત્કાર કરવાથી) સ્વર્ગ આપે છે. ૪૦

૪૦. ધરણીધર નામના ટીકાકારે स्वर्गसंक्रमः ને બદલે सर्वसंगमः આવો પાઠ સ્વીકાર્યો છે અને તેનો એવો અર્થ કર્યો છે કે, જેના સમાગમથી સત્સંગ આદિ થાય છે. તેમનો આ પાઠ પણ સારો છે. કારણ કે અતિથિ ગુણી હોય તો તેના સમાગમથી સર્વ સત્સંગનો લાભ થાય, એ વાત સંભવે છે.

दूराध्वोपगतं श्रान्तं वैश्वदेव उपस्थितम् ।
अतिथिं तं विजानीयान्नातिथिः पूर्वमागतः ॥ ४१ ॥

ઘણો દૂર માર્ગ ચાલીને આવ્યો હોય અને થાકી ગયો હોય, આવો (બ્રાહ્મણ) વૈશ્વદેવનું કર્મ થઈ રહ્યા પછી આવીને ઉભો રહે તો તેને અતિથિ જાણવો. પરંતુ તેની પહેલાં આવેલો અતિથિ ગણાય નહિ. ૪૧

૪૧. મનુ અતિથિની વ્યાખ્યા કરતાં કહે છે કે;

एकरात्रं हि निवसन्नातिथिर्ब्राह्मणः स्मृतः । જે બ્રાહ્મણ જાતિનો પુરુષ એક રાત્રિ વાસો કરે, તેને અતિથિ જાણવો.

नैकग्रामीणमतिथिं संगृह्णीत कदाचन ।
अनित्यमागतो यस्मात्तस्मादतिथिरुच्यते ॥ ४२ ॥

એક ગામમાં રહેનારા પુરુષને કદી પણ અતિથિ તરિકે સંઘરવો નહિ. પુરુષ એક તિથિ રહેતો નથી, તે માટે તે અતિથિ કહેવાય છે. ૪૨

अतिथिं तत्र संप्राप्तं पूजयेत्स्वागतादिना ।
अर्घ्यासनप्रदानेन पादप्रक्षाळनेन च ॥ ४३ ॥

પોતાને ઘેર આવેલા અતિથિની 'ભલે પધાર્યા' વગેરે આગતા સ્વાગતા કરીને, અર્ધ્ય આપીને, બેસવામાટે આસન આપીને તથા તેના પગ પખાળીને તેની પૂજા કરવી. ૪૩

श्रद्धया चान्नदानेन प्रियप्रश्नोत्तरेण च ।
गच्छन्तं चानुयानेन प्रीतिमुत्पादयेद्गृही ॥ ४४ ॥

શ્રદ્ધાપૂર્વક અન્ન જમાડીને, મન ગમતા પ્રશ્નોત્તર કરીને અને તે જાય તે સમયે તેની પાછળ જઈને ગૃહસ્થાશ્રમીએ (અતિથિને) પ્રસન્ન કરવો. ૪૪

(आसनाऽवसथौ शय्यामनुव्रज्यामुपासनम् ।*
उत्तमे ह्युत्तमं कुर्याद्धीने हीनं समे समम् ॥ १ ॥

ઘેર આવેલા અતિથિને બેસવા માટે આસન આપવું, સુવા માટે શય્યા આપવી, જાય ત્યારે ઘરના સીમાડા સૂધી તેની પાછળ જવું અને તેની ઉપાસના કરવી-સેવા કરવી. આ સર્વ ઉત્તમ અતિથિને ઉત્તમ રીતે કરવાં, મધ્યમને મધ્યમ રીતે કરવાં અને કનિષ્ઠને કનિષ્ઠ રીતે કરવાં. ૧

ब्राह्मणस्य मुखं क्षेत्रं निरूषरमकण्टकम् ।
वापयेत्सर्वबीजानि सा कृषिः सार्वकामिकी ॥ २ ॥

બ્રાહ્મણનું મુખ ખાર વિનાનું અને કાંટા વગરનું ક્ષેત્ર છે. તે ક્ષેત્રમાં સર્વ બીજ વાવવાં; તે ખેતી સર્વ કામનાને પૂર્ણ કરનારી છે. ૨

नानुगृह्णाति यो विप्रो ह्यतिथिं वेदपारगम् ।
अदत्वा चान्नमात्रन्तु भुक्त्वा भुङ्क्ते तु किल्बिषम् ॥ ३ ॥)

જે બ્રાહ્મણ સંપૂર્ણ વેદ ભણેલા અતિથિને અન્ન આપીને તેનો સત્કાર કરતો નથી, પરંતુ પોતે જમે છે તે પાપનું ભોજન કરે છે. ૩

अतिथिर्यस्य भग्नाशो गृहात्प्रतिनिवर्त्तते ।
पितरस्तस्य नश्यन्ति दश वर्षाणि पञ्च च ॥ ४५ ॥

પરંતુ જેના ઘરમાંથી અતિથિ નિરાશ થઇને પાછો ચાલ્યો જાય છે તેના પિતૃઓ પંદર વર્ષ સૂધી ભોજન કરતા નથી. અર્થાત્ તેના વંશજોએ આપેલા પિંડને તેઓ ગ્રહણ કરતા નથી. ૪૫

काष्ठभारसहस्रेण घृतकुम्भशतेन च ।
अतिथिर्यस्य भग्नाशस्तस्य होमो निरर्थकः ॥ ४६ ॥

અતિથિ જેના ઘરમાંથી નિરાશ થઇને જાય છે તે પુરુષ હજાર ભાર કાષ્ઠનો હોમ કરે છે અને સેંકડો ઘડા ઘીનો હોમ કરે છે, તોપણ તેનો હોમ નિષ્ફળ થાય છે. અર્થાત્ અતિથિનો તિરસ્કાર કરનારાને હોમનું ફળ મળતું નથી. ૪૬

---

* માધવે ૧ લા, ૨ જા તથા ૩ જા શ્લોકની ટીકા કરી નથી, તેથી તેને મળેલી પ્રતમાં કદાચ આ શ્લોકો નહિ હોય; પરંતુ બીજા ટીકાકારોએ આ શ્લોક ઉપર ટીકા કરી છે, તેથી આ શ્લોકોને અહીં ક્ષેપક તરીકે દાખલ કર્યા છે.

सुक्षेत्रे वापयेद्बीजं सुपात्रे निक्षिपेद्धनम् ।
सुक्षेत्रे च सुपात्रे च ह्युप्तं दत्तं न नश्यति ॥ ४७ ॥

સારા ક્ષેત્રમાં બીજ વાવવું અને સુપાત્ર તથા યોગ્ય બ્રાહ્મણને ધન આપવું. કારણ કે સારા ક્ષેત્રમાં વાવેલું બીજ અને સુપાત્રને આપેલું દાન નાશ પામતું નથી. ૪૭

न पृच्छेद्गोत्रचरणे न स्वाध्यायं श्रुतं तथा ।
हृदये कल्पयेद्देवं सर्वदेवमयो हि सः ॥ ४८ ॥

અતિથિને ગોત્ર તથા શાખા પૂછવી નહિ, વેદનો અભ્યાસ તથા વ્યાકરણાદિક શાસ્ત્રનો અભ્યાસ પણ પૂછવો નહિ. પરંતુ તેને હૃદયમાં દેવતા કલ્પવો. કારણ કે અતિથિ સર્વ દેવતારૂપ ગણાય છે. ૪૮

अपूर्वः सुव्रती विप्रो ह्यपूर्वश्चातिथिस्तथा ।
वेदाभ्यासरतो नित्यं तावपूर्वौ दिने दिने ॥ ४९ ॥

અતિથિ જેમ અપૂર્વ (પૂર્વે નહિ આવેલો) ગણાય છે, તેમ સંન્યાસીના ધર્મને પાળનારો બ્રાહ્મણ પણ (વૈશ્વદેવ સમયે) આવે તો તેને પણ અપૂર્વ અતિથિ માનવો તથા વેદાભ્યાસમાં પરાયણ રહેનારો બ્રહ્મચારી આવે તો તેને પણ અપૂર્વ અતિથિ જાણવો. સંન્યાસી અને બ્રહ્મચારી દરરોજ આવે, તોપણ તેને અતિથિ જાણવા. ૪૯

वैश्वदेवे तु संप्राप्ते भिक्षुके गृहमागते ।
उद्धृत्य वैश्वदेवार्थं भिक्षुकं तं विसर्जयेत् ॥ ५० ॥

વૈશ્વદેવ કર્યા પહેલા સંન્યાસી ભિક્ષા લેવા માટે આવે તો વૈશ્વદેવને માટે અન્નને જૂદું કાઢી લઇને સંન્યાસીને ભિક્ષા આપીને વિદાય કરવા અને પછી વૈશ્વદેવ કરવો. ૫૦

यतिश्च ब्रह्मचारी च पक्वान्नस्वामिनावुभौ ।
तयोरन्नमदत्त्वा तु भुक्त्वा चान्द्रायणं चरेत् ॥ ५१ ॥

સંન્યાસી તથા બ્રહ્મચારી આ બન્ને રાંધેલાં અન્નના અધિકારી છે. તે બન્નેને અન્ન આપ્યા વગર ભોજન કરે તો ચાંદ્રાયણ કરવું. ૫૧

दद्याच्च भिक्षात्रितयं परिव्राड्ब्रह्मचारिणाम् ।
इच्छया च ततो दद्याद्विभवे सत्यवारितम् ॥ ५२ ॥

સંન્યાસી તથા બ્રહ્મચારીમાંના ત્રણ જણને ભિક્ષા આપવી અને તે પછી જો પોતાની પાસે ધન હોય તો ઇચ્છાપૂર્વક, અટકયા વગર બીજાઓને પણ ભિક્ષા આપવી. ૫૨

यतिहस्ते जलं दद्याद्भैक्ष्यं दद्यात्पुनर्जलम् ।
तद्भैक्ष्यं मेरुणा तुल्यं तज्जलं सागरोपमम् ॥ ५३ ॥

સંન્યાસીને ભિક્ષા આપતી વખતે પ્રથમ સંન્યાસીના હાથમાં જળ આપવું અને પછી ભિક્ષા આપવી અને તે પછી પાછું પણ તેના હાથમાં જળ આપવું. આ રીતે આપેલી ભિક્ષા મેરુ સમાન થાય છે અને હાથમાં આપેલું જળ સાગર સમાન થાય છે. ૫૩

यस्य छत्रं हयश्चैव कुञ्जरारोहमृद्धिमत् ।
ऐन्द्रं स्थानमुपासीत तस्मात्तं न विचारयेत् ॥ ५४ ॥

જેને છત્ર તથા ઘોડા છે તેવા ક્ષત્રિય જાતિના પુરુષનો અતિથિસત્કાર કરવાથી, જેમાં હાથી ઉપર ચઢવાનું, અમૃતનું પાન તથા અપ્સરાઓનું સેવાસુખ વગેરે મળે છે એવા સમૃદ્ધિવાળા ઇંદ્રલોકની પ્રાપ્તિ થાય છે. તે માટે ક્ષત્રિયની જાતિ પૂજ્ય છે કે નથી, તેનો વિચાર કરવો નહિ. ૫૪

૫૪. ક્ષત્રિય પણ વૈશ્વદેવ સમયે પોતાને ઘેર આવે તો તેને પોતાથી ઉતરતી જાતિનો ગણવો નહિ; પરંતુ આ ઈશ્વરની વિભૂતિ છે એવી બુદ્ધિથી તેનું પણ પૂજન કરવું. જો કે તે સંન્યાસીની પેઠે આ જન્મમાં તપસ્વી નથી, પરંતુ પૂર્વ જન્મમાં તપ કરવાથી તેને રાજ્ય મળ્યું છે, માટે તે શ્રેષ્ઠ છે. ભગવાન્ ભગવદ્ગીતામાં કહે છે કેઃ—

यद् यद्विभूतिमत्सत्वं..........मम तेजोंशसंभवम् ।

જે જે વિભૂતિમાન્ પ્રાણી છે તે તે મારા તેજના અંશમાંથી ઉત્પન્ન થયેલું છે, આ રીતે રાજાને પણ ભગવાનની વિભૂતિ માનીને તેનો પણ સત્કાર કરવો.

वैश्वदेवकृतान्दोषान् शक्तो भिक्षुर्व्यपोहितुम् ।
नहि भिक्षुकृतान्दोषान्वैश्वदेवो व्यपोहति ॥ ५५ ॥

વૈશ્વદેવના દોષોને ભિક્ષુક દૂર કરી શકે છે, પરંતુ ભિક્ષુકને ભિક્ષા ન આપવાથી જે દોષ લાગે છે, તેને વૈશ્વદેવ નાશ કરી શકતો નથી. ૫૫

૫૫. આ શ્લોકમાં ભિક્ષુક શબ્દ સંન્યાસીનો તથા વિદ્યાર્થીનો બંનેનો વાચક છે.

अकृत्वा वैश्वदेवं तु भुञ्जते ये द्विजाधमाः ।
सर्वे ते निष्फला ज्ञेयाः पतन्ति नरकेऽशुचौ ॥ ५६ ॥

જે દ્વિજ જાતિના પુરુષો વૈશ્વદેવ કર્યા વિના ભોજન કરે છે, તેઓને તેના નિત્ય કર્મનું ફળ મળતું નથી અને તેઓ અપવિત્ર એવા નરકમાં પડે છે. ૫૬

वैश्वदेवविहीना ये आतिथ्येन बहिष्कृताः ।
सर्वे ते नरकं यान्ति काकयोनिं व्रजन्ति च ॥ ५७ ॥

જેઓ વૈશ્વદેવ કરતા નથી તથા જેઓ અતિથિઓનો સત્કાર કરતા નથી, તે સર્વે નરકમાં પડે છે અને પછી કાગડાની યોનિમાં જન્મે છે. ૫૭

पापो वा यदि चाण्डालो विप्रघ्नः पितृघातकः ।
वैश्वदेवे तु संप्राप्तः सोऽतिथिः स्वर्गसङ्क्रमः ॥ ५८ ॥

પાપી હોય, ચાંડાળ હોય, બ્રહ્મહત્યા કરનારો હોય અથવા તો પિતાનો મારનાર હોય, છતાં વૈશ્વદેવ સમયે જે આવે છે, તે અતિથિ (સત્કાર કરવાથી) સ્વર્ગ આપે છે. ૫૮

૫૮. આ શ્લોકનું તાત્પર્ય એ છે કે, વૈશ્વદેવ થઇ રહ્યા પછી ભોજન વેળાએ હરકોઈ પણ આવી ચઢે તો અન્ન આપીને તેનો સત્કાર કરવો.

यो वेष्टितशिरा भुङ्क्ते यो भुङ्क्ते दक्षिणामुखः ।
वामपादे करं न्यस्य तद्वै रक्षांसि भुञ्जते ॥ ५९ ॥

જે પુરુષ માથે પાઘડી પહેરીને ભોજન કરે છે, જે દક્ષિણ દિશા તરફ મુખ રાખીને ભોજન કરે છે અને જે પુરુષ ડાબા પગ ઉપર હાથ રાખીને ભોજન કરે છે, તેનું ભોજન રાક્ષસો હરી જાય છે. ૫૯

૫૯. આ શ્લોકનું તાત્પર્ય એ છે કે, જો શાસ્ત્રોક્ત વિધિથી ભોજન કરવામાં આવે છે તો ભોજનનું ફળ તૃપ્તિ, પુષ્ટિ, દીર્ઘ આયુષ્ય વગેરે મળે છે.

अव्रता ह्यनधीयाना यत्र भैक्ष्यचरा द्विजाः ।
तं ग्रामं दण्डयेद्राजा चोरभक्तप्रदो हि सः ॥ ६० ॥

જે ગામમાં બ્રહ્મચર્ય વ્રત નહિ પાળનારા તથા વેદાધ્યયન નહિ કરનારા બ્રાહ્મણો ભિક્ષા માંગતા હોય, તે ગામનાં માણસોનો રાજાએ દંડ કરવો. કારણ કે ગ્રામવાસી લોકો ચોરને ભિક્ષા આપે છે. ૬૦

क्षत्रियो हि प्रजा रक्षन् शस्त्रपाणिः प्रदण्डवान् ।
निर्जित्य परसैन्यानि क्षितिं धर्मेण पालयेत् ॥ ६१ ॥

ક્ષત્રિયના ધર્મ.

ક્ષત્રિયે હાથમાં હથિયાર લઈને પ્રજાનું રક્ષણ કરવું, દુષ્ટને શિક્ષા કરવી અને શત્રુનાં સૈન્યોને જિતી લઈને ધર્મથી પૃથ્વીનું પાલન કરવું. ૬૧

पुष्पं फलं विचिनुयान्मूलच्छेदं न कारयेत् ।
मालाकार इवारामे न यथाङ्गारकारकः ॥ ६२ ॥

કોયલા કરનારો કઠિયારો જેમ ઝાડોને મૂળમાંથી ઉખેડી તેને બાળી નાંખીને તેનો નાશ કરે છે, તેમ રાજાએ પણ પોતાની પ્રજાનું સર્વ ધન હરી લઈને તેનો નાશ કરવો નહિ; પરંતુ માળી જેમ વાડીમાં ઉગેલાં વૃક્ષોને પાણી સિંચીને તેનું પોષણ કરે છે અને તેમાંથી પુષ્પોને તથા ફળોને ચુંટે છે, તેમ રાજાએ પણ પોતાની પ્રજાનું પોષણ કરીને તેની પાસેથી પોતાનો કર લેવો. ૬૨

लाभकर्म तथा रत्नं गवां च परिपालनम् ।
कृषिकर्म च वाणिज्यं वैश्यवृत्तिरुदाहृता ॥ ६३ ॥

વૈશ્યના ધર્મ.

વૈશ્યે ધનના લાભ માટે વ્યાજનો ધંધો કરવો, મણિ, મોતી વગેરેનો વ્યાપાર કરવો, ગાયોનું પાલન પોષણ કરવું, ખેતી કરવી અને વ્યાપાર કરવો. આ વૈશ્ય જાતિની આજીવિકા કહી છે. ૬૩

शूद्रस्य द्विजशुश्रूषा परमो धर्म उच्यते ।
अन्यथा कुरुते किंचित्तद्भवेत्तस्य निष्फलम् ॥ ६४ ॥

શૂદ્રના ધર્મ.

શૂદ્રે દ્વિજવર્ણની સેવા કરવી, આ તેનો ઉત્તમ ધર્મ કહેવાય છે. આથી ઉલટું જે કંઈ કર્મ કરે છે, તે તેનું નિષ્ફળ થાય છે. ૬૪

लवणं मधु तैलं च दधि तक्रं घृतं पयः ।
न दुष्येच्छूद्रजातीनां कुर्यात्सर्वेषु विक्रयम् ॥ ६५ ॥

(શૂદ્રથી જો સેવા થઇ શકે નહિ તો) તેણે મીઠું, મધ, તેલ, દહિ, છાસ, ઘી, દુધ આ સર્વનો વ્યાપાર કરવો. આ પદાર્થનો વ્યાપાર કરવાથી શૂદ્ર જાતિના પુરુષોને દોષ લાગતો નથી. ૬૫

विक्रीणन्मद्यमांसानि ह्यभक्ष्यस्य च भक्षणम् ।
कुर्वन्नगम्यागमनं शूद्रः पतति तत्क्षणात् ।। ६६ ।।

પરંતુ શૂદ્ર મદ્યનો અને માંસનો વેપાર કરે છે, નહિ ખાવા યોગ્ય પદાર્થનું ભક્ષણ કરે છે તથા અગમ્ય (નહિ જવા યોગ્ય) સ્ત્રીઓની સાથે ગમન કરે છે તો તેજ વખતે તે પાતકી થાય છે. ૬૬

૬૬. શૂદ્રને તાલનું, ફણસનું, દ્રાક્ષનું, મહુડાનું અને ખજૂર વગેરેનું મદ્ય પીવાની મનાઈ છે, ગાય વગેરેનું માંસ ખાવાનો નિષેધ છે તથા સગી બેન અને પુત્ર, કાકા, મામા, માસી વગેરે સંબંધીઓની પુત્રીઓ અગમ્યા ગણાય છે.

कपिलाक्षीरपानेन ब्राह्मणीगमनेन च ।
वेदाक्षरविचारेण शूद्रस्य नरकं ध्रुवम् ।। ६७ ।।

इतिश्री पराशरसंहितायां चातुर्वर्ण्याचारो नाम प्रथमोध्यायः ।। १ ।।

કપિલા (રાતા તથા પીળા રંગવાળી) ગાયનું દુધ પીવાથી, બ્રાહ્મણ જાતિની સ્ત્રી સાથે ગમન કરવાથી અને વેદના મંત્રોનો વિચાર કરવાથી (વેદ ભણવાથી) શૂદ્રને અવશ્ય નરક મળે છે. ૬૭

ઇતિ શ્રી પારાશર ધર્મશાસ્ત્રમાં 'ચાર વર્ણનો આચાર' એ નામનો
અધ્યાય ૧ લો સમાપ્ત.



अध्याय २ जो.

गृहस्थाश्रमीना आचार.

अतःपरं गृहस्थस्य कर्माचारं कलौ युगे ।
धर्मं साधारणं शक्त्या चातुर्वर्ण्याश्रमागतम् ।। १ ।।
तं प्रवक्ष्याम्यहं पूर्वं पराशरवचो यथा ।

હવે પછી કળિયુગમાં ગૃહસ્થાશ્રમી પુરુષનાં કર્મ, આચાર તથા ચારેય વર્ણનો અનુક્રમથી ઉતરી આવેલો સાધારણ ધર્મ પૂર્વ કલ્પમાં પરાશરે જે પ્રમાણે કહ્યો હતો, તે પ્રમાણે હું (પણ) મારી શક્તિ અનુસાર કહીશ. ૧

૧. આ શ્લોકમાં કર્મ શબ્દ છે તે સાધારણ લૌકિક વ્યાપારને કહેનારો છે અને આચાર શબ્દ છે તે શાસ્ત્રીય વ્યવહારને કહેનારો છે.

આ બીજા અધ્યાયમાં બ્રાહ્મણ, ક્ષત્રિય, વૈશ્ય તથા શૂદ્રના આચાર વર્ણ-વવામાં આવ્યા છે અને આચાર શબ્દનો અર્થ, આજીવિકા માટે કરવામાં આવતાં કર્મ, આવો કર્યો છે. કલિયુગમાં યાજન, અધ્યાપન વગેરેથી બ્રાહ્મણોની આજી-વિકા ચાલી શકશે નહિ, આમ ધારીને ભગવાન્ પરાશર બ્રાહ્મણને ખેતી વગેરે કરવાની આજ્ઞા કરે છે, તેથી કલિયુગમાં ખેતી વગેરેનો આચાર શબ્દથી વ્યવહાર કરવામાં આવે છે.

षट्कर्मनिरतो विप्रः कृषिकर्म समाचरेत् ॥ २ ॥

બ્રાહ્મણે પ્રથમ અધ્યાયમાં કહેલાં સંધ્યા, ગાયત્રીનો જપ, હોમ વગેરે છ કર્મ નિત્ય કરવાં અને સેવક એવા શૂદ્રોની પાસે ખેતી કરાવવી. ૨

૨. બ્રાહ્મણની અધ્યાપન, યાજન અને પ્રતિગ્રહ (દાન લેવા)થી જો આજીવિકા ચાલતી ન હોય તો તેણે ખેતીવાડી કરીને પોતાની આજીવિકા ચલાવવી. ભગવાન્ મનુએ આપત્તિ કાળમાં બ્રાહ્મણે કેવી રીતે આજીવિકા કરવી, એ વાત કહેતાં કહ્યું છે કે; બ્રાહ્મણે ક્ષત્રિયનાં કર્મ કરીને આજીવિકા કરવી અને તેથી પણ જો જીવિકા ચાલે નહિ તો વૈશ્યનાં કર્મ કરીને એટલે વ્યાપાર કરીને આજીવિકા કરવી. પરંતુ પ્રાણીની હિંસાવાળી અને વરસાદને આધીન હોવાથી પરા-ધીન એવી ખેતી કરવી નહિ. પરંતુ જો उभाभ्यामप्यजीवंस्तु कथं स्यादिति चेद्भवेत्। कृषिगोरक्ष्यमास्थाय जीवेद्वैश्यस्य जीविकाम् । ક્ષત્રિયની વૃત્તિથી અને વૈશ્યની વ્યાપાર વૃત્તિથી પોતાની આજીવિકા ચાલે નહિ તો પછી ખેતી અને ગોરક્ષારૂપ વૈશ્યની આજીવિકાથી જીવવું. मनुस्मृ० १०=८२.

જો બીજાની પાસે ખેતી કરાવવાની શક્તિ હોય તો તેમ કરવું અને તેવી જાતની શક્તિ ન હોય તો પંડે પણ ખેતી કરવી. દેશ, કાળ તથા શક્તિને અનુસરીને વર્તવું. બ્રાહ્મણે સંકટના સમયમાં પણ વ્યાજ વટંતરના ધંધાથી આજી-વિકા કરવી નહિ. આવો મનુ, પરાશર વગેરે ધર્મશાસ્ત્રકારોનો મત જણાય છે.

क्षुधितं तृषितं श्रान्तं बलीवर्दं न योजयेत् ।
हीनाङ्गं व्याधितं क्लीबं वृषं विप्रो न वाहयेत् ॥ ३ ॥

ખેતીના કામમાં ભુખ્યા, તરસ્યા, થાકી ગયેલા, ઓછા અંગવાળા, રોગી અને નપુંસક એવા બળદને જોડવો નહિ. ૩

स्थिराङ्गं नीरुजं तृप्तं सुनर्दं षण्ढवर्जितम् ।
वाहयेद्दिवसस्यार्द्धं पश्चात्स्नानं समाचरेत् ॥ ४ ॥

પરંતુ શરીરે હૃષ્ટપુષ્ટ, રોગ વિનાના, ભુખ અને તરસ વિનાના, મોટા અવાજ કરનારા, ષંઢપણાથી રહિત-(શક્તિમાન્) એવા બળદને અર્ધો દિવસ હળે જોડવો અને પછી સ્નાન કરવું. ૪

૪. મહાભારતમાં તથા બૃહત્પારાશર ધર્મશાસ્ત્રમાં પ્રથમ બળદને સ્નાન કરાવવું એટલે નવરાવવા અને પછી પોતે સ્નાન કરવું આમ લખ્યું છે; પરંતુ આ શ્લોકમાં स्नानं समाचरेत् એ પદનું વિવેચન કરતાં માધવ કહે છે કે, પછી બળદને સ્નાન કરાવવું.

जप्यं देवार्चनं होमं स्वाध्यायं चैवमभ्यसेत् ।
एकद्वित्रिचतुर्विप्रान्भोजयेत्स्नातकान् द्विजः ॥ ५ ॥

સ્નાન કર્યા પછી બ્રાહ્મણે જપ કરવો, દેવતાની પૂજા કરવી, વૈશ્વદેવ કરવો અને સ્વાધ્યાય (પોતાના વેદનો પાઠ) કરવો તથા એક, બે, ત્રણ અથવા તો ચાર સ્નાતક બ્રાહ્મણોને જમાડવા. ૫

૫. સ્નાતક બ્રાહ્મણોને પોતાનાં પાપ દૂર કરવા માટે જમાડવા. આ સ્નાતક બ્રાહ્મણો તે નવ પ્રકારના ધર્મભિક્ષુક બ્રાહ્મણ જાણવા. મનુ નવ ભિક્ષુકોની વ્યાખ્યા આ પ્રમાણે કરે છે;–

सान्तानिकं यक्ष्यमाणमध्वगं सर्ववेदसम् ।
गुर्वर्थपितृमात्रर्थं स्वाध्यायार्थ्युपतापिनम् ॥

સંતાનને માટે વિવાહની ઇચ્છાવાળો, યજ્ઞ કરવાની ઇચ્છાવાળો, વાટમાર્ગુ, સર્વસ્વ દક્ષિણા નામનો યાગ કરીને નિર્ધન થઈ ગયેલો, ગુરુ, પિતા અને માતાનું પોષણ કરવાની ઇચ્છાવાળો, વેદાધ્યયન કરવાની ઇચ્છાવાળો તથા રોગી, આ નવ ધર્મભિક્ષુક કહેવાય છે અને તેઓને જમાડવાથી અથવા તો દાન આપવાથી પુણ્યનો લાભ થાય છે.

स्वयङ्कृष्टे तथा क्षेत्रे धान्यैश्च स्वयमर्जितैः ।
निर्वपेत्पञ्च यज्ञांश्च क्रतुदीक्षां च कारयेत् ॥ ६ ॥

પોતે ખેડેલા ક્ષેત્રમાં વાવેલાં ધાન્યોથી તથા પોતાના દાસોએ ખેડીને ઉત્પન્ન કરેલાં ધાન્યોવડે પાંચ મહાયજ્ઞ કરવા તથા અગ્નિષ્ટોમ વગેરે યજ્ઞો કરવા. ૬

૬. બ્રહ્મયજ્ઞ, પિતૃયજ્ઞ, વૈશ્વદેવ, ભૂતયજ્ઞ તથા મનુષ્યયજ્ઞ (અતિથિનો સત્કાર) આ પાંચ મહાયજ્ઞ છે.

तिला रसा न विक्रेया विक्रेया धान्यतः समाः ।
विप्रस्यैवंविधा वृत्तिस्तृणकाष्ठादिविक्रयः ॥ ७ ॥

બ્રાહ્મણે તલ તથા રસ (દુધ, દહી, મધ ઘી વગેરે) વેચવા નહિ અને ધર્મક્રિયાને માટે તલ વેચવા હોય તો તલના સમાન (ભારો ભાર) બીજું ધાન્ય લઈને તલ આપવા તથા ખડ, લાકડાં વગેરે પણ વેચવાં. આ રીતે બ્રાહ્મણની આજીવિકા છે. ૭

૭. બ્રાહ્મણની જો આજીવિકા ચાલતી ન હોય તો તેણે પોતાના ક્ષેત્રનાં લાકડાં, ખડ વગેરે વેચીને પણ પોતાની આજીવિકા ચલાવવી તથા યજ્ઞ યાગ શિવાય બીજા કોઈપણ કામમાં તલ વેચવા નહિ. તેમ દહિ, દુધ, ઘી, તેલ વગેરેના પણ વ્યાપાર કરવો નહિ. હાલમાં કેટલાએક બ્રાહ્મણો દુધ વેચવાનો ધંધો લઈ બેઠા છે એટલું જ નહિ, પરંતુ કેટલાએક વીસીનો ધંધો, કેટલાએક જોડા વેચવાનો તથા વસ્ત્રો ધોવાનો પણ ધંધો કરે છે, છતાં પોતાની જ્ઞાતિમાં કુળવાન્ હોવાનો દાવો કરે છે.

ब्राह्मणश्चेत्कृषिं कुर्यात्तन्महादोषमाप्नुयात् ।
संवत्सरेण यत्पापं मत्स्यघाती समाप्नुयात् ॥ ८ ॥
अयोमुखेन काष्ठेन तदेकाहेन लांगली ।

બ્રાહ્મણ જો ખેતી કરે તો તેને મહા દોષ લાગે. માછલાં મારનારો એક વર્ષમાં જેટલું પાપ કરે છે, તેટલું પાપ લોઢાનાં મુખવાળા એટલે અણીવાળાં હળથી જમીનને ખેડનારો ખેડુત એક દિવસમાં પ્રાપ્ત કરે છે. ૮

पाशको मत्स्यघाती च व्याधः शाकुनिकस्तथा ॥ ९ ॥
अदाता कर्षकश्चैव सर्वे ते समभागिनः ।

પાશ નાંખીને મૃગ વગેરેને પકડનારો, માછલા મારનારો, પારાધી, પક્ષીઓની હિંસા કરનારો તથા ખળામાં માગવા આવનારાઓને ધાન્ય નહિ આપનારો ખેડુત, આ સર્વે સરખા પાપના ભાગી છે. ૯

वृक्षं छित्त्वा महीं भित्त्वा हत्वा च कृमिकीटकान् ॥ १० ॥
कर्षकः खलयज्ञेन सर्वपापैः प्रमुच्यते ।

ખેતી કરનારો ઝાડોને કાપે છે, પૃથ્વીને ખોદે છે તથા નાના અને મોટા જીવોની હત્યા કરે છે. આ સર્વ પાપોમાંથી તે ખલ યજ્ઞ કરીને છૂટે છે. ૧૦

૧૦. સાંપ્રત કાળમાં પણ ગામડાઓમાં નવું ધાન્ય તયાર થાય છે, એટલે તેને સાફ સુફ કરીને ખેતરમાં તેના ઢગલાઓ કરવામાં આવે છે; અને સરકારી અધિકારીઓ તેની ઢાળ કરીને પોતાનો ભાગ લઈ ગયા પછી ખેડુતો પોતાના અનાજમાંથી યથાશક્તિ બ્રાહ્મણોને દાન આપે છે અને તેને खलयज्ञ કરીને કહેવામાં આવે છે. આ ખલયજ્ઞના બે સમય હોય છે. એક માર્ગશીર્ષ માસ અને બીજો ચૈત્ર માસ. આ બન્ને સમય ઉપર બ્રાહ્મણો પોતાની આસપાસના ગામડાઓમાં માંગણી કરવા માટે ઉતરી પડે છે અને કણબીઓ તેઓને નવાં ધાન્યનું દાન કરે છે.

यो न दद्याद्द्विजातिभ्यो राशिमूलमुपागतः ॥ ११ ॥
स चौरः स च पापिष्ठो ब्रह्मघ्नं तं विनिर्दिशेत् ।

જે ખેડુત ધાન્યના ઢગલા પાસે આવેલા બ્રાહ્મણોને ધાન્ય આપતો નથી, તે ચોર અને મહાપાપી છે અને તેને બ્રહ્મહત્યા કરનારો કહેવો. ૧૧

राज्ञे दत्त्वा तु षड्भागं देवानां चैकविंशतिम् ॥ १२ ॥
विप्राणां त्रिंशकं भागं सर्वपापैः प्रमुच्यते ।

રાજાને છઠ્ઠો ભાગ, દેવને એકવીસમો ભાગ અને બ્રાહ્મણોને ત્રીસમો ભાગ આપવાથી ખેતી કરનારો ખેતીનાં સર્વ પાપોમાંથી છૂટે છે. ૧૨

क्षत्रियोपि कृषिं कृत्वा देवान्विप्रांश्च पूजयेत् ॥ १३ ॥
वैश्यः शूद्रस्तथा कुर्यात्कृषिवाणिज्यशिल्पकम् ।

ક્ષત્રિયે પણ ખેતી કરવી અને દેવતાઓનું તથા બ્રાહ્મણોનું પૂજન કરવું તથા વૈશ્યે અને શૂદ્રે પણ ખેતી, વ્યાપાર અને શિલ્પ કામ (કળાનાં કામ) કરવાં. ૧૩

૧૩. શિલ્પ એટલે સુતાર, સલાટ, કડીયા વગેરેનાં કામ તથા ચિત્ર વગેરે કારીગિરિનાં કામ. માધવ કહે છે, કે કળિયુગમાં ખેતીની પેઠે વ્યાપાર અને શિલ્પ પણ ચારેય વર્ણે કરવાં. કારણ કે મૂળ શ્લોકમાં वाणिज्यशिल्पकम् એમ કહ્યું છે તે ચારેય વર્ણને સાધારણ રીતે આજીવિકા માટે કરવા યોગ્ય છે, આમ દર્શાવવાને કહ્યું છે.

विकर्म कुर्वते शूद्रा द्विजशुश्रूषणोज्झिताः ॥ १४ ॥
भवन्त्यल्पायुषस्ते वै निरयं यान्त्यसंशयम् ।

શૂદ્રો જો દ્વિજવર્ણની સેવા તજી દઈને બીજાં કર્મ કરે છે તો તેઓનું આયુષ્ય ઓછું થાય છે તથા તેઓ અવશ્ય નરકમાં પડે છે. ૧૪

चतुर्णामपि वर्णानामेष धर्मः सनातनः ॥ १५ ॥

इति श्री पाराशरसंहितायां गृहस्थधर्माचारो नाम द्वितीयोध्यायः ॥ २ ॥

ચારેય વર્ણનો આ સનાતન ધર્મ મેં તમને કહ્યો. ૧૫

૧૫. આજ દિવસ સુધીમાં જેટલા કળિયુગો વીતી ગયા છે તેટલા સર્વે કળિયુગોમાં બ્રાહ્મણો આપત્કાળમાં ખેતી વગેરે કરીને જીવિકા કરતા હતા, તેથી ખેતી વગેરે કર્મને सनातनः એવું વિશેષણ આપ્યું છે. સનાતન ધર્મ એટલે જૂના કાળનો અને પરંપરાથી ચાલતો આવેલો આચાર.

ઇતિ શ્રી પારાશરધર્મશાસ્ત્રમાં 'ગૃહસ્થના સનાતન ધર્મ' એ નામનો અધ્યાય ૨ જો સમાપ્ત.



अध्याय ३ जो.

सूतकादिकनी शुद्धिनो विचार.

अतः शुद्धिं प्रवक्ष्यामि जनने मरणे तथा ।
दिनत्रयेण शुद्ध्यन्ति ब्राह्मणाः प्रेतसूतके ॥ १ ॥

હવે હું જનનાશૌચની એટલે જન્મના સૂતકની તથા મરણાશૌચની એટલે મરણના સૂતકની શુદ્ધિ કહું છું. બ્રાહ્મણો મરણના સૂતકમાંથી ત્રણ દિવસે શુદ્ધ થાય છે. ૧

૧. સમાનોદકોને મરણાશૌચ ત્રણ રાત્રિ લાગે છે. મનુ કહે છે કે;–"त्र्यहात्तूदकदायिनः સમાનોદકોને ત્રણ દિવસ મરણ સૂતક લાગે છે." સપિંડ અને સમાનોદકને માટે મનુ લખે છે કે;—

सपिंडता पुरुषे सप्तमे विनिवर्तते । समानोदकभावस्तु जन्मनाम्नोरवेदने ॥

સાતમા પુરુષ સુધી સપિંડપણું રહે છે અને સાત પેઢી પછી સમાનોદકપણું જન્મ અને નામ વિસરી જવામાં આવે ત્યાંસુધી રહે છે. પરંતુ બીજા ધર્મશાસ્ત્રકારો કહે છે કે समानोदकभावस्तु निवर्तेत चतुर्दशे । સમાનોદકપણું સપિંડના સાતમા પુરુષ પછી બીજા સાત પુરુષ સુધી રહે છે. અર્થાત્ ચૌદમા પુરુષ પછી પંદરમામાં નિવૃત્ત થાય છે. આ શ્લોકમાં બ્રાહ્મણ મરણના સૂતકમાંથી ત્રણ દિવસે જે શુદ્ધ થાય

છે એમ લખ્યું છે તે સપિંડના સૂતકમાંથી નહિ, પરંતુ સમાનોદકના સૂતકમાંથી ત્રણ દિવસે શુદ્ધ થાય છે, એમ સમજવું. અથવા તો દેવલના મત પ્રમાણે બ્રાહ્મણ વગેરેના ગુણોને અનુસરીને તેના સૂતકમાં પણ ફેરફાર છે.

चत्वार्यधीतवेदानामहान्याशौचमिष्यते । वेदाग्नियुक्तविप्रस्य त्र्यहमाशौचमिष्यते ॥

વેદ ભણેલા બ્રાહ્મણોને ચાર દિવસ સુધી સૂતક લાગે છે અને વેદ ભણેલા તથા અગ્નિહોત્ર હોમનારા બ્રાહ્મણને ત્રણ દિવસ સુધી સૂતક લાગે છે.

મનુ પણ કહે છે કે;–न वर्धयेदघाहानि અગ્નિહોત્રી બ્રાહ્મણે સૂતકના દિવસોમાં વૃદ્ધિ કરવી નહિ." વગેરે ધર્મશાસ્ત્રનાં વચનો છે, તે ઉપરથી અહીં અગ્નિહોત્રી બ્રાહ્મણને માટે કહ્યું છે એમ સમજવું; પરંતુ જેઓ અગ્નિહોત્રી નથી તેવા નિર્ગુણ બ્રાહ્મણે તો દશ દિવસ સુધી સૂતક પાળવું.

क्षत्रियो द्वादशाहेन वैश्यः पञ्चदशाहकैः ।
शूद्रः शुद्ध्यति मासेन पराशरवचो यथा ॥ २ ॥

ક્ષત્રિય બાર દિવસે શુદ્ધ થાય છે, વૈશ્ય (વાણીયો) પંદર દિવસે શુદ્ધ થાય છે અને શૂદ્ર એક મહિને શુદ્ધ થાય છે, આવું પરાશરનું વચન છે. ૨

उपासने तु विप्राणामङ्गशुद्धिस्तु जायते ।
ब्राह्मणानां विशुद्धौ तु देहस्पर्शो विधीयते ॥ ३ ॥

બ્રાહ્મણ વગેરે દ્વિજ વર્ણને સંધ્યાવંદન કરવા માટે તથા અગ્નિમાં હોમ કરવા માટે તેટલો સમય શરીર શુદ્ધ રહે છે. પરંતુ તે શિવાય બીજે વખતે તેઓનો સ્પર્શ કરવો નહિ. (જનનાશૌચમાં ત્રણે વર્ણના સૂતકીનો સ્પર્શ કરી શકાય છે.) ૩

૩. ધર્મસિંધુ કર્તા જાતાશૌચમાં અને મરણાશૌચમાં કયાં કર્મ કરવાં અને કયાં કર્મ ન કરવાં, તે વિશે આ રીતે નિર્ણય આપે છે;–પ્રાણાયામ, મંત્ર ભણ્યા વગર કરવો, માર્જનના મંત્રો મનમાં ભણીને માર્જન કરવું, ગાયત્રી મંત્રનો સ્પષ્ટ રીતે ઉચ્ચાર કરીને સૂર્યને અર્ધ આપવા, ઉપસ્થાન (સૂર્ય પ્રાર્થના) કરવું નહિ, માર્જન કરે અથવા તો ન કરે તોપણ ચાલે, સૂર્યનું ધ્યાન કરીને નમસ્કાર કરવા, ગાયત્રી મંત્રનો જપ કરવો નહિ તથા અર્ધ્ય પર્યંત મનમાં ઉચ્ચારણ કરીને સંધ્યા કરવી. આવાં ધર્મશાસ્ત્રનાં વચન છે. કોઇ કોઈ ધર્મશાસ્ત્રકર્તા કહે છે કે, મનમાં દશવાર ગાયત્રીનો ઉચ્ચાર કરીને જપ કરવો. વૈશ્વદેવ, બ્રહ્મયજ્ઞ વગેરે પાંચ મહાયજ્ઞ કરવા નહિ, ઔપાસન અગ્નિમાં હોમ અને પિંડપિતૃ-

યજ્ઞ ભિન્ન ગોત્રીની પાસે કરાવવા. અહીં પરાશર કહે છે કે, શ્રૌત કર્મ કરવું હોય તો તે કર્મ કરવા સુધી શરીર શુદ્ધ રહે છે. માટે અગ્નિહોત્રમાં જાતે જ હોમ કરવો. ત્યારે બીજાઓ કહે છે કે; બીજાની પાસે કરાવવો. સૂતકમાં જાતે સ્થાલીપાક સૂતક ઉતરી ગયા પછી કરવો અથવા તો બ્રાહ્મણની પાસે કરાવવો. દર્શ વગેરે શ્રાદ્ધ, સૂતકમાં કરવાં નહિ. સાંવત્સરિક શ્રાદ્ધ, સૂતક ઉતરી ગયા પછી અગ્યારમે દિવસે કરવું અને તે દિવસે થઈ શકે તેમ ન હોય તો અમાવાસ્યા, વ્યતિપાત વગેરે પર્વને દિવસે કરવું. સ્ત્રી રજસ્વલા હોય તો પિંડપિતૃયજ્ઞ તથા દર્શ શ્રાદ્ધ પણ પાંચમે દિવસે કરવું. અન્વાધાન થયા પછી સ્ત્રી રજસ્વલા થાય તો ઇષ્ટિ અને સ્થાલીપાક કરવો. અન્વાધાનની પૂર્વે થાય તો બીજે સમયે કરવાં. વ્રતમાં 'સૂતકનો દોષ નડતો નથી' આવું શાસ્ત્રનું વચન છે, માટે અનંતવ્રત વગેરે વ્રતો બીજાની પાસે કરાવવાં. જળ, દૂધ, દહી, ઘી, મીઠું, ફળ, કંદ તથા દાળીયા ધાણી વગેરે સેકેલાં ધાન્ય સૂતકીના ઘરમાં બીજાએ પોતાને હાથે લેવામાં દોષ નથી, પરંતુ સૂતકીને હાથે તે લેવાં નહિ.

जातौ विप्रो दशाहेन द्वादशाहेन भूमिपः ।
वैश्यः पञ्चदशाहेन शूद्रो मासेन शुद्ध्यति ॥ ४ ॥

જનનાશૌચ (જન્મ સૂતક)માંથી બ્રાહ્મણ દશ દિવસે, ક્ષત્રિય બાર દિવસે, વૈશ્ય પંદર દિવસે અને શૂદ્ર એક મહિને શુદ્ધ થાય છે. ૪

૪. વૃદ્ધિ સૂતકમાં એટલે જન્મના સૂતકમાં દાનાદિક કરવામાં સૂતકનો બાધ નડતો નથી, તેમ લેનારાને પણ દાન લેવાનો નિષેધ નથી.

શંખ તથા લિખિત લખે છે કે;–

कुमारप्रसवे नाभ्यामच्छिन्नायां गुडतिलहिरण्यवस्त्रप्रावरणगोधान्यानां प्रतिग्रहेष्वदोषः। तदहरित्येके। કુમારનો–પુત્રનો જન્મ થાય અને તેના નાભિના નાલનું છેદન કર્યું ન હોય ત્યાં સુધી ગોળ, તલ, સુવર્ણ, વસ્ત્ર, શાલ દુશાલા, ગાય અને ધાન્યનું દાન લેવામાં દોષ નથી. કેટલાએક કહે છે કે, જે દિવસે જન્મ થયો હોય તે દિવસે જ લેવામાં દોષ નથી. તેમ જન્મસૂતકમાં એક બીજાને અડકવાનો પણ નિષેધ નથી.

एकाहाच्छुद्ध्यते विप्रो योऽग्निवेदसमन्वितः ।
त्र्यहात्केवलवेदस्तु द्विहीनो दशभिर्दिनैः ॥ ५ ॥

જે વેદ ભણેલો અને અગ્નિહોત્રી બ્રાહ્મણ હોય તે એક દિવસે શુદ્ધ થાય છે, કેવળ વેદ ભણેલો બ્રાહ્મણ ત્રણ દિવસે શુદ્ધ થાય છે અને જે

વેદ ભણ્યો નથી, તથા જે અગ્નિહોત્રી પણ નથી, તે દશ દિવસે શુદ્ધ થાય છે. ૫

૫ કોઈ ટીકાકાર કહે છે કે, મૂલ શ્લોકમાં તુ શબ્દ છે તેનો એવો અભિપ્રાય છે કે, સાંપ્રત કાળમાં સૂતકનો સંકોચ કરવો નહિ; પરંતુ જેને જેટલા દિવસ સૂતક પાળવામાટે કહ્યું છે, તેણે તેટલા દિવસ સુધીજ સૂતક પાળવું.

जन्मकर्मपरिभ्रष्टः सन्ध्योपासनवर्जितः ।
नामधारकविप्रस्तु दशाहं सूतकी भवेत् ॥ ६ ॥

જન્મભ્રષ્ટ, કર્મભ્રષ્ટ તથા સંધ્યાવંદન નહિ કરનારા બ્રાહ્મણને નામધારી બ્રાહ્મણ જાણવો અને તેને દશ દિવસનું સૂતક લાગે છે. ૬

૬. જેને ગર્ભાધાન વગેરે સંસ્કાર થયા ન હોય તેને જન્મભ્રષ્ટ જાણવો. જે અગ્નિહોત્ર, પાંચ મહાયજ્ઞ વગેરે નિત્ય કર્મ કરતો ન હોય, તેને કર્મભ્રષ્ટ જાણવો.

एकपिण्डास्तु दायादाः पृथग्दारानिकेतनाः ।
जन्मन्यपि विपत्तौ च तेषां तत्सूतकं भवेत् ॥ ७ ॥

એક પુરુષથી જૂદી જૂદી જાતિની સ્ત્રીમાં ઉત્પન્ન થયેલા સપિંડોએ પિતાના કુળમાં કોઈ મરી જાય અથવા તો કોઇ જન્મે ત્યારે પિતાની જાતિને કહેલું સૂતક પાળવું. પરંતુ તે સપિંડ જો એકઠા રહેતા હોય તો. પરંતુ જૂદા ઘરમાં રહેતા હોય તો તેઓએ પોતાની માતાની જાતિને કહેલું સૂતક પાળવું. ૭

तावत्तत्सूतकं गोत्रे चतुर्थपुरुषेण तु ।
दायाद्विच्छेदमाप्नोति पञ्चमो वात्मवंशजः ॥ ८ ॥

ઉપરના શ્લોકમાં (૭ મા શ્લોકમાં) કહેલું સૂતક ગોત્રના ચાર પુરુષસૂધી લાગે છે. (પાંચમા પુરુષને લાગતું નથી.) પાંચમો પુરુષ મૂળ પુરુષના સપિંડ સંબંધમાંથી છૂટો થાય છે. ૮

૮ વૃદ્ધપરાશર સાપિંડ્ય કેટલી પેઢી સૂધી રહે છે તેનો નિર્ણય કરતાં કહે છે કેઃ—

सापिंडता तु पुरुषे सप्तमे विनिवर्तते । सजातीयेषु वर्णेषु चतुर्थे भिन्नजातिषु ॥

પોતાની સમાન જાતિની સ્ત્રીઓમાં ઉત્પન્ન થયેલા પુરુષોની વચ્ચે સાતમા પુરુષ સૂધી સાપિંડય રહે છે અર્થાત્ આઠમા પુરુષમાં સપિંડપણું રહેતું નથી અને બીજી જાતિની સ્ત્રીઓમાં ઉત્પન્ન થયેલા પુત્રો વચ્ચે ચાર પુરુષ સૂધી સપિંડપણું રહે છે, પાંચમામાં રહેતું નથી.

શાતાતપ પણ કહે છે કે;—

यद्येकजाता बहवः पृथक्क्षेत्राः पृथक्जनाः । एकपिण्डाः पृथक्शौचाः पिण्डस्त्वावर्तते त्रिषु ॥

એક પુરુષથી જૂદી જૂદી સ્ત્રીઓ અથવા તો એક જાતની અનેક સ્ત્રીઓમાં ઉત્પન્ન થયેલા પુરુષો વચ્ચે ત્રણ પુરુષ સુધી સપિંડપણું રહે છે અને તેઓને સૂતક પણ જૂદી જૂદી રીતે લાગે છે. ચાર પુરુષ સુધી દશ દિવસનું સૂતક લાગે છે અને તે પછીનાને ઓછા દિવસનું સૂતક લાગે છે, એ વાત હવે પછીના શ્લોકમાં કહે છે.

चतुर्थे दशरात्रं स्यात्षण्निशाः पुंसि पञ्चमे ।
षष्ठे चतुरहाच्छुद्धिः सप्तमे तु दिनत्रयात् ॥ ९ ॥

ચોથા પુરુષને દશ રાત્રિ (દિવસ), પાંચમા પુરુષને છ રાત્રિ (દિવસ), છઠ્ઠાને ચાર દિવસ અને સાતમાને ત્રણ દિવસ સૂતક લાગે છે. ૯

भृग्वग्निमरणे चैव देशान्तरमृते तथा ।
बाले प्रेते च संन्यस्ते सद्यः शौचं विधीयते ॥ १० ॥

ભૃગુ ઉપરથી કહેતાં પર્વતના શિખર ઉપરથી પડીને કોઇ આત્મહત્યા કરે, અગ્નિમાં પડીને બળી મરે, દેશાંતરમાં મરણ પામે, બાળક મરણ પામે તથા સંન્યાસી મરણ પામે તો સ્નાન કરવાથી શુદ્ધિ થાય છે. (તેનું સૂતક લાગતું નથી.) ૧૦

૧૦ કોઈ પુરુષ જાણી જોઇને અગ્નિમાં પડીને અથવા તો પર્વત ઉપરથી પડીને કે જળમાં પડીને આત્મહત્યા કરે છે તો તેનું સૂતક લાગતું નથી. પણ માત્ર સ્નાન જ લાગે છે. પરંતુ જો શાસ્ત્રવિધિ પ્રમાણે એક પુરુષ પર્વતના શિખર ઉપરથી અથવા તો જળમાં કે અગ્નિમાં પડીને દેહનો ત્યાગ કરે છે તો તેનું ત્રણ રાત્રિ સૂતક લાગે છે, આમ માધવનો મત છે. મૂળમાં देशान्तरे मृतः એટલે પરદેશમાં મરી ગયો હોય તેનું પણ સૂતક લાગતું નથી, એમ જે કહ્યું છે તેમાં દેશાંતર શબ્દની વ્યાખ્યા કરતાં વૃદ્ધ મનુ કહે છે કે;—

महानद्यन्तरं यत्र गिरिर्वा व्यवधायकः । वाचो यत्र विभिद्यन्ते तद्देशान्तरमुच्यते ॥

જે બે દેશની વચ્ચે મહાનદીનો અંતરાય હોય, અથવા તો જ્યાં વચ્ચે પર્વત અંતરાય તરીકે પડ્યો હોય, અથવા તો જ્યાં બોલી બદલાતી હોય તે દેશાંતર–બીજો દેશ કહેવાય છે.

મૂળમાં જે બાળક શબ્દ કહ્યો છે, તે જેનું નામ પાડ્યું ન હોય તેને બાળક જાણવો અને તેના મરણનું સપિંડોને સ્નાન લાગે છે, પણ સૂતક લાગતું નથી.

નિર્ણયસિંધુકારે અમુક પ્રસંગે મરણ નિપજતાં સૂતક લાગે કે ન લાગે, તે વિષે આ પ્રમાણે નિર્ણય કર્યો છેઃ-

હેમાદ્રિમાં ષટ્ત્રિંશન્મતનું તથા કૂર્મપુરાણનું વચન છે કે "જે માણસ અગ્નિથી અથવા તો જળ વગેરેથી આત્મઘાત કરે, તેનું આશૌચ પાળવું નહિં અને તેનું ઉદકદાન પણ કરવું નહિ." શબ જોવામાં આવે ત્યાં સુધી તો આશૌચ લાગે જ છે. કેમકે "જેઓને રાજાએ, ગાય વગેરેએ, બ્રાહ્મણે કે ચંડાલે મારી નાંખ્યા હોય, તેઓનું અને આત્મઘાતીઓનું આશૌચ સ્નાન માત્રથી ટળી જાય છે" એવું યાજ્ઞવલ્કયનું વચન છે. શુદ્ધિતત્વમાં કૂર્મપુરાણનું વચન છે કે "જેનું શાપથી કે અભિચારથી મરણ થયું હોય, તેનું આશૌચ સ્નાન માત્રથી ઉતરી જાય છે." ભવિષ્ય પુરાણમાં કહ્યું છે કે "પોતાની ઇચ્છાથી, બ્રાહ્મણથી, શિંગડાંવાળાં પ્રાણીથી, દાઢવાળાં પ્રાણીથી, સર્પ વગેરેથી, અંત્યજથી, વિષથી, ફાંસીથી કે પોતાની મેળે પ્રહાર કરવાથી જેઓનું મરણ થયું હોય તેઓનું, તેમ જ પાખંડમાં મળેલાઓનું, મહાપાપીઓનું, વ્યભિચારિણી સ્ત્રીઓનું અને આરૂઢ પતિતોનું (ઉપર ઉપરના આશ્રમથી ભ્રષ્ટ થયેલાઓનું) આશૌચ પાળવું નહિ, શ્રાદ્ધ કરવું નહિ, સપિંડી શ્રાદ્ધ કરવું નહિ અને એઓનો દાહ પણ કરવો નહિ." ગૌતમ કહે છે કે "જેઓએ જાણી જોઇને મહાપ્રસ્થાનથી, અશનથી, શસ્ત્રથી, અગ્નિથી, વિષથી, જળથી, ફાંસીથી કે પડતું મૂકીને પોતાનું મરણ કર્યું હોય, તેઓનું આશૌચ પાળવું નહિ." અંગિરા કહે છે કે "પાપીઓનું મરણ ચંડાલથી, જળથી, સર્પથી, બ્રાહ્મણથી, વીજળીથી, દાઢવાળાંઓથી કે પશુઓથી થાય છે. એવા પ્રેતોને જળ કે પિંડ કંઈ દેવામાં આવે તો સઘળું તેઓને પહોંચતું નથી; પણ અંતરિક્ષમાં જ નષ્ટ થઈ જાય છે." ષટ્ત્રિંશન્મતમાં પણ એમ જ કહ્યું છે. બ્રાહ્મપુરાણમાં પણ કહ્યું છે કે "શિંગડાંવાળાં, ડાઢવાળાં, નખવાળાં, ઘેલો હાથી, વિષ, અગ્નિ અને ઉંડું પાણી એઓથી રમતાં મરી ગયો હોય, તેને પણ દૂરથી છોડી જ દેવો. (આશૌચ કે સંસ્કાર આદિ કશું કરવું નહિ.) નાગોનું વિપ્રિય કરતાં જે મરી ગયો હોય, વીજળીથી મરણ પામ્યો હોય, કોઈ સ્થલમાં કે કાળમાં ચોરીના દોષને લીધે રાજાએ પકડવાથી મરી ગયો હોય, પરસ્ત્રીઓનું હરણ કરતાં તે સ્ત્રીઓના પતિઓએ દ્વેષથી મારી નાંખેલ હોય, પોતાના બરોબરીયા ન હોય એવાઓની સાથે કજીયો કરતાં તેઓએ મારી નાંખેલ હોય, સંકીર્ણ કે ચાંડાલાદિકની સાથે કજીયો થતાં તેઓના હાથથી મરણ પામેલ હોય, ચાંડાલાદિકનો આશ્રિત હોય, શસ્ત્ર દેનાર હોય, અગ્નિ દેનાર હોય, ઝેર દેનાર હોય, પાખંડી હોય, ક્રૂરબુદ્ધિવાળો હોય, જેઓએ ક્રોધને લીધે ઉપવાસથી, અગ્નિથી, વિષથી, શસ્ત્રથી, ફાંસીથી, જળથી, પાહાડ ઉપરથી પડવાથી કે ઝાડ ઉપરથી પડવાથી

આત્મઘાત કર્યો હોય, દુષ્ટ કારીગરીથી જીવનાર હોય, પ્રેતના અલંકારોને ધરનાર હોય, પારકાની ઇંદ્રિયને મુખવડે ચૂસવાથી પુરુષત્વ પામનારા અર્ધા નપુંસકો હોય, બ્રાહ્મણના શાપથી મરણ પામેલા હોય, બ્રાહ્મણના હાથથી મરણ પામેલા હોય અને જેઓ મહાપાપી હોય તેઓ પતિત કહેવાય છે. પતિતોનો દાહ, અંત્યેષ્ટિ, અસ્થિસંચય, અશ્રુપાત, પિંડ કે શ્રાદ્ધાદિક કશું પણ કરવું નહિ. જે મૂઢ માણસ પતિતોનાં એ દાહાદિક કરે છે, તેની બે તપ્તકૃચ્છ્ર કરવાથી શુદ્ધિ થાય છે; પણ એ પ્રાયશ્ચિત કર્યા વિના શુદ્ધિ થતી જ નથી." બે તપ્તકૃચ્છ્રરૂપ પ્રાયશ્ચિત્ત જે કહ્યું છે, તે જાણી જોઇને પતિતોની સઘળી દાહાદિક ક્રિયાઓ કરી હોય તો તેને માટે છે. સ્નેહથી દાહાદિક ક્રિયાઓ કરી હોય તો માધવીયમાં વસિષ્ઠનું વચન છે કે, "જે દ્વિજ સ્નેહને લીધે, આત્મત્યાગીઓની પ્રેત ક્રિયા કરે, તેણે તપ્તકૃચ્છ્ર સહિત ચાંદ્રાયણ કરવું." પતિતોની અજાણતાં દાહાદિક ક્રિયા કરી હોય તો સ્મૃતિમાં કહ્યું છે કે "અગ્નિદાન, જળદાન, સ્નાન, સ્પર્શ, ઉપાડવું, વાતચિત, શબનાં બંધનનું છેદન અને રોદન કર્યું હોય તો તપ્તકૃચ્છ્ર કરવાથી શુદ્ધિ થાય છે. મદન-પારિજાતમાં કહ્યું છે કે "પૂર્વોક્ત અગ્નિદાન આદિ" ક્રિયાઓમાંની એક એક ક્રિયા પણ જાણી જોઇને કરી હોય તો તપ્તકૃચ્છ્ર કરવું." સ્પર્શ અથવા રોદન એઓમાંથી એક પણ કરવામાં આવે તો મિતાક્ષરામાં કહ્યું છે કે, "માત્ર શબનો સ્પર્શ કર્યો હોય અથવા માત્ર રોદન કરયું હોય, પણ ઉપર કહેલાં અગ્નિદાના-દિક ન કરયાં હોય તો એક રાત ઉપવાસ કરવો." માધવીયમાં એ મૂળ સંસ્કૃત વચનનું ઉત્તરાર્દ્ધ બીજું લખીને કહ્યું છે કે, "માત્ર શબનો સ્પર્શ કર્યો હોય અથવા માત્ર રુદન કર્યું હોય, પણ ઉપર કહેલાં અગ્નિદાનાદિક કર્યાં ન હોય તો એક રાત ઉપવાસ કરવો." માધવીયમાં એ મૂળ સંસ્કૃત વચનનું ઉત્તરાર્દ્ધ બીજું લખીને કહ્યું છે કે, "માત્ર શબનો સ્પર્શ કર્યો હોય અથવા માત્ર રુદન કરયું હોય તો એક રાત ઉપવાસ કરવો, પણ જાણી જોઇને એ સર્વ કર્યા હોય તો ત્રણ રાત ઉપવાસ કરવો." સ્પર્શ તથા રુદન શિવાય બીજાં કૃત્યો કર્યાં હોય તો સંવર્ત કહે છે કે "જે માણસ એઓમાંના કોઈ પ્રેતને ઉપાડે, બાળે અથવા જળ આપે તેણે સાંતપન કૃચ્છ્ર કરવું." અજાણતાં કરયું હોય તો એથી અર્દ્ધ પ્રાયશ્ચિત્ત કરવું. 'આ જે પ્રાયશ્ચિત્ત કહ્યું છે, તે અગ્નિહોત્ર વગરના માણસે કરવું. અગ્નિહોત્રીએ તો કૃચ્છ્ર જ કરવું' એમ માધવ કહે છે. મિતાક્ષરામાં કહ્યું છે કે, "આત્મત્યાગીઓની તથા પતિતોની ક્રિયા નહિ કરવી, પણ એઓનાં શબોને એમને એમ ગંગાજળમાં નાંખી દેવાં, એ હિતકારી છે. કોઈ અગ્નિ-વાળો માણસ મહાપાપી થયો હોય તો તેના વિષયમાં હેમાદ્રિએ ભવિષ્યપુરાણના વચનથી કહ્યું છે કે, "જો અગ્નિવાળો માણસ દુરાત્માને લીધે કોઇ મહાપાપથી

સંયુક્ત થયો હોય તો તેના દોષનો ક્ષય થતાં સુધી તેના પુત્રાદિકે અગ્નિઓનું પાલન કરવું. જો એ માણસ પ્રાયશ્ચિત્ત ન કરે અથવા કરતો કરતો મરી જાય તો ગૃહ્યાગ્નિને ઠારી નાંખવો, શ્રૌતાગ્નિને સામાન સહિત જળમાં પધરાવી દેવો અને પાત્રો બ્રાહ્મણને આપી દેવાં અથવા જળમાં નાંખી દેવાં." માધવીયમાં પરાશરનું વચન છે કે, "જો અગ્નિહોત્રી બ્રાહ્મણ ચંડાલના હાથથી મરે અથવા આત્મઘાત કરે તો તે બ્રાહ્મણને બ્રાહ્મણોએ મંત્રોચ્ચાર નહિ કરતાંજ લૌકિકાગ્નિમાં બાળવો. પછી બ્રાહ્મણોની આજ્ઞાથી પ્રાયશ્ચિત્ત કરવું, અસ્થિઓને બાળી પાછાં લઇ દૂધથી ધોવાં અને તે અસ્થિઓનો પોતાના અગ્નિથી મંત્રપૂર્વક દાહ કરવો." હેમાદ્રિમાં તો તેઓનાં શબોને શૂદ્રોના હાથથી કશા વિધિવિના જ બળાવી નાંખવાનું કહ્યું છે. આ આશૌચના અભાવ આદિ જે કહ્યું, તે જો અભિમાન આદિથી મરણ થયું હોય તો તે વિષયમાં લાગુ પડે છે. પરંતુ પ્રમાદથી એવું મરણ થયું હોય તો આશૌચાદિક સર્વે કરવું. કેમ કે અંગિરા કહે છે કે "જો કોઇ માણસ પ્રમાદને લીધે અગ્નિથી કે જળ આદિથી મરણ પામે તો તેનું આશૌચ પાળવું અને જળક્રિયા પણ કરવી.' બ્રાહ્મપુરાણમાં કહ્યું છે કે "દૈવગતિને લીધે પ્રમાદથી નિશ્શંક બનેલો માણસ કોઇ સ્થલમાં શિંગડાંવાળાંથી, દાઢવાળાંથી, નખોવાળાંથી, ઘેલા હાથી વગેરેથી, વિષથી, વિજળીથી, જળાદિકથી, ચાંડાલના હાથથી કે ચોરોના હાથથી મરણ પામે તો તેનું દાહાદિક કરવું. કેમકે તે પતિત નથી." પ્રમાદને લીધે એવી રીતે મરણ થયું હોય તો ત્રણ રાતનું આશૌચ પાળવું, એમ શુદ્ધિતત્વ આદિ ગૌડગ્રંથો કહે છે અને દશ દિવસ સૂતક પાળવું, એમ દાક્ષિણાત્ય ગ્રંથો કહે છે.

દાહાદિક ન કરવાનો અપવાદ હેમાદ્રિમાં ભવિષ્ય પુરાણના વચનથી કહ્યો છે કે "પ્રમાદથી અથવા જાણી જોઇને સર્પદંશથી મરણ પામેલ હોય તો નાગપૂજા કર્યા વિના દાહાદિક કરવું નહિ." બૌધાયન પણ કહે છે કે, "જાણી જોઇને આત્મઘાત કરનારાઓનું અંત્યેષ્ટિ કર્મ જો દાનાદિક કરવામાં ન આવે તો લોપાય છે." દુર્મરણ થયા બાબત દાનાદિક કરવા વિષે વિશ્વપ્રકાશમાં તથા શાતાતપીયમાં કહ્યું છે કે "વાઘે મારેલ હોય તો બ્રાહ્મણની કન્યાનો વિવાહ કરી દેવો. સર્પદંશથી મરણ થયું હોય તો નાગબલિ કરવો તથા સુવર્ણના સર્પનું દાન કરવું, હાથીએ મારેલ હોય તો સોળ માસાભાર સોનાનો હાથી દેવો, રાજાએ મારેલ હોય તો સુવર્ણનો પુરુષ દેવો, ચોરે મારેલ હોય તો ગાય દેવી, વૈરીએ મારેલ હોય તો બળદ દેવો, બળદે મારેલ હોય તો યથાશક્તિ સુવર્ણ દેવું, શય્યામાં મરી ગયેલો હોય તો ચાર માસાભાર સોનાના વિષ્ણુ સાથે સોપસ્કર શય્યા દેવી, શુચિતા નહિ છતાં મરી ગયેલ હોય તો આઠ માસાભાર સોનાની વિષ્ણુની મૂર્ત્તિ દેવી,

સંસ્કાર રહિત મરી ગયેલ હોય તો બ્રાહ્મણના કુમારને ઉપનયન સંસ્કાર કરાવી આપવો, ઘોડાએ મારેલ હોય તો બાર માસાભાર સોનાનો ઘોડો દેવો, કૂતરાએ મારેલ હોય તો શક્તિને અનુસરી ક્ષેત્રપાળનું સ્થાપન કરવું, સૂવરે મારેલ હોય તો સુવર્ણ સહિત પાડો દેવો, કીડાથી મરી ગયેલ હોય તો પાંચ ખારી ઘઉં દેવા. (સોળ હજાર ત્રણુસો ને ચોરાશી રૂપિયા ભાર તોલ ખારી કહેવાય છે.) ઝાડ પડવાથી કે ઝાડથી પડીને મરી ગયેલ હોય તો વસ્ત્ર સહિત સોનાનું વૃક્ષ દેવું, શિંગડાવાળાંએ મારેલ હોય તો વસ્ત્ર સહિત ખૂંટ દેવો, ગાડાથી મરી ગયેલ હોય તો ઉપસ્કર સહિત કાંઇક દ્રવ્ય દેવું, શિખર ઉપરથી પડતું મેલીને મરી ગયેલો હોય તો ધાન્યનો પર્વત દેવો, અગ્નિથી મરી ગયેલો હોય તો શક્તિને અનુસરી નવાણુ કરાવવું, કાષ્ઠથી મરી ગયેલ હોય તો ધર્મને માટે સભા કરવી, શસ્ત્રથી મરી ગયેલ હોય તો દક્ષિણા સહિત ભેંસ દેવી, પથરાથી મરી ગયેલ હોય તો વાછરડા સહિત દૂઝણી ગાય દેવી, ઝેરથી મરી ગયેલ હોય તો સુવર્ણની પૃથ્વી દેવી, ફાંસીથી મરી ગયેલ હોય તો સોનાનો વાનરો દેવો, જળથી મરી ગયેલ હોય તો આઠ માસાભાર સોનાની વરુણની મૂર્ત્તિ દેવી, કોલેરાથી મરી ગયેલ હોય તો સો બ્રાહ્મણને મિષ્ટાન્ન જમાડવું, કંઠમાં કોળીઓ રહી જતાં મરી ગયેલ હોય તો ધૃતધેનુ–ઘીની ગાય દેવી, ખાંસીથી મરણ પામેલ હોય તો આઠ કૃચ્છ્રરૂપ પ્રાયશ્ચિત્ત કરવું, ઝાડાના દરદથી મરી ગયેલ હોય તો સાવધાન રહી એક લાખ ગાયત્રીમંત્ર જપવો, ડાકણ વગેરે ઝોડ વળગવાથી મરણ પામેલ હોય તો યથાશાસ્ત્ર રુદ્રજપ કરવો, વીજળી પડવાથી મરી ગયેલ હોય તો વિદ્યાદાન કરવું, અંતરિક્ષમાં મરી ગયેલ હોય તો વેદનું પારાયણ કરવું, અસ્પૃશ્યનો સ્પર્શ કરીને મરી ગયેલ હોય તો ધર્મશાસ્ત્રનું પુસ્તક દેવું, પતિત છતાં મરી ગયેલ હોય તો સોળ પ્રાજાપત્ય કરવાં અને નિસ્સંતાન મરી ગયેલ હોય તો નેવું કૃચ્છ્ર કરવાં. આ પ્રમાણે વિધાન કર્યા પછી ઔર્ધ્વદેહિક કરવું."

શાસ્ત્રોક્ત વિધિપ્રમાણે આત્મઘાત કર્યો હોય તો દોષ નથી. મનુ તથા વૃદ્ધ ગાર્ગ્ય કહે છે કે, "વૃદ્ધ અવસ્થા હોવાથી પવિત્રતા ન રહેતી હોય, વૈદ્યની ક્રિયા ચાલતી ન હોય અને વૈદ્યે ચિકિત્સા કરવાની પણ ના પાડી હોય એવી સ્થિતિનો જે માણસ શિખર ઉપરથી પડતું મેલીને, અગ્નિમાં બળી મરીને, ઉપવાસો કરીને કે જળમાં પડીને આત્મઘાત કરે તો તેનું ત્રણ રાત આશૌચ પાળવું, બીજે દિવસે અસ્થિસંચયન કરવું, ત્રીજે દિવસે જળદાન દેવું અને ચોથે દિવસે શ્રાદ્ધ કરવું." હેમાદ્રિમાં વિષ્ણુધર્મનું પણ વચન છે કે, "જે માણસ રોગરહિત છતાં આત્મઘાત કરે તે અને બીજા પણ જેઓ આત્મઘાતીઓ થયા હોય તેઓ અસૂર્ય નામના લોકોમાં જાય છે કે જે લોકો અત્યંત અજ્ઞાનથી ઘેરાયેલા

હોય, જેને વૈદ્યે ચિકિત્સા કરવાની ના પાડી હોય અને પૂરું આયુષ્ય ભોગવ્યું હોય એવા રોગીએ અરિષ્ટોથી પોતાના મૃત્યુકાલને આવેલો જાણીને યુગને અનુસરીને પોતાના શરીરનો ત્યાગ કરવો. એવા કાળમાં શરીરનો ત્યાગ કરવાથી યથેષ્ટ ફળની પ્રાપ્તિ થાય છે. બ્રાહ્મણે એવું કારણ હોય તો આયુષ્ય પૂરું થયા પહેલાં શરીરનો ત્યાગ કરવો, ક્ષત્રિયે સંગ્રામમાં શરીરનો ત્યાગ કરવો અને સ્ત્રીએ પતિ મરી જતાં શરીરનો ત્યાગ કરવો એ ઉચિત છે." મૂલ સંસ્કૃત વાક્યમાં ગૌડલોકો આ સ્થલે ब्राह्मणस्य न એવો પાઠ બોલે છે, પણ તે પાઠ ઉત્તરાર્દ્ધથી અસંગત અર્થવાળો છે. અપરાર્કમાં બ્રહ્મગર્ગનું વચન છે કે, "મહાવ્યાધિથી પીડાયલો જે માણસ જીવી શકવાનો ન હોય તે માણસ અગ્નિમાં બળી મરે, જળમાં ડૂબી મરે કે મહાપ્રસ્થાન કરે તો તેને કશો દોષ નથી." આ વિષયમાં કહેલાં અને હવે પછી કહેવામાં આવનારાં વચનો ઉપરથી જણાય છે કે, "અસાધ્ય રોગાદિકથી પીડાયલાઓને પ્રયાગ શિવાયના આત્મઘાતમાં પણ અધિકાર છે." આ અધિકાર પણ અતિ જીર્ણ થઇ ગયેલા વાનપ્રસ્થને જ છે, એમ વિજ્ઞાનેશ્વર તથા દેવયાજ્ઞિક આદિ ગ્રંથકારો કહે છે. માટે જ મિતાક્ષરા આદિ ગ્રંથોમાં વાનપ્રસ્થને જ શિખરથી પડતું મેલવાનું અને ઉપવાસ આદિ કરવાનું કહ્યું છે. મનુ પણ કહે છે કે, "શોકથી તથા ભયથી મુક્ત થયેલો બ્રાહ્મણ આ મહર્ષિઓની રીતિઓમાંની કોઇ રીતિથી પોતાના શરીરનો ત્યાગ કરે છે, તે મુક્તિપદને પ્રાપ્ત થાય છે." આ કારણથી બીજાં પણ જે જે આત્મઘાત કરવાનાં વચનો છે, તેઓ વાનપ્રસ્થને માટે જ છે. કેમ કે એવો અર્થ લેવાથી મૂળની એકતા થાય છે," એમ કેટલાએક કહે છે, પણ તેઓનું એ કહેવું ખોટું છે. કેમ કે વાનપ્રસ્થના મરણમાં આશૌચનો નિષેધ છે. આથી આત્મઘાત કરવાનું વિષ્ણુધર્મ આદિનું વચન ગૃહસ્થાદિકને માટે જ છે. આત્મઘાતમાં સંન્યાસીનો અધિકાર નથી. કેમ કે તેને કામ્ય કર્મમાં અધિકાર નથી. જો આત્મઘાત નૈમિત્તિક હોય તો તેને નિત્યતા પ્રાપ્ત થાય અને તે ન કરવાથી દોષની પ્રાપ્તિ થાય. પ્રયાગમાં તો રોગ વગરનાઓને અને રોગવાળાઓને પણ આત્મઘાત કરવાનો અધિકાર છે. "હે રાજા! શૂદ્રો, ક્ષત્રિયો, વૈશ્યો, અંત્યજો તથા અધમો એઓએ પોતાનાં પ્રાણોને ત્યાગ કરવો, પણ બ્રાહ્મણે કરવો નહિ. બ્રાહ્મણ ત્યાં પડીને મરે તો તેને બ્રહ્મહત્યા તથા આત્મહત્યા પ્રાપ્ત થાય છે" એવું જે વચન છે તે નિર્મૂલ છે, એમ ભટ્ટજી કહે છે. હેમાદ્રિના વ્રતકાંડમાં એ વચન લખેલું છે, માટે તેનું નિર્મૂળપણું વિચારવા જેવું છે. એ વચનનો ઉપક્રમ જોતાં શિખર ઉપરથી પડતું મેલવાની બાબતમાં એ વચનને લાગુ પાડવું યોગ્ય જણાય છે. કેમ કે 'પ્રયાગનું મરણ બ્રાહ્મણને માટે પણ અનુજ્ઞાત છે.' એ વચન કે જે હવે કહેવાશે, તેની સાથે વિરોધ આવે છે. "અથવા જે બ્રાહ્મણ ન હોય તેણે સ્વર્ગ આદિ મોટું ફળ મેળવવાની

ઈચ્છાથી અગ્નિમાં કે જળમાં પ્રવેશ કરવો અથવા ઉપવાસો કરવા," એવું આદિ-પુરાણનું જે વચન છે, તે પ્રયાગ શિવાયના સ્થલને લાગુ પડે છે, એમ કેટલાએક કહે છે. હેમાદ્રિમાં તો એ વચન પછી પ્રયાગવટશાખાગ્રાત્ એમ લખ્યું છે; તેથી બ્રાહ્મણે પ્રયાગમાં પણ આત્મઘાત કરવો નહિ એમ જણાય છે. માધવીયમાં તથા અપરાર્કમાં આદિપુરાણનું વચન છે કે "જેઓની ચિકિત્સા કરવી બહુ કઠણ છે એવા મહારોગોથી પીડાયલા પુરુષે પણ પ્રદીપ્ત અગ્નિમાં પ્રવેશ કરવો, ઉપવાસો કરવા, અગાધ જળમાં પડવું, શિખર ઉપરથી પડતું મેલવું, આદરથી હિમાલયમાં મહાપ્રસ્થાન કરવું કે પ્રયાગના વડની શાખાના અગ્ર ઉપરથી દેહત્યાગ કરવો. પોતાની મેળે દેહના વિનાશનો સમય પ્રાપ્ત થાય ત્યારે જે મહાબુદ્ધિમાન્ પુરુષ ઉપર પ્રમાણે કરે છે, તેને ઉત્તમ લોકોની પ્રાપ્તિ થાય છે. આત્મઘાતીપણાનો દોષ લાગતો નથી. એ પુરુષને મહાપાપોનો ક્ષય થવાથી સ્વર્ગમાં દિવ્ય ભોગોની પ્રાપ્તિ થાય છે. આવી રીતે આત્મઘાત કરવાનો અધિકાર સર્વદા સર્વે વર્ણોમાં તથા સર્વ પ્રાણીઓમાં સર્વે સ્ત્રીપુરુષોને છે. આવી રીતનું મરણ જે પ્રાણીઓનું ગમે ત્યાં થાય તે પ્રાણીઓનું આશૌચ ત્રણ દિવસનું પાળવું અને વીજળી પડવાથી મરણ પામે તેનું પણ ત્રણ દિવસનું આશૌચ પાળવું. જે માણસ વૈદ્યોએ ચિકિત્સા કરવાની ના પાડ્યા પછી કાશીમાં કાષ્ઠના કે પાષાણના મધ્યમાં અથવા ગંગાજળના મધ્યમાં રહી કાશીવિશ્વનાથની સામે મુખ રાખી કાશીમાં મરણ પામે તે માણ-સને સદાશિવ કાનના મૂળમાં પ્રણવરૂપ તારક મંત્રનો ઉપદેશ કરે છે. બીજા કોઈ સ્થલમાં કદી પણ એમ થતું નથી." હેમાદ્રિમાં પણ એમ જ કહ્યું છે. એ વચનમાં 'પોતાની મેળે દેહના વિનાશનો સમય પ્રાપ્ત થાય ત્યારે' એમ કહ્યું છે માટે સતી સ્ત્રી કે જે મરણનો સમય પ્રાપ્ત નહિ થયા છતાં બળી મરે છે તેનું પૂરેપૂરું જ આશૌચ પાળવું. પૃથ્વીચંદ્ર તો એવા સતીના મરણમાં પણ ત્રણ રાતનું આશૌચ કહે છે. શુદ્ધિતત્વ આદિ ગૌડગ્રંથોમાં પણ એમ જ કહ્યું છે.

ઉપર કહ્યા પ્રમાણે વૃદ્ધાદિકે મરણ કરવું એ વાત કલિયુગમાં નિષિદ્ધ છે. કેમ કે "શિખર ઉપરથી પડતું મેલીને અથવા અગ્નિમાં પડીને વૃદ્ધાદિકે આત્મઘાત કરવો એ કલિયુગમાં વર્જિત છે" એ વચનથી માધવે તથા પૃથ્વીચંદ્રે એવા મરણને કલિવર્જિતોમાં ગણ્યું છે. એ વચનમાં પૂર્વોક્ત સર્વે આત્મઘાતોનો નિષેધ નથી. કલિયુગમાં વાનપ્રસ્થ આશ્રમનો નિષેધ છે, માટે મરણનો નિષેધ વ્યર્થ છે એમ શંકા કરવી નહિ. કેમકે માધવીય તથા અપરાર્કમાંના આદિ પુરાણના વચ-નમાં 'સર્વે વર્ણોમાં' એમ કહ્યું છે, માટે વાનપ્રસ્થથી ભિન્નને પણ તેની પ્રાપ્તિ છે. કલિયુગમાં અમુક કામનાને લીધે પ્રયાગાદિકમાં મરવું હોય તો તે નિષિદ્ધ નથી. કેમ કે 'જે ધીર પુરુષો દેહને છોડી દે છે' એ અર્થવાળી મૂલોક્ત શ્રુતિનો સ્મૃતિ

વાક્યથી સંકોચ કરવો અયુક્ત છે. એ શ્રુતિ સ્વાભાવિક મૃત્યુને લાગુ પડે છે એમ નથી. કેમ કે તેમાં 'ધીર' પદ કહ્યું છે. માત્સ્યપુરાણમાં તથા ભારતાદિકમાં કહ્યું છે કે "હે તાત! લોકના વચનથી કે વેદના વચનથી પણ તારે પ્રયાગમરણમાંથી બુદ્ધિ ચલિત કરવી નહિ." એટલા માટે જ વિષ્ણુધર્મમાં રોગી વગેરેનું મરણ કહીને કહ્યું છે કે "યુગના અનુસારથી પોતાના શરીરનો ત્યાગ કરવો." કાશીના વિષયમાં પણ મત્સ્યપુરાણમાં શિવે કહ્યું છે કે, "હે સુંદરી! જેઓ કાશીમાં વિધિપૂર્વક અગ્નિપ્રવેશ કરે છે, તેઓ મારા મુખમાં પ્રવેશ કરે છે એ નિસ્સંદેહ છે." હેમાદ્રિમાં વિવસ્વાનનું વચન છે કે, "સઘળી ઇંદ્રિયોથી રહિત થયેલા અને પોતાના શરીરના વ્યાપારમાં પણ અશક્ત થયેલા માણસને અગ્નિપાત તથા મહાપ્રસ્થાનરૂપ પ્રાયશ્ચિત્ત કરવાની છૂટ છે. જે બ્રાહ્મણ ધર્મનું સંપાદન કરવામાં અસમર્થ હોય અને પાપયુક્ત થયો હોય, તેને પણ તીર્થમાં પ્રાણમોચન કરવાની છૂટ છે." અપરાર્કમાં પણ એમ જ કહ્યું છે. પતિ મરી જતાં સ્ત્રીએ સહગમન કરવું, એ પણ કલિયુગમાં નિષિદ્ધ નથી. કેમ કે "કલિયુગમાં સહગમન શિવાય સ્ત્રીઓની બીજી કોઈ ગતિ નથી" એમ બ્રહ્મવૈવર્ત પુરાણમાં કહ્યું છે. ધર્મશાસ્ત્રોમાં જે મરણાંતિક પ્રાયશ્ચિત્તો કહેલાં છે, તેઓ અને કાશી ખંડાદિકમાં ચારે વર્ણને દેહત્યાગ કરવાના જે વિધિઓ કહ્યા છે તેઓ તો યુગાંતરમાં જ લાગુ પડે છે. પ્રયાગના વિષયમાં પણ ત્રિસ્થલીસેતુમાં સ્કંદપુરાણનું વચન છે કે "જે માણસ ગમે તે પ્રકારથી આ તીર્થમાં પ્રાણત્યાગ કરે છે તેને આત્મઘાતનો દોષ નથી એટલું જ નહિ, પણ ઇચ્છેલાં સુખોની પણ પ્રાપ્તિ થાય છે." પદ્મપુરાણમાં વિષ્ણુનું વચન છે કે, "જે ધીર મનુષ્યો પ્રયાગમાં મારા સમીપમાં દેહત્યાગ કરે છે તેઓ પુનર્જન્મ નહિ પામતાં મારા સ્વરૂપમાં પ્રવેશ કરે છે." કૂર્મપુરાણમાં કહ્યું છે કે "જે રોગી, દીન અથવા ક્રોધ પામેલો માણસ ગંગા યમુનામાં આવી પ્રાણ ત્યાગ કરે તેને ધારેલાં ફળો મળે છે, એમ મહાત્મા મુનિઓ કહે છે. યોગ કરનારાને તથા બ્રહ્મવિદ્યામાં સ્થિતિ કરનારાને જે ગતિ થાય છે, તે ગતિ ગંગાના તથા યમુનાના સંગમમાં પ્રાણ ત્યાગ કરનારાને થાય છે." વારાહ પુરાણમાં કહ્યું છે કે, "હે સુંદરી! જે માણસ પ્રયાગમાં વડના મૂળમાં પ્રાણનો ત્યાગ કરે છે તે માણસ સઘળા લોકોને ઉલ્લંઘીને મારા લોકને પ્રાપ્ત થાય છે. હે સુંદરી! જો પરમ ગતિની ઇચ્છા હોય તો અકામ કે સકામ ગમે તેવા માણસે વડનાં મૂળોમાં તુરત પ્રાણોને છોડી દેવાં. જે માણસ પાંચ યોજનના વિસ્તારવાળા પ્રયાગના મંડલમાં પ્રાણ ત્યાગ કરે, તે માણસ પૂર્વની સાત પહેડીનાં તથા પછીની ચઉદ પહેડીનાં સઘળાં માણસોને તારે છે." બ્રાહ્મપુરાણમાં કહ્યું છે કે, "જે માણસ પ્રયાગમાં વિષ્ણુનાં ચરણારવિંદનું ધ્યાન કરી, વિષ્ણુમાં જ તત્પર રહી, માઘ

માસમાં પ્રયાગમાં દેહત્યાગ કરે છે, તેને મુક્તિ મળવામાં સંશય નથી. દુષ્ટ કર્મો કરનારો, દુરાચરણવાળો અને બ્રહ્મહત્યા આદિ પાપોવાળો માણસ પણ હરિનું ધ્યાન કરી, પ્રયાગમાં દેહનો ત્યાગ કરે છે તો તેને પણ ઘણું કરીને મુક્તિ જ મળે છે." ભવિષ્યોત્તરમાં સામાન્ય ફળ પણ કહ્યું છે કે, "હે રાજા! જળમાં પડી દેહ ત્યાગ કરવાથી સાત હજાર વર્ષ સૂધી, અગ્નિમાં પ્રવેશ કરી દેહત્યાગ કરવાથી અગીયાર હજાર વર્ષ સૂધી, શિખર ઉપરથી પડતું મેલીને દેહત્યાગ કરવાથી સોળ હજાર વર્ષ સૂધી, મહાસંગ્રામમાં દેહત્યાગ કરવાથી સાઠ હજાર વર્ષ સૂધી અને અને ગાયો પકડાતી હોય તેઓને છોડાવવા માટે દેહત્યાગ કરવાથી એંશી હજાર વર્ષ સૂધી સ્વર્ગવાસ થાય છે. અનશન વ્રત લઇને પ્રાણ ત્યાગ કરવાથી અક્ષય ગતિ પ્રાપ્ત થાય છે." આ પ્રમાણે બીજા પણ વિધિઓવિષે સમજી લેવું. 'પ્રયાગ આદિમાં મરવું એ બ્રાહ્મણ શિવાયનાં માણસોને માટે છે' એમ ગૌડ-લોકોએ કહ્યું છે. "ઉપર કહ્યા પ્રમાણે મરણ થયું હોય તો તેનું આશૌચ દશ રાતનું પાળવું. કેમકે ત્રણ રાત પાળવાનો જે વિધિ છે, તે વિધિ જેનું કાલ પ્રાપ્ત થયાથી મરણ થયું હોય તેને માટે છે," એમ ભટ્ટજી કહે છે. પણ યોગ્ય તો ત્રણ રાતનું જ આશૌચ છે. દિવોદાસીયમાં પણ ત્રણ રાતનું જ આશૌચ કહ્યું છે. શુદ્ધિતત્વમાં પણ કાશ્યપનું વચન છે કે, "ઉપવાસોથી, વીજળી પડવાથી, અગ્નિથી, જળથી, શિખર ઉપરથી પડવાથી, સંગ્રામથી કે દેશાંતરમાં જેઓનું મરણ થયું હોય તેઓનું તથા જેઓને દાંત આવ્યા હોય એવાં બાલકોનું આશૌચ ત્રણ રાતનું પાળવું." મરણાંત પ્રાયશ્ચિત્તથી મરણ પામેલાનું આશૌચ પણ ત્રણ રાતનું જ પાળવું.

આત્મહત્યા કરનારા વગેરેના શબને દાહ કરવાનો તથા તેનું આશૌચ પાળવાનો જે નિષેધ પ્રથમ કરવામાં આવ્યો છે, તે નિષેધ તે સમયને માટે જ છે. વર્ષને અંતે તો એઓનું સર્વ ઔર્ધ્વદેહિક કરવું. કેમકે "ગાયોએ કે બ્રાહ્મણોએ મારેલાઓનું અને પતિત સ્થિતિમાં મરણ પામેલાઓનું સર્વ ઔર્ધ્વદેહિક વર્ષ પૂરું થયા પછી કરવું," એવું હેમાદ્રિમાં ષટ્ત્રિંશન્મતનું વચન છે. જેઓને બીજાઓએ વટલાવીને મ્લેચ્છ કર્યા હોય, તેઓને માટે પણ એ પ્રમાણે જ કરવું તથા ગયાશ્રાદ્ધ પણ કરવું. કેમ કે "બ્રહ્મહત્યા કરનાર, કૃતઘ્ન, ગોહત્યા કરનાર કે પાંચ મહાપાપીઓમાંનો મરી ગયો હોય તો પણ ગયામાં પિંડદાન કરવાથી એઓનો છૂટકારો થાય છે," એવું અગ્નિપુરાણનું વચન છે. બ્રાહ્મપુરાણમાં પણ કહ્યું છે કે, "કોઈ સમયે દેશધર્મોને પ્રમાણ ગણીને ગયામાં અથવા સૂર્યપદમાં પતિતલોકોનું શ્રાદ્ધ પણ વિષ્ણુનું તથા શિવનું સ્મરણ કરીને તે પતિતોના બંધુઓ કરે છે." વર્ષના મધ્યમાં જે કરવાનું છે, તે અપરાર્કમાં વાયુપુરાણના વચનથી કહ્યું છે કે "એક વર્ષ પુરું થતાં સુધીમાં દરએક શુક્લપક્ષની

દ્વાદશીને દિવસે અથવા દરએક શુક્લપક્ષને પહેલે દિવસે અથવા મરણથી બારમે દિવસે જ શ્રાદ્ધ કરવું." છાગલેય કહે છે કે, "મનુષ્યોએ લોકમાં નિંદા થવાના ભયથી નારાયણબલિ કરવા. એ કરવાથી તેઓની શુદ્ધિ થાય છે; નહિતર થતી નથી," એમ યમે કહ્યું છે. વ્યાસ કહે છે કે "નારાયણનો અથવા શિવનો ઉદ્દેશ કરીને જે બલિ કરવામાં આવે છે તેથી પતિતાદિકની શુદ્ધિ થાય છે, નહિતર થતી નથી." એ બલિ આત્મઘાતાદિકનું પ્રાયશ્ચિત્ત કર્યા પછી કરવો. કેમ કે હેમાદ્રિમાં ષટ્ત્રિંશન્મતના વચનથી કહ્યું છે કે, "માણસોએ પ્રથમ ચાંદ્રાયણ કરીને યથાવિધિ ક્રિયા કરવી. લોકનિંદાના ભયથી નારાયણબલિ કરવો. પછી પિંડોદક ક્રિયાઓ, વૃષોત્સર્ગાદિક, એકોદ્દિષ્ટો તથા સપિંડીકરણ કરવાં." દિવોદાસીયમાં વૃદ્ધ શાતાતપ તો એમ કહે છે કે "પતિત મરી ગયો હોય તો શુદ્ધિને માટે સોળ પ્રાજાપત્ય કરવાં અને નિસ્સંતાન મરી ગયો હોય તો નેવું કૃચ્છ્ર કરવાં." આ વૃદ્ધ શાતાતપનું વચન જો પિતા વગેરે મરનાર પ્રાયશ્ચિત્તને યોગ્ય હોય તો તેના વિષયમાં લાગુ પડે છે. કેમ કે હેમાદ્રિમાં વૃદ્ધ શાતાતપનું જ વચન છે કે, "જેઓ ઇન્દ્રિયોથી રહિત નહિ થયા છતાં મોહથી કે ખેદથી આત્મઘાત કરે અથવા જેઓ ચાંડાલાદિકના હાથથી મરે, તેઓના પુત્રપૌત્રોએ દયા લાવીને વિષ્ણુના નામથી શ્રાદ્ધ કરવું." હેમાદ્રિમાં જ બૌધાયન કહે છે કે "અભિશસ્ત, પતિત, સુરાપાન કરનાર, આત્મત્યાગી અને બ્રાહ્મણે મારેલા હોય તેઓને માટે પ્રથમ દ્વાદશાબ્દ અથવા ત્ર્યબ્દ પ્રાયશ્ચિત્ત કરવું." ગૃહ્યપરિશિષ્ટમાં તો 'ચાંડાલાદિકે મારેલા વગેરે' ઇત્યાદિ બોલીને કહ્યું છે કે, "પ્રેતના શરીરનો દાહ કરી, યત્નથી અસ્થિઓનું સ્થાપન કરી, પુત્રોએ ત્રણ ચાંદ્રાયણરૂપ પ્રાયશ્ચિત્ત કરવું." મદનરત્નમાં બ્રાહ્મપુરાણના વચનથી કહ્યું છે કે, "પ્રમાદને લીધે પણ જો નિસ્શંક થયેલો માણસ દૈવની ગતિથી ચાંડાલોના, ચોરોના કે બ્રાહ્મણોના હાથથી ગમે ત્યાં મરણ પામ્યો હોય તો તેનું દાહાદિક કરવું. કેમ કે એ પતિત નથી. એની શુદ્ધિને માટે ચાંદ્રાયણ, બે તપ્તકૃચ્છ્ર અથવા પંદર કૃચ્છ્ર કરીને પછી વિધિપૂર્વક દાહ કરવો. જો જાણી જોઇને એ લોકોના હાથથી મરણ પામેલ હોય તો ત્રીશ કૃચ્છ્ર કરવાં." સ્મૃતિરત્નાવળિમાં તો "આત્મઘાતની શુદ્ધિને માટે બે ચાંદ્રાયણ તથા ચાર તપ્તકૃચ્છ્ર અથવા ત્રીશ કૃચ્છ્ર કરવાં અને પછી નારાયણબલિ કરીને આયુષના અનિત્યપણાને લીધે વર્ષ પુરું થયા પહેલાં પણ યથોચિત દહનાદિક કરવું." એ વચનથી બમણું પ્રાયશ્ચિત્ત કરીને વર્ષની અંદર જ સર્વ કરી લેવું એમ કહ્યું છે. આ આત્મવધના પ્રાયશ્ચિત્તની સાથે, મરનારની જે જે જાતિ હોય તેના વધનું પણ પ્રાયશ્ચિત્ત કરવું. એટલા માટે જ બૌધાયને દ્વાદશાબ્દ અથવા ત્ર્યબ્દ પ્રાયશ્ચિત્ત કરવાનું કહ્યું છે. મદનપારિજાતમાં અને સ્મૃત્યર્થસારમાં કહ્યું છે કે "બ્રહ્મહત્યા

કરનારા આદિને જે જે પ્રાયશ્ચિત્ત યોગ્ય હોય, તે તે કર્યાં પછી નારાયણ બલિ કરવો." જેઓએ બીજાઓને વટલાવીને મ્લેચ્છ કર્યા હોય તેઓને માટે પણ એમ જ કરવું. કોઇ ગ્રંથકાર કહે છે કે "પુત્રે કરેલા પ્રાયશ્ચિત્તથી પિતાના પાપનો નાશ થવામાં પ્રમાણ નથી. આત્મઘાતના વિષયમાં તો પુત્રે પ્રાયશ્ચિત્ત કરવાનું વચન છે; તેથી પુત્રે કરેલા પ્રાયશ્ચિત્તથી પિતાના પાપનો નાશ સ્વીકારી લેવો. પણ મહાપાપના વિષયમાં તેવું વચન નથી; માટે તે વિષયમાં પુત્રથી પ્રાયશ્ચિત્ત કેમ થાય." આ પ્રમાણે જે ગ્રંથકાર કહે છે તે જ ગ્રંથકાર પોતે આત્મઘાતના પ્રાયશ્ચિત્તને જાતિવધના પ્રાયશ્ચિત્તની સાથે કરવાનું કહે છે. કેમકે 'જાતિવધનું પ્રાયશ્ચિત્ત પુત્રોએ કરવું, એવું કોઈ સ્પષ્ટ વચન નથી. જો પુત્રે કરેલા પ્રાયશ્ચિત્તથી પિતાના પાપનો નાશ ન થતો હોય તો પુત્રે કરવાનાં સર્વે પ્રાયશ્ચિત્તાદિકને મોટી હાનિ પહોંચે છે અને વળી પ્રથમ કહેવાઈ ગયેલું બૌધાયનનું વચન પણ છે કે જે પુત્ર પિતાના પાપનું પ્રાયશ્ચિત્ત કરવાનું જણાવે છે તે પણ વ્યર્થ થાય. પુત્રાદિકે જે પ્રાયશ્ચિત્ત કરવું તે જેઓ પ્રાયશ્ચિત્તને લાયક હોય તેઓને માટે જ કરવું. જેઓ પ્રાયશ્ચિત્તને લાયક ન હોય, તેઓને માટે તો પતિતોદક માત્ર જ કરવું, એમ કેટલાએક કહે છે.

देशान्तरमृतः कश्चित्सगोत्रः श्रूयते यदि ।
न त्रिरात्रमहोरात्रं सद्यः स्नात्वा विशुद्ध्यति ॥ ११ ॥

કોઈ સપિંડ પુરુષ દેશાંતરમાં–પરદેશમાં મરણ પામ્યો, આમ સાંભળવામાં આવે તો ત્રણ રાત્રિ અથવા તો એક દિવસ અને એક રાત્રિ સૂતક પાળવું નહિ, પરંતુ સ્નાન કરવાથી જ શુદ્ધિ થાય છે. ૧૧

૧૧. માધવ ટીકાકાર કહે છે કે;–સપિંડ પરદેશમાં મરી ગયો હોય અને તેનું મરણ એક વર્ષ પછી સાંભળવામાં આવે તો કેવળ સ્નાન કરવાથી શુદ્ધ થવાય છે, પરંતુ દશ દિવસ પછી અને ત્રણ પક્ષની પહેલાં સાંભળવામાં આવે તો ત્રણ રાત્રિ, ૭ મહિના પહેલાં સાંભળવામાં આવે તો એક પક્ષિણી એટલે બે દિવસ અને તેની વચ્ચેની રાત્રિ અને એક વર્ષની પહેલાં સાંભળવામાં આવે તો એક દિવસ સૂતક લાગે છે.

देशान्तरगतो विप्रः प्रयासात्कालकारितात् ।
देहनाशमनुप्राप्तस्तिथिर्न ज्ञायते यदि ॥ १२ ॥
कृष्णाष्टमी त्वमावास्या कृष्णा चैकादशी च या ।
उदकं पिण्डदानं च तत्र श्राद्धं च कारयेत् ॥ १३ ॥

કોઇ બ્રાહ્મણ પ્રવાસ કરવા માટે પરદેશમાં ગયો હોય ને ત્યાં કાળને વશ થઇને મરણ પામે અને તેના મરણની તિથિ જો જાણવામાં આવી ન હોય તો કૃષ્ણપક્ષની અષ્ટમીને દિવસે અથવા તો અમાવાસ્યાએ અથવા તો એકાદશીને દિવસે તેનું ઉદકદાન, પિંડદાન તથા શ્રાદ્ધ કરાવવું. ૧૨-૧૩

૧૨-૧૩. જે મહિનામાં તેના મરણની વાત સાંભળી હોય, તે મહિનાની અંધારી આઠેમ વગેરે જાણવી.

अजातदन्ता ये बाला ये च गर्भाद्विनिःसृताः ।
न तेषामग्निसंस्कारो नाशौचं नोदकक्रिया ॥ १४ ॥

જેને દાંત આવ્યા ન હોય એવું બાળક મરણ પામે તથા જે મુવેલું જ જન્મે, તેને અગ્નિસંસ્કાર તથા ઉદક દાન કરવાં નહિ, તેમ તેનું સૂતક પણ પાળવું નહિ. ૧૪

यदि गर्भो विपद्येत स्रवते वापि योषितः ।
यावन्मासं स्थितो गर्भो दिनं तावत्तु सतकम् ॥ १५ ॥

જે સ્ત્રીનો ગર્ભ નાશ પામે અથવા તો સ્રાવ થાય (પડી જાય), તો જેટલા મહિનાનો તે ગર્ભ થયો હોય તેટલા દિવસ સૂધી (તેની માતાએ) જનનાશૌચ-જન્મનું સૂતક પાળવું. ૧૫

आचतुर्थाद्भवेत्स्रावः पातः पञ्चमषष्ठयोः ।
अतः परं प्रसूतिः स्याद्दशाहं सूतकं भवेत् ॥ १६ ॥

ચાર મહિના સૂધીનો ગર્ભ બહાર પડે તેને 'સ્રાવ' કહે છે. પાંચમા તથા છઠ્ઠા મહિનાનો ગર્ભ બહાર પડે તેને પાત કહે છે અને એ પછી એટલે સાતમા મહિનાથી પ્રસૂતિ (પ્રસવ) કહેવાય છે. પ્રસૂતિ થાય તો સપિંડોએ દશ દિવસ સૂધી જનનાશૌચ પાળવું. ૧૬

दन्तजातेऽनुजाते च कृतचूडे च संस्थिते ।
अग्निसंस्करणे तेषां त्रिरात्रमशुचिर्भवेत् ॥ १७ ॥

જેને દાંત આવ્યા હોય અથવા તો દાંત આવ્યા ન હોય તથા જેને ચૌલ સંસ્કાર કર્યો હોય, એવું બાળક મરી જાય અને તેને અગ્નિસંસ્કાર કરવામાં આવે તો સપિંડોએ ત્રણ દિવસ સૂતક પાળવું. ૧૭

૧૭. છોકરું જન્મ્યા પછી પ્રથમ વર્ષે અથવા તો ત્રીજે વર્ષે તેના બાળમોવાળા ઉતારવામાં આવે છે અને તે સંસ્કારને ચૂડાકર્મ કહે છે.

आ दन्तजन्मनः सद्य आ चूडान्नैशिकी स्मृता ।
त्रिरात्रमा व्रतादेशाद्दशरात्रमतः परम् ॥ १८ ॥

દાંત ઉગ્યા પહેલાં જો બાળક મરણ પામે તો સંપિંડ તુરત જ શુદ્ધ થાય છે અને દાંત ઉગ્યા પછી તથા ચૂડાકર્મ કર્યા પહેલાં જો મરણ પામે તો સપિંડોએ એક રાત્રિ સૂતક પાળવું અને ચૂડાકર્મ નામનો સંસ્કાર થયા પછી અને જનોઈ દીધા પહેલાં બાળક જો મરણ પામે તો સપિંડોએ ત્રણ દિવસ સૂતક પાળવું અને જનોઈ દીધા પછી મરણ પામે તો દશ દિવસ સૂતક પાળવું. ૧૮

ब्रह्मचारी गृहे येषां हूयते च हुताशनः ।
संपर्कं चेन्न कुर्वन्ति न तेषां सूतकं भवेत् ॥ १९ ॥

બ્રહ્મચારી તથા અગ્નિહોત્રી બ્રાહ્મણ જો સૂતકીની સાથે સંસર્ગ રાખતો નથી તો તેને સૂતક લાગતું નથી. ૧૯

૧૯. જે બ્રહ્મચારી જનોઈ દીધા પછી સમાવર્તન નામનો સંસ્કાર થતાં સુધી બ્રહ્મચર્ય વ્રત પાળે છે તે ઉપકુર્વાણ કહેવાય છે અને જે બ્રહ્મચારી પોતાનું સંપૂર્ણ આયુષ્ય બ્રહ્મચર્ય વ્રતમાં જ ગાળે છે તે નૈષ્ઠિક બ્રહ્મચારી કહેવાય છે. સંપર્ક એટલે સાથે ઉઠવાબેસવાનો, ખાવાપીવાનો તથા પરસ્પર અડવાનો સંબંધ સમજવો.

संपर्काद्दुष्यते विप्रो जनने मरणे तथा ।
संपर्काच्च निवृत्तस्य न प्रेतं नच सूतकम् ॥ २० ॥

જે બ્રાહ્મણ જનનાશૌચમાં તથા મરણાશૌચમાં સૂતકીનો સંસર્ગ કરે છે તે સૂતકી થાય છે; પરંતુ જે સંસર્ગ કરતો નથી તેને જનનાશૌચ અને મરણાશૌચ લાગતાં નથી. ૨૦

शिल्पिनः कारुका वैद्या दासीदासाश्च नापिताः ।
राजानः श्रोत्रियाश्चैव सद्यःशौचाः प्रकीर्तिताः ॥ २१ ॥

શિલ્પીઓ (સુતાર સલાટ વગેરે), કારુઓ (રસોઇઆ વગેરે), વૈદ્યો, દાસીઓ, દાસો, હજામો, રાજાઓ અને શ્રોત્રિયો (વેદાધ્યયન કરનારા) તુરત જ શુદ્ધ થાય છે. ૨૧

૨૧. આ લોકો જો સૂતક પાળવા બેસે છે તો તેના કાર્યમાં નુકસાન થાય છે, તેથી તેઓને સૂતકના દોષમાંથી છૂટા કર્યા છે.

सव्रतः सत्रपूतश्च आहिताग्निश्च यो द्विजः ।
राज्ञश्च सूतकं नास्ति यस्य चेच्छति पार्थिवः ॥ २२ ॥

ચાંદ્રાયણાદિક વ્રત કરનારો, સત્રપૂત—યજ્ઞમાં પવિત્ર થયેલો, અગ્નિહોત્રી બ્રાહ્મણ, રાજાના અધિકારીઓ તથા રાજા જેને તુરત શુદ્ધ કરવાની ઇચ્છા કરે છે તે (પુરોહિતાદિક) તુરત જ શુદ્ધ થાય છે (તેઓને સૂતક લાગતું નથી). ૨૨

૨૨. યજ્ઞ થઈ રહ્યા પછી યજમાન અને યજમાનપત્ની અવભૃથ સ્નાન કરવા માટે સમુદ્ર વગેરે તીર્થ ઉપર જાય છે. તે સમયે બીજા લોકો પણ તે પવિત્ર સ્નાનમાં ભાગ લેવા માટે સમુદ્ર વગેરે તીર્થ ઉપર જાય છે અને સ્નાન કરનારા યજમાનની સાથે સ્નાન કરે છે તે સત્રપૂત કહેવાય છે. રાજાનાં પુરોહિત તથા પ્રધાન વગેરે પણ જો સૂતક પાળીને બેસી રહે તો રાજાનાં નિત્યનાં શાંતિ પૌષ્ટિકકર્મને તથા રાજકીય કાર્યોને મોટી હાનિ પહોંચે. તેથી તેઓને સૂતક લાગે કે ન લાગે, તે રાજાની ઇચ્છા ઉપર મૂકવામાં આવ્યું છે.

उद्यतो निधने दाने आर्तो विप्रो निमन्त्रितः ।
तदैव ऋषिभिर्दृष्टं यथाकालेन शुद्ध्यति ॥ २३ ॥

યુદ્ધ કરવા માટે તયાર થયેલાને, આપત્તિમાં પડેલાને તથા શ્રાદ્ધમાં નોતરેલાને પોતાનું કાર્ય કરવામાં સૂતક લાગતું નથી, પરંતુ એ શિવાયનાં બીજાં કાર્ય કરવાં હોય તો સૂતકનો સમય પૂરો થયા પછી શુદ્ધ થાય છે, આમ ઋષિઓ કહે છે. ૨૩

૨૩ આપત્તિ એટલે પ્રાણસંકટ વગેરે.

प्रसवे गृहमेधी तु न कुर्यात्सङ्करं यदि ।
दशाहाच्छुद्ध्यते माता त्ववगाह्य पिता शुचिः ॥ २४ ॥

જે ગૃહસ્થ પુરુષ જનનાશૌચમાં (વૃદ્ધિસૂતકમાં) પોતાની સુવાવડી સ્ત્રીનો સંસર્ગ કરતો નથી તો તે સ્નાન કરવાથી શુદ્ધ થાય છે અને બાળકની માતા દશ દિવસે શુદ્ધ થાય છે. ૨૪

૨૪. છોકરું અવતર્યા પછી માતા પિતાને બન્નેને દશ દિવસનું સૂતક લાગે છે આમ કહ્યું છે, પરંતુ આ શ્લોકમાં ભગવાન્ પરાશર કહે છે કે, પિતા સ્નાન કરવાથી શુદ્ધ થાય છે અને માતા દશ દિવસે શુદ્ધ થાય છે. પિતા સ્નાન કરવાથી શુદ્ધ થાય છે, એનો અભિપ્રાય એવો છે કે, પિતાને અડી શકાય છે, પરંતુ તે સંધ્યાવંદન વગેરે નિત્ય કર્મ કરી શકતો નથી, માટે પિતાએ પણ જનનાશૌચ દશ દિવસ પાળવું જોઇએ.

सर्वेषां शावमाशौचं मातापित्रोस्तु सूतकम् ।
सूतकं मातुरेव स्यादुपस्पृश्य पिता शुचिः ॥ २५ ॥

મરણના સૂતકમાં સર્વે સપિંડોને અડી શકાય નહિ અને જન્મના સૂતકમાં માત્ર માતા પિતાને જ અડી શકાય નહિ, તેમાં પણ પિતા સ્નાન કર્યા પછી શુચિ એટલે સ્પર્શ કરવાને યોગ્ય થાય છે, પરંતુ માતાને દશ દિવસ સૂધી અડી શકાતું નથી. ૨૫

यदि पत्न्यां प्रसूतायां संपर्कं कुरुते द्विजः ।
सूतकं तु भवेत्तस्य यदि विप्रः षडङ्गवित् ॥ २६ ॥

છ અંગ સાથે વેદ ભણેલો બ્રાહ્મણ પણ જો પોતાની સૂવાવડી સ્ત્રીની સાથે સંસર્ગ કરે છે તો તે તુરત જ સૂતકી થાય છે. ૨૬

संपर्काज्जायते दोषो नान्यो दोषोऽस्ति वै द्विजे ।
तस्मात्सर्वप्रयत्नेन संपर्कं वर्जयेद्बुधः ॥ २७ ॥

બ્રાહ્મણને સંસર્ગ કરવાથી સૂતકનો દોષ લાગે છે, તે માટે વિદ્વાન્ બ્રાહ્મણે સર્વ પ્રયત્ને કરીને પણ સંસર્ગ કરવો નહિ. ૨૭

विवाहोत्सवयज्ञेषु त्वन्तरा मृतसूतके ।
पूर्वसंकल्पितं द्रव्यं दीयमानं न दुष्यति ॥ २८ ॥

વિવાહનો, ઉત્સવનો (દેવની પ્રતિષ્ઠા વગેરેનો) અને યજ્ઞનો આરંભ થઈ ગયા પછી વચ્ચે મરણ સૂતક આવે તો પ્રથમથી જે દ્રવ્યોનું દાન દેવા માટે સંકલ્પ કરી રાખ્યો હોય, તે દ્રવ્યો આપવાથી દોષ લાગતો નથી. ૨૮

अन्तरा तु दशाहस्य पुनर्मरणजन्मनी ।
तावत्स्यादशुचिर्विप्रो यावत्तत्स्यादनिर्दशम् ॥ २९ ॥

દશ દિવસનું એક મરણ સૂતક ચાલતું હોય, તેટલામાં વચ્ચે બીજું મરણાશૌચ અથવા જનનાશૌચ આવે તો પ્રથમનું સૂતક પૂરું થઈ રહે ત્યાં સૂધી બ્રાહ્મણ અપવિત્ર રહે છે; અર્થાત્ પહેલા સૂતકની સાથે જ બીજાં સૂતકો પણ ઉતરી જાય છે. ૨૯

૨૯. જન્મ મરણ બંધી સૂતક વિશે આ ગ્રંથમાં સંક્ષેપથી કહ્યું છે, તેથી તેના વિશે વિશેષ નિર્ણય થવા માટે અહીં આશૌચ નિર્ણયનો સાર આપવામાં આવ્યો છે.

૧ સૂતક કોને લાગે ?

ગૌતમ કહે છે કે, જનોઈ દીધા પહેલાં કામચાર એટલે મરજીમાં આવે તેમ વર્તે, કામવાદ એટલે ફાવે તેમ બોલે તથા કામભક્ષ એટલે ભાવે તે ખાય, એવા બાલકને સૂતક લાગે નહિ. માત્ર જનોઇ દીધા વગરનો બાળક જે માબાપની મરણક્રિયા કરે તેને જ સૂતક લાગે, પણ બીજાને સૂતકનો અધિકાર નથી. તેમ જ બ્રહ્મચારીને પણ જનોઈ દીધા પછી માતાપિતાના અગ્નિસંસ્કારાદિ અંત્યકર્મના પ્રસંગ વગર બીજે કોઈ ઠેકાણે સૂતકનો અધિકાર નથી માટે બ્રાહ્મણાદિકો સમાવર્તન સંસ્કાર કર્યા પછી આશૌચ (સૂતક)ના અધિકારી થાય છે.

૨ જનનાશૌચ એટલે વૃદ્ધિસૂતક (ગર્ભસ્રાવ).

ગર્ભિણી સ્ત્રીને ચાર માસ સુધીમાં કસુવાવડ થાય તો તેને "ગર્ભસ્રાવ" કહે છે. ત્રણ માસપર્યંતના ગર્ભસ્રાવમાં ત્રણ રાત્રિનું અને ચાર માસનો ગર્ભસ્રાવ થતાં ચાર રાત્રિનું તે સુવાવડી સ્ત્રીએ "અટકાવની પેઠે" સૂતક પાળી ક્યાંઈ સ્પર્શ ન કરવો. (ત્રણ દિવસના સૂતકમાં ચોથે દહાડે અને ચાર દિવસના સૂતકમાં પાંચમે દહાડે નહાયાથી શુદ્ધ થાય.) પિતાદિક સાત પેઢીનાને (ઓરમાન માને) ગર્ભસ્રાવના પ્રસંગે માત્ર સ્નાનથી શુદ્ધિ છે.

૩ ગર્ભપાત.

ગર્ભિણી સ્ત્રીનો ગર્ભ પાંચમા કે છઠ્ઠા માસમાં નાશ થાય તો તે "ગર્ભપાત" કહેવાય. પાંચમે માસે ગર્ભપાત થાય તો પાંચ દિવસનું અને છઠ્ઠે માસે થાય તો ૭ દિવસનું તે સ્ત્રીને અસ્પર્શનું સૂતક લાગે. તેટલા દિવસ તેણીએ કયાંઈ અડવું નહિ. પિતાદિ સપિંડ એટલે સાત પેઢીવાળાઓને (ઓરમાન માને) ત્રણ રાત્રિનું વૃદ્ધિસૂતક લાગે; મૃતાશૌચ લાગે નહિ. ૭ માસ સુધી તમામ વર્ણને સાધારણ સૂતક પ્રથમ કહ્યા પ્રમાણે લાગે; કારણ કે ગર્ભવિશે વય તથા અવસ્થા સર્વને તુલ્ય છે.

૪ પ્રસવ.

ગર્ભિણી સ્ત્રીને સાત માસથી આરંભીને પ્રસવ થાય તો માતાપિતાથી માંડીને સાત પેઢીવાળા સુધીના બ્રાહ્મણને દશ દિવસનું, ક્ષત્રિયને બાર દિવસનું, વૈસ્ય એટલે વાણીઆને પંદર દિવસનું, શૂદ્રજાતિને એક માસનું અને સતશૂદ્રને એટલે ઊંચા શૂદ્રને અર્ધા માસનું (વૈસ્યના જેટલું) વૃદ્ધિસૂતક લાગે, પણ મૃતાશૌચ લાગે નહિ. અપર મા એટલે ઓરમાન માને સર્વ ઠેકાણે પિતાની પેઠે સૂતક લાગે.

૫ પ્રસવના વિશેષ નિયમ તથા સપિંડાદિ વિચાર.

જનનાશૌચ એટલે વૃદ્ધિસૂતકમાં સુવાવડી સ્ત્રીએ દશ દિવસ સૂધી ક્યાંઈ સ્પર્શ ન કરવો. પિતાએ તથા ઓરમાન માએ સ્નાન કરતાં સૂધી કયાંઈ અડકવું નહિ. ન્હાયા પછી સ્પર્શ કરવાનો બાધ નથી. વળી આ વૃદ્ધિસૂતકમાં સાત પેઢીના પિત્રાઈઓને માત્ર કર્મનો અધિકાર નથીઃ તેમાં પણ નાલચ્છેદનની પહેલાં જાતકર્મ તથા દાનાદિ કરવાનો પિતાને અધિકાર છે. એ પ્રમાણે પહેલો, છઠ્ઠો, દશમો એટલા દિવસોમાં જન્મસંબંધી દેવતાનાં પૂજનનો શાસ્ત્રવચનથી પિતાને અધિકાર છે. મૂળ પુરુષને આરંભી સાતમા પુરુષ સૂધીના વંશજોને (૧ થી, ૭) “સપિંડ” જાણવા. તે પછીના સાત પેઢી લગીનાને (૮ થી ૧૪) “સોદક” જાણવા અને તે પછીના સાત પેઢીવાળાને (૧૫ થી ૨૧) “સગોત્ર” સમજવા. જ્યાં સપિંડને દશ રાત્રિનું મૃતસૂતક હોય ત્યાં સોદકને ત્રણ રાત્રિનું લાગે ને સગોત્રને સ્નાન માત્ર લાગે.

૬ પ્રસૂતા એટલે જણનારીના વિશેષ નિયમ.

સુવાવડી સ્ત્રીને દશ દિવસનો અસ્પર્શ મટ્યા પછી, જો પુત્ર આવેલો હોય તો વીશ દિવસ સૂધી અને કન્યા અવતરેલી હોય તો માસ પર્યંત તેને કર્મનો અધિકાર નથી.

૭ મૃતાશૌચ એટલે મરણસૂતક—મરેલું છોકરું આવે તેનું.

આ મૃતસૂતકમાં સૂતકીને ક્યાંહી સ્પર્શનો તથા કર્મનો અધિકાર નથી. મૃતબાળક એટલે મુવેલું છોકરું અવતરે તો બધા સાત પેઢીવાળાને દશ દિવસનું વૃદ્ધિસૂતક લાગે, પણ મૃતાશૌચ (મરણસૂતક) લાગે નહિ.

૮ નાલ છેદ્યા પહેલાં મરણ.

નાલછેદન કરવા અગાઉ બાળક મરણ પામે તો માતાને દશ દિવસનું અને પિતાદિક સપિંડોને (ઓરમાન માને) ત્રણ રાત્રિનું વૃદ્ધિસૂતક લાગે, પણ મૃતસૂતક લાગે નહિ.

૯ નાલ છેદ્યા પછી મરણ.

નાલ વધાર્યા પછી બાળક મરે તો સાત પેઢીવાળાને જનનાશૌચ એટલે વૃદ્ધિસૂતક દશ દહાડાનું લાગે, પણ મૃતાશૌચ એટલે મરણસૂતક લાગે નહિ.

૧૦ નામ પાડ્યા પહેલાં મરણ.

દશ દિવસ પછી અને નામ પાડતાં પહેલાં સંતતિનું મરણ થાય તો સાત પેઢીવાળાને સ્નાન માત્ર લાગે. મરનાર પુત્ર હોય તો ત્રણ રાત્રિનું અને કન્યા

હોય તો એક દિવસનું માબાપને સૂતક લાગે. નામ પાડ્યા પહેલાં મુવેલા બાળકને ડાટવાનો જ નિર્ણય છે. સ્મશાનમાં ઉદકદાનાદિ ન આપવું. વસ્ત્રપુષ્પ ચંદનાદિવડે પ્રેતમાત્રને અલંકૃત તો કરવાં જ, (નામ પાડવાનો કાળ બ્રાહ્મણને ૧૧ મો દિવસ, ક્ષત્રિયને ૧૩ મો દિવસ, વૈશ્યને ૧૬ મો દિવસ અને શૂદ્રને ૩૧ મો દિવસ ક્રમે કરી જાણવો.)

૧૧ નામ પાડ્યા પછી વર્ષપર્યંતનું મરણ.

નામ પાડ્યા પછીના વર્ષ લગીના બાળકને ડાટે અથવા બાળે, એવા બે પક્ષ છે.

૧૨ દંતોત્પત્તિ એટલે દાંત ઉગ્યા પહેલાં મરણ.

નામ પાડ્યા પછી અને દાંત ફૂટ્યા પહેલાં પુત્ર મરણ પામે ને જો તેને બાળે તો સાત પેઢીવાળાઓને એક દિવસનું મરણ સૂતક લાગે ને ડાટે તો સ્નાન માત્રથી શુદ્ધિ છે. પરંતુ માતાપિતાને તો બેઉ પક્ષમાં, એટલે બાળે અથવા ડાટે, તોપણ ત્રણ રાત્રિનું સૂતક લાગે. કન્યા મરણ પામેલી હોય તો ત્રણ પેઢીના સંબંધીઓને બેઉ પક્ષમાં સ્નાન માત્રથી શુદ્ધિ અને બાપને તો બેઉ પક્ષમાં એક દિવસનું સૂતક લાગે.

૧૩ દાંત ઉગ્યા પછી ત્રણ વર્ષ સુધીનું મરણ.

દાંત ઉગ્યા પછી ત્રણ વર્ષપર્યંત મરણ પામેલા પુત્રને બાળે કે ડાટે તો સાત પેઢીવાળાને એક દિવસનું અને માબાપને ત્રણ રાત્રિનું સૂતક લાગે અને કન્યામરણમાં ત્રણ પેઢીના સંબંધીઓને સ્નાન માત્ર અને માબાપને ત્રણ રાત્રિનું સૂતક લાગે.

૧૪ ત્રણ વર્ષ સુધીમાં કૃતચૂડ (વાળ ઉતરાવેલા) બાળકનું મરણ.

પ્રથમ વર્ષ પછીથી ત્રણ વર્ષની અવધિમાં વાળ ઉતરાવેલા મૃતપુત્રનું પિતાથી આરંભી સાત પેઢીના પુરુષોને તથા (ઓરમાન માને) ત્રણ રાત્રિનું સૂતક લાગે અને એવા મરેલા બાળકને બાળવો જ એવો નિર્ધાર છે.

૧૫ ત્રણ વર્ષ ઉપરની વયના પુત્રનું મરણ.

વાળ ઉતરાવેલા હોય કે ન હોય, એવો ત્રણ વર્ષ ઉપરાંતનો પુત્ર જનોઈ દીધા પહેલાં મરણ પામે તો માતાપિતાથી માંડીને સાત પેઢીના સર્વને ત્રણ દિવસનું સૂતક લાગે ને તેવા પુત્રને બાળવો જ. ઉદકદાનાદિ બોલ્યાવિના આપવું. વાળ ઉતરાવેલા મૃતપુત્રને તો પૃથ્વી ઉપર મૂંગે મોઢે પિંડદાન દેવું.

૧૬ ત્રણ વર્ષ પછી ને વાગ્દાન (વેસવાળ) પહેલાં કન્યામરણ.

ત્રણ વર્ષ ઉપરાંત અને વાગ્દાન થતાં પહેલાં મરણ પામેલી કન્યાનું ત્રણ પેઢીવાળાને એક દિવસનું અને માબાપને ત્રણ દિવસનું સૂતક લાગે. અગ્નિસંસ્કાર અને ઉદકદાનાદિ બોલ્યાવિના કરવું.

૧૭ વાગ્દાન પછી ને પરણ્યા પહેલાં કન્યા મરણ.

વિવાહ (વેસવાળ) પછી અને લગ્ન પહેલાં મૃતકન્યાનું સાસરીઆનાં અને પિયરીઆનાં બન્ને કુળમાં પિતાદિ સાત પેઢીના સર્વ સંબંધીઓને ત્રણ દિવસનું સૂતક લાગે તથા દાહ ઉદકદાનાદિ મૌન રહીને કરવું.

૧૮ જનોઇ વગરનો પુત્ર ને કુંવારી કન્યા મરે તો સોદક વગેરેને.

જનોઇ વગરનો પુત્ર મરે વા કુંવારી કન્યા મરે તો આઠથી ચૌદ પેઢી સુધીના માણસોને સૂતક લાગતું નથી. કિંતુ તેઓએ માત્ર સ્નાન કરવું, (એ જ પ્રમાણે ચૌદ પેઢી ઉપરનાએ પણ સ્નાન કરવું.)

૧૯ સંબંધીઓની ગણત્રી.

(ત્રણ પેઢી સુધીનાં માણસોને "ત્રિપુરુષ સપિંડ" જાણવા, સાત પેઢી સુધીના માણસોને "સપિંડ," આઠથી ચૌદ પેઢી સુધીનાં માણસોને ' 'સોદક" અને તે ઉપરાંત પંદરથી એકવીશ પેઢી સુધીનાંને "સગોત્ર" સમજવાં.

૨૦ જનોઇ દીધેલા દીકરાનું સૂતક.

ઉપવીત એટલે જનોઇ આપેલા મૃતપુરુષ (મરેલા પુત્ર) નું સર્વ સપિંડોને એટલે સાત પેઢીના પિત્રાઇઓને પૂરું સૂતક લાગે. બ્રાહ્મણજાતિને દશ દિવસનું, ક્ષત્રિયને બાર દિવસનું, વૈશ્યવર્ણને પંદર દિવસનું, શૂદ્રને (મરનાર પરણેલો હોય તો) એક મહિનાનું અને ત્રિવર્ણની સેવામાં ઉપયોગી એવા સતશૂદ્રને પખવાડીઆનું સૂતક લાગે. સોદકને ત્રણ રાત્રિનું અને સગોત્રને સ્નાન માત્ર લાગે.

૨૧ પરણાવેલી દીકરી મરે તેનું.

પરણાવેલી કન્યા પિતાને ઘેર મરે તો માતાપિતાને તથા સગાભાઇને ત્રણ રાત્રિનું અને કાકા વગેરે સર્વને એક દિવસનું સૂતક લાગે.

૨૨ પિતાને ઘેર દીકરીને સુવાવડ આવે તેનું.

બાપના ઘરમાં બેટીને પ્રસવ (સુવાવડ) થાય તો માતાપિતાને ત્રણ રાત્રિનું અને સગા ભાઇને એક રાત્રિનું જનનાશૌચ એટલે વૃદ્ધિસૂતક લાગે. કાકા વગેરે સર્વને એક દિવસનું લાગે, એમ કેટલાક કહે છે.

૨૩ પતિના ઘરમાં સ્ત્રીને પ્રસવ થાય તેનું.

સ્વામીના ઘરમાં સ્ત્રીને પ્રસવ થાય (બાળક અવતરે) તો પિતા આદિક પિયરીઆંને વૃદ્ધિસૂતક લાગે નહિ.

૨૪ પતિના ઘરમાં સ્ત્રીનું મરણ.

પતિ (ધણી) ના ઘરમાં સ્ત્રીનું મરણ થાય તો તે સ્ત્રીનાં માબાપને ત્રણ રાત્રિનું સૂતક લાગે.

૨૫ માબાપનું મરણસૂતક પરણેલી દીકરીને.

માતાપિતાના મરણમાં પરણેલી પુત્રીને જો દશ દિવસમાં જાણવામાં આવે તો ૩ રાત્રિનું અને દશ દિવસ ઉપરાંત કાલાંતરે એક વરસ સુધીમાં જાણવામાં આવે તોપણ પક્ષિણી એટલે દોઢ (૧।।) દિવસનું સૂતક લાગે. આ ઠેકાણે જ બ્રહ્મ-સ્મૃતિનાં વચનથી અતિક્રાંતાશૌચ એટલે ગયેલું સૂતક છે, બીજે ઠેકાણે નથી.

૨૬ પરણેલી કન્યાને દાદા વગેરેનું.

દાદા વા કાકા વગેરે મરણ પામે તો પરણેલી કન્યાએ સ્નાન કરવું અર્થાત્ સૂતક લાગે નહિ.

૨૭ જનોઇવગરના પુત્ર તથા કુંવારી કન્યાને સૂતક.

જનોઈવિગરનો પુત્ર ને કુંવારી કન્યાને માતાપિતાનું જ પૂરેપૂરું સૂતક લાગે છે. બીજાનું (મામા વગેરેનું) થોડું પણ સૂતક લાગતું નથી.

૨૮ ભાઇ બેનને પરસ્પરનું.

ભાઇ બેનનું એક બીજાને ઘેર એટલે બેનને ઘેર ભાઇનું અને ભાઇને ઘેર બેનનું મરણ થાય તો પરસ્પર ત્રણ રાત્રિનું આશૌચ લાગે ને જો પોતપો-તાને ઘેર કે બીજે ઠેકાણે મરણ પામે તો એક બીજાને પક્ષિણી (દોઢ દિવસનું) સૂતક લાગે.

૨૯ જનોઇ વગરના ભાઇનું બેનને.

જનોઇવગરનો ભાઇ મરે તો બેનને સૂતક લાગતું નથી. (માત્ર તેણે સ્નાન કરવું.)

૩૦ ઓરમાન ભાઇ બેનને પરસ્પરનું.

ઓરમાન ભાઇબેનને સગાં ભાઇબેનની પેઠે સૂતક લાગે છે, એટલે ઓર-માન ભાઇ ઓરમાન બેનને ઘેર મરેલ હોય તો તે બેનને ત્રણ દિવસનું ને બીજે ઠેકાણે મરેલ હોય તો બેનને દોઢ દિવસનું સૂતક લાગે. તેમ જ ઓરમાન બેન

ઓરમાન ભાઇને ઘેર મરણ પામી હોય તો તે ભાઇને ત્રણ દિવસનું ને બીજે ઠેકાણે મરણ પામી હોય તો તે ભાઇને દોઢ દિવસનું સૂતક લાગે. તેમ જ એક બેન મરેલ હોય તો બીજી બેનને પણ ઉપરની પેઠે સમજી લેવું.

૩૧ મામાનું મરણસૂતક.

મામો મરે તો ભાણેજોને પક્ષિણી અને જો ઉપકારી મામો મરે તો ત્રણ રાત્રિનું મૃતસૂતક લાગે.

૩૨ મામીનું સૂતક.

મામીના મરણમાં તેની નણંદનાં છોકરાં એટલે ભાણેજો પક્ષિણી સૂતક પાળવાથી શુદ્ધ થાય.

૩૩ ભાણેજોનું સૂતક મામા માશીને.

જનોઇ દીધેલો ભાણેજ મરે તો મામા તથા માશીને ત્રણ રાત્રિનું સૂતક લાગે ને જો જનોઇ દીધાવગરનો ભાણેજ મરે તો તેમને પક્ષિણીનું સૂતક સમજવું. ભાણેજી મરે તો માત્ર સ્નાન કરવું, એમ જણાય છે.

૩૪ માતામહ એટલે માના બાપ (નાના અથવા વડવા)નું.

માતામહ એટલે માતુશ્રીના પિતા મરણ પામે તો દૌહિત્ર એટલે મરનારની દીકરીના દીકરાને ત્રિરાત્રનું આશૌચ લાગે.

૩૫ દીકરીના દીકરાનું.

ઉપવીત એટલે જનોઈ દીધા વગરનો (દૌહિત્ર) દીકરીનો દીકરો મરે તો વડીઆઈ વડાવા એટલે માના માબાપને પક્ષિણી (દોઢ દિવસ)નું સૂતક લાગે અને જનોઈ દીધેલો દૌહિત્ર મરે તો તેઓને ત્રણ રાત્રિનું સૂતક લાગે, એમ કેટલાક કહે છે.

૩૬ વડીઆઈ એટલે માની માનું.

વડીઆઇ અથવા નાની એટલે માની મા મરણ પામે તો તેની દીકરીના દીકરાને પક્ષિણી એટલે દોઢ દિવસનું મૃતસૂતક લાગે.

૩૭ સાસુ સસરાનું.

સાસુ સસરાના મરણકાળે જમાઈ પાસે હોય તો તેને ત્રણ રાત્રિનું. જો પાસે નહિ પણ એ જ ગામમાં હોય તો પક્ષિણી (દોઢ દિવસ)નું અને જો પોતે જમાઈ પરગામ (બહાર ગામ) માં હોય તો માત્ર એક રાત્રિનું સૂતક લાગે.

સ્ત્રી મરવાથી જેઓનો સંબંધ નિવૃત્ત થયો હોય એવાં અને જેઓનો થોડો પણ ઉપકાર ન હોય તેવાં સાસુ વા સસરો મરણ પામે તો જમાઇને દોઢ વા એક દિવસનું સૂતક લાગે, એમ જણાય છે.

૩૮ જમાઇનું સૂતક.

જમાઇના મરણમાં સાસુ સસરાને સ્નાનમાત્ર લાગે; અથવા તો એક દિવસનું સૂતક પાળવાવિષે પણ એક પક્ષ છે.

૩૯ સાળાનું તથા સાળાના છોકરાનું.

શ્યાલક એટલે સાળો મરણ પામે તો બનેવીને એક દિવસનું સૂતક અને સાળાનો પુત્ર મરે તો સ્નાન માત્ર લાગે.

સ્ત્રી મરવાથી જેનો સંબંધ નિવૃત્ત થયો હોય તેવો સાળો મરણ પામે તો બનેવીએ સ્નાન કરવું, એમ નાગોજીભટ્ટના ગ્રંથમાં કહેલ છે, (શાળાએ બનેવીનું સ્નાન કરવું.)

૪૦ સાળીનું સૂતક.

સાળી મરે તોપણ સાળાના જેટલું એક દિવસનુંજ સૂતક લાગે, એમ કોઈ કહે છે.

૪૧ ફોઇનું સૂતક.

ફોઈ (બાપની બેન) ના મરણ સંબંધી ભત્રીજાને પક્ષિણી (દોઢ દિવસ) નું સૂતક લાગે.

(ઓરમાન ફોઈ મરણ પામે તો સ્નાન માત્ર કરવું)

૪૨ ભાઇનાં છોકરાંનું સૂતક ફોઇને.

ભાઈનું છોકરું મરે તો ફોઈએ માત્ર સ્નાન કરવું.

૪૩ માસીનું સૂતક.

માસીના મરણમાં તેની બેનના પુત્ર (ભાણેજ) ને પક્ષિણી સૂતક લાગે. એવી રીતે ઓરમાન માની બહેન મરી હોય તોપણ દોઢ દિવસનું સૂતક લાગે. પોતાની ફોઈના, માસીના તથા મામાના પુત્રને "આત્મબંધુ" જાણવા. પિતાની ફોઈના, માસીના તથા મામાને જે પુત્ર તેમને "પિતૃબંધુ" કહેવા. માતાની ફોઈના, માસીના તથા મામાના પુત્રોને "માતૃબંધુ" ગણવા. એ ત્રણ પ્રકારના બંધુઓમાંથી કોઈ મરણ પામે તો પક્ષિણી (દોઢ દિવસ) નું સૂતક લાગે.

ઉપર કહેલા બાંધવોમાંની એટલે મામાની, માશી કે ફોઈની પરણેલી કન્યા મરણ પામે તો માત્ર એક દિવસનું સૂતક લાગે.

૪૪ દત્તકનું માબાપને.

ફોઈ વગેરે એટલે પોતાની ફોઈ, માસી ને મામા, પિતાની ફોઈ, માસી, ને મામા, ને માતાની ફોઇ, માસી ને મામાની પરણેલી દીકરી મરણ પામે તો

એક દિવસનું સૂતક લાગે ને કુંવારી મરણ પામે તો સ્નાન માત્ર કરવું, એટલે તેનું સૂતક લાગતું નથી.

ઉપર કહેલા ત્રણ જાતના બંધુમાંથી હરકોઇ જનોઇ વગરનો વા નિર્ગુણ મરણ પામે તો એક દિવસનું સૂતક લાગે. (જનોયાળ મરણ પામે તો દોઢ દિવસનું) ને તે જો પોતાને (આપણે) ઘેર મરણ પામ્યો હોય તો ત્રણ રાત્રિનું સૂતક લાગે.

પોતે મરે તો આત્મબંધુત્રય એટલે પોતાની ફોઈના, માસીના ને મામાના જનોયાળ પુત્રને પણ દોઢ દિવસનું લાગે. કારણ કે સંબંધ સમાન છે (અર્થાત્ બાકી રહેલા પિતૃબંધુ અને માતૃબંધુઓએ માત્ર સ્નાન કરવું.) ઉપર લખેલા આત્મબંધુત્રયમાંથી કોઈ પણ મરણ પામે તો ફોઈ વગેરેની પુત્રીઓએ સ્નાન માત્ર કરવું.

દત્તક એટલે ખોળે લીધેલો પુત્ર મરે તો જન્મ આપનાર તથા ખોળે લેનાર માબાપોને ત્રણ રાત્રિનું સૂતક આવે. બેઉ તરફના સપિંડ એટલે સાત પેઢીવાળા પિતરાઈઓને એક દિવસનું સૂતક લાગે.

૪૫ દત્તકને માબાપનું.

જો દત્તક પુત્રનાં બેઉ પક્ષનાં માબાપમાંથી કોઈ મરણ પામે તો તે દત્તકને ત્રણ (૩) રાત્રિનું સૂતક લાગે.

૪૬ દત્તકના પુત્ર પૌત્ર એટલે છોકરા તથા છોકરાના છોકરાનું.

દત્તકના પુત્ર તથા પૌત્રનું જન્મ કે મરણ થાય તો સાત પેઢીવાળાઓને વૃદ્ધિસૂતક કે મરણસૂતક દિવસનું લાગે.

૪૭ સપિંડદત્તક એટલે સાત પેઢીમાંથી લીધેલા દત્તકનું.

સપિંડ મધ્યેનો પુત્ર દત્તક લીધો હોય તો તેના મરણમાં સર્વ સપિંડોને દશ દિવસનું આશૌચ લાગે.

૪૮ આચાર્યાદિનું.

આચાર્યનું સૂતક શિષ્યને ત્રણ રાત્રિનું ગણાય; અને આચાર્યના સ્ત્રીપુત્ર મરે તો તેઓનું શિષ્યને એક દહાડાનું સૂતક લાગે. ઉપવીત (જનોઇ) ધારણ કરાવી ભણાવે તે "આચાર્ય" કહેવાય, થોડો ઘણો વેદનો ભાગ ભણાવનારને "ઉપાધ્યાય" કહીએ. તે ઉપાધ્યાયના મરણમાં શિષ્યને એક રાત્રિનું મૃતાશૌચ લાગે. (ગુરુનું પક્ષિણી સૂતક પાળવાનો પક્ષ પણ શુદ્ધિમયૂખમાં છે.)

૪૯ શિષ્યનું ગુરુને.

જનોઇ આપનાર ગુરુને શિષ્યનું ત્રણ રાત્રિ મરણ સૂતક લાગે. પણ જો બીજાએ જનોઈ દીધેલો પોતીકો શિષ્ય મરે તો તેનું ગુરુને એક રાત્રિ મૃતસૂતક લાગે.

૫૦ સહાધ્યાયી એટલે સાથે શીખનારનું.

એક જ ગુરુની પાસે જોડે શીખનાર અને તેમ જ એકગ્રામીણ અનૂચાન કે શ્રોત્રિય મરે તો એક દિવસનું મૃતાશૌચ જાણવું—"એકગ્રામીણ" એટલે એક ગામમાં રહેનાર, "અનૂચાન" એટલે અગસહિત વેદનું અધ્યયન કરનાર. "શ્રોત્રિય" એટલે એકલો (અંગવિનાનો) વેદ ભણનાર. "અધ્યયન" એટલે અર્થજ્ઞાન સહિત શીખવું, એ ન્યાય સિદ્ધ છે.

૫૧ સ્નેહી શ્રોત્રિય જેના ઘરમાં મરે તેને.

અસપિંડ એટલે સાતપેઢીમાંનો નહિ એવો કોઈ પણ સ્નેહી વેદસંપન્ન શ્રોત્રિય જેના ઘરમાં મરણ પામે તે ઘરધણીને એક રાત્રિનું સૂતક લાગે.

૫૨ સર્વ સપિંડોને જેઓનું સ્નાનમાત્ર લાગે એવાં મરણ.

વાનપ્રસ્થ, સંન્યાસી તથા નપુંસક એમાંનો કોઈ મરે, તેમ જ કોઈ રણ-સંગ્રામમાં મરે તો તેના સપિંડોને સ્નાન માત્ર લાગે.

૫૩ અતિક્રાંતાશૌચ.

"અતિક્રાંતાશૌચ એટલે સૂતક લાગવાના દિવસો વીતી ગયા પછી જાણ-વામાં આવે તે પ્રથમ સંબંધાનુસાર સૂતક પાળવાના કહેલા દિવસ વીત્યા પછી અવતર્યાના કે મુવાના સમાચાર સાંભળવામાં આવે ત્યારે સૂતક પાળવું કે કેમ, તેનો નિર્ણય."

તેમાં વૃદ્ધિસૂતક કહેલા દિવસ વીત્યા પછી લાગી શકતું નથી; તોપણ પિતાને સ્નાન લાગે ખરું.

મરણમાં તો જનોઈ દીધાવગરના મરણાદિ નિમિત્ત ત્રિરાત્ર જેવાં સૂતકને તથા બેન મામા આદિકના મરણનિમિત્ત ત્રિરાત્રિ જેવાં સૂતકને અતિક્રાંતાશૌચ લાગે નહિ. (તેમ જ પક્ષિણી કે એક રાત્રના જન્મસૂતકનું પણ અતિક્રાંતાશૌચ ન લાગતાં સ્નાન માત્ર લાગે.) કેમકે અતિક્રાંતાશૌચ એ દશ દિવસ કે તેથી વધતા દિવસના મૃતાશૌચનો વિષય છે.

૫૪ દસ દહાડામાં જન્મમરણની ખબર પડે તો.

દશ દિવસમધ્યે જન્મ અથવા મરણ જાણવામાં આવે તો પુત્રાદિ સર્વ સાત પેઢીવાળાને જાણ્યામાં આવે ત્યારથી બાકી રહેલા દિવસ પાળવાથી શુદ્ધિ છે. જેમ કે (ત્રણ દિવસ થઈ ગયા પછી સાંભળવામાં આવે તો બાકીના સાત દિવસ સૂતક લાગે ઇત્યાદિ.) ક્રિયા તથા અસ્થિપર્ણાદિ સંસ્કાર પણ બાકી રહેલા દિવસથી જ પૂરા કરવા.

૫૫ ત્રણ દિવસના મૃતાશૌચમાં અતિક્રાંતાશૌચ ન લાગે.

સોદક એટલે સાત પેઢી ઉપરાંત ચૌદ પેઢી મધ્યેના પિત્રાઇનું મરણ પ્રથમની ત્રણ રાત્રિમાં જાણવામાં આવે તો ત્રણ રાત્રિ પૂરી થતાં શુદ્ધિ જાણવી ને ત્રણ રાત્રિ વીતી ગયા પછી તો દશ દિવસ મધ્યે જાણ્યામાં આવે તોયે ત્રિરાત્રિવાળા સૂતકીને પછી સૂતક લાગતું નથી, પણ સ્નાનમાત્રથી જ શુદ્ધિ છે. મામા, માશી આદિકનાં જેટલી જગાએ ત્રણ રાત્રનાં સૂતક છે, તેટલી જગાએ ઉપરનો પ્રકાર લાગુ પાડવો, એટલે ત્યાં અતિક્રાંતાશૌચ ન પાળવું.

૫૬ માતાપિતાનું દીકરાને અતિક્રાંતાશૌચ.

માતાપિતાના મૃત્યુ સમયે દીકરો પાસે નહિ છતાં દૂર દેશાવર ગયેલો હોય ને વરસ વીતી ગયા પછીથી પણ જો તે પુત્ર માબાપના મોતની ખબર સાંભળે, તો તે દિનથી પાછું ફરી તેને દશ દિવસાદિ પૂર્ણ મૃતસૂતક પાળવું પડે.

૫૭ પતિપત્નીનું પરસ્પર.

પતિપત્ની (સ્ત્રી પુરુષ) માંથી કોઇ મરણ પામે ને તેઓ એક બીજાથી જૂદા દેશાંતરમાં હોય ને મુએ વરસ થઇ ગયું હોય તો પણ જાણે તે દિનથી દશ દિવસ આદિનું પૂર્ણ મરણસૂતક પરસ્પર એટલે પુરુષનું સ્ત્રીને અને સ્ત્રીનું પુરુષને લાગે.

૫૮ સપત્ની એટલે શોક્યનું પરસ્પર.

શોક્યના મરણમાં એક બીજીને બરોબર દશ દહાડાનું પૂર્ણ મૃતસૂતક વળગે. એમાં દેશકાળ જોવાની જરૂર નથી.

૫૯ સાપત્ન એટલે ઓરમાન માનું.

ઓરમાન માના મરણની ખબર વરસ પછી પણ દેશાંતરમાં સાંભળ્યામાં આવે તો ઓરમાન પુત્રને ત્રણ રાત્રિનું સૂતક લાગે

૬૦ ઔરસ એટલે પેટના પુત્રનું.

ઔરસ પુત્રનું મૃતસૂતક વરસ વીત્યા પછી દેશાંતરમાં પણ માતાપિત-સાંભળે, તે દિવસથી ત્રણ રાત્રિનું લાગે.

૬૧ જ્ઞાતિ એટલે સાપડ અથવા સજાતિનું એક દેશમાં.

એક દેશમાં જ્ઞાતિ (સપિંડ અથવા સજાતીય)ના સંબંધમાંથી કોઈ મરી જાય ને દશ દિવસ વીત્યા પછી ત્રણ માસ પૂરા થતાં જાણવામાં આવે તો ત્રણ રાત્રિનું, ૭ માસ લગીમાં માલમ પડે તો પક્ષિણી (દોઢ દિવસ)નું, નવ માસ ,સુધીમાં જણાય તો એક દિવસનું સૂતક લાગે. તે ઉપરાંત જાણ્યામાં આવે તે સ્નાનમાત્રથી શુદ્ધિ થાય, એવું "વૃદ્ધ વસિષ્ઠનું" કહેવું છે; પણ વળી '**માધવ**" અને "**દેવળ**" એ બેઉ ઋષિઓનું મત એમ છે કે, દશાહ ઉપરાંત દોઢ માસ સુધીમાં સાંભળે તો ત્રણ રાત્રિનું, ૭ માસ લગીમાં પક્ષિણી (દોઢ દીવસ)નું અને વર્ષ સુધીમાં જાણ્યામાં આવે તો એક રાત્રિનું સૂતક લાગે; પછી તે ઉપરાંત સ્નાન માત્ર લાગે. આ ઠેકાણે આપતકાળ કે અનાપતકાળના વિષયની વ્યવસ્થા જાણવી. (દોઢમાસ લગીમાં એક રાત્રિનું સૂતક અને પછીથી સ્નાન માત્ર વિષે પણ વચન છે.) "સૌરાષ્ટ્ર તથા **ગુજરાતમાં** ઘણું કરી દશ દિન વીતી ગયા પછી સાંભળે તો સ્નાન માત્ર કરે છે."

૬૨ દેશાંતરમાં જ્ઞાતિ એટલે સપિંડ વા સજાતિનું મરણ.

દશ દિવસ વીત્યા પછી પરદેશમાં કોઈ સાત પેઢીવાળાનું મરણ જાણ્યામા આવે તો ત્રણ પખવાડીયા લગીમાં ત્રણ રાત્રિનું, ત્યારથી ૭ માસ સુધીમાં માલમ પડે તો અહોરાત્ર (એક દિવસ ને એક રાત્રિ) નું, ત્યારથી વર્ષપર્યંત જાણવામાં .આવે, ને તે જો દિવસે સાંભળે તો સાયંકાળપર્યંત અને રાત્રે સાંભળે તો પ્રાતઃકાળ થતા પર્યંત મૃતાશૌચ લાગે. જો વર્ષાંતરે એટલે વરસની આખરે જાણ્યામાં આવે તો સ્નાનમાત્રથી શુદ્ધિ જાણવી. ઉપર કહેલું આ સર્વ અતિક્રાંતાશૌચ સર્વ વર્ણને સાધારણ છે. આ પ્રસંગમાં કેટલાકનું મત એમ છે કે, દેશાંતરમાં થયેલા સપિંડના મરણ વિષે જ્યારે ખબર પડે ત્યારે સ્નાનમાત્રથી જ શુદ્ધિ છે; પરંતુ આ આશૌચનિર્ણય કરનાર કહે છે કે, આ રીતે **માધવે** કહેલી વિષ્ણુસ્મૃતિને આધારે કેટલાકનું કહેલું અજ્ઞાનવિલસિત છે. વીશ યોજન એટલે એશી ગાઉ ઉપરાંત બ્રાહ્મણને દેશાંતર, ચોવીશ યોજન એટલે છન્નુ ગાઉ ઉપરાંત ક્ષત્રિયને દેશાંતર, ત્રીશ યોજન એટલે એકસો વીશ ગાઉ ઉપરાંત વૈશ્ય તથા સતશૂદ્રને દેશાન્તર, અને સાઠ યોજન એટલે બસો ચાળીશ ગાઉ ઉપરાંત શૂદ્રને દેશાન્તર જાણવું. પક્ષાંતરે જ્યાં જેવો પક્ષ કલ્પો હોય ત્યાં તેવું દેશાંતર ગણાય.

૬૩ સ્ત્રી પુરુષના ગોત્રસબંધી સૂતક.

એક ગોત્રસંબંધી જે જન્મ મરણના અતિક્રાંતાશૌચ, તે સ્ત્રી પુરુષ બેઉએ પાળવાં; પરંતુ બેન મામા આદિ સંબંધનાં નોખાં નોખાં ગોત્રનાં જેટલાં સૂતક છે, તેટલાં સ્ત્રી પુરુષમાંથી જેનાં સંબંધમાં હોય તે પાળે, એટલે પુરુષનાં સંબંધીનું પુરુષે અને સ્ત્રીનાં સગાંનું સ્ત્રીએ સૂતક પાળવું પણ બેઉને પાળવાની જરૂર નથી.

૬૪ આહિતાગ્નિ એટલે અગ્નિહોત્રીનું.

અગ્નિહોત્રીના મરણમાં પ્રેતને મંત્રપૂર્વક અગ્નિદાહ કરવામાં આવે, તે દિવસથી આરંભી તેના પુત્રાદિકોએ આશૌચ પાળવું.

૬૫ અગ્નિહોત્રીનું પ્રવાસમાં મરણ.

અગ્નિહોત્રી પરદેશ ગયેલો હોય ને ત્યાં મરણ પામતાં તેને જ્યાંસુધી વિધિપૂર્વક અગ્નિસંસ્કાર ન થાય ત્યાંસુધી તેના પુત્રાદિકને સૂતક લાગી શકે નહિ, તેમ જ સંધ્યાવંદનાદિ કર્મનો પણ ત્યાંસુધી બાધ નથી.

૬૬ અનાહિતાગ્નિ એટલે અગ્નિહોત્રી ન હોય તેનું.

અગ્નિહોત્ર ન હોય એવાનું સુતક તો મરણના દિવસથીજ પુત્રાદિકોને પાળવું પડે

૬૭ રાત્રિમાં જન્મમરણ થાય તે વિષે.

જે રાત્રિમાં જન્મ વા મરણ થાય, તે રાત્રિના માનની ઘટિકાના ત્રણ વિભાગ કરી, પ્રથમના બે ભાગમાં જો જન્મ કે મરણ થયેલું હોય તો પૂર્વ દિવસથી અને જો ત્રીજા (છેલ્લા) ભાગમાં જન્મ કે મરણ થાય તો ઉત્તર દિવસથી (બીજા દિવસથી) આરંભી સૂતક પાળવું. અર્ધ રાત્રિના પહેલાં પૂર્વ દિવસ અને અર્ધ રાત્રી પછી ઉત્તર (આવતો) દિવસ ગણાય. વળી સૂર્યોદય થતાં પહેલાં પૂર્વ દિવસ અને સૂર્યોદયની ઉપરાંત ઉત્તર દિવસ એમ પણ ગણાય. દેશાંતરના હેતુથી પક્ષત્રયથી વ્યવસ્થા જાણવી. મહારાષ્ટ્ર દેશમાં ઉપરના ત્રણ પક્ષમાંનો પહેલો પક્ષ ચાલે છે. "સૌરાષ્ટ્ર" એટલે કાઠીઆવાડના ભાગમાં છેલ્લો પક્ષ ચાલે છે. એટલે શુક્રના તારા શિવાય બીજો કોઈ પણ તારો દેખાય ત્યાંસૂધી પ્રથમનો દિવસ ગણે છે."

આશૌચસપાત એટલે એક સૂતકમાં બીજું.

૬૮ દશ દવસનાં મૃતકમાં બીજું મૃતક પડે તો.

દશ ૨સનું મૃતાશૌચ ચાલતું હોય તેમાં બીજું દશ દિવસનું કે તેથી ન્યૂન ઓછું) મૃતસૂતક આવી પડે તો તે પ્રથમના ચાલતા સૂતકના શેષ દિવસ સાથે ઉતરી જાય છે.

૬૯ દશ દિવસના જાતકમાં બીજું જાતક પડે તો.

દશ દિવસનું વૃદ્ધિસૂતક ચાલતું હોય તેમાં દશ દહાડાનું કે તેથી ન્યૂન (ઓછું) વૃદ્ધિસૂતક આવી પડે તો તે પૂર્વસૂતકના બાકી દિવસ પૂરા થતાં ઉતરી જાય.

૭૦ જન્મસૂતકમાં મૃતસૂતક પડે તો.

વૃદ્ધિસૂતક ચાલતું હોય તેમાં દશ દિવસનું કે તેથી ઓછું પ્રતસૂતક આવી પડે તો તે પ્રથમના વૃદ્ધિસૂતક સાથે ઉતરે નહિ; પરંતુ તે પ્રથમના અવશેષ વૃદ્ધિસૂતકની, આવી પડેલા પ્રેતસૂતકની સાથે સમાપ્તિ કરવી.

૭૧ ત્રણ દિવસના સૂતકમાં દશ દિવસનું પડે તો.

ત્રિદિવસાદિ જેવા મૃતસૂતક કે વૃદ્ધિસૂતકમાં દશ દિવસનું મૃતસૂતક કે વૃદ્ધિ-સૂતક આવી પડે તો તેની પૂર્વના મૃતસૂતક કે વૃદ્ધિસૂતક સાથે શુદ્ધિ થાય નહિ.

૭૨ સૂતકમાં સરખું ઓછું જાતક ઉતરે.

દશ દિવસના મૃતસૂતકમાં બરોબરીનું કે તેથી ઓછું વૃદ્ધિસૂતક આવી પડે તો પૂર્વના મૃતાશૌચ સાથે તે ઉતરી જાય.

૭૩ ઓછા દિવસના સૂતકમાં વધારે દિવસનું જન્મસૂતક ઉતરે.

મરણસૂતકમાં મોટું વૃદ્ધિસૂતક આવી પડે તો તે પણ પ્રથમના મરણસૂતક સાથે ઉતરી જાય, એમ શુદ્ધિવિવેકકાર કહે છે.

૭૪ એક સૂતકમાં બીજું સૂતક પડયું હોય, પણ તે પ્રથમનું ઉતર્યા પછી જણાય તો.

પ્રથમ આશૌચ ચાલતું હોય તેમાં બીજું પડે, પણ તે આશૌચ જાણવામાં આવેલું ન હોય ને તે પ્રથમના આશૌચની આખરે જાણ્યામાં આવે તો પછી પણ પૂર્ણ પાળવું જાઇએ. પહેલા ચાલતા દશ દિવસના સૂતકની છેલ્લી રાત્રિમાં દસ દહાડાનું વૃદ્ધિસૂતક આવી પડે તો બે દિવસ એટલે તે રાત્રિ ને આવતો દિવસ પ્રથમના આશૌચાંતમાં એટલે સૂતકની છેવટમાં વધારવાથી સૂતક ઉતરે.

૭૫ દશ દિવસનું સૂતક ઉતારવાના છેલ્લા પહોરમાં બીજું તેટલું સૂતક પડે તો.

દશ દિવસના સૂતકની છેલ્લી રાતના ચોથા પહોરમાં દશ દિવસનું બીજું સૂતક પડે તો ત્રણ દિવસ અધિક પાળવાથી સૂતક ઉતરી જાય.

૭૬ ત્રણ દિવસના સૂતકમાં બીજું ત્રણ દિવસનું પડે તો.

ત્રણ દિવસને આદિ લેઈ એવાં સૂતક શેષ રાત્રિએ પરસ્પર આવી પડે તો તે પ્રથમના સૂતક સાથે ઉતરી જાય. આ ઠેકાણે દિવસ વધારવા નહિ.

૭૭ સૂતકમાં સૂતક પડવાથી વધારાનું સૂતક પાળતાં વચમાં બીજું સૂતક પડે તો.

પ્રથમ જે સૂતકમાં બે ત્રણ દહાડા વધારવાના કહેલા હોય તે વધારેલા દિવસ મધ્યે વળી બીજું મોટું સૂતક આવી પડે તો તેની પૂર્વની સાથે શુદ્ધિ થાય નહિ. કારણ ન્યૂન અથવા બરાબરીનાં સૂતક પૂર્વનાં મોટાં સૂતક સાથે ઉતરી જાય; પરંતુ ન્યૂનમાં અધિક પડેલું સૂતક ઉતરે નહિ, તે તો પાળવું પડે જ.

૭૮ સપિંડના સૂતકમાં માબાપ અને પતિનું સૂતક પડે તો.

સપિંડ એટલે સાત પેઢીવાળાના ચાલતા સૂતકમાં માતાપિતા કે પતિનું પડેલું મૃતસૂતક ચાલતા સૂતકની સાથે ઉતરે નહિ. "તે તો જૂદું પાળવું પડે."

૭૯ માતુશ્રીના સૂતકમાં પિતાનું સૂતક પડે તો.

માતાના મરણ સૂતકમાં પિતાજીનું મરણ સૂતક આવી પડે તો પૂર્વશેષથી એટલે માતાના મરણસૂતકના બાકીના દિવસ સાથે પિતાના મરણસૂતકની શુદ્ધિ એક પક્ષે થાય.

પિતાનું સંપૂર્ણ મૃતસૂતક પાળવાથી શુદ્ધિ છે, એવો બીજો પક્ષ છે. "ઉપરનો વાકયવિરોધ મટવા માટે ઉપરની વ્યાખ્યામાં કહેલા "શેષ" પદની પૂર્ણ અર્થમાં લક્ષણા કરવી. બાકીનાં બીજાં આવી પડેલાં સૂતક તો માના સૂતક ભેળાં ઉતરી જાય."

૮૦ પિતાના સૂતકમાં માનું સૂતક.

પિતાના મૃતસૂતકમાં માતૃમરણનું સૂતક આવ્યે છતે પિતાનું પ્રેતસૂતક સંપૂર્ણ પાળીને બીજું પક્ષિણી "દોઢ" દિવસનું વિશેષ પાળવું. "બાપના સૂતકમાં પડેલાં બીજાં સૂતક પણ તે ભેળાં ઉતરી જાય."

૮૧ પિતાના સૂતકની છેલ્લી રાતના ચોથા પહોરે માતૃમરણ.

ઉપરની વ્યાખ્યામાં અધિક પક્ષિણી સૂતક પાળવાનું કહ્યું, તે સૂતકના દશમા દિવસની રાત્રિ પહેલાંનો પ્રસંગ જાણવો. પરંતુ બાપના સૂતકના દશમા દહાડાની છેલ્લી રાત્રીના ચોથા પહોરમાં માતાનું મરણ થાય તો પક્ષિણીને બદલે બે કે ત્રણ દિવસ વિશેષ સૂતક પાળવું.

૮૨ માતુશ્રી જો સતી થાય તો.

જો માતુશ્રી પોતાના મૃતસ્વામી સાથે સતી થાય તો સુતકમાં કશો વધારો કરવો નહિ, કેમકે પતિના સૂતકની સાથે જ સતી સ્ત્રીનું સૂતક ઉતરી જાય છે.

૮૩ ભેળાં સૂતકમાં પ્રથમના સૂતક સાથે પડેલું સૂતક કોને ન ઉતરે.

સૂતિકા એટલે સુવાવડી સ્ત્રી, અગ્નિ એટલે આગ મૂકનાર અને પ્રેતપુત્ર એટલે મરનારના પુત્રો તેઓને લાગેલું સૂતક પ્રથમના સૂતકમાં આવી પડે તે તે પ્રથમના સૂતક સાથે ઉતરે નહિ. તે પછીથી પડેલું સૂતક પણ સંપૂર્ણ પાળવું પડે. આ ઠેકાણે વચનાંતરનો બાધ ન લાગવા પ્રેતપુત્રનું પુનર્ગ્રહણ છે.

૮૪ જન્મસૂતકમાં તથા પ્રેતસૂતકમાં પ્રેતપિંડ તથા જાતકર્મ.

વૃદ્ધિ સુતકમાં મૃત સૂતક પડે તો પણ પિંડદાન દેવાનો બાધ નથી. તેમજ મૃતસૂતકમાં વૃદ્ધિ સૂતક પડે તો તેમાં બાળકને જાતકર્માદિ સંસ્કાર તે વખતે અથવા આશૌચાંતે એટલે મૃતસૂતક ઉતર્યા પછી કરવા, એવો વિકલ્પ છે.

૮૫ માના વધારાના સૂતકમાં બાપનું એકાદશાહ.

બાપના સૂતકમાં માનું સૂતક પડે તો દોઢ દિવસ વિશેષ પાળવા કહેલું છે, તે દોઢ દહાડામાં બાપનું એકાદશાહ શ્રાદ્ધ સારવાનો બાધ નથી.

સંસર્ગાશૌચ.

૮૬ પ્રેતસ્પર્શ, સૂતકી ભોજન, સૂતકી ગૃહવાસ.

શવ (શબ) એટલે મડદાને દિવસે અડકે તો તારાસૂતક લાગે, એટલે રાત્રે તારા જોવાથી શુદ્ધિ થાય ને જો રાત્રે મડદાને સ્પર્શ કરાય તો સવારે સૂર્યનું દર્શન થતાં સૂતક ઉતરી જાય. સૂતકીનું અન્ન જમવાથી તથા તેના ઘરમાં રહેવાથી મરનારના સંબંધી જેટલું આશૌચ એટલે પ્રેતસૂક લાગે. (આવા સૂતકને સંસર્ગાશૌચ કહીએ.

૮૭ સંસર્ગાશૌચમાં કર્માધિકાર.

આ સંસર્ગાશૌચમાં નિત્ય કર્મનો અનધિકાર નથી. (એટલે નિત્ય કર્મ કરવું) પણ સ્પર્શ કરવો નહિ.

૮૮ સંસર્ગસૂતકીના પદાર્થાદિ.

એ સંસર્ગસૂતકવાળાના સ્ત્રી પુત્રાદિને તથા દ્રવ્યાદિ પદાર્થને મરણ સૂતકનો સંબંધ નથી.

૮૯ સ્નેહપૂર્વક સજાતિના પ્રેતનું વહિનાદ.

સ્નેહવડે પોતાની જાતના પ્રેતને ઉંચકે, તેના ઘરનું અન્ન જમે અને તેના ઘરમાં રહે તો તેને દશ દિવસનું મૃતાશૌચ લાગે. પ્રેતનું અન્ન ન જમે, પણ માત્ર તેના ઘરમાં રહે તો ત્રણ દિવસનું સૂતક લાગે.

૯૦ માત્ર પ્રેતવહન (ફક્ત મડદાને ઊચકવું).

મરનારના ઘરમાં ન રહે અને તેનું અન્ન પણ ન જમે, માત્ર તેના પ્રેતને ઉપાડે તો તેને એકજ દિવસનું મૃતાશૌચ લાગે.

૯૧ મૂલ્ય લેઈ મડદું ઉપાડવું.

મૂલ્ય લઇને સવર્ણનું એટલે બ્રાહ્મણ બ્રાહ્મણનું પ્રેત ઉંચકે અને બાળે તો મરનારની જાતિવાળાને જેટલું મૃતાશૌચ લાગે તેટલું જ તેને પણ લાગે.

૯૨ વિજાતીય પ્રેતવહનાદિ.

વિજાતીય એટલે બ્રાહ્મણ, ક્ષત્રિયના પ્રેતને ઉંચકે તથા બાળે તો તેને પ્રેત (મરનાર)ની જાતિનું સૂતક લાગે. વળી જો કિંમત લેઇને વિજાતિના મડદાને ઉપાડે અને બાળે તો તેને મરનારની જાતવાળા કરતાં બમણું સૂતક લાગે.

૯૩ સોદક પ્રેતવહન.

સોદક એટલે સાત પેઢી ઉપરાંત ચૌદમી પેઢી સુધીના શબને ઉપાડે તો દશ દહાડાનું સૂતક લાગે.

૯૪ અસપિંડનાં પ્રેતને વસ્ત્રાદિ પહેરાવવાં.

અસપિંડ એટલે સાત પેઢીમાંનો નહિ એવા પ્રેતને અજાણતાં વસ્ત્રાદિ પહેરાવે તો એક દિવસના ઉપવાસથી શુદ્ધિ થાય. કદાપિ ઉપવાસ કરવાને અશક્ત હોય તો સ્નાન માત્ર કરવું; પરંતુ જાણી જોઇને એવા મડદાને અલંકૃત (વસ્ત્રાદિકથી શોભીતું) કરે તો "પાદકૃચ્છ્ર" એટલે બ્રાહ્મણને ૩ ઉપવાસ, ક્ષત્રિયને ૩ દિવસ અયાચિત (માગ્યા વિના મળે) તો ખાવું, વૈશ્યને ૩ રાત્રીભોજન અને શૂદ્રને ૩ એકભુક્ત વ્રત કરવાથી શુદ્ધિ થાય. **(આપસ્તંબ).**

૯૫ સવર્ણ અનાથનું શબ ઉપાડે તથા તેને બાળે તો.

કોઇ અનાથ (જેનું કોઇ કરનાર નથી એવો) પોતાનો નાતિલો બ્રાહ્મણ મરી જાય તેના પ્રેતને પરમાર્થ બુદ્ધિએ જે ઉંચકે, બાળે અને તેની ક્રિયા કરે તેને અનંત ફળની પ્રાપ્તિ થાય; ને તેની સ્નાનમાત્રથી શુદ્ધિ છે. સ્નાન કર્યાં પછી પ્રાણાયામ તથા અગ્નિસ્પર્શ કરવો.

૯૬ સવર્ણ માતુલાદિનું શબવહન.

સવર્ણ માતુલાદિ એટલે મામા, માશી, ફોઇ વગેરે સંબંધીના અનાથ પ્રેતને ધર્માર્થ ઉપાડે, બાળે અને તેની ક્રિયા કરે, તેને ત્રણ રાત્રિનું મૃતાશૌચ લાગે.

૯૭ પ્રેત પાછળ સ્મશાન જવું.

સપિંડના પ્રેત પાછળ સ્મશાન જવામાં અને અનાથ એવા અસપિંડની પાછળ સ્મશાન જવામાં તથા ક્રિયા કરવામાં દોષ નથી.

૯૮ સમોત્કૃષ્ટવર્ણીય પ્રેતાનુગમન.

સમોત્કૃષ્ટવર્ણીય પ્રેતાનુગમન એટલે સમાન વર્ણ કે ઉંચ વર્ણના પ્રેત પાછળ સ્મશાન જવું. એવા પ્રેત પાછળ સ્મશાન જાય તો સ્નાન, અગ્નિસ્પર્શ અને ઘૃતપ્રાશન (ઘી ખાવું) કરી ફરીને સ્નાન તથા પ્રાણાયામ કરવાથી શુદ્ધ થાય.

૯૯ હીનવર્ણ પ્રેતાનુગમન.

જો બ્રાહ્મણ પોતાથી ઉતરતા વર્ણના પ્રેત પાછળ સ્મશાનમાં જાય તો તેને સૂતક લાગવાનો પ્રકાર એવો છે કે–ક્ષત્રિયના સબ પાછળ જાય તો એક દિવસનું, વૈશ્યના શબ પાછળ જાય તો દોઢ દિવસનું અને શૂદ્રના શબ પાછળ જાય તો ત્રણ રાત્રિનું સૂતક લાગે. શુદ્ધિને સારું પૂર્વવત્ સ્નાનાદિક કરવાં.

૧૦૦ બ્રહ્મચારીને.

બ્રહ્મચારીને સપિંડવાળાનું પણ સૂતક ન લાગે, તેમ બીજા કોઇનું શબ ઉંચકવાનો, અગ્નિદાહ કરવાનો તથા પછીની ક્રિયા કરવાનો તેને અધિકાર નથી.

કદાચ કરે તો ફરીથી જનોઈ દેવું પડે અને કૃચ્છ્રપ્રાયશ્ચિત્ત કરવું પડે.

બ્રહ્મચારીને પોતાનાં માતાપિતા, આચાર્ય, ઉપાધ્યાય તથા માતામહ એટલે માનો બાપ એટલાનું અન્ત્યકર્મ કરવામાં બાધ નથી. તેમાં દશ દિવસ અસ્પર્શ રહેવું, એ જ આશૌચ (સૂતક) છે.

દશ દિવસ સંધ્યા, અગ્નિકાર્યાદિ કર્મનો અધિકાર છે.

આ ઠેકાણે **માધવ**નું મત એવું છે કે, "માત્ર એક દિવસ સ્પર્શ ન કરવો.

પોતાના માતાપિતાદિકના સૂતકમાં પણ બ્રહ્મચારીએ સૂતકીનું અન્ન ખાવું નહિ; ખાય તો પુનઃ ઉપવીત ધારણ કરવું.

જો બ્રહ્મચારી પોતાના પિતાદિકનું અન્ત્ય કર્મ ન કરે તો તેઓનું મૃતાશૌચ પણ બ્રહ્મચારીને ન લાગે.

ઉપવીત આપ્યા પછી ને સમાવર્તન સંસ્કાર થયા પહેલાં સૂતક પડે તો તે સમાવર્તન સંસ્કાર એટલે બ્રહ્મચર્યવ્રત પૂરું કર્યા પછી પ્રથમ મરી ગયેલાનું આશૌચ (સૂતક) બ્રહ્મચારીએ ત્રણ દિવસ પાળવું.

૧૦૧ જીવતક્રિયા કરનારાને.

જેણે જીવતક્રિયા કરી હોય, તેણે કોઈ સંબંધીનું સૂતક પાળવું નહિ, એમ **હેમાદ્રિમાં** કહેલું છે.

૧૦૨ વાનપ્રસ્થ, સંન્યાસી અને પતિત સંબંધી.

વાનપ્રસ્થ, સંન્યાસી અને પતિત એ ત્રણ જણાઓએ કોઇનું સૂતક પાળવું નહિ; તેમ તેઓનું સૂતક બીજા કોઇએ પણ પાળવું નહિ.

૧૦૩ સવર્ણ તથા ઉંચવર્ણ પ્રેતની ક્રિયા કરનારને.

સવર્ણ પ્રેત સંબંધી અથવા પોતાનાથી ઉંચાવર્ણના પ્રેત સંબંધી ઔર્ધ્વદેહિક એટલે ઉત્તર ક્રિયા કરનારાને મરનારની જાતિના સપિંડ પ્રમાણે સૂતક પાળ્યા પછી ત્રણ કૃચ્છ્ર કરવાથી શુદ્ધિ થાય.

૧૦૪ હીનવર્ણ પ્રેતનું ઔર્ધ્વદેહિક (ઉત્તર ક્રિયા).

પોતાથી ઉતરતી વર્ણના પ્રેતની ઉત્તર ક્રિયા કરનારે સપિંડ જેટલું સૂતક પાળીને બમણું, ત્રગણું, કૃચ્છ્રત્રય એટલે ૭, નવ વગેરે કૃચ્છ્ર કરવાં, તેથી શુદ્ધિ થાય.

૧૦૫ અગ્નિહોત્રીના અસ્થિનો દાહ તથા પુતલવિધાન.

અગ્નિહોત્રીનાં અસ્થિનો એટલે હાડકાંનો દાહ કરે અથવા હાડકાં ન મળવાથી તેનું પુતળવિધાન કરીને બાળે તો તે દિવસથી સર્વ સપિંડોને દશ દિવસ આશૌચ લાગે.

૧૦૬ સાધારણનો અસ્થિવાહ તથા પુતલવિધાન.

જો અગ્નિહોત્ર વગરનાનો અસ્થિદાહ કરે વા પર્ણશર (પલાશ દર્ભાદિ) ને શરીરના આકારમાં ગોઠવીને બાળે તો પહેલાં સૂતક પાળ્યું ન હોય એવાં પ્રેતનાં સ્ત્રીપુત્રને તે દિવસથી દશ દિવસનું પૂર્ણ સૂતક લાગે.

૧૦૭ પ્રથમ સૂતક પાળેલું એવાં સ્ત્રીપુત્રને ઉપરના પ્રસંગે.

પ્રથમ સૂતક પાળ્યું હોય તો પણ સ્ત્રીને તથા પુત્રને સંસ્કાર સમયના દિવસથી ત્રણ રાત્રિનું સૂતક લાગે. સ્વામીને સ્ત્રીના સંસ્કાર સમયે પણ પ્રથમ કહ્યા પ્રમાણે સૂતક લાગે. શોકયોને પણ પરસ્પર સંસ્કારકાળે એમ જ જાણવું.

૧૦૮ પ્રથમ સૂતક નહિ પાળનારા સપિંડોને.

પ્રથમ સૂતક પાળ્યું ન હોય એવા બીજા સપિંડોને પણ અગ્નિહોત્ર વગરના પુરુષના સંસ્કારકાળથી ત્રણ રાત્રિનું સૂતક લાગે ને જેઓએ પ્રથમ સૂતક પાળ્યું હોય એવા સપિંડોએ તો સંસ્કારકાળે સ્નાન માત્રજ કરવું.

૧૦૯ દશ દિવસ ઉપરાંત અસ્થિદાહાદિક સંસ્કાર.

ઉપરનાં ત્રિરાત્રાદિક સૂતક કહ્યાં, તે દશ દિવસ ઉપરાંત અગ્નિ સંસ્કાર કરવામાં આવે ત્યાં જાણવાં. દશ દિવસની અંદરના અગ્નિસંસ્કારમાં તો બાકી રહેલા દિવસો પૂરા થવાથી આશૌચ ઉતરી જાય છે.

રજોદર્શન નિર્ણય.

૧૧૦ જે સ્ત્રીને વીશ દિવસ ઉપરાંત થતું રજોદર્શન.

ઘણું કરીને સ્ત્રી વીશ દિવસ ઉપરાંત રજસ્વલા (અટકાવવાળી) થાય છે. તેવી સ્ત્રીને જો સત્તર દિવસ સુધીમાં ફરી રજોદર્શન થાય તો સ્નાનમાત્રથી શુદ્ધિ થાય. તે ઉપરાંત અઢાર દિવસ સુધીમાં રજોદર્શન થાય તો સ્ત્રીએ એક રાત્ર અસ્પર્શ પાળવો, ઓગણીસમે દિવસે બે દિવસ અને વીશ કે તે ઉપરાંત દિવસોમાં રજસ્વલા થનારી સ્ત્રીએ ત્રણ દિવસ કયાંહી અડકવું નહિ.

૧૧૧ વીશ દિવસની અંદર થતું રજોદર્શન.

હમેશાં ઘણું કરીને જે સ્ત્રીને વીશ દિવસની પહેલાં રજોદર્શન થતું હોય તેવી સ્ત્રીએ દશ દિવસ સુધીમાં દેખાય તો સ્નાન માત્ર કરવું, અગિયારમે દિવસે દેખાય તો એક રાત્ર, બારમે દિવસે દેખાય તો બે રાત્ર અને તેરમે દિવસે કે તે ઉપરના દિવસોમાં અટકાવ દેખાય તો ત્રણ રાત્રિ દૂર રહેવું.

ब्राह्मणार्थे विपन्नानां बन्दिगोग्रहणे तथा ।
आहवेषु विपन्नानामेकरात्रमशौचकम् ॥ ३० ॥

બ્રાહ્મણોના પ્રાણની રક્ષા કરવા જતાં, બંદીઓને* તથા ગાયોને કોઇ પકડી જતું હોય ત્યારે તેઓને છોડાવવા જતાં તથા યુદ્ધમાં સામે પગલે ચાલીને લઢતાં મરણ પામનારાઓનું એક રાત્રિ જ સૂતક લાગે છે. ૩૦

द्वाविमौ पुरुषौ लोके सूर्यमण्डलभेदिनौ ।
परिव्राड्योगयुक्तश्च रणे चाभिमुखो हतः ॥ ३१ ॥

આ જગતમાં યોગ સેવનારો સંન્યાસી તથા યુદ્ધમાં શત્રુની સામે ઉભો રહીને મરણ પામનારો, એમ બે પુરુષો સૂર્યના મંડળને ભેદી નાંખીને પરલોકમાં જાય છે. ૩૧

यत्र यत्र हतः शूरः शत्रुभिः परिवेष्टितः ।
अक्षयाँल्लभते लोकान्यादि क्लीबं न भाषते ॥ ३२ ॥

---

* સ્તુતિપાઠકો.

શૂરવીર પુરુષ શત્રુઓથી ઘેરાઇ જઈને જ્યાં જ્યાં મરણ પામે છે ત્યાં ત્યાં તે અક્ષય (અવિનાશી) લોકોને મેળવે છે. પરંતુ તે જો મરણ સમયે શત્રુની સાથે નપુંસકના (નબળાઇ ભરેલા–મને બચાવો વગેરે) શબ્દો બોલતો નથી તો. ૩૨

संन्यस्तं ब्राह्मणं दृष्ट्वा स्थानाच्चलति भास्करः ।
एष मे मंडलं भित्वा परं स्थानं प्रयास्यति ॥ ३३ ॥

સંન્યાસી બ્રાહ્મણને જોઈને સૂર્ય પણ પોતાના સ્થાનમાંથી ચલાયમાન થાય છે. તેનું કારણ એ છે કે, આ સંન્યાસી મારાં મંડળને વિંધીને પરમ સ્થાનમાં જશે, (આવો તેના મનમાં ભય થાય છે). ૩૩

૩૩. સૂર્યનું મંડળ જડ એવાં કિરણોના સમૂહથી બનેલું છે; તેથી તેના ભેદાવાથી સૂર્યને કોઇ પણ જાતની વેદના થતી નથી; પરંતુ તેના મનમાં એવો કલેશ થાય છે કે, એક પ્રાકૃત પુરુષ કે જે મારી નીચેના લોકમાં હતો, તે પણ મારી ઉપરના લોકમાં જશે. મનુષ્યો તપશ્ચરણ કરીને ઉપરના લોકમાં જાય, એ વાત દેવતાઓને ગમતી નથી. આ વાત શ્રુતિ સ્મૃતિમાં ઘણે ઠેકાણે વર્ણવી છે. સૂર્ય સંન્યાસીને જોઇને કંપે છે, આમ જે કહ્યું છે એ અર્થવાદ છે અને તેનું તાત્પર્ય એવું છે કે, સંન્યાસ આશ્રમ સર્વ કરતાં શ્રેષ્ઠ અને મોક્ષનું સાધન છે.

यस्तु भग्नेषु सैन्येषु विद्रवत्सु समन्ततः ।
परित्राता यदा गच्छेत्स च क्रतुफलं लभेत् ॥ ३४॥

સૈન્યો ભયથી ભંગાણ પાડીને (રણમાંથી) ચોતરફ નાસવા માંડે છે, ત્યારે જે પુરુષ તેની રક્ષા કરે છે, તેને યજ્ઞનું ફળ મળે છે. ૩૪

यस्य च्छेदक्षतं गात्रं शरमुद्गरयष्टिभिः ।
देवकन्यास्तु तं वीरं हरन्ति रमयन्ति च ॥ ३५ ॥

જે શૂરવીરનું શરીર (રણમાં) બાણથી, મુદ્ગરથી અથવા તો લાકડીઓથી છિન્નભિન્ન થાય છે, તે પુરુષ જ્યારે મરણ પામે છે ત્યારે દેવકન્યાઓ તે વીરપુરુષને હરી જાય છે (સ્વર્ગમાં લઈ જાય છે) અને તેને રમાડે છે. ૩૫

देवाङ्गनासहस्राणि शूरमायोधने हतम् ।
त्वरमाणाः प्रधावन्ति मम भर्त्ता ममेति च ॥ ३६ ॥

રણમાં મરણ પામેલા શૂરવીરને જોઇને હજારો દેવાંગનાઓ ઉતાવળી થઇને તેની સામે દોડે છે અને કહે છે કે, અમારા પતિ થાઓ અમારા પતિ થાઓ! ૩૬

यं यज्ञसङ्घैस्तपसा च विप्राः स्वर्गैषिणो वात्र यथैव यान्ति ।
क्षणेन यान्त्येव हि तत्र वीराः प्राणान्सुयुद्धेन परित्यजन्तः ३७

સ્વર્ગની ઇચ્છાવાળા બ્રાહ્મણો ઘણા યજ્ઞો કરીને તથા તપ કરીને જે સ્થાનકમાં જે રીતે જાય છે, તે સ્થાનકમાં વીર પુરુષો ધર્મયુદ્ધમાં પ્રાણો તજીને એક ક્ષણમાં જાય છે જ. ૩૭

जितेन लभ्यते लक्ष्मीर्मृतेनापि सुराङ्गनाः ।
क्षणविध्वंसिनि कायेऽस्मिन्का चिन्ता मरणे रणे ॥ ३८ ॥

રણમાં શત્રુઓને જિતવાથી લક્ષ્મી મળે છે અને મરવાથી દેવાંગનાઓ મળે છે; તો પછી ક્ષણવારમાં નાશ પામનારી આ કાયાવડે રણમાં મરવામાં શા માટે વિચાર કરવો? ૩૮

ललाटदेशे रुधिरं स्रवच्च यस्याहवे तु प्रविशेच्च वक्त्रम् ।
तत्सोमपानेन किलास्य तुल्यं संग्रामयज्ञे विधिवच्च दृष्टम्॥३९॥

જે પુરુષને યુદ્ધમાં (ઘા લાગવાથી) લલાટમાંથી લોહી ઝરીને મુખમાં પેસે છે, તે એ પુરુષને સોમપાનના બરાબર સમજવું અને તે યુદ્ધરૂપી યજ્ઞમાં વિધિપૂર્વક ઉત્પન્ન થાય છે, તેથી તે મુખમાં જવાથી દોષ લાગતો નથી. ૩૯

૩૯. આ નવ શ્લોક યુદ્ધમાં મરણના અર્થવાદ તરિકે પરાશરે કહ્યા છે.

अनाथं ब्राह्मणं प्रेतं ये वहन्ति द्विजातयः ।
पदे पदे यज्ञफलमानुपूर्व्या लभन्ति ते ॥ ४० ॥

જે બ્રાહ્મણો અનાથ બ્રાહ્મણના શબને ઉપાડીને સ્મશાનમાં લઈ જાય છે, તેઓ પગલે પગલે અનુક્રમે યજ્ઞનું ફળ પામે છે. ૪૦

न तेषामशुभं किञ्चित्पापं वा शुभकर्मणाम् ।
जलावगाहनात्तेषां सद्यःशौचं विधीयते ॥ ४१ ॥

અનાથ બ્રાહ્મણનાં શબને ઉપાડનારા શુભ કર્મ કરે છે અને તેઓનું કંઇ પણ અશુભ થતું નથી, તેમ તેને પાપ પણ લાગતું નથી. પરંતુ તેઓ પાણીવડે સ્નાન કરવાથી તુરતજ શુદ્ધ થાય છે. ૪૧

૪૧. જેને ભાઇઓ તેમ જ સંપિડો ન હોય, તે અનાથ કહેવાય છે અને તેવા અનાથને દાહ કરવાથી પુણ્ય થાય છે, આવું ધર્મ શાસ્ત્રનું મત છે. મૂળ શ્લોકમાં

अशुभं પદ છે, તેનો અર્થ મુંડન થાય છે. અર્થાત્ અનાથને સંસ્કાર કરનારાને મુંડન કરાવવું પડતું નથી તથા મૂળમાં पावं શબ્દ છે, તેનો અર્થ સૂતક થાય છે અર્થાત્ અનાથને સંસ્કાર કરનારાને સૂતક પણ લાગતું નથી.

असगोत्रमबन्धुं च प्रेतीभूतं द्विजोत्तमम् ।
वहित्वा च दहित्वा च प्राणायामेन शुद्ध्यति ॥ ४२ ॥

પોતાનો સગોત્રી તથા બંધુ ન હોય તેવા મરણ પામેલા બ્રાહ્મણને સ્મશાનમાં લઈ જઈને અગ્નિસંસ્કાર કરનારો બ્રાહ્મણ પ્રાણાયામ કરવાથી શુદ્ધ થાય છે. ૪૨

૪૨. કેવળ સ્નાન અને પ્રાણાયામ જ કરવો નહિ, પરંતુ અગ્નિનો પણ સ્પર્શ કરવો. આ ત્રણ પદાર્થના સેવનથી અનાથને અગ્નિસંસ્કાર કરનારો શુદ્ધ થાય છે. પ્રાણાયામ કેટલા કરવા, એની સંખ્યા લખી નથી; માટે કપિંજલન્યાયે કરી ત્રણ પ્રાણાયામ કરવા. કપિંજલન્યાય આ પ્રમાણે છે. कपिंजलानालभेत એ વિધિ વાક્યમાં કપિંજલનું આલભન કરવાની વાત લખી છે; પણ કેટલાં કપિંજલ એ સંખ્યા જણાવી નથી, માટે कपिंजलान् એ બહુવચન જેમ ત્રણ કલિંજલની સંખ્યાનો નિર્ધાર કરે છે, તેમ અહીં પણ ત્રણ પ્રાણાયામ જાણવા.

अनुगम्येच्छया प्रेतं ज्ञातिमज्ञातिमेव वा ।
स्नात्वा सचैलं स्पृष्ट्वाग्निं घृतं प्राश्य विशुद्ध्यति ॥ ४३ ॥

સપિંડ અથવા તો અસપિંડ એવા પ્રેતની પાછળ ઈચ્છાથી જનારાએ વસ્ત્રોસાથે સ્નાન કરવું, અગ્નિનો સ્પર્શ કરવો અને ઘીનું પ્રાશન કરવું, એટલે તે શુદ્ધ થાય છે. ૪૩

क्षत्रियं मृतमज्ञानाद्ब्राह्मणो योऽनुगच्छति ।
एकाहमशुचिर्भूत्वा पञ्चगव्येन शुद्ध्यति ॥ ४४ ॥

જે બ્રાહ્મણ અજાણતાં, મરણ પામેલા ક્ષત્રિયની પાછળ સ્મશાનમાં જાય છે, તેણે એક દિવસ સૂધી સૂતક પાળવું તથા પંચગવ્યનું પ્રાશન કરવું, એટલે તે શુદ્ધ થાય છે. ૪૪

૪૪. ગાયનું દૂધ, દહીં, ઘી, મૂત્ર અને છાણ, આ પાંચ ગવ્ય કહેવાય છે.

शवं तु वैश्यमज्ञानाद्ब्राह्मणो ह्यनुगच्छति ।
कृत्वा शौचं द्विरात्रं च प्राणायामान् षडाचरेत् ॥ ४५ ॥

જે બ્રાહ્મણ અજાણતાં, મરણ પામેલા વૈશ્યની પાછળ સ્મશાનમાં જાય છે, તેણે બે રાત્રિ સૂતક પાળવું અને છ પ્રાણાયામ કરવા, એટલે તે શુદ્ધ થાય છે. ૪૫

प्रेतीभूतं तु यः शूद्रं ब्राह्मणो ज्ञानदुर्बलः ।
अनुगच्छेन्नीयमानं त्रिरात्रमशुचिर्भवेत् ॥ ४६ ॥

જે મૂર્ખ બ્રાહ્મણ મરણ પામેલા અને સ્મશાનમાં લઈ જવાતા એવા શૂદ્રના શબની પાછળ જાય, તેણે ત્રણ રાત્રિ સૂતક પાળવું. ૪૬

૪૬. ક્ષત્રિય જો અજાણતાં વૈશ્યના શબની પાછળ જાય તો તેણે એક દિવસ સૂતક પાળવું અને શૂદ્રના શબની પાછળ જાય તો બે દિવસ સૂતક પાળવું અને વૈશ્ય જો અજાણતાં શૂદ્રના શબની પાછળ જાય તો તેણે એક દિવસ સૂતક પાળવું.

त्रिरात्रे तु ततः पूर्णे नदीं गत्वा समुद्रगाम् ।
प्राणायामशतं कृत्वा घृतं प्राश्य विशुद्ध्यति ॥ ४७ ॥

અને ત્રણ રાત્રિ વીતી ગયા પછી બ્રાહ્મણે સમુદ્રમાં મળનારી નદીના તીર ઉપર જવું, ત્યાં સ્નાન કરીને સો પ્રાણાયામ કરવા અને ઘીનું પ્રાશન કરવું (ચાટવું), એટલે તે શુદ્ધ થાય છે. ૪૭

विनिर्वर्त्य यदा शूद्रा उदकान्तमुपस्थिताः ।
द्विजैस्तदानुगन्तव्या एष धर्मः सनातनः ॥ ४८ ॥

इतिश्री पाराशरसंहितायां जननमरणसूतकादिशुद्धि-
र्नाम तृतीयोऽध्यायः समाप्तः

શૂદ્રો ઉદક ક્રિયા કરીને સૂતકમાંથી મુક્ત થાય ત્યારે દ્વિજ જાતિના પુરુષોએ તેઓની પાસે લૌકિક કરવા માટે જવું. આ સનાતન ધર્મ (આચાર) છે. ૪૮

૪૮. ઉપર કહ્યા પ્રમાણે બ્રાહ્મણને દુઃખી ક્ષત્રિયની પાસે લૌકિક કરવા જવું હોય અને ક્ષત્રિયને દુઃખી વાણીયાની પાસે લૌકિક કરવા માટે જવું હોય તો તેઓએ પરસ્પરનું સૂતક ઉતરી ગયા પછી જ લૌકિક કરવા જવું. જો સૂતકમાં જાય તો તેને સૂતક લાગે છે. પારસ્કર કહે છે કેઃ–

अस्थिसंचयनादर्वाक् रुदित्वा स्नानमाचरेत् । अंतर्दशाहे विप्रस्य ऊर्ध्वमाचमनं स्मृतम् ॥

અસ્થિ સંચયનની પૂર્વે દશ દિવસમાં જો બ્રાહ્મણને ઘેર બ્રાહ્મણ અથવા તો ક્ષત્રિય જઇને રુદન કરે (ખરખરો કરે) તો તેણે સ્નાન કરવું અને દશ દિવસ પછી ખરખરો કરે તેણે માત્ર આચમન કરવું. તેમ ક્ષત્રિયને ઘેર અને વૈશ્યને ઘેર પણ કોઇ સૂતકમાં ખરખરો કરવા માટે જાય તો તેણે વસ્ત્રોની સાથે સ્નાન કરવું અને દશ દિવસ પછી જાય તો કેવળ સ્નાન જ કરવું. પ્રાચીન કાળમાં બ્રાહ્મણાદિક બીજાને ઘેર દશ દિવસમાં લૌકિક કરવાને પણ જતા ન હતા ને જતા તો સ્નાન સૂતકાદિક પાળતા હતા. આ વાત આ સ્મૃતિનાં તથા બીજાં ધર્મશાસ્ત્રનાં વચનો ઉપરથી સ્પષ્ટ થાય છે.

ઇતિશ્રી પારાશર ધર્મશાસ્ત્રમાં 'સૂતકાદિકની શુદ્ધિનો વિચાર'

એ નામનો અધ્યાય ૩ જો સમાપ્ત.

અધ્યાય ૪ થો.

अथ प्रायश्चित्तकाण्डः

આત્મહત્યા વિગેરેના પ્રાયશ્ચિત્તનો વિચાર.

अतिमानादतिक्रोधात्स्नेहाद्वा यदि वा भयात् ।
उद्बध्नीयात्स्त्री पुमान्वा गतिरेषा विधीयते ॥ १ ॥

કોઇ સ્ત્રી અથવા તો પુરુષ, અપમાન થવાને લીધે, અતિ ક્રોધને લીધે, અતિ સ્નેહને લીધે, અથવા તો અતિ ભયને લીધે ગળે ફાંસો ઘાલીને મરણ પામે તો તેને આગલા શ્લોકમાં કહેલી ગતિ પ્રાપ્ત થાય છે. ૧

૧. શ્રી પરાશરે આચારકાંડરૂપ પહેલા, બીજા અને ત્રીજા અધ્યાયથી વિધિનું તથા નિષેધનું વર્ણન કર્યું. હવે તે વિધિનું અથવા તો નિષેધનું ઉલ્લંઘન કરવાથી પાપ લાગે છે. તે પાપનો નાશ કરવા માટે આ અધ્યાયથી પ્રાયશ્ચિત્ત કાંડનો આરંભ કરે છે. પ્રાયશ્ચિત્ત શબ્દને રૂઢ ગણીને પાપને નાશ કરવામાં સમર્થ એવો નિમિત્ત ધર્મ, આમ શાસ્ત્રકારો તેનો અર્થ કરે છે. પરંતુ અંગિરાએ તેનો યૌગિક અર્થ દર્શાવ્યો છે..તે યૌગિક અર્થ કરતાં કહે છે કે;–

प्रायो नाम तपः प्रोक्तं चित्तं निश्चय उच्यते । तपोनिश्चयसंयोगात् प्रायश्चित्तं तदुच्यते ॥

પ્રાયસ્ એટલે ચાંદ્રાયણાદિક તપ અને ચિત્ત એટલે નિશ્ચય. બાર વર્ષનાં વ્રતાદિક કરવાથી પાપનો ક્ષય થાય છે, આવા વિશ્વાસને નિશ્ચય કહેવામાં આવે છે

અને ચાંદ્રાયણાદિક વ્રતને तपस् કહેવામાં આવે છે. આ રીતે प्रायस् અને चित्तम् એ બે શબ્દ એકઠા થઇને प्रायश्चित्तम् શબ્દ થયો છે. આ પ્રાયશ્ચિત્તને કેટલાએક કામ્ય ધર્મ કહે છે, કારણ કે જેને પાપનો ક્ષય કરવાની ઇચ્છા હોય, તે પ્રાયશ્ચિત્ત કરે છે. જેમ જળની વૃષ્ટિના પ્રતિબંધનરૂપ પાપને દૂર કરવા માટે કારીરી ઇષ્ટિ કરવામાં આવે છે તેમ. કેટલાએક કહે છે કે પ્રાયશ્ચિત્ત નિમિત્ત ધર્મ છે, કારણ કે પાપને નિમિત્ત કરીને પ્રાયશ્ચિત્ત કરવામાં આવે છે. ત્યારે કેટલાએક કહે છે કે, પ્રાયશ્ચિત્ત એ નિત્ય વિધિ છે અને તેના પ્રમાણમાં મનુના અગ્યારમા અધ્યાયનું વચન દર્શાવે છે કે;—चरितव्यमतो नित्यं प्रायश्चित्तं विशुद्धये ॥ માટે શુદ્ધિને અર્થે સર્વેએ નિત્ય પ્રાયશ્ચિત્ત કરવું જોઇએ.

આ રીતે બીજાનાં મતો દર્શાવીને સાયણ માધવ કહે છે કે, પ્રાયશ્ચિત્ત કામ્ય પણ નથી તેમ નિત્ય પણ નથી, પરંતુ નિમિત્ત ધર્મ છે. વેદ તથા શાસ્ત્રમાં જે કર્મ કરવા માટે વિધિ છે તે કર્મ કરે નહિ અને શાસ્ત્રોએ નિંદેલાં કર્મ કરે તથા ઇંદ્રિયોનો નિગ્રહ રાખે નહિ ત્યારે મનુષ્ય પાતકી થાય છે અને તે પાતકીએ પોતાનાં પાતક દૂર કરવામાટે પ્રાયશ્ચિત્ત કરવું જ જોઇએ. આવું શાસ્ત્રોનું મત છે. આ અધ્યાયથી પ્રાયશ્ચિત્તકાંડનો આરંભ કરવામાં આવે છે.

માતા, પિતા, પતિ અથવા તો સ્ત્રી વગેરેના તિરસ્કારાદિકથી પુત્રને, સ્ત્રીને અથવા પતિને આપઘાતનો પ્રસંગ આવે છે. પતિ, પુત્ર, મિત્ર વગેરે સ્નેહીજનો પોતાથી પ્રતિકૂળ વર્તે છે ત્યારે ક્રોધ થવાનો સંભવ રહે છે અને તેથી પણ મરણનો પ્રસંગ આવે છે. અતિસ્નેહથી પણ મરણ થાય છે. દ્રોણાચાર્ય પુત્રના અતિસ્નેહને લીધે મરણ પામ્યા હતા અને રાજા દશરથ પણ પોતાના પ્રિય પુત્ર રામચન્દ્રના અતિસ્નેહથી મરણ પામ્યા હતા. આવાં મરણથી અધોગતિ થાય છે. દ્રોણાચાર્ય અને દશરથ જો કે પુત્રના અતિસ્નેહથી મરણ પામ્યા હતા, તોપણ તે શાસ્ત્રમાં નિષિદ્ધ કરેલા મરણવિધિથી મુવા ન હતા. માટે તેઓ અધોગતિને પામ્યા ન હતા. ઉપરના શ્લોકનું તાત્પર્ય એવું છે કે, જો કોઈ સ્નેહાદિ નિમિત્તોથી શોકગ્રસ્ત થઇને શાસ્ત્રમાં નિષિદ્ધ કરેલા વિધિથી એટલે ગળે ફાંસો ઘાલીને, ઝેર ખાઇને, કે કુવે પડીને મરે છે તો તેની અધોગતિ થાય છે.

पूयशोणितसम्पूर्णे त्वन्धे तमसि मज्जति ।
षष्टीर्वर्षसहस्राणि नरकं प्रतिपद्यते ॥ २ ॥

પરુ અને લોહીથી સંપૂર્ણ ભરેલા, અંધતામિસ્ર નામના નરકમાં તે (આત્મહત્યા કરનારો) સાઠ હજાર વર્ષ સૂધી બૂડી રહે છે. ૨

नाशौचं नोदकं नाग्निं नाश्रुपातं च कारयेत् ।
वोढारोऽग्निप्रदातारः पाशच्छेदकरास्तथा ॥ ३ ॥
तप्तकृच्छ्रेण शुद्ध्यन्तीत्येवमाह प्रजापतिः ।

આત્મહત્યા કરનારાને બાળવો નહિ, તેનું સૂતક પાળવું નહિ તથા તેને સંભારીને આંસુ પણ પાડવાં નહિ. તેનું ઉદકદાન એટલે પાણીવડે તર્પણ વગેરે કરે છે તે કરવું નહિ. એવાને બાળવાસારુ ઉપાડી જનારા, અગ્નિદાહ કરનારા અને તેનો ફાંસો કાપનારા તપ્તકૃચ્છ્ર પ્રાયશ્ચિત્ત કરે છે ત્યારે શુદ્ધ થાય છે, એમ પ્રજાપતિ કહે છે. ૩

૩. તપ્તકૃચ્છ્ર પ્રાયશ્ચિત્ત બાર દિવસે પૂરું થાય છે. એના બે પ્રકાર છે. જેમાં પાણી, દૂધ અને ઘી ઊનાં પીવાનો વિધિ છે, તેનું નામ તપ્તકૃચ્છ્ર છે અને ટાઢાં પીવાના વિધિને શીતકૃચ્છ્ર કહે છે.

गोभिर्हतं तथोद्बद्धं ब्राह्मणेन तु घातितम् ॥ ४ ॥
संस्पृशन्ति तु ये विप्रा वोढारश्चाग्निदाश्च ये ।
अन्ये ये वानुगन्तारः पाशच्छेदकराश्च ये ॥ ५ ॥
तप्तकृच्छ्रेण शुद्धास्ते कुर्युर्ब्राह्मणभोजनम् ।
अनडुत्सहितां गां च दद्युर्विप्राय दक्षिणाम् ॥ ६ ॥

ગાયે મારેલાને, ગળે ફાંસો ઘાલીને મુવેલાને અને બ્રાહ્મણે શાપાદિકથી મારેલાને જે બ્રાહ્મણો અડકે છે, જે બ્રાહ્મણો ઉપાડે છે, જે બ્રાહ્મણો અગ્નિદાહ કરે છે, જેઓ તેની પાછળ જાય છે અને જેઓ તેનો ફાંસો કાપે છે, તેઓએ તપ્તકૃચ્છ્ર પ્રાયશ્ચિત્ત કરીને શુદ્ધ થવું અને બ્રાહ્મણ ભોજન કરાવવું તથા બળદ સહિત ગાયો બ્રાહ્મણોને દક્ષિણામાં આપવી. ૪–૬

त्र्यहमुष्णं पिबेद्वारि त्र्यहमुष्णं पिबेत्पयः ।
त्र्यहमुष्णं पिबेत्सर्पिर्वायुभक्षो दिनत्रयम् ॥ ७ ॥

ત્રણ દિવસ ઊનું પાણી પીવું, ત્રણ દિવસ ઊનું દૂધ પીવું, ત્રણ દિવસ ઊનું ઘી પીવું અને ત્રણ દિવસ કેવળ વાયુનું ભક્ષણ કરીને રહેવું, તેનું નામ તપ્તકૃચ્છ્ર. ૭

षट्पलं तु पिबेदम्भस्त्रिपलं तु पयः पिबेत् ।
पलमेकं पिबेत्सर्पिस्तप्तकृच्छ्रं विधीयते ॥ ८ ॥

તપ્તકૃચ્છ્ર પ્રાયશ્ચિત્ત કરનારાએ પાણી છ પળ, દૂધ ત્રણ પળ અને ઘી એક પળ, એ વજન પ્રમાણે પીવાં. ૮

૮. એક પળ એટલે ચાર રૂપિયા ભાર.

यो वै समाचरेद्विप्रः पतितादिष्वकामतः ।
पञ्चाहं वा दशाहं वा द्वादशाहमथापि वा ॥ ९ ॥
मासार्द्धं मासमेकं वा मासद्वयमथापि वा ।
अब्दार्द्धमब्दमेकं वा तदूर्ध्वं चैव तत्समः ॥ १० ॥

જે બ્રાહ્મણ, પતિત વિગેરેની સાથે અજાણતાં પાંચ દિવસ, દશ દિવસ, બાર દિવસ, પંદર દિવસ, એક મહિનો, બે મહિના, છ મહિના કે એક વર્ષ સૂધી સંસર્ગ રાખે છે તે બ્રાહ્મણ પતિત થાય છે. એટલે તેને પતિતનું પાપ લાગે છે અને તેથી વધારે વખત સૂધી સંસર્ગ રાખનારો બ્રાહ્મણ તેના સમાન જ થાય છે. ૯–૧૦

૯–૧૦. પતિત એટલે પાપથકી ભ્રષ્ટ થયેલો. મૂળ શ્લોકમાં पतितादिषु એવું પદ છે તેમાં આદિ શબ્દ છે તે ઉપરથી તેના પુત્રાદિકને પણ ગ્રહણ કરવા. વસિષ્ઠ પતિતના પુત્રની નિંદા કરતાં કહે છે કે "पतितोत्पन्नः पतितो भवति પતિતથી ઉત્પન્ન થયેલો પુત્ર પણ પતિત જ જન્મે છે. अन्यत्रस्त्रियः પરંતુ તેની કન્યા પતિત થતી નથી. तामरिक्थामुपेयात्. તેની કન્યાને તેના પિતા તરફની પહેરામણી લીધા વગર પરણવી. મૂળમાં अकामतः એટલે અનિચ્છાથી એવું પદ છે, માટે જો જાણી જોઇને પાપ કર્યું હોય તો બમણું પ્રાયશ્ચિત્ત કરવું.

त्रिरात्रं प्रथमे पक्षे द्वितीये कृच्छ्रमाचरेत् ।
तृतीये चैव पक्षे तु कृच्छ्रं सान्तपनं चरेत् ॥ ११ ॥

પતિતનો સંસર્ગ કરનારા પુરુષે શુદ્ધ થવા સારુ પહેલા પક્ષને માટે ત્રણ અપવાસ, બીજા પક્ષને માટે કૃચ્છ્ર પ્રાયશ્ચિત્ત અને ત્રીજા પક્ષને માટે સાન્તપન કૃચ્છ્ર પ્રાયશ્ચિત્ત કરવું. ૧૧

૧૧. પક્ષ એટલે ભેદ પ્રકાર. અથવા અહીં પાંચ દિવસ એ પહેલો પક્ષ છે અને દશ દિવસ એ બીજો પક્ષ છે એમ જાણવું. કૃચ્છ્ર એટલે પ્રાજાપત્યવ્રત. મનુ પ્રાજાપત્યનું લક્ષણ આ પ્રમાણે કહે છે.

त्र्यहं प्रातः त्र्यहं सायं त्र्यहमद्यादयाचितम् । त्र्यहं परं तु नाश्नीयात् प्राजापत्यं चरन् द्विजः ॥

પ્રાજાપત્ય વ્રત કરનારાએ ત્રણ દિવસ પ્રભાતમાં, ત્રણ દિવસ સાયંકાળે અને ત્રણ દિવસ માગ્યા વિના ભોજન કરવું અને ત્રણ દિવસ ઉપવાસ કરવો.

सांतपन कृच्छ्रनुं लक्षण याज्ञवल्कय आ प्रमाणे कहे छे:–

गोमूत्रं गोमयं क्षीरं दधि सर्पिः कुशोदकम् ।
जग्ध्वा परेऽह्युपवसेत् कृच्छ्रं सान्तपनं चरन् ॥

गोमूत्र, गोमय, गायनुं दूध, दहीं, घी तथा कुशोदक आ अेकेकुं ७ दिवस सूधी खाइने रेहेवुं अने सातमे दिवसे अपवास करवो, अेटले सान्तपन कृच्छ्र थाय छे.

चतुर्थे दशरात्रं स्यात्पराकः पञ्चमे मतः ।
कुर्याच्चान्द्रायणं षष्ठे सप्तमे त्वैन्दवद्वयम् ॥ १२ ॥

चोथा पक्षने माटे दश रात्रि उपवास, पांचमा पक्षने माटे पराक प्रायश्चित्त, छठ्ठा पक्षने माटे चान्द्रायण अने सातमा पक्षने माटे बे चान्द्रायण करवां. १२

१२. बार दिवस अपवास करवा, तेने पराक प्रायश्चित्त कहे छे.

शुद्ध्यर्थमष्टमे चैव षण्मासान्कृच्छ्रमाचरेत् ।
पक्षसंख्याप्रमाणेन सुवर्णान्यपि दक्षिणा ॥ १३ ॥

आठमा पक्षने माटे छ महिना सूधी कृच्छ्र प्रायश्चित्त करवुं अने आ सर्वे प्रायश्चित्तोमां सुवर्णनी दक्षिणा आपवी. १३

१३. पहेला पक्षना प्रायश्चित्तमां सोळ मासा सोनुं आपवुं, बीजा पक्षनां प्रायश्चित्तमां बत्रीस मासा आपवुं, आम टीकाकार कहे छे.

ऋतुस्नाता तु या नारी भर्त्तारं नोपगच्छति ।
सा मृता नरकं याति विधवा च पुनः पुनः ॥ १४ ॥

ऋतुकाळमां स्नान कर्या पछी जे स्त्री भर्त्तारनी पासे जती नथी, ते मरण पछी नरकमां जाय छे अने पुनः पुनः विधवा थाय छे. १४

१४. खरी रीते जोतां तो आ श्लोकनो अने आ पछीना श्लोकनो अहीं संबंध नथी, परंतु पापना प्रायश्चित्तनो विचार चाल्यो छे, तेमां आ पण अेक पापनो प्रकार कह्यो छे.

ऋतुस्नातां तु यो भार्यां सन्निधौ नोपगच्छति ।
घोरायां भ्रूणहत्यायां युज्यते नात्र संशयः ॥ १५ ॥

जे पुरुष ऋतुकाळे स्नान करनारी भार्यानी पासे जतो नथी, तेने अति भयंकर भ्रूणहत्यानुं (गर्भहत्यानुं) पाप लागे छे, अेमां संशय नथी. १५

दरिद्रं व्याधितं मूर्खं भर्तारं याऽवमन्यते ।
सा शुनी जायते मृत्वा सूकरी च पुनः पुनः ॥ १६ ॥

જે સ્ત્રી, દરિદ્રી, રોગી અથવા તો મૂર્ખ એવા પોતાના પતિની અવજ્ઞા કરે છે, તે મરણ પછી કુતરી જન્મે છે; અને પુનઃ પુનઃ ડુકરી પણ થાય છે. ૧૬

૧૬. પતિની સેવા છોડી દેઇને બીજાં વ્રતો તથા દેવદર્શનાદિક કરે છે, તેને આ દોષ લાગે છે; પરંતુ પતિની આજ્ઞાથી વ્રતાદિક કરનારીને દોષ લાગતો નથી.

पत्यौ जीवति या नारी उपोष्य व्रतमाचरेत् ।
आयुष्यं हरते भर्त्तुः सा नारी नरकं व्रजेत् ॥ १७ ॥

પતિ જીવતાં છતાં જે સ્ત્રી અપવાસ કરીને વ્રત કરે છે, તે પોતાના પતિનું આયુષ્ય હરે છે અને મરણ પછી નરકમાં પડે છે. ૧૭

अपृष्ट्वा चैव भर्तारं या नारी कुरुते व्रतम् ।
सर्वं तद्राक्षसान्गच्छेदित्येवं मनुरब्रवीत् ॥ १८ ॥

જે સ્ત્રી પોતાના પતિને પૂછ્યા વગર જ વ્રત કરે છે, તે વ્રતનું સર્વ ફળ રાક્ષસોને મળે છે, એમ મનુએ કહ્યું છે. ૧૮

बान्धवानां सजातीनां दुर्वृत्तं कुरुते तु या ।
गर्भपातं च या कुर्यान्न तां संभाषयेत्क्कचित् ॥ १९ ॥

જે સ્ત્રી પોતાની જાતના બાંધવોનું ખરાબ કરે અને જે સ્ત્રી ગર્ભપાત કરે તે સ્ત્રીની સાથે કદી પણ ભાષણ કરવું નહિ. ૧૯

૧૯. વિષપ્રયોગ વિગેરે કરીને બાંધવોને મારે તે. બ્રાહ્મણ જાતિનો ગર્ભ પાડનારી સ્ત્રીને પ્રાયશ્ચિત્ત નથી, એટલે આલોકમાં તેની સાથે અન્નવ્યવહાર કરવા જેવી તેની શુદ્ધિ કરનારું પ્રાયશ્ચિત્ત નથી. મન્વાદિક ઋષિઓએ એવી સ્ત્રીને જે પ્રાયશ્ચિત્ત કહ્યું છે, તે નરકની નિવૃત્તિ કરનારું છે; પરંતુ આલોકમાં તેની સાથે વ્યવહાર કરવાની યોગ્યતા આણવા માટે કહ્યું નથી.

यत्पापं ब्रह्महत्यायां द्विगुणं गर्भपातने ।
प्रायश्चित्तं न तस्यास्स्यात्तस्यास्त्यागो विधीयते ॥ २० ॥

બ્રહ્મહત્યાનું જે પાપ છે, તેનાથી બમણું પાપ ગર્ભપાતનું છે. ગર્ભપાત કરનારી સ્ત્રીને પ્રાયશ્ચિત્ત નથી, એટલે પાપમાંથી છૂટવાનો ઉપાય નથી; તે સ્ત્રીનો ત્યાગ કરવો. ૨૦

૨૦. સ્ત્રીનો ત્યાગ કરવો. એટલે તેને ઘરની પડોશમાં દૂર રાખવી.

न कार्यमावसथ्येन नाग्निहोत्रेण वा पुनः ।
स भवेत्कर्मचाण्डालो यस्तु कर्मपराङ्मुखः ॥ २१ ॥

જે બ્રાહ્મણ સ્વધર્મ કર્મવિષે પરાઙ્મુખ હોય છે, તેને કર્મચાણ્ડાલ કહ્યો છે અને તેને આવસથ્ય લેવાનું કિંવા અગ્નિહોત્ર કરવાનું કંઇ પણ કારણ નથી. ૨૧

૨૧. આવસથ્ય એટલે સ્માર્તાગ્નિ, તે એક જ હોય છે; અને અગ્નિહોત્ર એટલે શ્રૌતાગ્નિ, તે દક્ષિણાગ્નિ, ગાર્હપત્યાગ્નિ અને આહવનીયાગ્નિ, એમ ત્રણ હોય છે. વેદોક્ત અગ્નિહોત્ર વગેરે કર્મ કરવાથી ચાણ્ડાલને કંઈ પણ ફળ પ્રાપ્ત થતું નથી. કર્મપરાઙ્મુખ એટલે વેદશાસ્ત્રોએ કહેલાં કર્મ ખોટાં માનનારો નાસ્તિક.

ओघवाताहृतं बीजं यस्य क्षेत्रे प्ररोहति ।
स क्षेत्री लभते बीजं न बीजी भागमर्हति ॥ २२ ॥

જળના પ્રવાહથી અથવા તો વાયુના વેગથી ખેંચાઈ આવેલું બીજ જેના ખેતરમાં ઊગે છે, તેનું ફળ તે ખેતરના ધણીને મળે છે; પરંતુ જેનું બીજ આવેલું હોય છે, તેને તેનો ભાગ મળતો નથી. ૨૨

तद्वत्परस्त्रियाः पुत्रौ द्वौ सुतौ कुण्डगोलकौ ।
पत्यौ जीवति कुण्डस्तु मृते भर्तरि गोलकः ॥ २३ ॥

તે પ્રમાણે પરપુરુષથી પરસ્ત્રીનેવિષે બે પ્રકારના પુત્ર ઉત્પન્ન થાયં છે; એક કુંડ અને બીજો ગોલક. એ બંને પુત્ર જેની સ્ત્રી હોય છે તેના પુત્ર ગણાય છે. પતિ જીવતાં પરપુરુષથી ઉત્પન્ન થાય તે કુંડ અને પતિ મરણ પામ્યા પછી પરપુરુષથી ઉત્પન્ન થાય તે ગોલક. ૨૩

औरसः क्षेत्रजश्चैव दत्तः कृत्रिमकः सुतः ।
दद्यान्माता पिता वा यं स पुत्रो दत्तको भवेत् ॥ २४ ॥

ઔરસ, ક્ષેત્રજ, દત્ત અને કૃત્રિમ એમ ચાર જાતના પુત્રો છે. માતા અથવા તો પિતા પ્રીતિથી જળવડે સંકલ્પ કરીને જે પુત્રને આપે, તે પુત્ર દત્તક ગણાય. ૨૪

૨૪. મનુએ બાર જાતના પુત્રો કહ્યા છેઃ–

औरसः क्षेत्रजश्चैव दत्तः कृत्रिम एव च । गूढोत्पन्नोऽपविद्धश्च दायादा बान्धवाश्च षट् ॥
कानीनश्च सहोढश्च क्रीतः पौनर्भवस्तथा । स्वयंदत्तश्च शौद्रश्च षडदायादबान्धवाः ॥

ઔરસ (પોતાની સ્ત્રીમાં પંડથી ઉત્પન્ન થએલો), ક્ષેત્રજ (મરણ પામેલા, નપુંસક અથવા તો પતિતની સ્ત્રીમાં દીયર વગેરેએ નિયોગ વિધિથી ઉત્પન્ન કરેલો પુત્ર), દત્ત (માતાપિતાએ આપત્તિના સમયમાં સંકલ્પપૂર્વક બીજાને આપેલો પુત્ર), કૃત્રિમ (પોતાની જાતિના ગુણવાન બાળકને કરી લીધેલો પુત્ર), ગૂઢ ઉત્પન્ન (પોતાના ઘરમાં છુપી રીતે સ્ત્રીમાંથી ઉત્પન્ન થયેલો), અપવિદ્ધ (માતાપિતાએ અથવા તો બેમાંથી એકે ત્યાગ કરી દીધેલો) આ ૭ પુત્રો દાયાદ (ભાગીદારો) તથા બાંધવો (પિંડ ઉદક આપનારા) કહેવાય છે અને કાનીન (કન્યામાંથી ઉત્પન્ન થયેલો), સહોઢ (પરણતી વખતે સ્ત્રીના ગર્ભમાં હોય તે) ક્રીત (વેચાતો લીધેલો), પૌનર્ભવ (ઘરઘરણાની સ્ત્રીમાંથી થયેલો), સ્વયંદત્ત (માતાપિતા વિનાનો જે પોતે જાતે આવીને પુત્ર થયો હોય તે) અને શૌદ્ર (શૂદ્ર જાતિની સ્ત્રીમાં ઉત્પન્ન થયેલો) આ ૭ પુત્રો દાયાદ પણ ગણાતા નથી તેમ બાંધવ પણ ગણાતા નથી. છતાં પણ પૂર્વ પૂર્વના પુત્રના અભાવમાં તેની પછી પછીના પુત્રને પિંડ મૂકવાનો અને ધનના ધણી થવાનો હક્ક ધર્મશાસ્ત્રમાં આપવામાં આવ્યો છે. ભગવાન્ પરાશર આ બાર પુત્રોમાંથી ઔરસ, ક્ષેત્રજ, દત્ત અને કૃત્રિમ આ ચાર પુત્રનાં નામ કહે છે તેથી તેને બીજા પુત્ર ઇષ્ટ નથી એમ જણાય છે.

परिवित्तिः परिवेत्ता च यया च परिविद्यते ।
सर्वे ते नरकं यान्ति दातृयाजकपञ्चमाः ॥ २५ ॥

પરિવિત્તિ, પરિવેત્તા, પરિવેદિની, પરિદાતા અને પાંચમો પરિયાજક આ સર્વે નરકમાં જાય છે. ૨૫

૨૫. મોટો ભાઈ કુંવારો છતાં નાનો ભાઇ પરણે તો મોટો ભાઈ પરિવિત્તિ કહેવાય, મોટો ભાઈ કુંવારો છતાં નાનો ભાઈ પરણે તો તે પરિવેત્તા કહેવાય, પરિવેત્તાની સાથે લગ્ન કરે તે કન્યા પરિવેદિની કહેવાય, પરિવેત્તાને કન્યાદાન કરે તે પરિદાતા કહેવાય અને પરિવેત્તા અને પરિવેદિની એઓને પરણાવનાર ગોર તે પરિયાજક કહેવાય છે. તે સર્વે નરકના ભાગી થાય છે.

द्वौ कृच्छ्रौ परिवित्तेस्तु कन्यायाः कृच्छ्र एव च ।
कृच्छ्रातिकृच्छ्रौ दाता तु होता चान्द्रायणं चरेत् ॥ २६ ॥

પરિવિત્તિએ બે કૃચ્છ્ર પ્રાયશ્ચિત્ત કરવાં, પરિવેદિની કન્યાએ એક કૃચ્છ્ર પ્રાયશ્ચિત્ત કરવું, પરિદાતાએ કૃચ્છ્રાતિકૃચ્છ્ર, અને પરિયાજકે ચાન્દ્રાયણ પ્રાયશ્ચિત્ત કરવું. ૨૬

૨૬. વીસ દિવસ સુધી દૂધ પીને જ રહેવું તેને કૃચ્છ્રાતિકૃચ્છ્ર કહે છે.

कुब्जवामनषण्ढेषु गद्गदेषु जडेषु च ।
जात्यन्धबधिरे मूके न दोषः परिविन्दतः ॥ २७ ॥

પરંતુ કુબડો, ઠીંગણો, નપુંસક, જેની વાણી સ્પષ્ટ ન હોય તેવો, મૂર્ખ, જન્માન્ધ, બહેરો અથવા તો મૂંગો એવો મોટો ભાઈ કુંવારો હોય અને નાનો ભાઈ પરણે તો તેને પરિવેદનનો દોષ લાગતો નથી. ૨૭

૨૭ મોટો ભાઈ કુંવારો છતાં નાનો ભાઇ લગ્ન કરે છે, તે લગ્નને પરિવેદન કહેવામાં આવે છે.

ચોવીસમા શ્લોકની ટીકા યંત્ર ઉપર ગયા પછી પંડિત ધરણીધરની અને પંડિત નંદની ટીકા મારા જોવામાં આવી. તેમાં કળિયુગમાં કેટલા પુત્ર કરવા યોગ્ય છે, એ વિશે વિવેચન જોવામાં આવ્યું. તે મૂળ ગ્રંથને અનુકૂલ તથા શાસ્ત્રાનુસાર હોવાથી અહીં પુરવણી તરિકે આપવામાં આવે છે. ધરણીધર ૨૪ મા શ્લોક ઉપર વિવેચન કરતાં કહે છે કે तर्हि बीजी कः पुत्रः ત્યારે બીજથી ઉત્પન્ન થયેલો પુત્ર કોને કહેવો? આવી શંકા કરીને કહે છે કે, ક્ષેત્રજ એવો ઔરસ અર્થાત્ પોતાની પરણેલી ક્ષેત્રરૂપ સ્ત્રીમાંથી ઉત્પન્ન થયેલો પુત્ર તે બીજી પુત્ર અને બીજો પુત્ર દત્તક તે કેવો કે कृत्रिमः કહેતાં કરી લીધેલો, કેટલાએક कृत्रिम પુત્રને ત્રીજા પુત્ર તરિકે ગણે છે, પરંતુ તેને પણ અહીં ગણવો નહિ; કારણ કે તેનો પણ કળિયુગમાં નિષેધ કરવામાં આવ્યો છે. નંદપંડિત ૨૪ મા શ્લોક ઉપર વિવેચન કરતાં કહે છે કે; ત્યારે बीजीનો ઉત્પાદકનો મુખ્ય પુત્ર કોને માનવો, આતું ૨૪ મા શ્લોકનું અવતરણ કરીને કહે છે કે; પોતાના સંસ્કાર કરેલા ક્ષેત્રમાં (પરણેલી સ્ત્રીમાં) ઉત્પન્ન થયેલા ઔરસ પુત્રને મુખ્ય માનવો અને તે પુત્ર बीजीનો મુખ્ય પુત્ર ગણાય છે. મનુ કહે છે કે;–

स्वक्षेत्रे संस्कृतायां तु स्वयमुत्पादितश्च यः । तमौरसं विजानीयात्पुत्रं प्राथमकाल्पिकम् ॥

પોતાની પરણેલી પોતાનાં ક્ષેત્રરૂપ ગણાતી સ્ત્રીમાં પોતે ઉત્પન્ન કરેલો જે પુત્ર, તેને ઔરસ પુત્ર જાણવો અને તે પુત્ર મુખ્ય પુત્ર ગણાય છે.

કોઈ કહે કે ક્ષેત્રજ પુત્રને જૂદો શા માટે ગણવો નહિ; કેમકે, બીજી સ્મૃતિઓમાં ક્ષેત્રજને પણ પુત્ર તરિકે ગણ્યો છે અને આ શ્લોકમાં પણ क्षेत्रजश्चैव એવો પાઠ છે. આવી શંકા કરીને તેનું સમાધાન કરે છે કે, કળિયુગમાં નિયોગ કરવો નહિ, આવો બૃહસ્પતિસ્મૃતિ, મહાભારત વગેરેમાં નિષેધ કરવામાં આવ્યો છે. માટે ક્ષેત્રજ પુત્રનો અહીં પ્રસંગ નથી. જો ઔરસ પુત્ર નહોય તો દત્તક પુત્ર લેવો. માતા, પિતામાંથી એક અથવા તો બન્નેએ આપેલો પુત્ર દત્તક પુત્ર કહેવાય છે. આ દત્તક પુત્ર પોતાના ભાઈના પુત્રને જ લેવો અને તે મનુના એક શ્લોક ઉપરથી સિદ્ધ થાય છે. મનુ કહે છે કે;–भ्रातृणामेकजातानामेकश्चेत्पुत्रवान् भवेत् । सर्वे ते तेन पुत्रेण पुत्रिणोमनुरब्रवीत् ॥ એક પિતાથી જન્મેલા ભાઇઓમાં એક ભાઈ પણ જો પુત્રવાળો હોય તો તે પુત્રવડે સર્વે ભાઇઓ પુત્રવાળા ગણાય છે, એમ મનુએ કહ્યું છે.

આ મનુનાં વચન ઉપરથી સિદ્ધ થાય છે કે, જો ભાઇને પુત્ર હોય તો બીજાના પુત્રને દત્તક લેવો નહિ. વળી જેને એક પુત્ર હોય, તે પુત્રને દત્તક તરિકે લેવો પણ નહિ તેમ દેવો પણ નહિ. આવો ધર્મશાસ્ત્રમાં જે નિષેધ છે તે, ભાઇના એક પુત્રને દત્તક લેવામાં લાગતો નથી. કારણ કે મૂળ શ્લોકમાં તેન એમ એક વચન કહેવામાં આવ્યું છે. તે એમ દર્શાવે છે કે, ભાઇને એક પુત્ર હોય તોપણ તેને દત્તક લેવો. પરંતુ જો ભાઇને પુત્ર ન હોય તો નજીકના સંબંધીમાંથી પુત્ર લેવો. બીજાના પુત્રને પણ દત્તક લેવો, આવો મત મનુના વચન ઉપરથી સિદ્ધ થાય છે. તે વચન આ પ્રમાણે છે;–गोत्ररिक्थे जनयितुर्न भजेद्दत्रिमःसुतः॥ દત્તક પુત્રે પોતાના જનકનાં એટલે પિતાનાં ગોત્રને અને વારસાનાં ધનને સેવવાં નહિ. અર્થાત્ દત્તક પોતાને લેનારાના ગોત્રનો અને ધનનો ભાગી થાય છે, તેથી તેનો પોતાના જનક પિતાના ધન ઉપર તથા ગોત્ર ઉપર હક રહેતો નથી. આ શ્લોકથી સિદ્ધ થાય છે, કે બીજાના ગોત્રમાંથી પણ દત્તક લઈ શકાય છે ખરો, પરંતુ પોતાનો સપિંડ મળે ત્યાં સુધી બીજાના ગોત્રમાંથી દત્તક લેવો નહિ. દત્તક પુત્રથી ગ્રહીતા–દત્તક લેનારના અને જનકના એમ બન્ને પિતાના ગોત્રમાં પરણી શકાય નહિ. દત્તકનું ત્રણ પુરુષ પર્યંત સાપિંડ્ય ગણાય છે અને પંડે ચોથો ગણાય છે. પાંચમા પુરુષથી સાપિંડ્યની નિવૃત્તિ સમજવી. જો દત્તક મળે નહિ તો कृत्रिम પુત્રને ગ્રહણ કરવો. પંડે બીજાના ગુણવાન્ સજાતીય પુત્રને 'તું મારો પુત્ર થા' એમ કહીને પુત્ર તરિકે કરી લેવો, તેનું નામ कृत्रिम પુત્ર. આ રીતે બીજાથી ઉત્પન્ન થયેલા પુત્રોમાં दत्तक તથા कृत्रिम બે પુત્ર જ ઉત્તમ છે, આવો પરાશરનો અભિપ્રાય છે અને તેણે પંડે તે મૂળ શ્લોકમાં દર્શાવ્યો છે. તેમાં પણ કળિમાં दत्तक પુત્ર ઉત્તમ છે. આવા અભિપ્રાયથી ૨૪ મા શ્લોકના ઉત્તરાર્દ્ધમાં दद्यान्मातापिता वापि એમ કહીને દત્તકનું લક્ષણ કહ્યું છે. તેથી જણાય છે કે પુત્રના બીજા જે પ્રતિનિધિઓ કહ્યા છે, તેમાં दत्तक પુત્ર મુખ્ય છે અને તે શિવાયના બીજા પુત્ર જેવા કે, कानीन, पौनर्भव, गूढोत्पन्न ને सहोढज–આ પુત્ર વ્યભિચારથી ઉત્પન્ન થયેલા છે, તેથી પરાશરે તેને ગણાવ્યા નથી. पुत्रिकापुत्र (દોહિતરો), क्रीत (ખરીદેલો), उत्सृष्ट (ત્યાગ કરી દીધેલો), આ પુત્રો જો કે વ્યભિચારથી ઉત્પન્ન થયેલા નથી, પરંતુ તેઓમાં પણ એક એક જાતનો દોષ રહેલો છે, તેથી તેઓને પણ પુત્ર પ્રતિનિધિ તરિકે ગણાવ્યા નથી. પુત્રિકા પુત્ર (દોહિતરો)ને પુત્ર પ્રતિનિધિ તરિકે લેવામાં ફળની પ્રત્યાવૃત્તિ થાય છે. જેમ એકને દાનમાં ગાય આપીને તેના બદલામાં તેની પાસેથી ધન કે દુધ લેવું, એ ફળની પ્રત્યાવૃત્તિ થઇ ગણાય. તેમ કન્યાને દાનમાં આપીને પછી દાનમાં આપેલી કન્યાના પુત્રને પુત્ર તરિકે લેવો, એ પણ ફળની પ્રત્યાવૃત્તિ થાય છે. વસિષ્ઠ આવી રીતની ફળની પ્રત્યાવૃત્તિની નિંદા કરતાં કહે છે કે;–अभ्रातृका पुंसः पितॄनभ्येति प्रतिचीनं गच्छति पुत्रत्वम् જે કન્યાને ભાઈ હોતો નથી તેવી કન્યાનું પુત્રિકાકરણ કરવામાં આવે છે, અર્થાત્ તેના પુત્રને પુત્ર તરિકે ગ્રહણ કરવામાં આવે છે અને તે કન્યા પરણ્યા પછી પોતાના પતિ

તરફથી પુત્રસ્વરૂપે અથવા તો ફળદ્વારા પિતા તરફ પાછી જાય છે. આવી રીતે વિપરીત રીતે પુત્રપણાને પામે છે, તેથી તે ઉત્તમ ગણાતી નથી. क्रीत પુત્ર વેંચાતો લીધેલો હોવાથી ઉત્તમ ગણાતો નથી. પુત્રોત્પત્તિને માટે પૈસા આપીને પરણેલી ભાર્યાની પણ શાસ્ત્રમાં નિંદા કરવામાં આવી છે તો પછી પ્રત્યક્ષ ધન આપીને વેચાતો લીધેલો પુત્ર કેવી રીતે ઉત્તમ ગણાય? શાસ્ત્રમાં કહ્યું છે કે, क्रयक्रीता च या नारी न सा पत्न्यभिधीयते ॥ કન્યાનાં માતાપિતાને પૈસા આપીને પરણેલી સ્ત્રી પત્ની કહેવાતી નથી. उत्सृष्ट પુત્ર (ત્યાગ કરી દીધેલો) પણ અયોગ્ય છે, કારણ કે માતાપિતા તેનો ત્યાગ કરી દે છે તેથી તેનામાં દોષ હોવાનો સંભવ છે. માટે બીજાથી ઉત્પન્ન થયેલા પુત્રોમાં માત્ર બે જ પુત્ર ઉત્તમ ગણાય છે:– दत्तक અને कृत्रिम. એમાં પણ પુત્રપ્રતિનિધિઓમાં दत्तक પુત્ર જ મુખ્ય ગણાય છે. તે [illegible] નહિ તો જ પછી कृत्रिम નામનો પુત્ર કરવો; પરંતુ તે दत्तकના જેવો [illegible]ાતો નથી.

पैतृव्यपुत्रः सापत्नः परनारीसुतस्तथा ।
दाराग्निहोत्रसंयोगे न दोषः परिवेदने ॥ २८ ॥

કાકાનો પુત્ર, ઓરમાન ભાઈ તથા દત્તકાદિક એવો મોટો ભાઈ કુંવારો હોય અને નાનો ભાઈ લગ્ન કરે અથવા તો અગ્નિહોત્ર લે તો તેને પરિવેદનનો અને પર્યાધાનનો દોષ લાગતો નથી. ૨૮

૨૮ મોટા ભાઇની કિંવા બાપની પહેલાં અગ્નિહોત્ર લેવું, તેનું નામ પર્યાધાન.

ज्येष्ठोभ्राता यदा तिष्ठेदाधानं नैव कारयेत् ।
अनुज्ञातस्तु कुर्वीत शङ्खस्य वचनं यथा ॥ २९ ॥

અગ્નિહોત્ર લેવાને અધિકારી મોટો ભાઈ જીવતો હોય તો નાના ભાઇએ અગ્નિહોત્ર લેવું જ નહિ. પરન્તુ તેની આજ્ઞા મળે તો લેવું, એવું, શંખ મુનિનું વચન છે. ૨૯

नष्टे मृते प्रव्रजिते क्लीबे च पतिते पतौ ।
पञ्चस्वापत्सु नारीणां पतिरन्यो विधीयते ॥ ३० ॥

ખોવાઇ જાય, (પરદેશમાં જવા વિગેરેથી પતિના સમાચાર ન મળે) મરણ પામે, સંન્યાસી થઈ જાય, નપુંસક નિકળે અથવા તો પતિત એટલે બ્રહ્મહત્યાદિ પાપે કરીને ભ્રષ્ટ થઈ જાય, આ પાંચ પ્રકારમાંની કોઇ એક આપત્તિ આવે ત્યારે નારીઓને બીજો પતિ કરવાનો વિધિ છે. ૩૦

વિધવાવિવાહ રાગપ્રાપ્ત હોવાથી શાસ્ત્રવિરુદ્ધ છે.

૩૦ કામ, ક્રોધ, લોભ, મોહ વગેરે અનેક કારણોને લીધે મનુષ્યોની અનેક પ્રકારની પ્રવૃત્તિ જોવામાં આવે છે. તે સર્વ પ્રવૃત્તિ સ્વેચ્છામૂલક હોય છે. તેને માટે શાસ્ત્રમાં આજ્ઞા હોવાનો સંભવ નથી. શાસ્ત્ર તો અલૌકિક કર્મની જ આજ્ઞા કરે છે. અલૌકિક એટલે લૌકિક કોઈ પણ પ્રમાણથી સિદ્ધ થઈ શકતાં ન હોય તેવાં કર્મ; જેમ કે સંધ્યાવંદન, પંચ મહાયજ્ઞ, અગ્નિહોત્ર આદિ ધર્મકર્મ અલૌકિક કર્મ કહેવાય છે. આ સર્વ કર્મ વેદના તથા શાસ્ત્રનાં પ્રમાણથી જ સિદ્ધ છે અને શાસ્ત્ર તે કર્મ કરવામાટે આજ્ઞા કરે છે. વિહિતકર્મનો ઉપદેશ કરવો અને નિષિદ્ધ કર્મથી વારણ કરવું, આ શાસ્ત્રનું કર્તવ્ય છે. જેને ક્ષુધા લાગે છે, તે કોઇની પણ પ્રેરણા વગર ભોજન કરે છે; જેને તૃષા લાગે છે, તે સ્વયં જળપાન કરે છે. આવાં કર્મ લૌકિક કર્મ કહેવાય છે અને તેવાં લૌકિક કર્મમાં મનુષ્યો કોઇની પણ પ્રેરણા વગર સ્વયં પ્રવૃત્ત થાય છે. તેને માટે ધર્મશાસ્ત્ર આજ્ઞા કરતું નથી; પરંતુ ક્યાં પદાર્થો ભક્ષ્ય છે તથા ક્યા પદાર્થ અભક્ષ્ય છે, તેનો નિર્ણય શાસ્ત્ર કરે છે, આ પ્રકારના ઉપદેશ આપવામાં જ શાસ્ત્રની કૃતાર્થતા છે. વિધવાવિવાહ ધર્મકર્મ નથી, પરંતુ લૌકિક કર્મ છે; કારણ કે તે રાગથી એટલે કામનાથી પ્રાપ્ત થાય છે. સ્ત્રી તથા પુરુષ પોતાની ઉત્કટ કામશાંતિ માટે પુનર્લગ્ન કરે છે, પણ ધર્માચરણનો તેમાં જરા પણ ઉદ્દેશ હોતો નથી. વિધવાવિવાહનો ઉદ્દેશ કામોપભોગ શિવાય બીજો કોઈ પણ જાતનો નથી. આ રીતે રાગમૂલક હોવાથી વિધવાવિવાહ શાસ્ત્રવિરુદ્ધ છે, તેથી તેને માટે વેદ તથા શાસ્ત્ર કદી પણ આજ્ઞા કરે જ નહિ.

વિવાહનો ઉદ્દેશ.

આર્યોના સોળ સંસ્કારોમાં વિવાહસંસ્કાર વિશેષ મહત્વ ધરાવનારો છે. અગ્નિહોત્રાદિક ધર્મકૃત્ય કરવા માટે તથા પિતૃંના ઋણમાંથી મુક્ત કરનારી ધર્મ્ય પ્રજા ઉત્પન્ન કરવા માટે શાસ્ત્રમાં સ્ત્રી પરણવાનો ઉપદેશ કરવામાં આવ્યો છે. પુરુષ સ્ત્રી વિના અગ્નિહોત્રાદિક ધર્મનો અધિકારી થઈ શકતો નથી. પરંતુ વિવાહ કર્યા પછી સ્ત્રીની સહાયતાથી ધર્મકૃત્ય કરી શકે છે. ભાર્યા પુરુષનું અર્ધ અંગ ગણાય છે. अर्धं भार्या मनुष्यस्य। ભાર્યા પુરુષનું અર્ધ અંગ છે, એમ શાસ્ત્રમાં કહ્યું છે. અર્ધાંગના તરીકે ભાર્યા પુરુષની સાથે રહીને ધર્માચરણ કરે છે, તેથી તેને પત્ની, सहधर्मचारिणी વગેરે નામોથી વર્ણવી છે. પુરુષનો પોતાનો તથા પોતાના પૂર્વજોના ઉદ્ધારનો આધાર સ્ત્રીના ઉપર રહેલો છે, તેમ સ્ત્રીની રક્ષાનો ભાર પુરુષના ઉપર છે. ભગવાન્ મનુ કહે છે કે, "स्वां प्रसूतिं चरित्रं च कुलमात्मानमेव च। स्वं च धर्मं प्रयत्नेन जायां रक्षन् हि रक्षति। પોતાની જાયાનું–પોતાને સંતાન તરીકે જેને વિશે ઉત્પન્ન થવાનું હોવાથી જાયા તરીકે ગણાતી સ્ત્રીનું–જે પુરુષ પ્રયત્નથી રક્ષણ કરે છે, તે પુરુષ પોતાની પ્રજાનું, પોતાનાં ચરિત્રનું, પોતાનાં કુળનું, પોતાના પંડનું અને પોતાના ધર્મનું રક્ષણ કરે છે, એમ જાણવું." બ્રહ્મચર્ય આશ્રમથી જેમ વીર્યની રક્ષા દર્શાવી છે, તેમ વિવાહ

સંસ્કારથી ક્ષેત્રની રક્ષા દર્શાવી છે. સ્ત્રી ધર્માચરણ કરવામાં અસ્વતંત્ર છે. તેણે પતિની પાંખમાં રહીને ધર્માચરણમાં પતિને સહાયતા કરવાની છે અને તેના ધર્મમાંથી પોતાનો ભાગ ગ્રહણ કરવાનો છે તથા પંડે ધર્માચરણ કરીને પતિનો ઉદ્ધાર પણ કરવાનો છે. પુરુષ ધર્મકૃત્ય કરવામાં સ્વતંત્ર છે; પરન્તુ તેને પણ ધર્માચરણમાં સ્ત્રીની સહાયતાથી સ્વર્ગાદિક મેળવવાનાં છે. આ વિષયનું વિવેચન કરતાં ભગવાન્ મનુ કહે છે કે;–अपत्यं धर्मकार्याणि सुश्रूषा रतिरुत्तमा । दाराधीनस्तथा स्वर्गः पितृणामात्मनस्तथा ॥ અ૦ ૯–૨૮.

ધર્મ્યે પ્રજાની ઉત્પત્તિ, અગ્નિહોત્ર આદિક ધર્મકૃત્યો, આવ્યા ગયા અતિથિની સેવા, ઉત્તમ સુખ અને સત્પુત્રોદ્વારા પિતૃઓને તથા પોતાને સ્વર્ગપ્રાપ્તિ, આ સર્વ કાર્ય સ્ત્રીના આધીન છે.

કહેવાનું તાત્પર્ય એ છે કે, પુરુષને પરલોક મેળવવા માટે ધર્માચરણમાં સ્ત્રીની સહાયતાની જરૂર છે અને દૈવયોગથી સ્ત્રી મરણ પામે છે તો પુરુષને ફરીને વિવાહ કરવા માટે પણ શાસ્ત્રમાં આજ્ઞા કરવામાં આવી છે. કારણ કે સ્ત્રી વિના તેનાથી ધર્મકૃત્ય થઈ શકતાં નથી. આ સર્વ કારણથી સ્ત્રીને શાસ્ત્રમાં धर्मपत्नी, सहधर्मचारिणी વગેરે નામોથી વર્ણવી છે.

સ્ત્રી જન્મની સાથી છે.

પતિ સ્ત્રીનો ગુરુ છે અને સ્ત્રી તેની શિષ્યા છે. સ્ત્રીને પતિથી છૂટા પડીને યજ્ઞ, વ્રત, ઉપવાસ વગેરે કરવાનો અધિકાર નથી; પરંતુ પતિની સહચારિણી થઈને જ ધર્મકૃત્ય કરવાનાં છે અને એમ કરવાથી જ તેનાં વ્રતાદિક સફળ થાય છે. પરંતુ (પતિથી છૂટા પડીને કરવાથી) સફળ થતાં નથી. ગુરુને અનેક શિષ્યો કરવાનો અધિકાર છે, પરંતુ શિષ્યને શાસ્ત્રીય દીક્ષાગુરુ એક જ હોય છે. શાસ્ત્રમાં કહ્યું છે, 'पतिरेको गुरुः स्त्रीणां'। સ્ત્રીઓનો એક પતિ જ ગુરુ છે. એટલું જ નહિ, પરંતુ વિવાહસમયે સ્ત્રી પોતાના પતિની સાથે આધ્યાત્મિક સંબંધથી બંધાય છે, જે સંબંધ પતિ મરણ પામ્યા પછી પણ જેવો ને તેવો જ જળવાઈ રહે છે. પતિ મરણ પામે છે, તોપણ તેનો સંબંધ નાશ પામતો નથી; કારણ કે આર્યોમાં પુનર્જન્મની સંસ્થા માનવામાં આવે છે. એટલા માટે જ, સ્ત્રીએ વિધવા થયા પછી પણ ધર્માચરણ કરીને પોતાના પતિનો ઉદ્ધાર કરવાનું શાસ્ત્રમાં કહ્યું છે. પતિની સાથે ધર્માચરણ કરીને તેના ધર્મની અર્ધી ભાગિયણ થનારી સ્ત્રી, અગ્નિની સમક્ષમાં, મન, વાણી અને કાયાથી પતિ તરિકે એક પુરુષને વર્યા પછી, તેનું મરણ થાય, તોપણ બીજા પતિને કેમ વરી શકે?

વિવાહવિધિથી વિધવા-વિવાહ વિરુદ્ધ છે.

શાસ્ત્રના સ્વરૂપને નહિ જાણનારા કેટલાએક કહે છે કે, કલિયુગના ધર્મનું વ્યાખ્યાન કરનારા પરાશર ઋષિએ પારાશર ધર્મશાસ્ત્રમાં વિધવાના વિવાહ કરવાની આજ્ઞા આપી છે અને તેનું વચન આ પ્રમાણે છેઃ—

नष्टे मृते प्रव्रजिते क्लीबे च पतिते पतौ । पञ्चस्वापत्सु नारीणां पतिरन्यो विधीयते ॥

પતિ ખોવાઈ જાય, મરી જાય, સંન્યાસી થઈ જાય, નપુંસક નિકળે અથવા તો પતિત થઈ (વટલી) જાય, આ પાંચ આપત્તિઓમાંની કોઈ પણ આપત્તિ આવે ત્યારે નારીઓને બીજો પતિ કરવામાં આવે છે.

આ શ્લોક પૂર્વે મનુસ્મૃતિમાં હતો એમ કેટલાક કહે છે. નારદ સ્મૃતિમાં પણ પ્રોષિતભર્તૃકાના પ્રકરણમાં આ શ્લોક ગણવામાં આવ્યો છે તથા આ સ્મૃતિમાં પણ આ અધ્યાયમાં દૃષ્ટિએ પડે છે. આ શ્લોક વિધવાવિવાહનો વિધાયક છે કે નથી, તેનો નિર્ણય કરતા પહેલાં વેદમાં વિવાહવિધિમાં વિધવાવિવાહ કહ્યો છે કે નથી કહ્યો, તેનો પ્રથમ વિચાર કરવો આવશ્યક છે. ભગવાન્ મનુએ સ્ત્રીઓના આપદ્ધર્મમાં પ્રથમ નિયોગનું સ્વરૂપ દર્શાવ્યું છે અને પછી તેનું અશાસ્ત્રીયત્વ તથા વિધવાવિવાહનું અશાસ્ત્રીયત્વ અને અધર્મત્વ દર્શાવતાં કહે છે કેઃ—नोद्वाहिकेषु मंत्रेषु नियोगः कीर्त्यते क्वचित् । न विवाहविधावुक्तं विधवावेदनं पुनः ॥

મનુએ વિવાહવિધિના મંત્રોમાં કોઈ પણ ઠેકાણે નિયોગ કહ્યો નથી, તેમ વિવાહ વિધિમાં વિધવાના પુનર્વિવાહને માટે પણ કહ્યું નથી.

નિયોગનું સ્વરૂપ.

નિયોગવિધિને અશાસ્ત્રીય કહ્યો છે; કારણ કે વિવાહવિધિમાં તેનું વિધાન કરવામાં આવ્યું નથી, પરંતુ તેને ધર્મરૂપ કહ્યો નથી. અધર્મરૂપ શ્રાદ્ધાદિક ધર્મકર્મનો લોપ ન થાય, તેટલા માટે પુત્રોત્પત્તિ કરવા માટે મનુએ પંડે નિયોગનો વિધિ કહ્યો છે, નિયોગ વિધિનું સ્વરૂપ દર્શાવતાં ભગવાન્ મનુ કહે છે કે, નિયોગને માટે ગુરુજનની આજ્ઞા જોઇએ, નિયુક્ત પુરુષે શરીર ઉપર ઘી ચોપડવું જોઇએ, વાણીને વશમાં રાખવી જોઇએ, પ્રત્યેક ઋતુમાં એકવાર જ ગમન કરવું જોઇએ, પુત્રોત્પત્તિ થયા પછી નિયોગ કરનારા પુરુષે તથા સ્ત્રીએ પરસ્પર ગુરુની પેઠે અને સ્નુષા (પુત્રવધૂ)ની પેઠે વર્તવું જોઇએ. નિયોગ કરનારો દીયેર અથવા સગોત્રી હોવો જોઇયે; વગેરે નિયોગને માટે વિધિ કહેવામાં આવ્યો છે ને તેનો ઉદ્દેશ માત્ર પુત્રપ્રાપ્તિનો જ હોય છે; વગેરે કારણોને લીધે, નિયોગને ધર્મરૂપ કહેવામાં આવ્યો છે. છતાં તેને માટે વિવાહવિધિના મંત્રોમાં કોઈ પણ ઠેકાણે કોઈ પણ જાતનું વચન મળતું નથી. માત્ર ધર્મશાસ્ત્રમાં તેને માટે વિધિ જોવામાં આવે છે અને મનુએ જ નિયોગનો વિધિ દર્શાવીને नोद्वाहिकेषु मंत्रेषु नियोगः कीर्त्यते क्वचित् । એમ કહીને નિયોગનું અશાસ્ત્રીયત્વ પ્રતિપાદન કર્યું છે; અને નિયોગથી ઉત્પન્ન થયેલા પુત્રને धर्मतः प्रसवश्च सः । તે પુત્ર ધર્મપ્રમાણે ક્ષેત્રસ્વામીનો પુત્ર ગણાય છે. આમ કહીને ક્ષેત્રજ પુત્રને ધર્મ પુત્ર તરીકે માન્ય કર્યો છે તથા બાર પુત્રોમાંથી પ્રથમના ૭ પુત્રને દાયાદ અને બાંધવ ગણ્યા છે. તેમાં ક્ષેત્રજને બીજો ગણ્યો છે.

પરંતુ વિધવાવિવાહ અશાસ્ત્રીય અને અધર્મરૂપ, એમ ઉભયરૂપ હોવાથી તેને પશુધર્મ કહીને તેની નિંદા કરે છે. કારણ કે વિધવાવિવાહ સ્વચ્છંદપણાથી તથા કામવાસનાથી કરવામાં આવે છે, ગુરુજનની આજ્ઞા વગેરે નિયોગવિધિનું તેમાં ઉલ્લંઘન કરવામાં આવે છે, તેથી તે ધર્મવિરુદ્ધ છે.

વિધવાવિવાહને મનુએ પશુધર્મ માન્યો છે.

હવે વિવાહવિધિના મંત્રોમાં શું કહ્યું છે, તેનું આપણે અવલોકન કરીએ. વિવાહ વખતે વર અને કન્યા અગ્નિના સમક્ષમાં ઉભાં રહે છે અને કન્યાનો ભાઈ સુપડામાંથી ભુજેલી શાળ કન્યાના ખોબામાં આપે છે અને કન્યા તેનો અગ્નિમાં હોમ કરે છે. આ હોમને લાજાહોમ કહેવામાં આવે છે. તે લાજાહોમ કરતી વખતે નીચે પ્રમાણે એક મંત્ર ભણવામાં આવે છેઃ—

"अर्यमणं नु देवं कन्या अग्निमयक्षत। सनो अर्यमा देवः प्रेतो मुञ्चतु मा पतेः स्वाहा ॥

કન્યાએ અગ્નિરૂપ અર્યમા નામના તેજસ્વી દેવનું યજન કર્યું છે. તે અર્યમાદેવ પરણીને અમારા કુળમાં આવેલી આ કન્યાને તેના પિતાના કુળમાંથી છોડીને અમારા વરના કુળમાં જોડો."

આ મંત્ર ભણી રહ્યા પછી વરે હાથથી ગ્રહણ કરેલી કન્યા, પોતાના હાથમાં રહેલી ડાંગરની ધાણીનો—લાજાનો—અગ્નિમાં હોમ કરે છે. આ મંત્રમાં कन्या એવું જે પદ ભણવામાં આવ્યું છે, તેનો અભિપ્રાય એવો છે કે, લાજાહોમ કરવાનો અધિકાર માત્ર કન્યાને જ છે, વિધવા સ્ત્રીને નથી. માટે આ મંત્રનો વિધવા સ્ત્રીના સંબંધમાં વિનિયોગ થઈ શકતો નથી.

આ ઉપરાંત એક બીજો મંત્ર પણ વિધવાવિવાહથી વિરુદ્ધ જાય છે. વિવાહ વખતે વર, વહુને ઉદ્દેશીને આ પ્રમાણે મંત્ર ભણે છે;—"सोमः प्रथमो विविदे गंधर्वो विविद उत्तरः। तृतीयो अग्निष्टे पतिस्तुरीयस्ते मनुष्यजः ॥ સોમ તારો પ્રથમ પતિ હતો, ગંધર્વ તારો બીજો પતિ હતો, અગ્નિ તારો ત્રીજો પતિ હતો અને હું મનુષ્ય જાતિનો પુરુષ તારો ચોથો પતિ છું." આ મંત્રમાં પ્રથમના જે ત્રણ પતિ કહ્યા છે, તે કન્યાના શરીરમાં બબ્બે વર્ષ રહીને કન્યાનું રક્ષણ કરનારા ત્રણ અધિષ્ઠાતા દેવતા છે. તેઓ ઉત્તરોત્તર તે કન્યાનું મનુષ્ય જાતિના પુરુષને વધૂ તરિકે દાન કરે છે. આ મંત્રને જ મળતો બીજો એક મંત્ર ઋગ્વેદમાં આ પ્રમાણે ભણવામાં આવે છેઃ— सोमोऽददद्गंधर्वाय गंधर्वोऽददग्नये। रयिं च पुत्रांश्चादादग्निर्मह्यमथो इमाम् ॥ આ મંત્રનો અર્થ પણ ઉપરના મંત્રને જ મળતો છે. આ બન્ને મંત્રના અર્થનો વિચાર કરતાં વિધવાવિવાહ સિદ્ધ થતો નથી; કારણ કે મંત્રના ચોથા ચરણમાં કહે છે કે;—अग्निर्मह्यमथो इमाम्। અગ્નિએ આ કન્યા મને અર્પણ કરી છે; અર્થાત્ આ મંત્રમાં ચોથો વર મનુષ્ય જાતિનો હોવો જોઇએ એમ દર્શાવ્યું છે. હવે વિધવાને પરણનારો ચોથો થશે નહિ, પરંતુ પાંચમો, છઠ્ઠો અથવા તો ગમે તેટલામો થશે. વળી કન્યાનું દાન અગ્નિની પાસેથી જ લેવું જોઇએ, આમ શાસ્ત્રમાં કહ્યું છે. અગ્નિએ તો મનુષ્ય જાતિના પુરુષને

દાન કરીને પ્રથમ લગ્ન સમયે, પોતાનું સ્વત્વ ઉઠાવી લીધું છે અને તેના ઉપર મનુષ્ય જાતિના પુરુષનું સ્વામિત્વ થયું છે. તે પતિ મરણ પામ્યા પછી તે વિધવાનું દાન કોણ કરે? સ્ત્રીના ઉપર સ્વામિત્વ ધરાવનારો પતિ તો મરણ પામ્યો છે, માટે તેના સ્વામિત્વ તળે રહેલી વસ્તુનું બીજાને દાન કરવાનો અધિકાર કેમ હોય? આ ઉપરાંત એક બીજી પણ આપત્તિ નડે છે. તે એ કે, વિધવાના વિવાહ વખતે તેના હાથને ગ્રહણ કરવો કે તેના બીજા કોઇ અવયવને? વિધવાવિવાહનો પક્ષ કરનારા કહેશે કે, વિધવાવિવાહ સમયે વિધવાના પાણિને (હાથને) ગ્રહણ કરવો. પરંતુ તેના પાણિનું (હાથનું) તો પ્રથમ વિવાહ સમયે જ દાન કરવામાં આવ્યું છે. એક દાન કરેલી વસ્તુનું તેના સ્વામી વિના બીજાને દાન કરવાનો અધિકાર નથી; અને બીજા અવયવને ગ્રહણ કરવાનું કોઇ વિવાહમંત્રમાં કહ્યું જ નથી. વિવાહમાં પાણિ-ગ્રહણ સમયે વર, કન્યાનો જમણો હાથ ગ્રહણ કરીને નીચેનો મંત્ર ભણે છે;–"गृभ्णामि ते सौभगत्वाय हस्तम् । मह्यं त्वादुर्गार्हपत्याय देवाः । દેવોએ ગાર્હપત્ય અગ્નિની સેવા કરવા માટે તને, મને અર્પણ કરી છે. (મારે સ્વાધીન આપી છે.) હું ધર્મકર્મનાં સુખ ભોગવવા માટે તારા પાણિને (જમણા હાથને) ગ્રહણ કરું છું."

આ મંત્રમાં કહ્યા પ્રમાણે, જમણા હાથનું દાન થવાથી તે અંગ ઉચ્છિષ્ટ થઈ જાય છે અને બીજાં કોઈ પણ અંગનાં દાનમાટે વિવાહવિધિમાં વચન જ નથી. આ રીતે વિવાહવિધિના મંત્રોના અર્થનો વિચાર કરતાં કોઈ પણ રીતે વિધવા-વિવાહ વિવાહવિધિના મંત્રોથી સિદ્ધ થઇ શકતો નથી અને તેજ અભિપ્રાયથી ભગવાન્ મનુ આઠમા અધ્યાયના ૨૨૫ મા શ્લોકમાં કહે છે કે;—

"पाणिग्रहणिका मंत्रा कन्यास्वेव प्रतिष्ठिताः । नाकन्यासु क्वचिन्नृणां लुप्तधर्मक्रिया हि ताः ॥

પાણિગ્રહણના મંત્રો કન્યાઓને વિશે જ સંભવે છે; પરંતુ જેઓમાં કન્યા-પણાનો અભાવ છે એટલે જેઓ કન્યા રહી નથી–વિધવા છે, તેઓને માટે પાણિ-ગ્રહણના મંત્રો નિરૂપયોગી છે." કારણ કે જેઓ કન્યા નથી તેઓમાંથી દાન દેવારૂપી તથા દાન લેવારૂપી ધર્મક્રિયાનો નાશ થઈ જાય છે; તેથી કન્યાના પાણિગ્રહણને માટે ભણેલા મંત્રો, કન્યાધર્મથી રહિત થયેલી વિધવા સ્ત્રીને માટે નિરૂપયોગી છે. કન્યાની કન્યાપણાની હાનિ ક્યારે થાય છે, તેને માટે મનુ લખે છે કે;—

पाणिग्रहणिका मंत्रा नियतं दारलक्षणम् । तेषां निष्ठा तु विज्ञेया विद्वद्भिः सप्तमे पदे ॥

પાણિગ્રહણના મંત્રોથી કન્યાને સંસ્કાર કર્યાં પછી, કન્યામાંથી કન્યાપણું દૂર થાય છે અને નિયમપૂર્વક દારાપણું–ભાર્યાપણું પ્રાપ્ત થાય છે. પરંતુ તે વિવાહ-વિધિના મંત્રોની ખરી સંપૂર્ણતા તો સાતમે પગલે એટલે सखा सप्तपदी भव । सा मामनुव्रता भव । તું સાત પગલા મારી સાથે ચાલીને મારી સખા થા અને મારા ધર્મકૃત્યમાં મને અનુસરનારી થા, ઇત્યાદિ મંત્રથી સાતમું પગલું ભર્યાં પછી જ થાય છે, આમ વિદ્વાનોએ જાણવું.

સપ્તપદીની ક્રિયા વખતે વચ્ચે જો વિઘ્ન આવે અને સાત પગલાં પૂર્ણ થાય નહિ તો પરણવા બેઠેલી કન્યાનું કન્યાપણું ખંડિત થતું નથી અને તે કન્યાનો વિવાહ થઈ શકે છે.

સપ્તપદી થયા પછી કન્યાપણું દૂર થાય છે.

વિધવાવિવાહને પ્રતિપાદન કરનારાઓ, વિવાહવિધિ ઉપર જ આધાર ન રાખતાં, વિધવાવિવાહ વૈદિક મંત્રોથી સિદ્ધ થાય છે, એમ દર્શાવવા માટે એક વેદના મંત્રનું પ્રમાણ આપે છે. એ બ્રાહ્મણ ગ્રંથનો મંત્ર આ પ્રમાણે છે;– 'तस्मादेकस्य बह्वयो जाया भवन्ति। नैकस्यै बहवः सह पतयः॥ એક પુરુષને ઘણી સ્ત્રીઓ હોય છે, પરંતુ એક સ્ત્રીને ઘણા પતિઓ હોતા નથી, તેમ सह કહેતાં એક સાથે પણ ઘણા પતિઓ હોતા નથી.' આ મંત્રમાં सह શબ્દ છે, તેનો આધાર લઇને વિધવાવિવાહના પક્ષપાતીઓ કહે છે કે, પુરુષની પેઠે સ્ત્રીને એક સાથે ઘણા પતિઓ કરવાનો અધિકાર નથી; પરંતુ ક્રમે ક્રમે કરવાનો અધિકાર છે. મૂળ મંત્રમાં सह શબ્દ છે તેનો न ની સાથે અન્વય નહિ કરતાં વગર સમજણે શાસ્ત્ર વિરુદ્ધ કલ્પના ઉભી કરે છે. પરંતુ તેવી કલ્પના કરવા જતાં વિવાહવિધિના મંત્રોની સાથે અને ધર્મશાસ્ત્રનાં વચનોની સાથે વિરોધ ઉભો થાય છે. આવી વિરોધ ઉપજાવનારી કલ્પના કરવી ઉચિત નથી. પાંચ પાંડવો દ્રૌપદીને પરણવા માટે એક સાથે બેઠા. તે સમયે દ્રુપદ રાજાની અને યુધિષ્ઠિરની વચ્ચે, ધર્મનાં સૂક્ષ્મ સ્વરૂપ વિશે વિચાર ચાલ્યો હતો. એ પ્રસંગ મહાભારતમાં છે. તેના ઉપર ટીકાકાર નીલકંઠે વિચાર કરતાં, ઉપરના વેદમંત્રનો ઉપન્યાસ કરીને તે વિશે વિચાર કર્યો છે. યુધિષ્ઠિર રાજા પાંચ પાંડવોને સાથે લઇને દ્રૌપદીને પરણવામાટે તૈયાર થયા. તે સમયે દ્રુપદ રાજાએ યુધિષ્ઠિર રાજાને કહ્યું કે;–"लोकवेदविरुद्धोयं धर्मो धर्मभृतां वर। कर्तुमर्हसि कौन्तेय कस्मात्ते बुद्धिरिदृशी॥ હે ધર્મવંતોમાં શ્રેષ્ઠ કુંતીપુત્ર! આ વિવાહધર્મ લોકવિરુદ્ધ અને વેદવિરુદ્ધ છે. તેવો વિવાહ કરવાને તમે યોગ્ય છો? તમારી આવી બુદ્ધિ કેમ થઈ છે?" તેના ઉત્તરમાં યુધિષ્ઠિર બોલ્યા કે;–"सूक्ष्मो धर्मो महाराज नास्य विद्मो वयं गतिम्। હે મહારાજ! ધર્મનું સ્વરૂપ સૂક્ષ્મ છે; અમે તેની ગતિને (સ્વરૂપને) જાણતા નથી." યુધિષ્ઠિરનાં આ વચનની વ્યાખ્યા કરતાં નીલકંઠે नैकस्यै એ મંત્રનું ઉદાહરણ આપ્યું છે અને દર્શાવ્યું છે કે, પુરુષની પેઠે સ્ત્રીને અનેક પતિ કરવાનો અધિકાર નથી; પરન્તુ સ્ત્રીને તો એક પતિ જ હોવો જોઇએ. આ શ્રુતિનો આ પ્રમાણે અર્થ છે કે एकस्यै बहवः पतयो न। એક સ્ત્રીને ઘણા પતિઓ હોતા નથી, તેમ सह पतयो न। એક સાથે પણ ઘણા પતિઓ હોતા નથી. છતાં દ્રૌપદીએ પાંડવોની સાથે કરેલો વિવાહ એક અપવાદરૂપ વિવાહ હતો, આવો નીલકંઠનો મત છે. વળી नैकस्यै बहवः सह पतयः આ શ્રુતિનો એવો તાત્પર્ય છે કે, જેમ એક વિશાળ ઘર, ક્ષેત્ર, બાગ, બગીચા વગેરે એક સમયે એક પુરુષને અથવા તો અનેક પુરુષને દાનમાં આપી શકાય છે, તેમ કન્યાનું દાન પણ એક સમયે એકને અથવા તો અનેકને થઈ શકે કે કેમ? આવી શંકાનો નિષેધ કરવા માટે नैकस्यै बहवः सह पतयः એ શ્રુતિ કહેવામાં આવી છે.

આ બ્રાહ્મણ શ્રુતિના જેવી જ એક બીજી શ્રુતિ પણ છે. તેની સાથે ઉપરની શ્રુતિનો સંબંધ યથાર્થ રીતે ઘટી શકે છે અને તેથી પરસ્પર વિરોધ ઉભો ન થતાં બંનેનું સાર્થક્ય થાય છે. તે શ્રુતિ આ પ્રમાણેઃ–

"यदेकस्मिन्यूपे द्वे रशने परिव्ययति तस्मादेको द्वे जाये विन्देत। यन्नैकां रशनां द्वयोर्यूपयोः परिव्ययति तस्मान्नैका द्वौ पती विन्देते । જેમ એક યજ્ઞના સ્તંભ ઉપર રશના (દોરી)ને વિંટાળવામાં આવે છે; તેમ એક પુરુષ બે સ્ત્રીને પરણી શકે છે. પરંતુ જેમ એક રશના બે યૂપ–યજ્ઞસ્તંભ ઉપર વિંટાળવામાં આવતી નથી; તેમ એક સ્ત્રી બે પતિઓને પણ પરણી શકતી નથી."

એક યજ્ઞમાં એક યજ્ઞસ્તંભના ઉપર વિંટાળેલી રશના (દોરી) બીજે સમયે કરવામાં આવેલા યજ્ઞમાં, યજ્ઞના સ્તંભ ઉપર વિંટાળવામાં આવતી નથી; કારણ કે પ્રથમના યજ્ઞમાં તેનો ઉપયોગ કરવાથી તે ઉચ્છિષ્ટ થાય છે અને ઉચ્છિષ્ટ થયેલી રશનાનો પુનઃ યૂપમાં ઉપયોગ થઇ શકતો નથી; તેમ એકવાર વિધિપૂર્વક જે સ્ત્રીને પરણાવવામાં આવી હોય તેનો પતિ મરણ પામ્યા પછી, ફરીને તે વિધવાનું દાન થઈ શકતું નથી. કારણ કે તેનામાં કન્યાપણું રહેતું નથી.

શ્રુતિરહસ્યવેત્તા ભગવાન્ મનુ કહે છે કે;–"सकृदंशो निपतति सकृत्कन्या प्रदीयते। सकृदाह ददानीति त्रीण्येतानि सतां सकृत् ॥ ભાઇઓ પોતાના પિતાના ધનનો ભાગ એક વાર જ પાડી શકે છે, કન્યાનું દાન પણ એક વાર જ થઈ શકે છે અને 'હું આપું છું' આમ કહીને કોઈ પણ વસ્તુનું દાન પણ એકવાર જ કરવામાં આવે છે. આ ત્રણ કાર્ય ધર્મના માર્ગઉપર ચાલનારા સત્પુરુષો એકવાર જ કરે છે." આ રીતે કન્યાનું વાગ્દાન પણ એક વાર જ કરવાનું છે અને તે પછી વિધવાના વિવાહનું ખડન કરતાં કહે છે કે;–न विवाहविधावुक्तं विधवावेदनं पुनः। વિવાહના વિધિમાં વિધવાના પુનર્વિવાહનો વિધિ કહ્યો નથી. આ રીતે વિધવા-વિવાહનું ખંડન કર્યા પછી તેના ઉપસંહારમાં કહે છે કે;–न दत्वा कस्याचित्कन्यां पुनर्नदद्याद्विचक्षणः। दत्वा पुनः प्रयच्छन् हि प्राप्नोति पुरुषानृतम् ॥ ધર્મવેત્તા કુશળ પુરુષે એકને કન્યાનું દાન કર્યા પછી, ફરીથી બીજાને કન્યાનું દાન કરવું નહિ. જે પુરુષ એકને કન્યાનું દાન કર્યા પછી બીજાને કન્યાનું દાન કરે છે, તેને મનુષ્યહરણનો દોષ લાગે છે.

મેધાતિથિ, કુલ્લુકભટ્ટ વગેરે આ શ્લોકનું વ્યાખ્યાન કરતાં કહે છે કે, દાન કરવાના ગુણ દોષને જાણનારા પુરુષે, એક પુરુષને પોતાની કન્યાનું વાગ્દાન કર્યાં પછી બીજાને દાન કરવું નહિ; કારણ કે એકને કન્યાનું દાન કર્યાં પછી બીજાને કન્યાનું દાન કરનારા પુરુષને મનુષ્યહરણનો દોષ લાગે છે. આ વચનનો સાર એ છે કે,–એકને વાગ્દાન કર્યાં પછી, કારણ વગર બીજાને કન્યાનું દાન કરવામાં દોષ લાગે છે. શાસ્ત્ર વાગ્દાનને ફેરવવા માટે પણ નિષેધ કરે છે તો પછી વિધવાવિવાહને તો અવકાશ જ ક્યાંથી હોય? સપ્તપદી થયા પૂર્વે જો વર મરણ પામે તો વિવાહક્રિયા સંપૂર્ણ થયેલી ગણાતી નથી અને તેવી કન્યાને બીજા વરની સાથે પરણાવી શકાય છે. આમ મનુએ સ્પષ્ટ કર્યું છે અને તેના આવા અભિપ્રાયને પ્રગટ કરતાં વસિષ્ઠ

કહે છે કે;–'अद्भिर्वाचा च दत्तायां म्रियेतादौ वरो यदि। न च मंत्रोपनीता स्यात्कुमारी पितुरेव सा ॥ કન્યાનું વાણીથી તથા જળથી દાન કર્યાં પછી જો તેનો પતિ સપ્તપદીની પહેલાં મરણ પામે અને તેને સપ્તપદીની સંપૂર્ણ ક્રિયા કરવામાં આવી ન હોય તો તે કન્યા પિતાની જ ગણાય છે.' યમ પણ કહે છે; 'नोदकेन न वा वाचा कन्यायाः पतिरुच्यते। पाणिग्रहणसंस्कारात्पतित्वं सप्तमे पदे ॥ સંકલ્પપૂર્વક જળવડે દાન કરવાથી અથવા તો વાગ્દાન કરવાથી પુરુષ કન્યાનો પતિ થઈ શકતો નથી; પરંતુ પાણિગ્રહણ સંસ્કાર કર્યાં પછી સપ્તપદીને સાતમે પગલે પુરુષનું (કન્યા ઉપર) પતિપણું ઉત્પન્ન થાય છે.'

પરંતુ આ મનુનાં વચનને કાત્યાયનના એક વચનની સાથે વિરોધ આવશે. આવી કોઇને શંકા થાય, પરંતુ તે શંકા નિર્મૂળ છે. કાત્યાયનનું વચન આ પ્રમાણે છે;– स तु यद्यन्यजातीयः क्लीबः पतित एव वा। विकर्मस्थः सगोत्रो वा दासो दीर्घामयोपि वा ॥ उढापि देया सान्यस्मै सहाभरणभूषणा ॥ જેની સાથે કન્યા વરાવેલી હોય, તે વર જો બીજી જાતનો, નપુંસક, પતિત, અધર્મ કરનારો, સગોત્રી, દાસ અથવા તો લાંબા કાળનો રોગી નિકળે, તો તેને વરાવેલી હોય તો પણ, આભરણો સાથે બીજાને પરણાવવી.

આ કાત્યાયનના વચનમાં 'उढापि' એ પદમાં उढा અને अपि એવાં બે પદ છે. તેમાં अपि શબ્દનો પ્રયોગ સંભાવનાના અર્થમાં છે. એટલે उढा કહેતાં પરણેલી નહિ, પરંતુ પરણવાને તયાર થયેલી હોય તોપણ તે કન્યા તેને નહિ પરણાવતાં બીજાને પરણાવવી. લોકવ્યવહારમાં પણ ઘણીવાર સંભાવનારૂપે કહેવામાં આવે છે કે 'अनुत्तमो रसो ह्येष प्रमीतमपि चेतयते। આ રસ (માત્રા) એવો તો સારો છે કે, મરણ પામેલાને પણ જીવતા કરે છે.' આ વાક્યમાં प्रमीत શબ્દ મરણ પામેલાનો વાચક નથી; પરંતુ મૃતપ્રાય મૂર્છિત થયેલાનો વાચક છે. કારણ કે, મૂર્છિતને ફરી ઉઠવાનો સંભવ હોય છે, પરંતુ મરણ પામેલાને ફરીને જીવતો થવાનો સંભવ હોતો નથી. તેમ જ કાત્યાયનના વચનમાં પણ જે उढा શબ્દ છે, તે જેને સંપૂર્ણ વિવાહ સંસ્કાર થયો ન હોય એવી વાગ્દત્તા કન્યાનો વાચક છે પરંતુ જે કન્યાનો વિવાહ સંસ્કાર સંપૂર્ણ થયો હોય તેવી કન્યાનો વાચક નથી. જેમ મરી ગયેલાને કરેલો રસનો પ્રયોગ નિરર્થક થઈ પડે છે, તેમ उढा ને એટલે પરણેલી કન્યાને પણ વિવાહવિધિ નિરર્થક થઈ પડે છે. આ રીતે વિધવાવિવાહ મનુને સર્વથા માન્ય નથી.

હવે પરાશરને વિધવા વિવાહ માન્ય છે કે નથી, તેનો આપણે વિચાર કરીએ.

પરાશરને પણ વિધવાવિવાહ માન્ય નથી.

પરાશર પોતાની સંહિતામાં કળિયુગના ધર્મ નિરૂપણ કરે છે. તેમાં કહે છે કે;–नष्टे मृते प्रव्रजिते क्लीबे च पतिते पतौ। पञ्चस्वापत्सु नारीणां पतिरन्यो विधीयते ॥ પતિ ખોવાઈ જાય, મરણ પામે, સંન્યાસી થઈ જાય, નપુંસક નિવડે અથવા તો પતિત થઈ જાય (વટલી જાય), આ રીતે પાંચ આપત્તિઓમાંની કોઈ પણ આપત્તિ આવે ત્યારે નારીઓનો બીજો પતિ કરવામાં આવે છે.

કેટલાએક કહે છે કે, પરાશરે આ શ્લોકમાં વિધવાવિવાહની આજ્ઞા આપી છે. પરંતુ એમ કહેવું એ સર્વથા મિથ્યા છે. પરાશરે નિયોગનું પણ ખંડન કર્યું છે, તે વિધવાવિવાહને કેવી રીતે સંમતિ આપે ? नष्टे मृते એ શ્લોકનો વિચાર કરતાં પહેલાં હંમેશા યાદ રાખવું જોઇએ કે; જ્યાં શ્રુતિનાં અને સ્મૃતિના વચનોમાં પરસ્પર વિરોધ પડે, ત્યાં શ્રુતિનાં વચનને શ્રેષ્ઠ માનીને નિર્ણય કરવો. મનુ કહે છે કે;– 'धर्मं जिज्ञासमानानां प्रमाणं परमं श्रुतिः। ધર્મ જાણવાની ઇચ્છા રાખનારાઓને શ્રુતિઓ પરમ પ્રમાણ છે.' કારણ કે સ્મૃતિઓનું મૂળ શ્રુતિઓ છે. વેદવેત્તા ઋષિઓએ શ્રુતિમાં કહેલા ધર્મોનું સ્મરણ કરીને સ્મૃતિગ્રંથો રચ્યા છે. વિવાહવિધિના મંત્રોનું અવલોકન કરતાં કોઈ પણ રીતે વિધવાવિવાહ સિદ્ધ થઈ શકતો નથી. એ વાત મનુએ વૈદિક મંત્રોનો ઉહાપોહ કરીને સિદ્ધ કરી આપી છે, છતાં મનુનાં વચનને અપ્રમાણ માનીને જે કન્યા વિવાહવિધિથી પરણીને ભાર્યા થઈ હોય, અને પછી વિધવા થયેલી હોય એવી સ્ત્રીને પરાશર મુનિ પુનર્વિવાહ કરવાની કદી પણ આજ્ઞા આપે જ નહિ. કદાચ કોઈ કહે કે, પરાશરે આ વચન અવૈદિક વિવાહને માટે કહ્યું છે, પરન્તુ તેમ માનીએ તો પરાશરસંહિતા વેદવિરુદ્ધ અશાસ્ત્રીય ઉપદેશ કરવાથી અપ્રમાણ થઈ પડે તેનો કેવી રીતે ઉદ્ધાર કરવો ? માટે પરાશરનું नष्टे मृते વચન વિધવાવિવાહની આજ્ઞા કરે એમ માનવું એ સર્વથા ભૂલ ભરેલું છે.

હવે પરાશર સંહિતાના ટીકાકરો, આ શ્લોકનું કેવી રીતે વ્યાખ્યાન કરે છે, તે આપણે જોઇએ. સાયણ માધવ આ શ્લોકનું વ્યાખ્યાન કરતાં કહે છે કે;– 'अयं च पुनरुद्वाहो युगान्तरविषय इति कलौ नानुष्ठेयः। तथाचादित्यपुराणम्। ऊढायाः पुनरुद्वाहो ज्येष्ठांशो गोवधस्तथा। कलौ पञ्च न कुर्वीत मातृजायां कमण्डलुम्॥ આ શ્લોકમાં પરાશરે વિધવાનો પુનર્વિવાહ કહ્યો છે, તે બીજા યુગને માટે કહ્યો છે (માટે કલિયુગમાં કરવો નહિ). આદિત્ય પુરાણમાં કહ્યું છે કે;–પરણેલી સ્ત્રીનો પુનર્વિવાહ, જ્યેષ્ઠ ભાઇને આપવામાં આવતો અધિક ભાગ, ગોવધ, ભાઇની સ્ત્રી સાથે નિયોગ અને સંન્યાસ આ પાંચ કર્મ કળિયુગમાં કરવાં નહિ."

માધવની આ વ્યાખ્યા ભ્રમભરેલી છે; કારણ કે પરાશર સ્મૃતિમાં કેવળ કળિયુગના ધર્મનો જ ઉપદેશ કરવામાં આવ્યો છે અને એ વાર્તા આ સંહિતાના પ્રથમાધ્યાયના ઉપોદ્ઘાત ઉપરથી તથા સંહિતાના ઉપસંહાર ઉપરથી સિદ્ધ થાય છે. માટે બીજા યુગના ધર્મ આ સ્મૃતિમાં કહ્યા છે, આવી કલ્પના કરવી એ ભ્રમ છે.

નંદપંડિત આ શ્લોકની વ્યાખ્યા કરતાં કહે છે કે; 'वाग्दानानंतरं पाणिग्रहणात्प्राक्पतौ उत्पत्स्यमानपतित्ववति पूर्वस्मिन् वरे नष्टे दूरदेशगमनेनापरिज्ञातवृत्तान्ते मृते लोकान्तरं गते प्रव्रजिते, क्लीबे वा सति एवंविधासु आपत्तिषु नारीणां कन्यानां अन्यः पतिर्विधीयते। વાગ્દાન થઇ ગયા પછી, અને પાણિગ્રહણની પૂર્વે, ભવિષ્યમાં પતિ થનારો ગૌણપતિ પરદેશમાં જવાથી તેનો વૃત્તાંત જાણવામાં આવે નહિ, મરણ

પામે એટલે પરલોકમાં જાય, સંન્યાસી થઈ જાય, અથવા તો નપુંસક નિવડે આવી રીતની આપત્તિ આવે ત્યારે, નારીઓનો એટલે કન્યાઓનો બીજો પતિ કરવામાં આવે છે.'

આ વચનને મળતાં જ નારદે પણ વચનો કહ્યાં છે;–

'परिगृह्य तु यः कन्यां वरो देशान्तरं व्रजेत्। त्रीनृतून् समतिक्रम्य कन्यान्यं वरयेद्वरम् ॥

स्त्रीपुंसयोस्तु संबंधाद्वरणं प्राग्विधीयते। वरणाद्ग्रहणं पाणेः संस्कारोऽपि विचक्षणैः ॥

तयोरनियतं प्रोक्तं वरणं दोषदर्शनात् ॥

"જે વર વાગ્દાનવડે કન્યાનો સ્વીકાર કરીને પરદેશ ગયો હોય તેને માટે કન્યાએ ત્રણ ઋતુ એટલે ૭ મહિના સૂધી વાટ જોવી; અને પછી બીજા વરને વરવું. પરંતુ તે વર જો કન્યા આપવાના બદલામાં આપવાનું ધન તથા સ્ત્રીધન આપીને ગયો હોય તો કન્યાએ એક વર્ષ સૂધી વાટ જોવી અને તે પછી બીજા વરને વરવું. કારણ કે સ્ત્રી તથા પુરુષની વચ્ચે વિવાહ સંબંધ થાય છે, ત્યારે ત્રણ પ્રસંગ પ્રાપ્ત થાય છેઃ–પ્રથમ વર કન્યાનું વરણ (ભાર્યા માટે પ્રાર્થના) કરે છે; તે પછી કન્યાનો પિતા કન્યાનું વાગ્દાન કરે છે અને તે પછી પાણિગ્રહણ તથા સપ્તપદીનો વિધિ કરવામાં આવે છે. તેમાં પાણિગ્રહણ અને સપ્તપદી પતિ પત્નીના સંબંધને સ્થિર કરનારા છે, પરંતુ વરણવિધિ અનિયત અને અનિયામક છે, આમ ધર્મવેત્તાઓ કહે છે. એક વરની સાથે એક કન્યાનું વરણ કર્યાં છતાં પણ તેને તોડી શકાય છે. પરંતુ પાણિગ્રહણાદિક ક્રિયા થયા પછી પતિનો સંબંધ ટાળી શકાતો નથી; કારણ કે પાણિગ્રહણ અને સપ્તપદીના સંસ્કારો કન્યામાં ભાર્યાત્વ લાવનારા છે. માટે જ મનુએ કહ્યું છે કે;–'पाणिग्रहणिका मन्त्रा नियतं दारलक्षणम्। तेषां निष्ठा तु विज्ञेया विद्वद्भिः सप्तमे पदे ॥ પાણિ ગ્રહણના મંત્રોથી સંસ્કાર થયાં પછી કન્યામાં નિશ્ચયપણાથી દારાપણું (ભાર્યાપણું) આવે છે; અને તે વિવાહના મંત્રોની સમાપ્તિ વિદ્વાનોએ સપ્તપદીનું સાતમું પગલું ભર્યાં પછી જાણવી."

આ સર્વે વચનની છેવટે વરણ તોડી નાંખવાનો હેતુ દર્શાવતાં નારદ કહે છે કે, दोषदर्शनात्। જો વરમાં દોષ જોવામાં આવે તો કન્યાને ટાળવી; નહિતર વરણ તોડાય નહિ. વસિષ્ઠ પણ કહે છે કે;–अद्भिर्वाचा च दत्तायां म्रियेतादौ वरो यदि। न च मंत्रोपनीता स्यात्कुमारी पितुरेव सा। સંકલ્પપૂર્વક જળથી તથા વાણીથી કન્યાદાન કર્યાં છતાં પણ જો વિવાહ પહેલાં વર મરણ પામે અને વિવાહ મંત્રોથી તેનો સંસ્કાર કરવામાં આવ્યો ન હોય તો તે કન્યા પિતાની જ ગણાય છે. યમ પણ કહે છે કે;–'नोदकेन न वा वाचा कन्यायाः पतिरुच्यते। पाणिग्रहणसंस्कारात्पतित्वं सप्तमे पदे।

સંકલ્પપૂર્વક જળવડે દાન કરવાથી અથવા તો વાણીવડે દાન કરવાથી વર કન્યાનો પતિ કહેવાતો નથી; પરંતુ પાણિગ્રહણનો સંસ્કાર થયા પછી સાતમે પગલે વરમાં પતિપણું ઉત્પન્ન થાય છે.' મનુ પણ કહે છે કે–पाणिग्रहणिका मंत्रा नियतं दारलक्षणम्। तेषां निष्ठा तु विज्ञेया विद्वद्भिः सप्तमे पदे। શ્લોકાર્થ સ્પષ્ટ છે.

હવે આપણે પરાશરના વિવાદગ્રસ્ત શ્લોક ઉપર પુનઃ વિચાર કરીએ. नष्टे मृते प्रव्रजिते क्लीबे च पतिते पतौ ॥ આ પરાશરના શ્લોકમાં ચકાર ભણેલો છે, તેથી આ ઉપરાંત બીજાઓનું પણ ગ્રહણ સંભવે છે અને તેથી જ કાત્યાયન કહે છે કે;—स तु यद्यन्यजातीयः क्लीबः पतित एव वा । विकर्मस्थः सगोत्रो वा दासो दीर्घामयोपि वा ॥ उढापि देया सान्यस्मै सहाभरणभूषणा ॥

આ શ્લોકમાં उढापि એ વાક્યમાં अपि શબ્દ છે, તે કૈમુતિકન્યાયે કરીને વાગ્દત્તાનું જ બીજાને દાન કરવાનું કહે છે; પરંતુ ઉઢાનું એટલે પરણેલી કન્યાનું દાન કરવાનું કહેતો નથી. જો પરણેલી કન્યાનું બીજા વરને દાન કરવાનું શાસ્ત્રમાં કહ્યું હોય તો કોઈ પુરુષ અજાણતાં સગોત્રની કન્યાને પરણે અને તેને પાછળથી તે કન્યા સગોત્રી છે આમ જાણવામાં આવે તો તે કન્યાને બીજાની સાથે પુનર્વિવાહ કરવાનો દોષ નડે નહિ. પરંતુ સગોત્રની કન્યા પણ અજાણતાં પરણાઈ ગઈ હોય તો તે કન્યા બીજાને પરણાવી શકાતી નથી પણ પરણનારાએ જ તે કન્યાનું જીવતાં સુધી માતાની પેઠે પોષણ કરવું, આમ ધર્મ શાસ્ત્રમાં કહ્યું છે. તે વચન આ પ્રમાણે છે;—'भोगतस्तां परित्यज्य पालयेज्जननीमिव ॥ સગોત્રની કન્યા સાથે વિવાહ થઈ જાય અને પાછળથી તે કન્યા સગોત્રા છે એમ જાણવામાં આવે, તો તેની સાથે સંભોગ કરવો નહિ; પરંતુ જનેતાની પેઠે તેનું પાલન કરવું." જો વિધવાના પુનર્વિવાહ શાસ્ત્રસંમત હોય તો સગોત્રા કન્યાને પરણનારાએ તેનું જનેતાની પેઠે પાલન કરવું, એમ શાસ્ત્ર શા માટે કહે? પરંતુ એ ઉપરથી સિદ્ધ થાય છે કે વિધવાવિવાહ શાસ્ત્રસંમત નથી. વળી नष्टे मृते એ શ્લોકમાં पञ्चसु શબ્દ છે તે પ્રસિદ્ધ એવી પાંચ સંખ્યાનો અનુવાદ માત્ર છે. પરન્તુ પરિસંખ્યારૂપ નથી, એટલે પાંચ જ આપત્તિમાં વાગ્દાન કરેલી કન્યાને બીજા વરની સાથે પરણાવવી એવા અર્થમાં નથી. જો તેમ હોય તો બૌધાયન સ્મૃતિના વચનની સાથે વિરોધ આવશે. તે વચન આ પ્રમાણે છે;—वाचा दत्ता मनोदत्तार्ग्निपरिगता सप्तमं पदं नीता भुक्ता गृहीतगर्भा प्रसूता चेति सप्तविधा पुनर्भूस्तां गृहीत्वा न प्रजां धर्मं विन्देत।

વાગ્દત્તા, મનોદત્તા, અગ્નિની સાક્ષીએ દત્તા, સાતમું પગલું ભરી રહેલી, ભુક્તા (ભોગવેલી), ગૃહીતગર્ભા અને પ્રસૂતા, આ રીતે સાત પ્રકારની પુનર્ભૂ છે. તેને પરણ્યાથી પુરુષને ધર્મનો લાભ થતો નથી, તેમ તેવી સ્ત્રીથી થયેલી પ્રજા પણ પોતાની ગણાતી નથી.

આ વચનમાં વાગ્દત્તા કન્યાને પરણનારાને માટે પણ દોષ દર્શાવવામાં આવ્યો છે, તેથી પરાશરના नष्टे मृते એ વચનને જો તમે વાગ્દત્તાપર માનશો તો તેમાં પણ જેવો ને તેવો જ દોષ આવી ઉભો રહેશે. આમ કોઇને શંકા થવાનો સંભવ છે; પરન્તુ અહીં બૌધાયને વાગ્દત્તા કન્યાના સમ્બંધમાં જે કહ્યું છે; તે નિર્દોષ વરને દીધેલી કન્યાને ટાળીને, જો બીજાને પરણાવવા આવે તો તેને માટે કહ્યું છે. નારદે પણ ઉપરના જ અર્થને અનુસરતું કહ્યું છે;—

'दत्वा न्यायेन यः कन्यां वराय न ददाति च। अदुष्टश्चेद्वरो राज्ञा स दण्ड्यस्तत्र चोरवत् ॥

જે પુરુષ ન્યાયપૂર્વક એક વરને કન્યાનું દાન કર્યા પછી તે વરમાં દોષ ન હોય તોપણ તે વરને કન્યા ન પરણાવે તો રાજાએ તેને ચોરના જેવો દંડ કરવો.'

આ રીતે વાગ્દાન કર્યાં પછી પણ એક કન્યા કારણ વગર બીજા વરને આપવાનો નારદે નિષેધ કર્યો છે; તો પછી વિધવાના પુનર્વિવાહની આજ્ઞા તો નારદ કેમ જ આપે! આ સર્વ ઉહાપોહ ઉપરથી नष्टे मृते શ્લોક વાગ્દત્તા કન્યાના વિવાહનું વિધાન કરે છે. વિધવાના વિવાહનું વિધાન કરતો નથી. ભટ્ટોજી દીક્ષિતે પણ चतुर्विंशतिमत નામના ધર્મશાસ્ત્રના ગ્રંથમાં, નંદપંડિતને મળતું જ વ્યાખ્યાન કરીને नष्टे मृते એ શ્લોક વાગ્દાન કરેલી કન્યાના સંબંધમાં છે, આમ સિદ્ધ કર્યું છે અને તેવી કન્યાને જો એ શ્લોકમાં દર્શાવેલી કોઈપણ આપત્તિ આવે તો તેને બીજા વરની સાથે પરણાવવી, આમ સિદ્ધ કર્યું છે.

પારાશરસ્મૃતિમાં કેવળ કળિયુગના ધર્મોનું જ વિવેચન કરવામાં આવ્યું છે. માટે કળિયુગના ધર્મને કહેનારાં જે જે પુરાણનાં વચનો પરાશર સ્મૃતિથી વિરુદ્ધ જતાં હોય, તે તે વચનોને પ્રમાણ માનવાં નહિ. કારણ કે સ્મૃતિવચનોની અને પુરાણવચનોની વચ્ચે વિરોધ પડે, ત્યારે પુરાણનાં વચનો અપ્રમાણ ગણાય છે; કારણ કે પુરાણનાં વચનો સ્મૃતિના વચનો કરતાં ઉતરતાં છે. કેટલાએક પુરાણનાં વચનોનો નિર્વાહ (બચાવ) કરવા માટે કહે છે કે; પુરાણનાં વચનો સામાન્ય રીતે પુનર્વિવાહનો નિષેધ કરે છે; માટે પુરાણનાં એ કળિવર્જ્ય વચનોને સામાન્ય ગણવાં અને પરાશરનું વચન તો પરિગણિત એવી પાંચ આપત્તિમાં જ પુનર્વિવાહનું વિધાન કરે છે માટે नष्टे मृते એ વચન સામાન્ય રીતે પુનર્વિવાહનો નિષેધ કરનારાં પુરાણવચનોના અપવાદરૂપ છે, તેથી પુરાણ વચનોને બાધ કરશે. આ રીતે પ્રલાપ કરનારાઓની કલ્પના સર્વ શ્રુતિ સ્મૃતિથી વિરુદ્ધ જવાથી ઉપેક્ષા કરવા યોગ્ય છે. કેટલાએક કહે છે કે, પુનર્વિવાહનો કળિયુગમાં જે નિષેધ કરવામાં આવ્યો છે, તે કેવળ પુરાણમાં જ કરવામાં આવ્યો છે; અર્થાત્ ધર્મશાસ્ત્રમાં નિષેધ કરવામાં આવ્યો નથી. આમ કહેવું એ પણ મિથ્યા છે. ક્રતુસ્મૃતિમાં કળિયુગના ધર્મ કહેતાં કહ્યું છે કે;—

'देवरेण सुतोत्पत्तिर्दत्ता कन्या न दीयते। न यज्ञे गोवधः कार्यः कलौ न च कमण्डलुः ॥

કળિયુગમાં દેવરદ્વારા પુત્રોત્પત્તિ કરવી નહિ, (નિયોગ કરવો નહિ) એકને આપેલી કન્યા કારણ વગર ટાળીને બીજાને આપવી નહિ, યજ્ઞમાં ગવાલંભ કરવો નહિ તથા સંન્યાસ લેવો નહિ.' આ રીતે ક્રતુસ્મૃતિમાં પણ વાગ્દત્તા કન્યાનું વેશવાળ તોડવાનો નિષેધ કરવામાં આવ્યો છે, તે ઉપરથી વિધવાવિવાહનો નિષેધ સમજી લેવો.

મનુસ્મૃતિમાં તથા યાજ્ઞવલ્ક્યસ્મૃતિમાં પુનર્ભૂને ફરીથી સંસ્કાર કરવાનું કહ્યું છે. તે ઉપરથી કેટલાએકને ભ્રાંતિ થાય છે કે, વિધવાને પણ પુનઃ સંસ્કારો હશે. પરંતુ એ કેવળ ભ્રાંતિ જ છે. મનુસ્મૃતિમાં પુનર્ભૂના સંબંધમાં આ પ્રમાણે કહ્યું છે;–

'सा चेदक्षतयोनिस्स्याद्गतप्रत्यागतापि वा । पौनर्भवेन भर्त्रा सा पुनःसंस्कारमर्हति ॥

પતિએ ત્યાગ કરેલી અથવા તો વિધવા સ્ત્રી, જો રજસ્વલા થઈ ન હોય તો તે સ્ત્રી બીજા પતિની સાથે સંસ્કાર કરવાને યોગ્ય ગણાય છે; તથા પિતાએ બાળક વરને કન્યા પરણાવી હોય અને તે કન્યા કોઈ બીજા પુરુષના ઘરમાં જઇને બેઠી હોય અને તે કન્યા રજોદર્શનની પહેલાં પરણેલા વરની પાસે પાછી આવે તો તે વરની સાથે તે કન્યાનો પુનઃ સંસ્કાર કરવો. આ મનુનું વચન છે તથા अक्षता भूयः संस्कृता पुनर्भूः । જેને રજોદર્શન થયું નથી એવી સ્ત્રીને ફરીને સંસ્કાર કરવામાં આવે તો તે પુનભૂ કહેવાય છે. આ વિષ્ણુનું વચન છે; તથા अक्षता च क्षता चैव पुनर्भूः संस्कृता पुनः । રજોદર્શન વિનાની અથવા તો રજોદર્શનવાળી સ્ત્રીને ફરીને સંસ્કાર કરવામાં આવે તો તે પુનર્ભૂઃ કહેવાય છે, આ યાજ્ઞવલ્કયનું વચન છે; આ ઉપરાંત બીજાં વચનો પણ વિધવાને પુનઃ સંસ્કાર કરવાનો ઉપદેશ કરે છે. આ વચનો વિધિવચનો નથી; પરંતુ સાધારણ વચનો છે અને તેના પ્રામાણ્યનો આધાર શ્રુતિવચનોના ઉપર રહે છે. શ્રુતિ વચનોનો શ્રુતિ વચનોની સાથે જો વિરોધ આવે, તો સ્મૃતિવચન અપ્રમાણ ગણાય છે; કારણ કે સ્મૃતિ સ્વતઃ પ્રમાણ ગણાતી નથી. આ એક સમાધાન છે. બીજું સમાધાન એ છે, કે જો આપણે ઉપરનાં સ્મૃતિવચનોને પ્રમાણ માનીએ તો વિવાહવિધાયક મંત્રો, જેઓ કન્યાઓને જ સંસ્કાર કરવાનું વિધાન કરે છે, તેઓ નિરર્થક થઈ પડે અને તેમ થવાથી સંસ્કાર વિધિનાં લોપનો પણ પ્રસંગ નહિ. આવે. અને સંસ્કારો લુપ્ત થઈ જાય તો પુનઃ સંસ્કાર પણ સિદ્ધ થઈ શકે આમ ઉત્તરોઉત્તર અનર્થ થવાથી વિધવાનાં પુનઃ સંસ્કાર વિધાયક વચનો યથાર્થ નથી.

અહીં કોઈ એવી શંકા કરે કે, ગાંધર્વ વિવાહમાં પ્રથમ પ્રીતિથી સ્ત્રી પુરુષનો સમાગમ થાય છે અને તે પછી સ્ત્રીને વિવાહના સંસ્કાર કરવામાં આવે છે. તેમ પુનર્ભૂ વગેરેને પણ વિવાહના સંસ્કારો કરવામાં શો દોષ છે! આ શંકાનું સમાધાન એ છે કે, ગાંધર્વવિવાહથી જોડાયલી કન્યાને એકવાર પણ સંસ્કાર થયો નથી, તેમ શાસ્ત્ર વિધિથી તેનું દાન પણ કરવામાં આવ્યું નથી તેથી તે કન્યા लुप्तधर्मक्रिया ગણાતી નથી, તેથી જ તે વિવાહના સંસ્કારને યોગ્ય ગણાય છે. પરંતુ વિધવા लुप्तधर्मक्रिया હોવાથી તેનામાં વૈદિકમંત્રોથી વિવાહ થઈ શકતો નથી, તેથી જ પૂર્વાચાર્યોએ કલ્પસૂત્ર વગેરે સંસ્કારના ગ્રન્થોમાં એક મનુષ્ય ભ્રષ્ટ થઈ ગયો હોય તો તેને પુનઃ ઉપનયન સંસ્કાર કરવા માટે ઉપદેશ કર્યો છે; પરંતુ તેઓએ વિધવાના પુનર્વિવાહને માટે ઉપદેશ કર્યો નથી.

અહીં पुनःसंस्कारमर्हति એ વચનમાં સંસ્કાર શબ્દ છે તે પ્રાયશ્ચિત્તનો વાચક છે. અને તે પ્રાયશ્ચિત્ત સંસ્કાર અક્ષતાને કરવો આવો મનુનો મત છે. ત્યારે યાજ્ઞવલ્ક્ય અક્ષતા તથા ક્ષતા બન્નેને સંસ્કાર કરવાનું કહે છે. કેટલાએક, જેને રજોદર્શન થતું હોય તેવી સ્ત્રીને ક્ષતા કહે છે ત્યારે કેટલાએક પતિસમાગમવાળી સ્ત્રીને ક્ષતા કહે છે. બાર પ્રકારના પુત્રોમાં ઉત્તર ૭ પુત્રો कानीन, सहोढज, क्रीत, पौनर्भव, स्वयंदत्त અને शौद्र આ ૭ ને અદાયાદ અને અબાંધવ કહ્યા છે. તેમાં પૌનર્ભવનું સ્વરૂપ દર્શાવવા માટે या पत्या वा परित्यक्ता विधवा वा स्वयेच्छया। उत्पादयेत्पुनर्भूत्वा स पौनर्भव उच्यते ॥ પતિએ ત્યાગ કરી દીધેલી સ્ત્રી અથવા તો વિધવા સ્ત્રી પુનર્વિવાહ કરીને જે પુત્રને ઉત્પન્ન કરે છે તે પૌનર્ભવ પુત્ર કહેવાય છે. આ રીતે વ્યવહારમાં વારસાના પ્રસંગમાં પૌનર્ભવ પુત્રનું લક્ષણ કહ્યું છે અને તે પ્રસંગે પુનર્ભૂને ગ્રહણ કરનારાએ કેવી રીતે પુનર્ભૂનો સ્વીકાર કરવો તે દર્શાવવા માટે પુનર્ભૂને પુનઃ સંસ્કાર એટલે પ્રાયશ્ચિત્ત કરવાનું કહ્યું છે. પારકી વસ્તુ કે જે વાપરેલી હોય અથવા તો ન વાપરેલી હોય તેનો સ્વીકાર કરતાં પહેલાં તેને સંસ્કાર કરવાનું અહીં કહ્યું છે. આ આચારનો વિષય નથી પણ વ્યવહારનો વિષય છે તેથી અહીં વિવાહસંસ્કારને સંબંધ નથી પરંતુ પારકા સ્વત્વવાળા પદાર્થને લેતાં પહેલાં સંસ્કાર કરવાની (પ્રાયશ્ચિત્ત કરવાની) આજ્ઞા આપી છે.

नष्टे मृते આ સ્મૃતિવચન વાગ્દત્તા વિષયક છે એમ આપણે ઉપર સિદ્ધ કરી ગયા. પરંતુ આ વચન નારદસ્મૃતિમાં પણ પ્રોષિતભર્તૃકા (જેનો પતિ પરદેશ ગયો હોય તેવી સ્ત્રી) ના પ્રકરણમાં ભણવામાં આવ્યું છે તેથી પાછો જેવો ને તેવો જ દોષ આવીને ઉભો રહેશે. આમ કેટલાએકને શંકા થવાનો સંભવ છે. તે વચન આ પ્રમાણે છેઃ–

नष्टे मृते प्रव्रजिते क्लीबे च पतिते पतौ । पंचस्वापत्सु नारीणां पतिरन्यो विधीयते ॥
अष्टौ वर्षाण्युदीक्षेत ब्राह्मणी प्रोषितं पतिम् । अप्रसूता तु चत्वारि परतोन्यं समाश्रयेत् ॥
क्षत्रिया षट् समास्तिष्ठेदप्रसूता समात्रयः । वैश्या प्रसूता चत्वारि द्वे वर्षे त्वितरा वसेत् ॥
न शूद्रायाः स्मृतः काल एष प्रोषितयोषिताम् । जीवति श्रूयमाणे तु स्यादेष द्विगुणोऽवधिः ॥
अप्रवृत्तौ तु भूतानां दृष्टिरेषा प्रजापतेः ॥

પતિ ખોવાઈ જાય, મરણ પામે, સંન્યાસી થઈ જાય, નપુંસક નિવડે, અથવા તો વટલી જાય, આ પાંચ આપત્તિઓમાં સ્ત્રીઓનો બીજો પતિ કરવામાં આવે છે. બ્રાહ્મણ જાતિની સ્ત્રીએ પોતાનો પતિ પરદેશ જાય ત્યારે આઠ વર્ષ સુધી તેની વાટ જોવી અને પોતાને પ્રસવ થયો ન હોય તો ચાર વર્ષ સુધી વાટ જોવી, અને પછી બીજા પતિનો આશ્રય કરવો, ક્ષત્રિય જાતિની સ્ત્રીએ ૭ વર્ષ સુધી અને તે જો પ્રસૂતા થઈ ન હોય તો ત્રણ વર્ષ સુધી વાટ જોવી, વૈશ્ય જાતિની સ્ત્રીએ ચાર વર્ષ સુધી અને તે જો પ્રસૂતા થઈ ન હોય તો બે વર્ષ સુધી વાટ જોવી અને શુદ્રા સ્ત્રીને માટે

કોઈ જાતનો કાળ નિર્માણ કરવામાં આવ્યો નથી. આ પ્રોષિતભર્તૃકા સ્ત્રીઓનો ધર્મ કહેવામાં આવ્યો છે. પરંતુ જો પતિ જીવતો છે આમ સાંભળવામાં આવે તો જાતિવાર દર્શાવેલા સમય કરતાં બમણા સમય સુધી તે તે જાતિની સ્ત્રીએ બેસી રહેવું. પરંતુ પતિના જીવવા વિશેના સમાચાર મળે નહિ તો પછી બીજા પતિનો આશ્રય કરવો આવો પ્રજાપતિનો મત છે.

મનુસ્મૃતિના નવમા અધ્યાયમાં જ્યાં પ્રોષિતભર્તૃકાના આપદ્ધર્મ કહ્યા છે. ત્યાં ૭૬ મા શ્લોક ઉપર વિવેચન કરતાં મહામીમાંસક મેધાતિથિએ ટીકામાં नष्टे मृते શ્લોક ઉપર પણ વિચાર કર્યો છે અને ત્યાં पतिरन्यो विधीयते એ પદ ઉપર વિવેચન કરતાં કહે છે કે;–पतिशब्दोहि पालननिमित्तको ग्रामपतिः सेनापतिरिति । आत्मनोजीवनार्थं सैरिंध्रीकरणादिकर्मणान्यमाश्रयेत" नष्टे मृते શ્લોકમાં જે પતિ શબ્દ છે તે પાલનક્રિયા કરનારના અર્થમાં છે. જેમકે ગ્રામનો પતિ, સેનાનોપતિ વગેરેમાં પતિ શબ્દ પાલન અર્થમાં છે તેમ અહીં પણ પાલનઅર્થમાં છે. માટે नष्टे मृते વચનમાં કહેલી આપત્તિમાંથી કોઈપણ આપત્તિ સ્ત્રીના ઉપર આવે તો તેણે પોતાની આજીવિકાને માટે ચાકરડી વગેરેનાં નિર્દોષ કર્મ કરવા માટે બીજા પાલક પતિનો આશ્રય કરવો.

આ પ્રોષિતભર્તૃકાનું પ્રકરણ વિધવાવિવાહને પ્રતિપાદન કરનારું છે આવો કેટલાએકને ભ્રમ થાય છે. પરંતુ આ પ્રકરણના ઉપક્રમ તથા ઉપસંહાર જોતાં આ પ્રકરણમાં વિધવાવિવાહનો અંશ પણ નથી પરંતુ નિયોગનું સ્વરૂપ વર્ણવવામાં આવ્યું છે. પ્રકૃત પ્રકરણના આરંભમાં નારદ કહે છે કે;–

अज्ञातदोषेणोढा या निर्दोषा नान्यमाश्रिता। बंधुभिः सा नियोक्तव्या निर्बंधुः स्वयमाश्रयेत् ॥

એક પુરુષ કે જેના દોષ જાણવામાં આવ્યા ન હોય તે એક સ્ત્રીને પરણ્યો હોય અને તે નિર્દોષ સ્ત્રીએ બીજા કોઈપણ પુરુષનો આશ્રય કર્યો ન હોય તો તેના સંબંધીઓએ તે સ્ત્રીનો નિયોગ કરવો. જો તે સ્ત્રીને સંબંધી ન હોય તો તેણે પંડે નિયોગ ધર્મમાં પ્રવૃત્ત થવું. આ રીતે નિયોગ પ્રકરણનો આરંભ કરવામાં આવ્યો છે, અને તે પછી नष्टे मृते એ વચનથી નિયોગ વિધિનાં નિમિત્ત કહ્યાં છે, અને તે પછી अष्टौ वर्षाणि એ વચનથી કેટલાં વર્ષો વાટ જોઈને નિયોગ કરવો એ વાત કહી છે; અને તે પછી अप्रवृत्तौ तु भूतानां એ અર્ધા શ્લોકથી પતિના સમાચાર સર્વથા આવે જ નહિ તો નિયોગ કરવો આમ કહ્યું છે અને તે પછી दृष्टिरेषा प्रजापतेः એ વચનથી નિયોગવિધિમાં પ્રજાપતિની સંમતિ દર્શાવી છે. કોઈને શંકા થાય છે કે प्रसूता સ્ત્રીને નિયોગનો અધિકાર છે અને અહીં મૂલ વચનમાં તો प्रसूता પદ છે તેથી આ વચન નિયોગવિધિથી વિરુદ્ધ જશે. તેનું સમાધાન એવું છે કે એક સ્ત્રી પ્રસૂતા હોય તોપણ જેને પુત્ર નથી એવી સ્ત્રીને નિયોગનો ઉપદેશ કરવામાં આવ્યો છે એટલું જ નહિ પરંતુ મનુ લખે છે કે; द्वितीयमेके प्रजनं मन्यन्ते स्त्रीषु तद्विदः ॥ નિયોગ ધર્મને જાણનારા કેટલાએક ધર્મવેત્તાઓ,

સ્ત્રીઓને વિશે બીજો પુત્ર ઉત્પન્ન કરવાનું પણ માન્ય કરે છે. આ રીતે નષ્ટે મૃતે એ સ્મૃતિવચનને નારદે નિયોગના પ્રકરણમાં ભણ્યું છે. પરંતુ કળિયુગના ધર્મનો ઉપદેશ કરનારા પરાશરે કળિયુગમાં નિયોગનો નિષેધ કર્યો છે અને પુત્રોની ગણના કરતી વખતે પણ औरसः क्षेत्रश्चैव दतः कृत्रिमकः सुतः એ સ્મૃતિ વચનમાં एव કાર ભણીને એવો નિયમ કર્યો છે કે પોતાનાં ક્ષેત્રરૂપ સ્ત્રીમાં ઉત્પન્ન થયેલા ઔરસ પુત્રને જ ક્ષેત્રજ પુત્ર જાણવો પરંતુ નિયોગવિધિથી થયેલા પુત્રને ક્ષેત્રજ પુત્ર જાણવો નહિ. આદિત્યપુરાણમાં પણ કલિવર્જ્ય પ્રકરણમાં કહ્યું છે કે "दत्तौरसेतरेषां तु पुत्रत्वे न परिग्रहः દત્તક તથા ઔરસ પુત્ર વિના બીજાઓને કળિયુગમાં પુત્ર તરિકે ગ્રહણ કરવા નહિ." બૃહસ્પતિએ પણ કળિયુગમાં નિયોગનો નિષેધ કરતાં કહ્યું છે કે;–

उक्तो नियोगो मनुना निषिद्धः स्वयमेव तु । युगह्रासादशक्योयं कर्त्तुमन्यैर्विधानतः॥
तपोज्ञानसमायुक्ताः कृतत्रेतादिके नराः । द्वापरे च कलौ नृणां शक्तिहानिर्हि निर्मिता ।
अनेकधा कृताः पुत्रा ऋषिभिर्ये पुरातनैः । न शक्यास्तेऽधुना कर्तुं शक्तिहीनैरिदन्तनैः॥

મનુએ પંડે નિયોગ કહ્યો છે અને પંડે જ તેનો પાછો નિષેધ કર્યો છે. કારણ કે યુગના વહેવાની સાથે શક્તિરહિત થયેલા પુરુષો વિધિપ્રમાણે નિયોગ કરી શકશે નહિ. આમ તેણે જાણ્યું હતું. સત્ય, ત્રેતા અને દ્વાપરયુગમાં મનુષ્યો તપસ્વી તથા જ્ઞાની હતા, પરંતુ કળિયુગમાં શક્તિહીન થઈ ગયા છે. પુરાતન કાળના ઋષિઓએ નિયોગવિધિથી અનેક પ્રકારના પુત્રોને ઉત્પન્ન કર્યા હતા પરંતુ હમણાના શક્તિહીન પુરુષો નિયોગવિધિથી તેવા પુત્રોને ઉત્પન્ન કરી શકે તેવા નથી.

કોઈ કહે કે પરાશરે નષ્ટે મૃતે એ વચનને પ્રાયશ્ચિતના પ્રકરણમાં ભણેલું છે, માટે તેને વાગ્દત્તાના અર્થમાં માનવું એ યોગ્ય ગણાય નહિ. પરંતુ તેમ કહેનારાઓ આ વચનને સર્વ શ્રુતિ સ્મૃતિથી વિરુદ્ધ એવા વિધવાવિવાહ વિધાયક માને છે એમ માનવું એ પણ અયોગ્ય છે. કદાચ એમ કહેવામાં આવે કે પરિવેદનનો દોષ દૂર કરવા માટે જ્યેષ્ઠ ભાઈને કન્યા અર્પણ કરીને પછી કનિષ્ઠ ભાઈએ તે કન્યાની સાથે વિવાહ કરવો જોઈએ આમ શાસ્ત્રમાં કહ્યું છે માટે પ્રસંગવશાત્ કન્યાના પુનર્વિવાહ પ્રાપ્ત થયા તે સમયે કેવા કેવા પ્રસંગમાં વાગ્દત્તા કન્યાના પુનર્વિવાહ કરવા એની આજ્ઞાને માટે પરાશરે નષ્ટે મૃતે શ્લોક કહ્યો છે. આમ જો આ શ્લોકની સંગતિ મેળવવામાં આવે તો એમાં અમને જરા પણ વાંધો નથી. વિદ્વન્મનોહરા નામની ટીકામાં નંદ પંડિત નષ્ટે મૃતે એ શ્લોકનું અવતરણ લખતાં કહે છે કે; नन्वस्तु परिवेदने कन्याया ज्येष्ठसमर्पणानन्तरं पुनस्तेनैव विवाहो वाग्दानानन्तरमनिष्पन्ने विवाहे तु वरवैगुण्ये ज्ञाते कथमित्याह । પરિવેદનના વિષયમાં કન્યા જ્યેષ્ઠ ભાઈને સમર્પણ કર્યા પછી નાનાભાઈએ તેની સાથે પરણવું. પરંતુ વાગ્દાન થઈ ગયા પછી અને વિવાહ થયા પહેલાં જો વરના દોષ જાણવામાં આવે તો શું કરવું તેના ઉત્તરમાં પરાશરે નષ્ટે

મૃતે શ્લોક કહ્યો છે. માટે વાગ્દાન થઇ ગયા પછી પણ જો નષ્ટે મૃતે શ્લોકમાં દર્શાવેલા દોષ વરમાં જોવામાં આવે તો કન્યાને બીજા વરની સાથે પરણાવવી.

આ રીતે શાસ્ત્રમાં વાગ્દત્તા કન્યાનો પુનર્વિવાહ કહ્યો છે, પરંતુ જેને સપ્તપદી સૂધીના સર્વે સંસ્કારો થઇ ગયા હોય એવી વિધવાના પુનર્વિવાહને માટે શાસ્ત્રમાં કોઇ પણ ઠેકાણે આજ્ઞા આપવામાં આવી નથી.

વિધવાવિવાહ સદાચારવિરુદ્ધ છે.

કેટલાએક શાસ્ત્રનાં તાત્પર્યને નહિ જાણનારાઓ કહે છે કે; પાંડુની સ્ત્રી કુંતીએ નિયોગવિધિથી પાંડવોને ઉત્પન્ન કર્યાં હતા, નાગના રાજા મહાત્મા ઐરાવતે પોતાના પુત્રને ગરુડે મારી નાખવાથી તેની સ્ત્રી વિધવા થઇ હતી અને તેને કંઇ સંતાન ન હતું તેથી તેણે પણ પોતાના પુત્રની વહુ અર્જુનને અર્પણ કરી હતી અને અર્જુને તે સ્ત્રીને વિશે નિયોગવિધિથી ઇરાવાન નામનો એક પુત્ર ઉત્પન્ન કર્યો હતો, અને તેને તેની માતાએ નાગલોકમાં ઉછેરીને મોટો કર્યો હતો, અને તે પુત્ર ઇરાવાન્ મહાભારતના યુદ્ધમાં અર્જુનને સહાયતા કરતાં ભીષ્મની રક્ષા કરનારાઓના હાથથી મરણ પામ્યો હતો. અહીં મુખ્ય વકતવ્ય એ છે કે અર્જુને નાગરાજાના પુત્રની વહુમાંથી ઇરાવાનને ઉત્પન્ન કર્યો હતો, દેવતાઓએ પાંડુની સ્ત્રી કુંતીમાંથી પાંડવોને ઉત્પન્ન કર્યાં હતા અને વેદવ્યાસે વિચિત્રવીર્યની સ્ત્રીઓમાં નિયોગ કરીને ધૃતરાષ્ટ્ર, પાંડુ તથા વિદુરને ઉત્પન્ન કર્યાં હતા. ભગવાન્ વેદવ્યાસ તથા નાગરાજની વહુ સાથે નિયોગ કરનારો અર્જુન જગતમાં શિષ્ટ પુરુષ (સાધુ પુરુષ) ગણાય છે તેથી તેના આચારને સદાચાર–શિષ્ટાચાર ગણીને ધર્મમાં પ્રમાણ ગણવો જોઇએ; ભગવાન મનુપણ સદાચારને ધર્મમાં પ્રમાણ ગણે છે અને કહે છે કે आचारश्चैव साधूनाम् મહાત્મા પુરુષોના આચારને ધર્મમાં પ્રમાણ માનવો જોઇએ. માટે અર્જુનની અને વેદવ્યાસની પેઠે નિયોગ કરવાથી અથવા તો ઘોરકળિના પ્રભાવને લીધે પુનર્વિવાહ કરવાથી દોષ લાગશે નહિ. અહીં પ્રથમ પ્રશ્ન એ ઉભો થાય છે કે શિષ્ટો–સત્પુરુષો કોને કહેવા અને તેના કેવા આચારને ધર્મમાં પ્રમાણ ગણવા ? આ વિષય ઉપર મહામીમાંસક કુમારિલભટ્ટે તંત્રવાર્તિક નામના ગ્રંથમાં સદાચારપ્રામાણ્ય લખતાં તેના ઉપર વિસ્તારથી વિચાર કર્યો છે. સદાચારવિશે વિચાર કરતાં તે કહે છે કે; सदाचारेषु हि दृष्टो धर्मव्यतिकरः साहसञ्च। प्रजापतीन्द्रवसिष्ठविश्वामित्रयुधिष्ठिरकृष्णद्वैपायनभीष्मधृतराष्ट्रवासुदेवार्जुनप्रभृतीनां बहूनामद्यतनानां च। નહુષ રાજા ઇંદ્રના પદ ઉપર હતો ત્યારે તેણે ઇંદ્રાણીની સાથે વ્યભિચારની ઇચ્છા કરી હતી, વસિષ્ઠે પુત્રના શોકથી આતુર થઇ પાણીમાં પડીને આત્મહત્યાનું સાહસ કર્યું હતું, વિશ્વામિત્રે ચંડાળને યાગ કરાવ્યો હતો, વેદવ્યાસે વિચિત્રવીર્યની સ્ત્રીઓમાં નિયોગથી પુત્રો ઉત્પન્ન કર્યાં હતા, ભીષ્મ આશ્રમના ધર્મનો ત્યાગ કરીને રહ્યા હતા, ધૃતરાષ્ટ્રે આંધળા છતાં પાંડવનાં ધનથી યજ્ઞો કર્યાં હતા, યુધિષ્ઠિર, અર્જુને સંપાદન કરેલી દ્રૌપદીને પરણ્યા હતા, તથા મહાભારતના યુદ્ધમાં બ્રાહ્મણ જાતિના

તથા પોતાના ગુરુ એવા દ્રોણનો વધ કરાવવા માટે અસત્ય બોલ્યા હતા, અર્જુને સંન્યાસીનો વેશ ધારણ કરીને પોતાના મામાની પુત્રી સુભદ્રાનું હરણ કર્યું હતું, આ રીતે પ્રાચીન કાળના તથા આધુનિક સમયના મહાત્મા પુરુષોના આચાર પણ અધર્મથી તથા સાહસથી દૂષિત થએલા છે. તથા કેટલાએક આધુનિક સત્પુરુષોના આચારો પણ દેશભેદે કરીને, જાતિભેદે કરીને, કુળભેદે કરીને એમ અનેક રીતે અધર્મ તથા સાહસથી દૂષિત થએલા જોવામાં આવે છે. માટે અહીં એવો પ્રશ્ન ઉભો થાય છે કે;–

के शिष्टा ये सदाचाराः सदाचाराश्च तत्कृताः । इतीतरेतराधीननिर्णयत्वादनिर्णयः ॥

શિષ્ટ કોને કહેવા? આ પ્રશ્નનો ઉત્તર એ છે કે જે સદાચારી પુરુષ હોય તે, ત્યારે સદાચાર કોને કહેવો તો કે શિષ્ટોના આચારોને! આમ શિષ્ટોના અને આચારના નિર્ણયનો આધાર એક બીજાના આધીન હોવાથી બેમાંથી એકનો પણ નિર્ણય થઈ શકતો નથી. મનુ વગેરેએ પણ સદાચારને પ્રમાણ તરિકે ગણ્યો છે. પરંતુ સદાચાર કોને માનવો આ એક મહત્વનો પ્રશ્ન છે અને તેનો ઉત્તર એટલો જ છે કેઃ–

"स्वयमज्ञातमूलाश्च शिष्टाचारप्रमाणताम् । वदन्तोपि न शोभन्ते स्मृतिकारास्ततोऽधिकाः ॥

શિષ્ટાચાર પ્રમાણ છે આમ કહેનારાઓને પોતાને પણ શિષ્ટાચારનાં મૂળની ખબર નથી તેથી તેઓનું કહેવું યુક્તિયુક્ત નથી, માટે સ્મૃતિરચનારાઓ તેના કરતાં શ્રેષ્ઠ છે. માટે જ "स्मृतिकारवचनार्थो हि शिष्टैराचरितव्यः शिष्टत्वायान्यथा हि तदनपेक्षाः स्वातन्त्र्येण व्यवहरमाणा दुष्टा भवेयुर्न शिष्टाः શિષ્ટોએ શિષ્ટપણું સંપાદન કરવામાટે સ્મૃતિકારનાં વચનો પ્રમાણે વર્તવું યોગ્ય છે. ધર્મશાસ્ત્રની દરકાર નહિ કરીને સ્વતંત્રતાથી વર્તનારાઓ શિષ્ટ કહેવાતા નથી; પરંતુ તેઓ દુષ્ટ ગણાય છે." શાસ્ત્રપરિમિત છે એટલે અમુક સંખ્યાનાં છે અને તેમાં સદાચારને કોઈ ઠેકાણે શાસ્ત્રતરિકે ગણવામાં આવ્યો નથી તેમ સદાચાર જાતે પણ શાસ્ત્ર નથી. તેનો આધાર શ્રુતિ તથા સ્મૃતિના ઉપર છે તેનું દર્શન અથવા તો અનુષ્ઠાન સ્વતંત્ર રીતે નથી. પરંતુ શાસ્ત્રના આધીન છે. એટલા માટે જ ધર્મસૂત્રકારોએ આચારને ધર્મમાં પ્રમાણ તરિકે માન્ય ગણ્યો નથી. વળી આચારો જોઇને સ્મૃતિની રચના કરવામાં આવી નથી. પરંતુ સ્મૃતિઓમાંથી આચારો ઉત્પન્ન થયા છે અને સ્મૃતિઓ શ્રુતિમાંથી રચવામાં આવી છે. માટે સ્મૃતિઓ પરિમિત અર્થને કહેનારી અને સમૂલ ગણાય છે ત્યારે આચારો દેશાદિકના ભેદે કરીને, અનંત છે, અને તેમાં પણ કેટલાએક સમૂલ છે ત્યારે કેટલાએક અંધપરંપરાથી પણ ઉતરી આવેલા છે. તેથી સર્વે આચારો સ્વતંત્ર રીતે ધર્મમાં પ્રમાણ ગણાતા નથી. આ જ અભિપ્રાયથી ભગવાન મનુ કહે છે કેઃ–

आचारः परमोधर्मः श्रुत्युक्तः स्मार्त एव च ।

વેદમાં તથા ધર્મશાસ્ત્રમાં કહેલા આચારને જ પરમ ધર્મ જાણવો જોઇએ.

મહાત્માઓનો આચાર પણ જો વેદથી તથા ધર્મશાસ્ત્રથી વિરુદ્ધ હોય તો તે સદાચાર ગણાતો નથી.

પૂર્વમીમાંસાકારે પણ સદાચારનાં પ્રામાણ્ય ઉપર વિચાર કરતાં કહ્યું છે કે, अपि वा कारणाग्रहणे प्रयुक्तानि प्रतीयेरन्। લોભાદિકનાં કારણો વગર ધર્મબુદ્ધિથી જે આચરણો કરવામાં આવે તેઓને ધર્મમાં પ્રમાણ તરિકે માનવાં. તંત્રવાર્તિકકાર કુમારિલભટ્ટ આ સૂત્ર ઉપર વાર્તિક લખતાં કહે છે કે;–

दृष्टकारणहीनानि यानि कर्माणि साधुभिः। प्रयुक्तानि प्रतीयेरन् धर्मत्वेनेह तान्यपि।
शरीरस्थितये यानि सुखार्थं वा प्रयुंजते। अर्थार्थं वा न तेष्वस्ति शिष्टानामेव धर्मधीः॥

સત્પુરુષો જગતમાં જે નિષ્પ્રયોજન આચરણ કરે છે, તે આચરણ ધર્મરૂપ ગણાય છે. પરંતુ પોતાના શરીરની સ્થિતિ માટે અથવા તો શરીરનાં સુખાર્થે અથવા તો ધનને માટે જે આચરણ કરે છે તેઓનાં તે આચરણોમાં શિષ્ટોને ધર્મબુદ્ધિ થતી નથી.

પૂર્વમીમાંસાકાર જૈમિની આચારપ્રામાણ્ય દર્શાવતાં કહે છે કે; शिष्टाकोपेऽविरुद्धम्। શ્રુતિમાં તથા સ્મૃતિમાં કરેલી આજ્ઞા સાથે જે આચારને વિરોધ આવતો ન હોય તેવા આચારને શિષ્ટાચાર જાણવો. આ સૂત્ર ઉપર વિવેચન કરતાં કુમારિલ ભટ્ટ કહે છે કે:–

शिष्टं यावच्छ्रुतिस्मृत्योस्तेन यन्न विरुध्यते। तच्छिष्टाचरणं धर्मे प्रमाणत्वेन गम्यते।
यदि शिष्टस्य कोपस्स्यात् विरुध्येत प्रमाणता। तदकोपात्तु नाचारप्रमाणत्वं विरुध्यते॥

શ્રુતિમાં તથા સ્મૃતિમાં ઉપદેશ કરેલા આચારથી જે આચાર વિરુદ્ધ ન હોય તે શિષ્ટાચાર અને તે ધર્મમાં પ્રમાણ મનાય છે. આચાર જો શાસ્ત્રાજ્ઞાથી વિરુદ્ધ જતો હોય તો તે ધર્મમાં પ્રમાણ ગણાતો નથી. પરંતુ શ્રુતિ તથા સ્મૃતિના ઉપદેશની સાથે અનુકૂલતાવાળો આચાર પ્રમાણ ગણાય છે.

વ્યાસ અને અર્જુન સત્પુરુષ હતા, પરંતુ તેમણે કરેલો નિયોગ રાગમૂલક હતો. અને તેઓનું તે આચરણ અશાસ્ત્રીય હતું તેથી તેના તે આચારને સદાચાર ગણવામાં આવ્યો નથી અને તેથી જ હજારો વર્ષ વીત્યા છતાં પણ તેઓના તે આચારને કોઇએ પણ સદાચાર તરિકે સ્વીકાર્યો નથી. તો પછી કેવળ કામવાસનાથી જ કરવામાં આવતો વિધવાવિવાહ શાસ્ત્રવિરુદ્ધ તથા અધર્મરૂપ ગણાય એમાં તો આશ્ચર્ય જ શું ? વિધવાવિવાહ શાસ્ત્રવિરુદ્ધ છે અને ભગવાન મનુ તેને પશુધર્મ કહે છે.

વિધવાવિવાહ જેમ સદાચારવિરુદ્ધ છે તેમ લોકોમાં પણ ધિક્કારપાત્ર ગણાય છે. તે વાત લોકવ્યવહાર ઉપરથી આપણા જાણવામાં તથા જોવામાં આવે છે.

જેઓની જ્ઞાતિમાં વિધવાવિવાહ કરવામાં આવે છે તેવા પુરુષો પણ પ્રથમ વિધવાવિવાહ કરવામાં અશુભ–પાપ સમજે છે. અને ગમે તેટલા પૈસા ખર્ચીને

પણ પ્રથમ કુંવારી કન્યાની સાથે પરણે છે. માંગલિક પ્રસંગમાં પણ પરણેલી સ્ત્રીના હાથથીજ બહુધા શુભ કર્મનો આરંભ કરાવવામાં આવે છે, પરંતુ પુનર્લગ્નની સ્ત્રીને ઓછો સમાદર આપવામાં આવતો નથી. કેટલાએક કુલીન પુરુષો પોતાની જ્ઞાતિમાં પુનર્લગ્નની સંસ્થા ચાલુ હોવા છતાં પણ પોતાના કુટુંબમાં કોઇ સ્ત્રી વિધવા થાય છે તો તેનાં પુનર્લગ્ન કરતા નથી એટલુંજ નહિ પણ એવાં કુટુંબોને અકુલીન ગણીને તેમની કન્યાને પોતાનાં કુટુંબમાં સંઘરતા પણ નથી. પરંતુ યાવત જીવિત પોતાની વિધવા પુત્રીઓની પાસે વિધવાધર્મ પળાવે છે. આવાં ઘણાં કુટુંબો અત્યારે ગુજરાતમાં અને કાઠિયાવાડમાં વિદ્યમાન છે. ભગવાન્ યાજ્ઞવલ્કય કહે છે કે;–अस्वर्ग्यं लोकविद्विष्टं धर्म्यमप्याचरेन्नतु। જે ધર્મકૃત્ય તરફ લોકોને તિરસ્કાર હોય તેવું ધર્મનું કૃત્ય પણ કરવું નહિ કારણ કે તે સ્વર્ગ આપતું નથી. અર્થાત્ ધર્મકૃત્ય પણ જો લોકોમાં દ્વેષપાત્ર થઈ પડયું હોય તો તે કરવું યોગ્ય નથી તો પછી વિધવાવિવાહ જેવું શાસ્ત્રવિરુદ્ધ અધર્મકૃત્ય તો કેમ જ કરી શકાય? વિધવાવિવાહ કરનારાઓ પણ વિધવાવિવાહને ધર્મકર્મ માનતા નથી અને તેથી તેઓ પ્રથમ વિધવાવિવાહ કરતા નથી. માટે શાસ્ત્રથી વિરુદ્ધ, અધર્મરૂપ વિધવાવિવાહ આર્યોએ સર્વથા સ્વીકાર કરવા યોગ્ય નથી.

मृते भर्त्तरि या नारी ब्रह्मचर्यव्रते स्थिता ।
सा मृता लभते स्वर्गं यथा ते ब्रह्मचारिणः ॥ ३१ ॥

પતિના મરણ પછી જે સ્ત્રી બ્રહ્મચર્યવ્રત પાળે છે તે મરણ પામ્યા પછી બ્રહ્મચારીઓની પેઠે સ્વર્ગમાં જાય છે. ૩૧

૩૧ વાગ્દાન થયા પછી અને વિવાહની પૂર્વે પતિ મરણ પામે તો બીજા વરની સાથે કન્યાને પરણાવવી, પરંતુ વિવાહ થઈ ગયા પછી પતિ મરણ પામે તો આ શ્લોકમાં કહેવા પ્રમાણે સ્ત્રીએ બ્રહ્મચર્ય વ્રત પાળવું. ભગવાન્ યાજ્ઞવલ્કય સ્ત્રીના ધર્મ કહેતાં કહે છે કે; "मृते जीवति वा पत्यौ या नान्यमुपगच्छति । सेह कीर्तिमवाप्नोति मोदते चोमया सह ॥ જે સ્ત્રી પતિના જીવતાં તથા તેના મરણ પછી બીજા પુરુષને સેવતી નથી તે આ લોકમાં કીર્તિને પામે છે અને મરણ પછી ઉમાની સાથે સ્વર્ગમાં આનંદ કરે છે." મનુ પણ કહે છે કે; कामं तु क्षपयेद्देहं पुष्पमूलफलैः शुभैः । न तु नामापि गृह्णीयात् पत्यौ प्रेते परस्य तु ॥ પતિ મરણ પામ્યા પછી વિધવા સ્ત્રીએ સત્વગુણી ફળોનો અને પુષ્પોનો આહાર કરીને પોતાનાં શરીરને ક્ષીણ કરી નાખવું તથા પરપુરુષનું નામ પણ લેવું નહિ.

तिस्रः कोट्योर्द्धकोटी च यानि लोमानि मानुषे ।
तावत्कालं वसेत्स्वर्गे भर्तारं यानुगच्छति ॥ ३२ ॥

જે સ્ત્રી મરણ પામેલા પતિની સાથે સહગમન કરે છે (સતી થાય છે) તે સ્ત્રી માણસના શરીરમાં જે સાડા ત્રણ કોટી રૂવાડાં છે તેટલાં વર્ષ સૂધી સ્વર્ગમાં રહે છે. ૩૨

૩૨ સ્વર્ગના કરતાં પણ વિશેષ લોકની ઇચ્છા હોય તો સ્ત્રીએ અનુગમન કરવું. (સતી થવું) એમ આ શ્લોકમાં દર્શાવ્યું છે. જે સ્ત્રી ગર્ભિણી હોય તથા જેની પ્રજા બાળક હોય, તેવી સ્ત્રીને શાસ્ત્રમાં અનુગમનનો નિષેધ કરવામાં આવ્યો છે.

व्यालग्राही यथा व्यालं बलादुद्धरते बिलात् ।
एवं स्त्री पतिमुद्धृत्य तेनैव सह मोदते ॥ ३३ ॥

इति श्रीपाराशरसंहितायां प्रायश्चित्तकाण्डे उद्बन्धनादिमृतशुद्धिर्नाम चतुर्थोऽध्यायः समाप्तः ।

સાપ પકડનારો વાદી જેમ મંત્રનાં સામર્થ્યથી દરમાંથી સર્પને બાહાર કાહાડે છે તેમ (સહગમન કરનારી) સ્ત્રી પોતાના પતિનો પાપમાંથી ઉદ્ધાર કરીને તેની સાથે જ (સ્વર્ગમાં) આનંદ પામે છે. ૩૩

૩૩ અનુગમન કરનારી સ્ત્રી પોતાનો જ ઉદ્ધાર કરતી નથી, પરંતુ નરકમાં પડેલા પોતાના પતિનો પણ ઉદ્ધાર કરે છે અને તેની સાથે સ્વર્ગમાં રહીને અવશેષ રહેલાં પુણ્યનાં ફળનો ઉપભોગ કરે છે.

ઇતિ શ્રીપારાશર ધર્મશાસ્ત્રમાં "આત્મહત્યા વગેરેનાં પ્રાયશ્ચિત્તનો વિચાર" એ નામનો અધ્યાય ૪ થો સમાપ્ત.



अध्याय ५ मो.

कुतरां विगेरेना करडवानुं प्रायश्चित्त.

वृकश्वानशृगालाद्यैर्दष्टो यस्तु द्विजोत्तमः ।
स्नात्वा जपेत्स गायत्रीं पवित्रां वेदमातरम् ॥ १ ॥

જે બ્રાહ્મણને નહાર, કુતરો, શિયાળ, ગધેડું, વાનર, ડુક્કર વગેરે કરડ્યાં હોય તેણે સ્નાન કરીને પવિત્ર એવી વેદની માતા ગાયત્રીનો એકસો ને આઠ વાર જપ કરવો. ૧

૧. આ પ્રાયશ્ચિત્ત, નાભીની નીચે કરડ્યો હોય તો કરવું; અને ઉપરના ભાગમાં કરડ્યો હોય તો એનાથી બમણું કરવું.

गवां शृङ्गोदकैः स्नानान्महानद्योस्तु सङ्गमे ।
समुद्रदर्शनाद्वापि शुना दष्टः शुचिर्भवेत् ॥ २ ॥

જેને કુતરો કરડ્યો હોય તે ગાયના શૃંગોદકવડે સ્નાન કરવાથી, અથવા તો મહાનદીઓના સંગમમાં સ્નાન કરવાથી અથવા તો સમુદ્રનાં દર્શન કરવાથી શુદ્ધ થાય છે. ૨

૨. આ પ્રાયશ્ચિત્ત ક્ષત્રિયાદિને માટે છે. બ્રાહ્મણોને માટે પ્રથમના શ્લોકમાં કહ્યું છે. ગાયનું શૃંગોદક એટલે જે પાણી જીવતી ગાયના શિગડાં ઉપર રેડીને ઝીલી લીધેલું હોય તે અને તે પાણી એકસોને આઠ ગાયત્રી મંત્રોથી અભિમંત્રિત (મંત્રેલું) હોવું જોઇએ.

वेदविद्याव्रतस्नातः शुना दष्टो द्विजो यदि ।
सहिरण्योदकैः स्नात्वा घृतं प्राश्य विशुद्ध्यति ॥ ३ ॥

વિદ્યાસ્નાત તથા વ્રતસ્નાત એવા દ્વિજને જો કુતરો કરડે તો તેણે પાણીમાં સુવર્ણ નાંખીને તે પાણીથી સ્નાન કરવું અને ઘીનું પ્રાશન કરવું એટલે તે શુદ્ધ થાય છે. ૩

૩. જનોઇ દે તે દિવસથી બ્રાહ્મણે વેદ ભણવાનો પ્રારંભ કરવો, અને વેદ ભણી રહ્યા પછી સમાવર્તન (એટલે જનોઈ દેતી વખતે જે મુંજનો કંદોરો બ્રહ્મચારીની કેડે બાંધવામાં આવે છે તે વેદ ભણી રહ્યા પછી ગૃહસ્થાશ્રમમાં દાખલ થતી વખતે છોડવાનો જે વિધિ કરે છે તે) કરવું એટલે તે બ્રાહ્મણ વેદવિદ્યાસ્નાત (વેદવિદ્યાથી નાહાએલો) કહેવાય છે; અને જનોઈ દીધ પછી સૌમ્ય તથા પ્રાજાપત્ય નામનાં વ્રતો કરીને છેવટે જે સમાવર્તન કરે છે તે વ્રતસ્નાત (એટલે વ્રતથી નાહાએલો) કહેવાય છે; અને જે વેદવિદ્યા તથા વ્રત બંને પરિપૂર્ણ કરીને સમાવર્તન કરે છે તે વિદ્યાસ્નાત તથા વ્રતસ્નાત કહેવાય છે.

सव्रतस्तु शुना दष्टो यस्त्रिरात्रमुपावसेत् ।
घृतं कुशोदकं पीत्वा व्रतशेषं समापयेत् ॥ ४ ॥

વ્રતધારી દ્વિજને કુતરું કરડે તો તેણે ત્રણ દિવસ અપવાસ કરવો અને ઘી તથા કુશોદક એટલે દર્ભ તથા જળ એકઠાં કરીને તેનું પ્રાશન કરીને બાકી રહેલું વ્રત સમાપ્ત કરવું. ૪

૪. દ્વિજ એટલે બ્રાહ્મણ, ક્ષત્રિય તથા વૈશ્ય.

अव्रतः सव्रतो वापि शुना दष्टो भवेद्द्विजः ।
प्रणिपाताद्भवेत्पूतो विप्रैश्चक्षुर्निरीक्षितः ॥ ५ ॥

ગૃહસ્થ અથવા તો બ્રહ્મચારી એવા દ્વિજ વર્ણને જો કુતરું કરડે તો તેણે પ્રાયશ્ચિત્ત કરીને બ્રાહ્મણને નમસ્કાર કરવા; અને બ્રાહ્મણ તેના સામી પ્રસન્ન દૃષ્ટિ કરે એટલે તે પવિત્ર થાય છે. ૫

शुना घ्रातावलीढस्य नखैर्विलिखितस्य च ।
अद्भिः प्रक्षालनं प्रोक्तमग्निना चावधूलनम् ॥ ६ ॥

કુતરાએ જે પદાર્થને સુંઘેલો, ચાટેલો કે નખથી ખોતરેલો હોય તેને પાણીથી ધોવો અને અગ્નિમાં તપાવવો એટલે તે શુદ્ધ થાય છે. ૬

शुना तु ब्राह्मणी दष्टा जंबुकेन वृकेण वा ।
उदितं ग्रहनक्षत्रं दृष्ट्वा सद्यः शुचिर्भवेत् ॥ ७ ॥

બ્રાહ્મણીને કુતરો, શિયાળ કે નહાર કરડે તો તેણે ઉદય પામેલાં ગ્રહ તથા નક્ષત્ર જોવાં એટલે તે તત્કાળ શુદ્ધ થાય છે. ૭

कृष्णपक्षे यदा सोमो न दृश्येत कदाचन ।
यां दिशं व्रजते सोमस्तां दिशं चावलोकयेत् ॥ ८ ॥

અંધારીયામાં કદાચ ચંદ્ર દેખાય નહિ ત્યારે ચંદ્રનાં દર્શન કરવાં હોય તો જે દિશાએ ચંદ્ર જાય છે તે દિશા તરફ જોઈને ચંદ્રનાં દર્શન કરવાં. ૮

असद्ब्राह्मणके ग्रामे शुना दष्टो द्विजोत्तमः ।
वृषं प्रदक्षिणीकृत्य सद्यः स्नात्वा शुचिर्भवेत् ॥ ९ ॥

જે ગામમાં બ્રાહ્મણ ન હોય એવા ગામમાં દ્વિજને કુતરું કરડે તો તેણે બળદને પ્રદક્ષિણા કરીને તત્કાળ સ્નાન કરવું એટલે તે શુદ્ધ થાય છે. ૯

चाण्डालेन श्वपाकेन गोभिर्विप्रोहतो यदि ।
आहिताग्निर्मृतो विप्रो विषेणात्महतो यदि ॥ १० ॥
दहेत्तं ब्राह्मणं विप्रो लोकाग्नौ मन्त्रवर्जितम् ।

ચાણ્ડાલે, શ્વપાકે, ગાયે અથવા તો બળદે અગ્નિહોત્રી બ્રાહ્મણને માર્યો હોય અથવા તો તેણે વિષ ખાઈને આત્મહત્યા કરી હોય તો કોઈ સપિંડ બ્રાહ્મણે તે મરનારા અગ્નિહોત્રી બ્રાહ્મણને મંત્રસંસ્કાર કર્યા વગરજ લૌકિકાગ્નિમાં બાળવો. ૧૦–૧૧

૧૦–૧૧ ગમે ત્યાંથી આણેલો અગ્નિ. અગ્નિહોત્રનો અગ્નિ નહિ તે. ચોથા અધ્યાયના ત્રીજા શ્લોકમાં આત્મહત્યા કરનારાને બાળવો નહિ એમ નિષેધ કર્યો હતો તે, અગ્નિહોત્રી સિવાયના બીજાઓને માટે જાણવો.

स्पृष्ट्वा वोढ्वा च दग्ध्वा च सपिण्डेषु च सर्वदा ॥ ११ ॥
प्राजापत्यं चरेत्पश्चाद्विप्राणामनुशासनात् ।

दग्धाऽस्थीनि पुनर्गृह्य क्षीरेण क्षालयेद्द्विजः ॥ १२ ॥
पुनर्दहेत्स्वाग्निना तु स्वतन्त्रेण पृथक् पृथक् ।

દશમા શ્લોકમાં કહ્યા પ્રમાણે જે અગ્નિહોત્રીનું મરણ થયું હોય તેને જે સપિંડ સ્મશાનમાં લઇ જાય, તેનો સ્પર્શ કરે અથવા તો તેને અડકે, અથવા તો બાળે તેણે બ્રાહ્મણોની આજ્ઞાથી પ્રાજાપત્ય નામનું પ્રાયશ્ચિત કરવું. તે પછી તેનાં અગ્નિમાં બળી ગએલાં હાડકાંને પાછાં એકઠાં કરીને દુધથી ધોવાં અને મરનારા અગ્નિહોત્રીના શ્રૌતાગ્નિથી* મંત્રના સંસ્કારપૂર્વક તેનાં હાડકાંને ફરીથી જુદાં જુદાં બાળવાં. ૧૨

आहिताग्निर्द्विजः कश्चित्प्रवसन्कालचोदितः ॥ १३ ॥
देहनाशमनुप्राप्तस्तस्याग्निर्वसते गृहे ।
प्रेताग्निहोत्रसंस्कारः श्रूयतामृषिपुङ्गवाः ॥ १४ ॥

કોઇ અગ્નિહોત્રી બ્રાહ્મણ પ્રવાસ કરતાં દેશાન્તરમાં કાળની પ્રેરણાથી મરણ પામે અને તેનો શ્રૌતાગ્નિ ઘેર હોય તો તેને અગ્નિસંસ્કાર શી રીતે કરવો તે હું કહું છું તે હે મહર્ષિઓ સાંભળો! ૧૩–૧૪

कृष्णाजिनं समास्तीर्य कुशैस्तं पुरुषाकृतिम् ।
षट्शतानि शतं चैव पलाशानां च वृन्ततः ॥ १५ ॥
चत्वारिंशच्छिरे दद्याच्छतं कण्ठे तु विन्यसेत् ।
बाहुभ्यां दशकं दद्यादङ्गुलीषु दशैव तु ॥ १६ ॥
शतं तु जघने दद्याद्द्विशतं तूदरे तथा
दद्यादष्टौ वृषणयोः पञ्च मेढ्रे तु विन्यसेत् ॥ १७ ॥
एकविंशतिमूरुभ्यां द्विशतं जानुजङ्घयोः ।
पादाङ्गुलीषु षट्दद्याद्यज्ञपात्रं ततो न्यसेत् ॥ १८ ॥

ભૂમિ ઉપર †કૃષ્ણાજિન પાથરીને તેના ઉપર તે અગ્નિહોત્રીની દર્ભોવડે પુરુષના જેવી આકૃતિ કરવી.‡ દર્ભ ન મળે તો ખાખરાનાં સાતસો ડીંટીયાંથી પુરુષના જેવી આકૃતિ કરવી. તે એવી રીતે કે, ચાળીસ ડીટીયાં

---

* અગ્નિહોત્રમાંનો જે અગ્નિ તે શ્રૌતાગ્નિ, અને ગૃહસ્થાશ્રમી જે વિવાહાગ્નિને રાખે છે તે સ્માર્તાગ્નિ કહેવાય છે. † કાળા હરણનું ચામડું. ‡ દેશાન્તરે મરેલા અગ્નિહોત્રીના દેહને શાસ્ત્રમાં કહેલા વિધિ પ્રમાણે બાળવો જોઇએ, માટે દર્ભથી કરેલી તેની આકૃતિને અગ્નિહોત્રીનો દેહ છે એમ માનીને, તેને યથાશાસ્ત્ર અગ્નિદાહનો સંસ્કાર કરવો.

મસ્તકને ઠેકાણે રાખવાં, એક સો કંઠને ઠેકાણે મૂકવાં, બે બાહુને ઠેકાણે પાંચ પાંચ, બે હાથની આંગળીઓને ઠેકાણે પાંચ પાંચ, જઘનના ભાગમાં એકસો, પેટને ઠેકાણે બસો, વૃષણને ઠેકાણે આઠ, શિશ્નને ઠેકાણે પાંચ, સાથળના ભાગમાં એકવીશ, ગોઠણ અને જંઘાને ઠેકાણે એક સો એક સો અને બે પગની આંગળિયોને ઠેકાણે છ મૂકવાં. એ પ્રમાણે પુરુષની આકૃતિ કર્યા પછી તેના ઉપર યજ્ઞનાં પાત્રો મૂકવાં. ૧૫-૧૮

शम्यां शिश्ने विनिक्षिप्य अरणिं मुष्कयोरपि ।
जूहूं च दक्षिणे हस्ते वामे तूपभृतं न्यसेत् ॥ १९ ॥
कर्णे चोलूखलं दद्यात्पृष्ठे च मुसलं न्यसेत् ।
उरसि क्षिप्य दृषदं तंडुलाज्यतिलान्मुखे ॥ २० ॥

શમ્યા ઉપસ્થ ઈન્દ્રિયને ઠેકાણે મૂકવી, બન્ને અંડને ઠેકાણે અરણીનું લાકડું મૂકવું, જમણા હાથને ઠેકાણે, જુહુ, ડાબા હાથને ઠેકાણે ઉપભૃત, અને પીઠને ઠેકાણે ઉલૂખલ તથા મુસળ મૂકવાં. છાતીને ઠેકાણે દૃષદ[1] મૂકવો, ચોખા, ઘી તથા તલ મુખમાં મૂકવા. ૧૯-૨૦

૧૯-૨૦ શમ્યા, જુહૂ, ઉપભૃત, ઇત્યાદિ અગ્નિહોત્રનાં પાત્રો છે. દૃષદ્ એટલે યજ્ઞમાં ઉપયોગી એક પથ્થર.

श्रोत्रे च प्रोक्षणीं दद्यादाज्यस्थालीं च चक्षुषोः ।
कर्णे नेत्रे मुखे घ्राणे हिरण्यशकलं न्यसेत् ॥ २१ ॥
अग्निहोत्रोपकरणमशेषं तत्र निक्षिपेत् ।
दद्यात्पुत्रोऽथवा भ्राताऽप्यन्यो वापि च बान्धवः ॥ २२ ॥
असौ स्वर्गाय लोकाय स्वाहेत्येकाहुतिं सकृत् ।

બે કાનને ઠેકાણે પ્રોક્ષણી પાત્ર મૂકવું, બે નેત્રને ઠેકાણે આજ્યસ્થાલી એટલે ઘીનું પાત્ર મૂકવું, કાન, આંખ, મુખ અને નાકને ઠેકાણે સોનાના કટકા મૂકવા અને અગ્નિહોત્રનો બીજો સર્વ ઉપકરણ તેના દેહ ઉપર સ્થાપન કરવો. તે પછી તેના પુત્રે કિંવા બંધુએ કિંવા બીજા કોઈ બાંધવે ' असौ स्वर्गाय लोकाय स्वाहा ' એ મંત્ર ભણીને અગ્નિમાં ઘીની એક આહુતિ આપવી. ૨૧-૨૨

यथा दहनसंस्कारस्तथा कार्यं विचक्षणैः ॥ २३ ॥
ईदृशं तु विधिं कुर्याद्ब्रह्मलोकगतिः स्मृता ।
दहन्ति ये द्विजास्तं तु ते यांति परमां गतिम् ॥ २४ ॥

તે પછી દહન ક્રિયા કરવામાં કુશળ એવા પુરુષોએ ખાખરાના ડીંટીયાના દેહને બીજા પ્રેતસંસ્કાર પ્રમાણે દહનસંસ્કાર કરવો. આવો વિધિ કરવાથી મરનારને બ્રહ્મલોકની ગતિ પ્રાપ્ત થાય છે; અને જે દ્વિજ તેને બાળે છે તે પણ ઉત્તમ ગતિને પામે છે. ૨૩-૨૪

अन्यथा कुर्वते कर्म त्वात्मबुद्धया प्रचोदिताः
भवन्त्यल्पायुषस्ते वै पतन्ति नरकेऽशुचौ ॥ २५ ॥

इति श्रीपाराशरसंहितायां प्रायश्चित्तकाण्डे श्वादिदष्टशुद्धिर्नाम
पञ्चमोऽध्यायः समाप्तः ॥

જે પુરુષ શાસ્ત્રવિધિને છોડી દઈને પોતાની બુદ્ધિથી અન્યથારીતે કર્મ કરે છે તેનું આયુષ્ય ઓછું થાય છે અને તે અપવિત્ર એવાં નરકમાં પડે છે. ૨૫

ઇતિ શ્રીપારાશર ધર્મશાસ્ત્રમાં કુતરાં વગેરેએ કરડેલાની શુદ્ધિ એ નામનો
અધ્યાય ૫ મો સમાપ્ત.



अध्याय ६ ठ्ठो.

साधारण प्राणीओनी हत्यानुं प्रायाश्चित्त.

अतः परं प्रवक्ष्यामि प्राणिहत्यासु निष्कृतिम् ।
पराशरेण पूर्वोक्तां मन्वर्थेपि च विस्तृताम् ॥ १ ॥

હવે પૂર્વે થઈ ગએલા કલિયુગમાં વૃદ્ધ પરાશરે કહેલું તથા મનુએ રચેલાં ધર્મશાસ્ત્રમાં પણ વિસ્તારથી કહેલું પ્રાણીઓની હત્યાનું પ્રાયશ્ચિત્ત હું કહું છું. ૧

क्रौंचसारसहंसांश्च चक्रवाकं च कुक्कुटम् ।
जालपादं च शरभं हत्वाहोरात्रतः शुचिः ॥ २ ॥

ક્રૌંચ, સારસ, હંસ, ચક્રવાક, કુકડો, જાલપાદ* અને તીડ એ પક્ષીઓને મારનારો અહોરાત્ર અપવાસ કરવાથી શુદ્ધ થાય છે.† ૨

* જાળ જેવા પગવાળું પક્ષી.　　† મન્વાદિ સ્મૃતિકારોએ આ પાપની શુદ્ધિ સારૂ ગોદાન દેવાનું કહ્યું છે, તે જે ઉપવાસ કરવાને અશક્ત હોય તેને માટે કહ્યું છે.

बलाकाटिट्टिभौ वापि शुकपारावतावपि ।
अहिनक्रविघाती च शुद्ध्यते नक्तभोजनात् ॥ ३ ॥

બગલી, ટીટોડી, પોપટ, પારેવાં, સર્પ અને ઝુડ એઓને મારનારો નક્તભોજન કરવાથી એટલે આખો દિવસ ભુખ્યો રહીને રાત્રે જમવાથી શુદ્ધ થાય છે. ૩

वृकाककपोतानां सारीतित्तिरिघातकः ।
अन्तर्जल उभे सन्ध्ये प्राणायामेन शुद्ध्यति ॥ ४ ॥

વરુ, કાગડો, કપોત, મેના અને તેતર એઓને મારનારો બે સંધ્યા કાળે એટલે પ્રાતઃકાળે તથા સાયંકાળે પાણીમાં બેસીને પ્રાણાયામ કરવાથી શુદ્ધ થાય છે. ૪

गृध्रश्येनशशादानामुलूकस्य च घातकः ।
अपक्काशी दिनं तिष्ठेत्रिकालं मारुताशनः ॥ ५ ॥

ગીધ, શકરો, શશાદ (શશલાને ખાનારું પક્ષી) અને ઘુડ એઓને મારનારાએ એક દિવસ કાચાં કંદ મૂળ ખાઇને રેહેવું અને ડોઢ દિવસ વાયુનું ભક્ષણ કરીને રેહેવું એટલે શુદ્ધ થાય છે. ૫

૫ આ પ્રાયશ્ચિત્ત કરવાને અશક્ત હોય તેણે અહોરાત્ર અપવાસ કરીને ધાન્યનું દાન કરવું એમ કસ્યપસ્મૃતિમાં કહ્યું છે.

वल्गुलीटिट्टिभानां च कोकिलाखञ्जरीटयोः ।
लाविकारक्तपक्षाणां शुद्ध्यते नक्तभोजनात् ॥ ६ ॥

વાગોલ, ટીટોડી, કોયલ, ખંજરીટ, લાવા અને જેઓની પાંખ રાતી હોય છે તેવાં પક્ષીઓને મારનારો નક્તભોજન (રાત્રીભોજન) કરવાથી શુદ્ધ થાય છે. ૬

कारण्डवचकोराणां पिङ्गलाकुररस्य च ।
भारद्वाजादिकं हत्वा शिवं संपूज्य शुद्ध्यति ॥ ७ ॥

બતક, ચકોર, પિંગલા (રાતી આંખવાળું પક્ષી), કુરર અને ભારદ્વાજાદિક પક્ષીઓને મારનારો શિવનું પૂજન કરવાથી શુદ્ધ થાય છે. ૭

भेरुंडचाषभासाँश्च पारावतकपिञ्जलौ ।
पक्षिणां चैव सर्वेषामेकरात्रमभोजनम् ॥ ८ ॥

ભેરુંડ, ચાષ, ભાસ, કબુતર, કપિંજલ ઈત્યાદિક પક્ષીઓ તથા એ શિવાયનાં બીજાં સર્વ પક્ષીઓમાંથી એકનો વધ કર્યો હોય તો એક રાત્રિ ઉપોષણ કરવું.* ૮

हत्वा मूषकमार्जारसर्पाजगरडुण्डुभान् ।
कृसरं भोजयेद्विप्राँल्लोहदण्डश्च दक्षिणा ॥ ९ ॥

ઉંદર, મીંદડું, સર્પ, અજગર અને ડુંડુભ (સર્પની એક જાત.) એઓને મારનારાએ ત્રણ બ્રાહ્મણને તલ અને ચોખાની ખિચડી ખવરાવવી અને લોઢાનો દંડ દક્ષિણામાં આપવો એટલે તે શુદ્ધ થાય છે. ૯

शिशुमारं तथा गोधां हत्वा कूर्मं च शल्यकम् ।
वृन्ताकफलभक्षी चाप्यहोरात्रेण शुद्ध्यति ॥ १० ॥

શિશુમાર (સુસવાટ), ઘો, કાચબો અને શાહુડી એઓને મારનારો રીંગડું ખાઈને અહોરાત્ર રહેવાથી શુદ્ધ થાય છે. ૧૦

वृकजम्बूकऋक्षाणां तरक्षुश्वानघातकः ।
तिलप्रस्थं द्विजे दद्याद्वायुभक्षो दिनत्रयम् ॥ ११ ॥

નહાર, શિયાળ, રીંછ, તરસ અને કુતરાંને મારનારાએ બ્રાહ્મણને એક પ્રસ્થ તલ આપવા; અને ત્રણ દિવસ વાયુનું ભક્ષણ કરીને રેહેવું એટલે તે શુદ્ધ થાય છે. ૧૧

૧૧ પ્રસ્થ એટલે એક શેર.

गजस्य च तुरङ्गस्य महिषोष्ट्रस्य घातने ।
प्रायश्चित्तमहोरात्रं त्रिसन्ध्यमवगाहनम् ॥ १२ ॥

હાથી, ઘોડો, પાડો, અથવા ઊંટ એઓને મારનારાએ દિવસમાં ત્રણવાર સ્નાન કરવું અને અહોરાત્ર ઉપવાસ કરવો. ૧૨

कुरङ्गं वानरं सिंहं चित्रं व्याघ्रं च घातयन् ।
शुध्यते स त्रिरात्रेण विप्राणां तर्पणेन च ॥ १३ ॥

---

* પક્ષીઓની અસંખ્ય જાતિ છે. માટે જેઓની હત્યાવિષે આ સ્મૃતિકારે પ્રાયશ્ચિત્ત કહ્યું ન હોય ત્યાં એક દિવસ ઉપવાસ કરવો અને બીજાં કૃમિકીટકાદિકનો જેણે વધ કર્યો હોય તેણે ત્રણ દિવસ જવની રાબડી પીવી એમ બીજી સ્મૃતિઓમાં લખ્યું છે.

કુરંગ (એક જાતનું હરણ), વાનર, સિંહ, ચિત્તો અને વાઘ એઓને મારનારાએ ત્રણ દિવસ ઉપવાસ કરવા અને ત્રણ બ્રાહ્મણને જમાડવા. ૧૩

मृगरोहिवराहाणामवेर्बस्तस्य घातकः ।
अफालकृष्टमश्नीयादहोरात्रमुपोष्य सः ॥ १४ ॥

મૃગ, રોઝ, ડુકર, ઘેટો અને બકરો એઓને મારનારાએ અહોરાત્ર (એક દિવસ ને એક રાત્રિ) અપવાસ કરવો તથા ખેડ્યા વગર પાકેલું અન્ન બીજે દિવસે ખાવું. ૧૪

एवं चतुष्पदानां च सर्वेषां वनचारिणाम् ।
अहोरात्रोषितस्तिष्ठेज्जपेद्वै जातवेदसम् ॥ १५ ॥

આવી રીતે જ સર્વ ચોપગાં વનચારીઓને મારનારાએ પણ અહોરાત્ર ઉપવાસ કરીને 'जातवेदसे सुनुवाम सोमम्' એ મંત્રનો ઉભા રહીને જપ કરવો. ૧૫

शिल्पिनं कारुकं शूद्रं स्त्रियं वा यस्तु घातयेत् ।
प्राजापत्यद्वयं कृत्वा वृषैकादश दक्षिणा ॥ १६ ॥

શિલ્પી (ચિતારા વગેરે), કારુક (રસોઇયા વગેરે), સ્વધર્મ નહિ પાળનારો શૂદ્ર તથા ગુણદોષ રહિત સ્ત્રી, એઓને મારનારાએ બે પ્રાજાપત્ય કરીને એક બળદ તથા દશ ગાયો દક્ષિણામાં આપવી. ૧૬

वैश्यं वा क्षत्रियं वाऽपि निर्दोषं यस्तु घातयेत् ।
सोपि कृच्छ्रद्वयं कुर्याद्गोविंशद्दक्षिणां ददत् ॥ १७ ॥

નિર્દોષ એવા વૈશ્યને અથવા તો ક્ષત્રિયને મારનારાએ બે કૃચ્છ્ર પ્રાયશ્ચિત્ત કરીને વીશ ગાયો દક્ષિણામાં આપવી. ૧૭

वैश्यं शूद्रं क्रियासक्तं विकर्मस्थं द्विजोत्तमम् ।
हत्वा चान्द्रायणं तस्य त्रिंशद्गाश्चैव दक्षिणाम् ॥ १८ ॥

નિત્ય નૈમિત્તિક કર્મ કરનારો વૈશ્ય અથવા તો શૂદ્ર અને મહાપાતક કિંવા ઉપપાતક કરનારો દ્વિજ, એઓને મારનારાએ ચાન્દ્રાયણ પ્રાયશ્ચિત્ત કરીને ત્રીશ ગાયો દક્ષિણામાં આપવી. ૧૮

૧૮ નિર્દોષ દ્વિજને માર્યાનું પ્રાયશ્ચિત્ત બારમા અધ્યાયમાં કહેશે. અહીં દ્વિજ શબ્દમાં બ્રાહ્મણ અને ક્ષત્રિય એ બેનો સમાવેશ થાય છે એમ સમજવું.

चण्डालं हतवान्कश्चिद्ब्राह्मणो यदि कश्चन ।
प्राजापत्यं चरेत्कृच्छ्रं गोद्वयं दक्षिणां ददत् ॥ १९ ॥

કોઈ બ્રાહ્મણ, ચણ્ડાલનો વધ કરે તો તેણે પ્રાજાપત્ય નામનું કૃચ્છ્ર વ્રત કરવું અને બે ગાયો દક્ષિણામાં આપવી. ૧૯

क्षत्रियेणापि वैश्येन शूद्रेणैवेतरेण वा ।
चण्डालस्य वधे प्राप्ते कृच्छ्रार्द्धेन विशुद्ध्यति ॥ २० ॥

ક્ષત્રિયે, વૈશ્યે, શૂદ્રે અથવા તો બીજા કોઇએ ચણ્ડાલનો વધ કર્યો હોય તો તે અર્ધકૃચ્છ્ર પ્રાયશ્ચિત્ત કરવાથી શુદ્ધ થાય છે. ૨૦

૨૦ આ પ્રાયશ્ચિત્ત કર્યાં પહેલાં પાદોનકૃચ્છ્ર પ્રાયશ્ચિત્ત કરવું અને શ્લોકમાં કહેલો અર્ધકૃચ્છ્ર પ્રાયશ્ચિત્ત કર્યાં પછી પાદકૃચ્છ્ર પ્રાયશ્ચિત્ત કરવું, એમ લૌગાક્ષિ સ્મૃતિમાં કહ્યું છે.

चौरः श्वपाकचांडालौ विप्रेणापि हतौ यदि ।
अहोरात्रोषितः स्नात्वा पञ्चगव्येन शुद्ध्यति ॥ २१ ॥

શ્વપાક જાતિના ચોરને અથવા ચાણ્ડાલ જાતિના ચોરને જો બ્રાહ્મણે પણ માર્યો હોય તો તેણે એક દિવસ અને એક રાત્રિ ઉપવાસ કરવો અને સ્નાન કરીને પંચગવ્યનું પ્રાશન કરવું. ૨૧

श्वपाकं वापि चण्डालं विप्रः संभाषते यदि ।
द्विजसम्भाषणं कुर्यात्सावित्रीं तु सकृज्जपेत् ॥ २२ ॥

શ્વપાકની કિંવા ચણ્ડાલની સાથે જો બ્રાહ્મણ ભાષણ કરે તો તેણે તેના પ્રાયશ્ચિત્તને માટે સારા વેદવેત્તા બ્રાહ્મણની સાથે ભાષણ કરવું, અથવા તો ગાયત્રી મંત્રનો એકવાર જપ કરવો. ૨૨

चण्डालैः सह सुप्ते तु त्रिरात्रमुपवासयेत् ।
चण्डालैकपथं गत्वा गायत्रीस्मरणाच्छुचिः ॥ २३ ॥

જો કોઇ ચણ્ડાલોની સાથે સુવે તો તે ત્રણ દિવસ ઉપવાસ કરવાથી શુદ્ધ થાય છે અને જે માર્ગે ચણ્ડાલજ જતા હોય, તેવે માર્ગે જાય તો મનમાં ગાયત્રી મંત્રનું સ્મરણ કરવાથી શુદ્ધ થાય છે. ૨૩

चण्डालदर्शने सद्य आदित्यमवलोकयेत् ।
चण्डालस्पर्शने चैव सचैलं स्नानमाचरेत् ॥ २४ ॥

ચણ્ડાલ નજરે પડે તો તત્કાળ સૂર્યનાં દર્શન કરવાં અને તેનો સ્પર્શ થઈ જાય તો વસ્ત્રસહિત સ્નાન કરવું. ૨૪

चण्डालखातवापीषु पीत्वा सलिलमग्रजः ।
अज्ञानादेकभक्तेन त्वहोरात्रेण शुद्ध्यति ॥ २५ ॥

ચણ્ડાલે ખોદાવેલાં કુવા, તળાવ વિગેરેમાંથી અજાણે પાણી પીનારો બ્રાહ્મણ એક દિવસ એકવાર જમવાથી શુદ્ધ થાય છે, પરંતુ જાણીજોઈને તેવું પાણી પીનારો એક દિવસ અને એક રાત્રિ ઉપવાસ કરવાથી શુદ્ધ થાય છે. ૨૫

चण्डालभाण्डसंस्पृष्टं पीत्वा कूपगतं जलम् ।
गोमूत्रयावकाहारस्त्रिरात्राच्छुद्धिमाप्नुयात् ॥ २६ ॥

જે કુવાનાં પાણીનો ચણ્ડાલનાં વાસણે સ્પર્શ કર્યો હોય એવા કુવાનું પાણી પીવામાં આવે તો ફક્ત ગોમૂત્રમાં જવનો લોટ મેળવીને ત્રણ દિવસ ખાવો, એટલે શુદ્ધિ થાય છે. ૨૬

चण्डालघटसंस्थं तु यत्तोयं पिबति द्विजः ।
तत्क्षणात्क्षिपते यस्तु प्राजापत्यं समाचरेत् ॥ २७ ॥

જે દ્વિજ ચણ્ડાલના ઘડાનું પાણી અજાણતાં પીએ ને તે જ ક્ષણે તેને ઓકી નાંખે, તો તે પ્રાજાપત્ય વ્રત કરવાથી શુદ્ધ થાય છે. ૨૭

यदि न क्षिपते तोयं शरीरे यस्य जीर्य्यति ।
प्राजापत्यं न दातव्यं कृच्छ्रं सान्तपनं चरेत ॥ २८ ॥

પરંતુ તે (દ્વિજ) જો અપવિત્ર જળને ઓકી નાખે નહિ અને તે તેના શરીરમાં પચી જાય તો તેણે પ્રાજાપત્ય વ્રત કરવું નહિ, પરંતુ સાન્તપન કૃચ્છ્ર કરવું. ૨૮

चरेत्सान्तपनं विप्रः प्राजापत्यमनन्तरः ।
तदर्धं तु चरेद्वैश्यः पादं शूद्रस्तदाचरेत् ॥ २९ ॥

ઉપરના શ્લોકમાં કહેલા પાપમાંથી છૂટવા માટે બ્રાહ્મણે સાન્તપન, ક્ષત્રિયે પ્રાજાપત્ય, વૈશ્યે પ્રાજાપત્યનું અર્ધ અને શૂદ્રે પ્રાજાપત્યનો ચતુર્થાંશ, એ રીતે પ્રાયશ્ચિત્ત કરવું. ૨૯

भाण्डस्थमन्त्यजानां तु जलं दधि पयः पिबेत् ।
ब्राह्मणः क्षत्रियो वैश्यः शूद्रश्चैव प्रमादतः ॥ ३० ॥

ब्रह्मकूर्चोपवासेन द्विजातीनां तु निष्कृतिः ।
शूद्रस्य चोपवासेन तथा दानेन शक्तितः ॥ ३१ ॥

અંત્યજના વાસણનું પાણી, દૂધ અથવા તો દહીં અજાણતાં બ્રાહ્મણ, ક્ષત્રિય, વૈશ્ય કે શૂદ્ર પીએ તો તેણે બ્રહ્મકૂર્ચ કરીને અપવાસ કરવો, એટલે દ્વિજોની શુદ્ધિ થાય છે અને શૂદ્રની તો ઉપવાસ કરવાથી તથા યથાશક્તિ દાન કરવાથી શુદ્ધિ થાય છે. ૩૦–૩૧

૩૦–૩૧ ધર્મશાસ્ત્રકાર અંત્યજની ગણતરી આ પ્રમાણે કરે છે;–रजकश्चर्मकारश्च नटो बुरुड एव च । कैवर्तमेदाभिल्लाश्च सप्तैते चांत्यजास्स्मृताः ॥ ધોબી, મોચી, નટ, ઢેડ, કૈવર્ત (મચ્છિમાર, ઢિમ્મર વગેરે), મેદ અને ભિલ્લને શાસ્ત્રકાર અંત્યજ કહે છે.

બ્રહ્મકૂર્ચનું લક્ષણ શાસ્ત્રમાં આ પ્રમાણે છે;–

अहोरात्रोषितो भूत्वा पौर्णमास्यां विशेषतः । पञ्चगव्यं पिबेत्प्रातर्ब्रह्मकूर्चमिति स्मृतम् ॥

વિશેષે કરીને પૂર્ણિમાએ દિવસે તથા રાત્રિએ ઉપવાસ કરે અને પ્રભાતમાં પંચગવ્યનું પાન કરે, તેને ધર્મશાસ્ત્રમાં ब्रह्मकूर्च કહે છે.

भुङ्क्तेऽज्ञानाद्द्विजश्रेष्ठश्चण्डालान्नं कथञ्चन ।
गोमूत्रयावकाहारो दशरात्रेण शुद्ध्यति ॥ ३२ ॥

બ્રાહ્મણ જો જાણતાં કોઈ પણ રીતે ચણ્ડાલનું અન્ન ખાય તો તે ગોમૂત્રમાં બાફેલો જવનો લોટ દશ દિવસ સૂધી ખાવાથી શુદ્ધ થાય છે. ૩૨

તે ખાવાની રીત આ પ્રમાણે છેઃ

एकैकं ग्रासमश्नीयाद्गोमूत्रयावकस्य च ।
दशाहं नियमस्थस्य व्रतं तत्तु विनिर्दिशेत् ॥ ३३ ॥

ગોમૂત્રમાં બાફેલા યવના લોટનો એક એક કોળિયો દશ દિવસ સૂધી ખાવો અને નિયમમાં રહેવું, એટલે ઉપરના શ્લોકમાં કહેલા પાપનું પ્રાયશ્ચિત્ત થાય છે. ૩૩

अविज्ञातस्तु चण्डालो यत्र वेश्मनि तिष्ठति ।
विज्ञाते तूपसन्नस्य द्विजाः कुर्युरनुग्रहम् ॥ ३४ ॥

કોઈ દ્વિજવરના ઘરમાં ચણ્ડાલ કોઈ જાણી શકે નહી તેવા વેશમાં આવીને રહ્યો હોય, અને પાછળથી તે ચણ્ડાલ છે એવું જણાય કે તુરત તેને બહાર કાઢી મૂકવો; અને પછી તેનું પ્રાયશ્ચિત્ત પૂછવા માટે આવેલા પુરુષને બ્રાહ્મણોએ પ્રાયશ્ચિત્ત આપીને તેનો અનુગ્રહ કરવો. ૩૪

मुनिवक्त्रोद्गतान्धर्मान्गायन्तो वेदपारगाः ।
पतन्तमुद्धरेयुस्तं धर्मज्ञाः पापसङ्करात् ॥ ३५ ॥

પરાશરાદિક ઋષિના મુખમાંથી નિકળેલાં ધર્મશાસ્ત્રોનો અભ્યાસ કરનારાઓ તથા વેદપારંગત ધર્મ જાણનારા બ્રાહ્મણોએ પાપીને પ્રાયશ્ચિત્ત કરાવીને પતન પામનારા પાપીનો પાપના સમુદાયમાંથી ઉદ્ધાર કરવો. ૩૫

૩૫ મૂળમાં पापसंकर શબ્દ છે તેનો અભિપ્રાય એવો છે કે, ચંડાલના સહવાસથી તો એક જ પાપ લાગે છે પરંતુ તેના સહવાસમાં નિત્ય નૈમિત્તિક જે કર્મો કર્યાં હોય તે સર્વ નિષ્ફળ નિવડે છે અને તેનું પણ પાતક લાગે છે, તેમાંથી પણ તેનો ઉદ્ધાર કરવા માટે તેને પ્રાયશ્ચિત્ત આપવું.

दध्ना च सर्पिषा चैव क्षीरगोमूत्रयावकम् ।
भुञ्जीत सह भृत्यैश्च त्रिसन्ध्यमवगाहनम् ॥ ३६ ॥

અજાણતાં ચંડાલની સાથે રહેનારા ઘરધણીએ દુધ, દહીં અને ઘીની સાથે યવના લોટને ગોમૂત્રમાં મેળવીને પોતાનાં માતા, પિતા તથા બાળકો અને ચાકરો એ સર્વની સાથે તેનું ભક્ષણ કરવું અને દિવસમાં ત્રણવાર સ્નાન કરવું. ૩૬

૩૬ ઘરનો મુખ્ય ધણી હોય તેણે પૂર્વાઙ્ગ અને ઉત્તરાઙ્ગ પ્રાયશ્ચિત્ત કરવું અને બીજાઓએ તો આ શ્લોકમાં કહેલી રીતે તૈયાર કરેલો યવનો લોટ તથા ગોમૂત્ર વગેરે ખાવાં.

त्र्यहं भुंजीत दध्ना च त्र्यहं भुंजीत सर्पिषा ।
त्र्यहं क्षीरेण भुंजीत एकैकेन दिनत्रयम् ॥ ३७ ॥

પ્રાયશ્ચિત્ત કરનારા પુરુષે ત્રણ દિવસ દહિંની સાથે, ત્રણ દિવસ ઘીની સાથે અને ત્રણ દિવસ દૂધની સાથે ગોમૂત્ર સહિત યવનો લોટ ખાવો અને તે પછીના ત્રણ દિવસમાં એક દિવસ દુધ સાથે, એક દિવસ દહીં સાથે ને એક દિવસ ઘીની સાથે યવનો લોટ ખાવો, એમ બાર દિવસે પ્રાયશ્ચિત્ત પૂર્ણ કરવું. ૩૭

भावदुष्टं न भुञ्जीत नोच्छिष्टं कृमिदूषितम् ।

જે પદાર્થને જોઇને મનમાં તેના વિશે દોષની ભાવના ઉપજે તેને ભાવ દુષ્ટ પદાર્થ જાણવો (જેમ પંડોરાં જોઇને મનમાં સર્પની ભાવના થાય છે) અને તેનું ભક્ષણ કરવું નહિ; જે ઉચ્છિષ્ટ હોય તથા જેમાં કીડા પડ્યા હોય, તે પદાર્થનું પણ ભક્ષણ કરવું નહિ.

दधिक्षीरस्य त्रिपलं पलमेकं घृतस्य तु ॥ ३८ ॥

દહીં અને દૂધ એ બે ત્રણ ત્રણ પળ અને ઘી એક પળ લેવું. ૩૮

૩૮. ૩૬ તથા ૩૭મા શ્લોકમાં ગોમૂત્રની સાથે જવનો લોટ દહીં, દૂધ અને ઘી નાંખીને ખાવાવિષે કહ્યું છે, પરન્તુ તેમાં દહીં, દુધ ને ઘી કેટલાં લેવાં તે આ શ્લોકમાં કહ્યું છે. જવનો લોટ એક ગ્રાસ એટલે કુકડાના ઈંડા જેટલો લેવો.

भस्मना तु भवेच्छुद्धिरुभयोस्ताम्रकांस्ययोः ।
जलशौचेन वस्त्राणां परित्यागेन मृण्मयम् ॥ ३९ ॥

કાંસાની અને ત્રાંબાની રાખથી શુદ્ધિ થાય છે, વસ્ત્રોની પાણીથી શુદ્ધિ થાય છે અને માટીનાં વાસણ અભડાઈ ગયાં હોય તો તેમને તો કહાડી જ નાંખવાં જોઇએ. ૩૯

कुसुम्भगुडकार्पासलवणं तैलसर्पिषी ।
द्वारे कृत्वा तु धान्यानि दद्याद्वेश्मनि पावकम् ॥ ४० ॥

કસુંબાનાં બી, ગોળ, કપાસીયા, મીઠું, તેલ, ઘી અને અનાજ આ સર્વને ઘરના બારણામાં મૂકીને તે ઘરને આગ લગાડવી. ૪૦

૪૦ જેના ઘરમાં ચણ્ડાલ છૂપા વેશથી આવીને ઘણા દિવસ રહ્યો હોય, તેને માટે ૩૯ મા તથા ૪૦ મા શ્લોકમાં શુદ્ધિ કહી છે.

एवं शुद्धस्ततः पश्चात्कुर्याद्ब्राह्मणतर्पणम् ।
विंशतिं गा वृषं चैकं दद्याद्विप्रेषु दक्षिणाम् ॥ ४१ ॥

ઉપર કહેલી રીતે ઘરની શુદ્ધિ કરીને શુદ્ધ થયા પછી એકવીસ બ્રાહ્મણને જમાડીને તેઓને વીસ ગાયો તથા એક બળદ દક્ષિણા આપવી. ૪૧

पुनर्लेपनखातेन होमजप्येन शुद्ध्यति ।
आधारेण च विप्राणां भूमिदोषो न विद्यते ॥ ४२॥

ચંડાળના રહેવાથી ભૂમિ અભડાઈ ગઈ હોય તો તે દોષ ફરીને લીંપ્યાથી, ખોદ્યાથી, હોમ કર્યાથી, વેદમંત્રનો જપ કર્યાથી અને બ્રાહ્મણોના બેસવાથી જતો રહે છે. ૪૨

चण्डालैः सह सम्पर्के मासं मासार्द्धमेव च ।
गोमूत्रयावकाहारो मासार्द्धेन विशुद्ध्यति ॥ ४३ ॥

એક મહિનો કે પંદર દિવસ સુધી જેને ચણ્ડાલોની સાથે સંસર્ગ થયો હોય તેણે અનુક્રમે એક મહિનો કે પંદર દિવસ સુધી ગોમૂત્રમાં બાફેલો જવનો લોટ ખાઇને રહેવું એટલે તે શુદ્ધ થાય છે. ૪૩

૪૩ સ્વપાક અને પુલ્કસ એ ભેદ પણ ચણ્ડાલના જ છે. એઓનો સંસર્ગ થાય તોપણ એ જ પ્રાયશ્ચિત્ત કરવું. પંદર દિવસ સુધી જેને સંસર્ગ થયો હોય તેણે પંદર દિવસ અને એક મહિના સુધી જેને સંસર્ગ થયો હોય તેણે એક મહિના સુધી જવનો લોટ ગોમૂત્રની સાથે બાફીને ખાવો.

रजकी चर्मकारी च लुब्धकी वेणुजीविनी ।
चातुर्वर्ण्यस्य तु गृहेष्वविज्ञाता तु तिष्ठति ॥ ४४ ॥
ज्ञात्वा तु निष्कृतिं कुर्यात्पूर्वोक्तस्यार्द्धमेव हि ।
गृहदाहं न कुर्वीत शेषं सर्वं च कारयेत् ॥ ४५ ॥

ધોબણ, મોચણ, પારધણ, અને વાંસના ટોપલા વિગેરે કરીને આજીવિકા કરનારી ઢેઢડી એઓ જો બ્રાહ્મણ, ક્ષત્રિય, વૈશ્ય અથવા તો શૂદ્રના ઘરમાં વેશપાલટો કરીને વાસ કરે અને પાછળથી તેને જાણવામાં આવે તો પૂર્વે (૩૬ મા તથા ૩૭ મા શ્લોકમાં) કહેલા પ્રાયશ્ચિત્તથી અર્ધું પ્રાયશ્ચિત્ત કરવું. પરંતુ ઘરને અગ્નિથી બાળવું નહિ, બાકીનું સર્વ પ્રાયશ્ચિત તેની પાસે બ્રાહ્મણોએ કરાવવું. ૪૪–૪૫

गृहस्याभ्यंतरं गच्छेच्चण्डालो यदि कस्यचित् ।
तमगाराद्विनिःसार्य्य मृद्भाण्डं तु विसर्जयेत् ॥ ४६ ॥

જો કોઈના ઘરની અંદર ચણ્ડાલ એકવાર પેસે તો તેને બહાર કાહાડી મૂકવો અને માટીનાં વાસણને બહાર નાંખી દેવાં તથા ઘરને ધોઈને શુદ્ધ કરવું. ૪૬

रसपूर्णं तु यद्भाण्डं न त्यजेत्तु कदाचन ।
गोमयेन तु संमिश्रैर्जलैः प्रोक्षेद्गृहं तथा ॥ ४७ ॥

પરંતુ ઘી, ગોળ, તેલ વગેરે રસથી સંપૂર્ણ–મોઢા સૂધી ભરેલાં માટીનાં વાસણને કદી પણ નાંખી દેવાં નહિ; પરંતુ જળથી પ્રોક્ષણ કરીને શુદ્ધ કરવાં અને છાણમાં પાણી નાંખીને તેનાથી સર્વ ઘરને લીંપવું. ૪૭

ब्राह्मणस्य व्रणद्वारे पूयशोणितसंभवे ।
कृमिरुत्पद्यते यस्य प्रायश्चित्तं कथं भवेत् ॥ ४८ ॥

જે બ્રાહ્મણના શરીરમાં ઘારું પડે ને તેમાં લોહી તથા પરુ ભરાય તથા તેમાં કીડા પડે તો તેણે કેવું પ્રાયશ્ચિત્ત કરવું? ૪૮

गवां मूत्रपुरीषेण दध्ना क्षीरेण सर्पिषा ।
त्र्यहं स्नात्वा च पीत्वा च कृमिदुष्टः शुचिर्भवेत् ॥ ४९ ॥

જેના શરીરમાં ધારું પડ્યું હોય તે મનુષ્યે ગોમૂત્ર, ગાયનું છાણ, અને ગાયનાં દહીં, દુધ તથા ઘીવડે ત્રણ દિવસ સ્નાન કરવું અને તેજ પંચગવ્યનું ત્રણ દિવસ પાન કરવું એટલે તે શુદ્ધ થાય છે. ૪૯

૪૯ જો નાભિની નીચે ધારું પડ્યું હોય તો આ પ્રાયશ્ચિત્ત કરવું, નાભિની ઉપર પડ્યું હોય તો મનુએ કહેલું ૭ રાત્રનું પ્રાયશ્ચિત્ત કરવું અને માથે ધારું પડ્યું હોય તો પ્રાજાપત્ય વ્રત કરવું.

क्षत्रियोपि सुवर्णस्य पंच माषान्प्रदाय तु ।
गोदक्षिणां तु वैश्यस्याप्युपवासं विनिर्दिशेत् ।
शूद्राणां नोपवासः स्याच्छूद्रो दानेन शुद्ध्यति ॥ ५० ॥

તેવા ક્ષત્રિયે પણ એક ઉપવાસ કરીને પાંચ માસા સોનાનું દાન આપવું, વૈશ્યે એક ઉપવાસ કરીને એક ગાય દક્ષિણામાં આપવી અને શૂદ્રે ઉપવાસ કર્યા વગર એક ગાય આપવી તેથી તે શુદ્ધ થાય છે. ૫૦

अच्छिद्रमिति यद्वाक्यं वदन्ति क्षितिदेवताः ।
प्रणम्य शिरसा ग्राह्यमग्निष्टोमफलं हि तत् ॥ ५१ ॥

પ્રાયશ્ચિત્ત કર્યા પછી તારું પ્રાયશ્ચિત્ત પરિપૂર્ણ થયું છે, એવું જે વાક્ય બ્રાહ્મણો બોલે છે, તેમનાં તે વાક્યને નમસ્કાર કરીને શિરસા માન્ય કરવું. કારણ કે તેમ કરવાથી અગ્નિષ્ટોમ યજ્ઞનું ફળ મળે છે. ૫૧

जपच्छिद्रं तपच्छिद्रं यच्छिद्रं यज्ञकर्मणि ।
सर्वं भवति निश्छिद्रं ब्राह्मणैरुपपादितम् ॥ ५२ ॥

જપમાં, તપમાં અને યજ્ઞકર્મમાં જે અપૂર્ણતા રહે છે, તે સર્વ બ્રાહ્મણોનાં વચનથી સંપૂર્ણ થાય છે. ૫૨

व्याधिव्यसनिनि श्रान्ते दुर्भिक्षे डामरे तथा ।
उपवासो व्रतं होमो द्विजसंपादितानि वा ॥ ५३ ॥

જો કોઇ વ્યાધિગ્રસ્ત હોય, દુઃખી હોય, પંથ વગેરે કરવાથી કે માતા પિતાની સેવા વગેરે કરવાથી થાકી ગયો હોય, કિંવા દુકાળ વિગેરેથી કે શત્રુ રાજાના ઉપદ્રવથી પીડાયલો હોય, તેના તરફથી બ્રાહ્મણ ઉપવાસ, વ્રત અથવા તો હોમ કરે, તો તેનું ફળ તે કરાવનારાને મળે છે. ૫૩

अथवा ब्राह्मणास्तुष्टाः सर्वं कुर्वन्त्यनुग्रहम् ।
सर्वान् कामानवाप्नोति द्विजसंपादितैरिह ॥ ५४ ॥

અથવા તો બ્રાહ્મણો સંતુષ્ટ થઇને કહે કે, તું પાપમાંથી મુક્ત થયો

છે. તો પણ પાતકી પાપમાંથી મુક્ત થાય છે તથા બ્રાહ્મણોના આશી-
ર્વાદોથી મનુષ્ય આ લોકમાં સર્વ કામનાઓને પામે છે. ૫૪

दुर्बलेऽनुग्रहः कार्यस्तथा वै बालवृद्धयोः ।
ततोऽन्यथा भवेद्दोषस्तस्मान्नानुग्रहः स्मृतः ॥ ५५ ॥

દુર્બળ ઉપર, બાળક ઉપર તથા વૃદ્ધ ઉપર અનુગ્રહ કરવાનું શાસ્ત્રમાં કહ્યું છે. પરંતુ તે વિના બીજાઓના ઉપર અનુગ્રહ કરવાથી દોષ લાગે છે. માટે તેવાઓના ઉપર અનુગ્રહ કરવો નહિ, એમ શાસ્ત્રમાં કહ્યું છે. ૫૫

૫૫ જેની પાસે વિદ્યા, ધન અને કુટુંબનાં મનુષ્યો ન હોય તેને શાસ્ત્રમાં દુર્બળ કહ્યો છે, સોળ વર્ષની અંદરના પુરુષને બાળક કહ્યો છે અને સિત્તેર વર્ષથી વધારે વયનાને વૃદ્ધ કહ્યો છે.

स्नेहाद्वा यदि वा लोभाद्भयादज्ञानतोपि वा ।
कुर्वन्त्यनुग्रहं ये तु तत्पापं तेषु गच्छति ॥ ५६ ॥

સ્નેહથી, લોભથી, ભયથી અથવા તો અજ્ઞાનથી જેઓ પાપીના ઉપર અનુગ્રહ કરે છે, એટલે પાપીને ઓછું પ્રાયશ્ચિત્ત આપે છે, તો તે પાપીનું પાપ અનુગ્રહ કરનારાઓને લાગે છે. ૫૬

જે શરીરે બળવાન્ હોય અને પ્રાયશ્ચિત્તના નિયમ પાળવાને સમર્થ હોય તેના ઉપર અનુગ્રહ કરવાથી જેમ દોષ લાગે છે તેમ અનુગ્રહ કરવા યોગ્ય દુર્બળ શરીરવાળા પુરુષ જે તેની શક્તિ કરતાં વિશેષ પ્રાયશ્ચિત્ત આપે છે, તેને પણ પાપ લાગે છે તે વાત કહે છે;—

शरीरस्यात्यये प्राप्ते वदंति नियमं तु ये ।
महत्कार्योपरोधेन न स्वस्थस्य कदाचन ॥ ५७ ॥

એક મનુષ્ય રોગાદિકથી મરવા પડેલો હોય તેને અંતકાલ સમયે પરમાત્માનું સ્મરણ કરવાનો સમય હોય તે સમયે જેઓ પ્રાયશ્ચિત્ત કરવાના નિયમો બતાવીને દેવતાના સ્મરણમાં વિઘ્ન કરે છે, તેને માંદા મનુષ્યનું પાપ લાગે છે. પરંતુ આરોગ્ય પુરુષને પ્રાયશ્ચિત્તના નિયમો કહેનારાને કોઇ પણ દિવસ તેનું પાપ લાગતું નથી. ૫૭

स्वस्थस्य मूढाः कुर्वंति वदन्त्यनियमं तु ये ।
ते तस्य विघ्नकर्तारः पतन्ति नरकेऽशुचौ ॥ ५८ ॥

જે પુરુષ આરોગ્ય હોય તેને જે મૂઢ બ્રાહ્મણો અનુગ્રહબુદ્ધિથી કહે છે કે, તારે નિયમ પાળવાની જરૂર નથી, તારાવતી અમે નિયમ પાળશું

આમ કહીને તેના પ્રતિનિધિ તરિકે પંડે પ્રાયશ્ચિત્ત કરે છે તેઓ તેના પાપનો નાશ કરવારૂપી પ્રાયશ્ચિત્તમાં વિઘ્ન કરે છે અને તેઓ અપવિત્ર એવા નરકમાં પડે છે. ૫૮

स्वयमेव व्रतं कृत्वा ब्राह्मणं योऽवमन्यते ।
वृथा तस्योपवासस्स्यान्न स पुण्येन युज्यते ॥ ५९ ॥

જે પાતકી, બ્રાહ્મણનું અપમાન કરીને જાતે જ પ્રાયશ્ચિત્ત શોધી લઈને કરે છે, તેનું ઉપવાસરૂપી પ્રાયશ્ચિત્ત વૃથા થાય છે અને તેને વ્રતના પુણ્યનું ફળ મળતું નથી. ૫૯

स एव नियमो ग्राह्यो यद्येकोपि वदेद्द्विजः ।
कुर्याद्वाक्यं द्विजानां तु अन्यथा भ्रूणहा भवेत् ॥ ६० ॥

એક બ્રાહ્મણ પણ જે પ્રાયશ્ચિત્ત કહે તે પાળવું અને બ્રાહ્મણોના કહ્યા પ્રમાણે કરવું. બ્રાહ્મણોનાં વચનોનું અપમાન કરવાથી ગર્ભહત્યાનું પાપ લાગે છે. ૬૦

ब्राह्मणा जंगमं तीर्थं तीर्थभूता हि साधवः ।
तेषां वाक्योदकेनैव शुद्ध्यन्ति मलिना जनाः ॥ ६१ ॥

બ્રાહ્મણો જંગમ તીર્થ છે. કારણ કે સત્પુરુષો તીર્થરૂપ ગણાય છે અને તેઓના વાક્યરૂપી જળથી જ પાપી લોકો શુદ્ધ થાય છે. ૬૧

૬૧ આ શ્લોકમાં જે બ્રાહ્મણ પદ છે, તે શાસ્ત્ર ભણેલા બ્રાહ્મણનું વાચક છે.

ब्राह्मणा यानि भाषंते मन्यंते तानि देवताः ।
सर्वदेवमया विप्रा न तद्वचनमन्यथा ॥ ६२ ॥

વેદવેત્તા બ્રાહ્મણો જે ભાષણ કરે છે તેને દેવતાઓ માન્ય કરે છે. કારણ કે વેદવેત્તા બ્રાહ્મણોમાં સર્વ દેવતાઓનો વાસો હોય છે અને તેથી તેનું વચન મિથ્યા થતું નથી. ૬૨

૬૨ શ્રુતિમાં કહ્યું છે કે "यावतीर्वैदेवतास्ताः सर्वा वेदविदि ब्राह्मणे वसन्तीति। જેટલા દેવતાઓ છે તે સર્વે વેદવેત્તા બ્રાહ્મણને વિશે વાસ કરે છે. આ શ્રુતિને અનુસરીને પરાશરે ઉપરનો વિચાર દર્શાવ્યો છે.

उपवासो व्रतं चैव स्नानं तीर्थं जपस्तपः ।
विप्रैः सम्पादितं यस्य संपूर्णं तस्य तत्फलम् ॥ ६३ ॥

બ્રાહ્મણ જેના તરફથી ઉપવાસ, વ્રત, તીર્થમાં સ્નાન, તીર્થયાત્રા, જપ અને તપ કરે છે, તેનાં તે ઉપવાસાદિકનાં સંપૂર્ણ ફળ કરાવનારાને મળે છે. ૬૩

अन्नाद्ये कीटसंयुक्ते मक्षिकाकेशदूषिते ।
तदंतरा स्पृशेच्चापस्तदन्नं भस्मना स्पृशेत् ॥ ६४ ॥

રાંધેલાં અન્નમાં જીવડા, માખી અથવા તો કેશ પડે અને તેનાથી અન્ન અભડાઇ જાય ત્યારે જીવડા વગેરેને કાઢી નાંખવા અને તે અન્નમાં પાણી રેડવું તથા ભસ્મથી તે અન્નનો સ્પર્શ કરવો એટલે તે શુદ્ધ થાય છે. ૬૪

૬૪ આ શ્લોકમાં દર્શાવેલું અન્ન જો થોડું હોય તો નાખી દેવું અને ઘણું હોય તો જળથી તથા ભસ્મના સ્પર્શથી તેની શુદ્ધિ કરવી.

भुञ्जानश्चैव यो विप्रः पादं हस्तेन संस्पृशेत् ।
स्वमुच्छिष्टमसौ भुङ्क्ते पाणिनाऽमुक्तभाजने ॥ ६५ ॥

જે બ્રાહ્મણ (ક્ષત્રિય તથા વૈશ્ય) ભોજન કરતાં કરતાં ડાબા હાથવતી પગનો સ્પર્શ કરે છે અથવા તો ડાબા હાથથી ભોજનનાં વાસણને પકડીને ભોજન કરે છે, તેને પોતાનાં ઉચ્છિષ્ટ ભોજન જમવાનો દોષ લાગે છે. ૬૫

पादुकास्थो न भुञ्जीत न पर्यङ्कस्थितोपि वा ।
श्वानचाण्डालदृष्टौ च भोजनं परिवर्जयेत् ॥ ६६ ॥

પગમાં પાદુકા (ચાંખડી) પહેરીને ભોજન કરવું નહિ, પલંગ ઉપર બેસીને ભોજન કરવું નહિ, તેમ કુતરાંની અને ચંડાલની નજર પડતી હોય તેમ પણ ભોજન કરવું નહિ. ૬૬

यदन्नं प्रतिषिद्धं स्यादन्नशुद्धिस्तथैव च ।
यथा पराशरेणोक्तं तथैवाहं वदामि वः ॥ ६७ ॥

હવે પરાશર ઋષિએ જે અન્ન ખાવાનો નિષેધ કર્યો છે તથા અપવિત્ર થઇ ગયેલાં અન્નની શુદ્ધિ કરવા માટે જે પ્રમાણે દ્રવ્યની શુદ્ધિ કહી છે, તે પ્રમાણે હું તમને કહું છું. ૬૭

शृतं द्रोणाढकस्यान्नं काकश्वानोपघातितम् ।
केनेदं शुद्ध्यते चेति ब्राह्मणेभ्यो निवेदयेत् ॥ ६८ ॥

એક દ્રોણભાર અથવા તો એક આઢકભાર રાંધેલાં અન્નને કાગડાએ અથવા તો કુતરાંએ મુખ ઘાલીને અપવિત્ર કર્યું હોય તો બ્રાહ્મણોની પાસે જઇને નિવેદન કરવું કે રાંધેલાં અન્નને કાગડાએ અથવા તો કુતરાંએ મુખ ઘાલીને અભડાવ્યું છે, માટે તેને કેવી રીતે શુદ્ધ કરવું? ૬૮

काकश्वानावलीढं तद्द्रोणान्नं न परित्यजेत् ।

એટલે બ્રાહ્મણોએ તેને ઉત્તર આપવો કે, દ્રોણ ભર અથવા તો આઢક ભર રાંધેલું અન્ન કાગડાએ અથવા તો કુતરાંએ મોઢાથી ચાટેલું હોય તો પણ તેને નાખી દેવું નહિ, પરંતુ વેદ ભણેલા બ્રાહ્મણોની પાસે વેદના મંત્રો ભણાવીને તેને પવિત્ર કરાવવું અને ઉપરનો થોડો ભાગ કાઢીને નાખી દેવો. ૬૯

वेदवेदांगविद्भिर्धर्मशास्त्रानुपालकैः । ६९ ॥
प्रस्था द्वात्रिंशतिर्द्रोणः स्मृतोद्विप्रस्थ आढकः ॥
ततोद्रोणाढकस्यान्नं श्रुतिस्मृतिविदो विदुः ॥ ७० ॥

વેદ તથા વેદનાં છ અંગ જાણનારા અને ધર્મશાસ્ત્રને જાણનારા વિદ્વાન્ બ્રાહ્મણો કહે છે કે, બત્રીસ પ્રસ્થનો એક દ્રોણ થાય છે અને બે પ્રસ્થનો એક આઢક થાય છે. તેટલું અન્ન કુતરાં વગેરેએ મુખ ઘાલીને અભડાવ્યું હોય તો તેટલાં અન્નને વેદ તથા ધર્મશાસ્ત્ર જાણનારા બ્રાહ્મણો માને છે કે નાખી દેવું નહિ. ૬૯-૭૦

૬૯-૭૦ પા રતિનો ૧ માસો, ૬૪ માસાનો ૧ પલ અને ૩૨ પલનો એક પ્રસ્થ થાય છે. શતપથ બ્રાહ્મણમાં કહ્યું છે કે બાવીસ પ્રસ્થનો એક દ્રોણ થાય છે અને બે પ્રસ્થનો એક આઢક થાય છે. અમરકોશની ટીકામાં આઢક અને દ્રોણનાવિશે કહે છે કે આઢક એટલે એક પાલી અને દ્રોણ એટલે અર્ધો મણ.

काकश्वानावलीढं तु गवाघ्रातं खरेण वा ।
स्वल्पमन्नं त्यजेद्विप्रः शुद्धिर्द्रोणाढके भवेत् ॥ ७१ ॥

પરંતુ કાગડાએ બોટેલું, કુતરાંએ ચાટેલું અને ગાયે અથવા તો ગધેડાએ સુંઘેલું અન્ન જો આઢક કે દ્રોણના કરતાં ઓછું હોય તો તેને નાખી દેવું; પરંતુ દ્રોણ અથવા તો આઢક જેટલું હોય તો તેને શુદ્ધ કરીને ગ્રહણ કરવું. ૭૧

अन्नस्योद्धृत्य तन्मात्रं यच्च लालाहतं भवेत् ।
सुवर्णोदकमभ्युक्ष्य हुताशेनैव तापयेत् ॥ ७२ ॥
हुताशनेन संस्पृष्टं सुवर्णसलिलेन च ।
विप्राणां ब्रह्मघोषेण भोज्यं भवति तत्क्षणात् ॥ ७३ ॥

દ્રોણ અથવા તો આઢક જેટલું અન્ન લાળથી દૂષિત થયું હોય તો તે અન્નનો જેટલો ભાગ લાળદૂષિત થયો હોય તેટલો ભાગ ઢગલામાંથી બહાર કાઢી નાખવો અને બાકીના ભાગને સુવર્ણનું પાણી છાંટવું તથા

અગ્નિથી તપાવવો, એટલે તે શુદ્ધ થાય છે. અગ્નિનો સ્પર્શ કરવાથી, સુવર્ણનું પાણી છાંટવાથી અને બ્રાહ્મણોએ ભણેલા વેદના મંત્રોથી તે જ ક્ષણે અન્ન ભોજન કરવાયોગ્ય થાય છે. ૭૨–૭૩

स्नेहो वा गोरसो वापि तत्र शुद्धिः कथं भवेत् ॥ ७४ ॥
अल्पं परित्यजेत्तत्र स्नेहस्योत्पवनेन च ।
अनलज्वालया शुद्धिर्गोरसस्य विधीयते ॥ ७५ ॥

इतिश्री पाराशरसंहितायां प्रायश्चित्तकाण्डे प्राणिहत्यादिनिष्कृतिर्नाम षष्ठोऽध्यायः समाप्तः ॥

તેલ વગેરે સ્નેહ તથા દુધ વગેરે ગોરસ અભડાઈ ગયાં હોય તો તેની શુદ્ધિ કેવી રીતે થાય? આ પ્રશ્નનો ઉત્તર એવો છે કે;–ઘી, તેલ વગેરે અભડાઈ ગયાં હોય તો તેમાંથી ઉપરનો થોડોક ભાગ કાઢી નાખવાથી અને દુધ વગેરે ગોરસ અભડાઈ ગયું હોય તો અગ્નિની જ્વાળાવડે તેને તપાવવાથી શુદ્ધ થાય છે. ૭૪–૭૫

ઇતિશ્રી પારાશર ધર્મશાસ્ત્રમાં "સાધારણ પ્રાણીઓની હત્યાનું પ્રાયશ્ચિત્ત" એ નામનો અધ્યાય ૬ ઠ્ઠો સમાપ્ત.



अध्याय ७ मो.

पदार्थोनी शुद्धिनो विचार.

अथातो द्रव्यशुद्धिस्तु पराशरवचो यथा ।
दारवाणां तु पात्राणां तक्षणाच्छुद्धिरिष्यते ॥ १ ॥

હવે વૃદ્ધ પરાશરનાં વચન પ્રમાણે પદાર્થોની શુદ્ધિ કહું છું. લાકડાનાં પાત્ર (એટલે વાસણ વિગેરે) કોઈ પણ કારણથી અપવિત્ર થઈ ગયાં તો તે છોલી નાંખવાથી શુદ્ધ થાય છે. ૧

૧ સાધારણરીતે અપવિત્ર થયાં હોય તો ધોઇ નાખવાથી શુદ્ધ થાય છે.

भस्मना शुध्यते कांस्यं ताम्रमम्लेन शुद्ध्यति ।
रजसा शुद्ध्यते नारी विकलं या न गच्छति ॥ २ ॥

કાંસાનું વાસણ રાખથી શુદ્ધ થાય છે, ત્રાંબાનું વાસણ ખાટા પદાર્થના સંયોગથી શુદ્ધ થાય છે અને પિત્તળનું વાસણ જો મ્હોટા કારણથી અશુદ્ધ થયું ન હોય તો ધૂળથી ઘસી નાંખવાથી શુદ્ધ થાય છે. ૨

૨ આ શ્લોકમાં 'रजसा शुद्धयते नारी' એવું ત્રીજું ચરણ છે તેમાં નારી શબ્દનો બીજો અર્થ નંદ સ્ત્રી એવો પણ કરે છે અને તે કહે છે કે; સ્ત્રી જો અનુલોમ પ્રતિલોમ જાતિના પુરુષની સાથે વ્યભિચાર કરે નહિ પરંતુ માનસિક વ્યભિચાર કરે તો રજોદર્શન થયા પછી શુદ્ધ થાય છે.

नदीवेगेन शुद्धयेत लेपो यदि न दृश्यते ।

શબ વગેરે અપવિત્ર પદાર્થના સંબંધથી નદી, અભડાઇ ગઇ હોય તો જળના પ્રવાહુથી શુદ્ધ થાય છે, પરન્તુ તેમાં જો અપવિત્ર પદાર્થ જોવામાં આવતો ન હોય તો,

वापीकूपतडागेषु दूषितेषु कथञ्चन ॥ ३ ॥
उद्धृत्य वै घटशतं पञ्चगव्येन शुद्धयति ।

વાવ, કુવો, તળાવ વગેરે નવાણુ કોઇ પણ કારણથી અશુદ્ધ થઈ ગયાં હોય તો તેમાંથી સો ઘડા પાણી કહાડી નાંખીને તેમાં પંચગવ્ય નાંખવાથી તે શુદ્ધ થાય છે. ૩

अष्टवर्षा भवेद्गौरी नववर्षा तु रोहिणी ॥ ४ ॥
दशवर्षा भवेत्कन्या अत ऊर्ध्वं रजस्वला ।

આઠ વર્ષની કન્યા ગૌરી કહેવાય છે, નવ વર્ષની રોહિણી, દશ વર્ષની કન્યા અને તે પછીની રજસ્વલા કહેવાય છે. ૪

૪ આ. શ્લોકમાં કહ્યું છે; કેઃ—दशवर्षा भवेत्कन्या દશ વર્ષની કન્યા કહેવાય છે; અને કન્યાના વિવાહ કરવાનું ધર્મશાસ્ત્રમાં કહ્યું છે; માટે त्रिंशद्वर्षो वहेत्कन्यां दयां द्वादशवार्षिकीम् ત્રીસ વર્ષના પુરુષે બાર વર્ષની હૃદયને ગમતી કન્યાની સાથે પરણવું. આ રીતે જે વચન કહ્યું છે તે વચન સાથે વિરોધ આવશે. તેનું સમાધાન એવું છે કે અહીં બાર વર્ષની કન્યા કહેવાનો ભાવાર્થ એવો છે કે રજ વિનાની હોય તો બાર વર્ષની કન્યાને પણ પરણી શકાય છે.

प्राप्ते तु द्वादशे वर्षे यः कन्यां न प्रयच्छति ॥ ५ ॥
मासि मासि रजस्तस्याः पिबन्ति पितरोऽनिशम् ।

કન્યાને બારમું વર્ષ બેસે તો પણ જે પિતા કન્યાને પરણાવતો નથી, તેના પિતૃઓ તે કન્યાનાં દર મહિને ઉત્પન્ન થનારાં રજનું નિરંતર પાન કરે છે. ૫

माता चैव पिता चैव ज्येष्ठो भ्राता तथैव च ॥ ६ ॥
त्रयस्ते नरकं यान्ति दृष्ट्वा कन्यां रजस्वलाम् ।

કુમારિકાને રજસ્વલા થએલી જોનારાં મા બાપ તથા મ્હોટો ભાઇ એ ત્રણે નરકે જાય છે. ૬

यस्तां समुद्वहेत्कन्यां ब्राह्मणो मदमोहितः ॥ ७ ॥
असंभाष्यो ह्यपाङ्क्तेयः स विप्रो वृषलीपतिः ।

જે મદમોહિત બ્રાહ્મણ એવી કન્યાની સાથે વિવાહ કરે છે તેની સાથે ભાષણ કરવું નહિ અને તેની પંક્તિમાં બેસીને ભોજન પણ કરવું નહિ. તે બ્રાહ્મણ વૃષલી (શૂદ્રા) પતિ કહેવાય છે. ૭

यः करोत्येकरात्रेण वृषलीसेवनं द्विजः ॥ ८ ॥
स भैक्ष्यभुग्जपन्नित्यं त्रिभिर्वर्षैर्विशुद्ध्यति ।

જે દ્વિજ એક રાત્રિ વૃષલીનું સેવન કરીને જેટલું પાપ સંપાદન કરે છે, તેટલું પાપ તે ભિક્ષા માગી ત્રણ વર્ષ સૂધી તપ કરીને દૂર કરી શકે છે. ૮

अस्तं गते यदा सूर्ये चण्डालं पतितं स्त्रियम् ॥ ९ ॥
सूतिकां स्पृशतश्चैव कथं शुद्धिर्विधीयते ।

સૂર્યનો અસ્ત થયા પછી ચણ્ડાલ કિંવા પતિત કિંવા સુવાવડી સ્ત્રીને અડકનારા પુરુષની શુદ્ધિ શી રીતે થાય છે? ૯

जातवेदःसुवर्णेन सोममार्गं विलोक्य च ॥ १० ॥
ब्राह्मणानुमतश्चैव स्नानं कृत्वा विशुद्ध्यति ।

બ્રાહ્મણની આજ્ઞાથી સ્નાન કરીને અગ્નિ, સુવર્ણ, કિંવા ચંદ્ર અને ચંદ્ર દેખાતો ન હોય તો ચંદ્રના ઉદયના માર્ગને જોવાથી શુદ્ધિ થાય છે. ૧૦

स्पृष्ट्वा रजस्वलान्योन्यं ब्राह्मणी ब्राह्मणी तथा ॥ ११ ॥
तावत्तिष्ठेन्निराहारा त्रिरात्रेणैव शुद्ध्यति ।

રજસ્વલા એવી બ્રાહ્મણ જાતિની સ્ત્રીઓ જો પરસ્પર અડકે તો તેણે નાહાતાં સૂધી ઉપવાસ કરવા અને ન્હાયા પછી પંચગવ્યનું પ્રાશન કરવું. તે ત્રણ રાત્રિ વીતી ગયા પછી ચોથે દિવસે શુદ્ધ થાય છે. ૧૧

૧૧ રજસ્વલાના ત્રણ દિવસ વિશેષ નિંદ્ય માનેલા છે. તેટલા દિવસ ઉપવાસ કરવા અને છેલ્લે દિવસે સ્નાન કરીને પંચગવ્યનું પાન કરવું. બીજે દિવસે જો પરસ્પર સ્પર્શ કરવામાં આવે તો બે દિવસ ઉપવાસ કરવા અને ત્રીજે દિવસે સ્નાન કરીને પંચગવ્યનું પાન કરવું. પરંતુ સગોત્રની સ્ત્રીઓ અથવા તો સોકયો પરસ્પર અડકે તો તેઓ સ્નાન કરવાથી શુદ્ધ થાય છે. આ શ્લોકમાં જે પરસ્પર સ્પર્શ કરવામાટે કહ્યું છે, તે એક સાથે શયન કરવાથી થયેલા સ્પર્શને ઉદ્દેશીને કહ્યું છે.

स्पृष्ट्वा रजस्वलान्योन्यं ब्राह्मणी क्षत्रिया तथा ॥ १२ ॥
अर्द्धकृच्छ्रं चरेत्पूर्वा पादकृच्छ्रमनंतरा ।

બ્રાહ્મણ જાતિની રજસ્વલા ક્ષત્રિય જાતિની રજસ્વલાને અડકે તો, તે બંનેએ નાહ્યાતાં સૂધી ઉપવાસ કરીને પછી બ્રાહ્મણીએ અર્ધકૃચ્છ્ર પ્રાયશ્ચિત્ત કરવું અને ક્ષત્રિયાએ પાદકૃચ્છ્ર પ્રાયશ્ચિત્ત કરવું. ૧૨

स्पृष्ट्वा रजस्वलान्योन्यं ब्राह्मणी वैश्यजा तथा ॥ १३ ॥
पादहीनं चरेत्पूर्वा पादमेकमनन्तरा ।

બ્રાહ્મણ જાતિની અને વૈશ્ય જાતિની રજસ્વલા સ્ત્રીઓ જો પરસ્પર અડકે તો તેમણે નાહ્યાતાં સૂધી ઉપવાસ કરીને પછી બ્રાહ્મણીએ ત્રણ ચતુર્થાંશ કૃચ્છ્ર પ્રાયશ્ચિત્ત કરવું અને વૈશ્ય જાતિની સ્ત્રીએ એક ચતુર્થાંશ પાદકૃચ્છ્ર પ્રાયશ્ચિત્ત કરવું. ૧૩

स्पृष्ट्वा रजस्वलान्योन्यं ब्राह्मणी शूद्रजा तथा ॥ १४ ॥
कृच्छ्रेण शुद्ध्यते पूर्वा शूद्रा दानेन शुद्ध्यति ।

રજસ્વલા બ્રાહ્મણી અને રજસ્વલા શૂદ્ર જાતિની સ્ત્રી જો પરસ્પર અડકે તો તેમણે નાહ્યાતાં સૂધી ઉપવાસ કરવા. તે પછી બ્રાહ્મણીએ કૃચ્છ્ર પ્રાયશ્ચિત્ત કરવું અને શૂદ્રાએ દાન કરવું, એટલે તે બન્ને શુદ્ધ થાય છે.

૧૪ ક્ષત્રિય જાતિની અને શૂદ્ર જાતિની રજસ્વલા સ્ત્રી જાણી જોઇને પરસ્પર અડકે એટલે એક સાથે સુવે તથા આખો દિવસ સાથે બેસી રહે તો ક્ષત્રિયાણીએ સ્નાન કરતાં સૂધી ઉપવાસ કરવા અને શૂદ્ર જાતિની સ્ત્રીએ એક દિવસ ઉપવાસ કરવો. ક્ષત્રિય જાતિની સ્ત્રી અને વૈશ્ય જાતિની સ્ત્રી જો પરસ્પર અડકે તોપણ તે પ્રમાણે જ પ્રાયશ્ચિત્ત કરવું. વૈશ્ય જાતિની અને શૂદ્ર જાતિની રજસ્વલા સ્ત્રી જો પરસ્પર અડકે તો તેઓએ પણ એ પ્રમાણેજ પ્રાયશ્ચિત્ત કરવું. પરંતુ તેઓનો અજાણતાં એક બીજાનો સ્પર્શ કરે તો સ્નાન કરવાથી શુદ્ધ થાય છે.

स्नाता रजस्वला या तु चतुर्थेऽहनि शुद्ध्यति ॥ १५ ॥
कुर्याद्रजोनिवृत्तौ तु दैवपित्र्यादि कर्म च ।

રજસ્વલા સ્ત્રી સ્નાન કરીને ચોથે દિવસે શુદ્ધ થાય છે અને રજની નિવૃત્તિ થયા પછી દેવતાસંબંધી તથા પિતૃસંબંધી વગેરે સર્વ કર્મ કરવાને યોગ્ય થાય છે. ૧૫

૧૫ રજસ્વલા સ્ત્રીનો જો પહેલે દિવસે સ્પર્શ થાય તો ચણ્ડાલના સ્પર્શનું બીજે દિવસે સ્પર્શ થાય તો બ્રહ્મહત્યાના સ્પર્શનું અને ત્રીજે દિવસે સ્પર્શ થાય તો ધોબણના સ્પર્શનું પ્રાયશ્ચિત્ત કરવું.

रोगेण यद्रजः स्त्रीणामन्वहन्तुप्रवर्त्तते ॥ १६ ॥
नाशुचिस्सा ततस्तेन तत्स्याद्वैकालिकं मलम् ।

જે સ્ત્રીને રોગને લીધે નિત્ય રજ (અટકાવ) સર્યા કરતું હોય, તે રજથકી સ્ત્રી અપવિત્ર થતી નથી; પરંતુ દરરોજ નિકળનારા તે રજને વૈકાલિક મલ જાણવો. ૧૬

૧૬ મહિને મહિને સ્ત્રીને જે રજ (અટકાવ) આવે છે, તે રજ કાળને અનુસરતું હોવાથી कालिक રજ કહેતાં કાલિક મલ કહેવાય છે. પરંતુ પોતાના કાળને એટલે સમયને છોડીને અનિયમિત રીતે રજ દેખાવા માંડે છે ત્યારે તે **वैकालिक मळ** એટલે સમય વગરનો મળ કહેવાય છે. જે સ્ત્રી વીસ વીસ.દિવસ પછી અડકાય, તેનું રજ વૈકાલિક એટલે અનિયમિત ગણાતું નથી, પરંતુ તેનાથી ઓછા દિવસોમાં દૂર બેસે છે ત્યારે તેનું રજ વૈકાલિક કહેવાય છે. રજસ્વલાના સંબંધમાં ધર્મસિંધુકાર કહે છે કે;—રાત્રિના ત્રણ ભાગ કરવા, તેમાં પ્રથમના બે ભાગમાં રજસ્વલા થાય તો ગયો દિવસ તે પ્રથમ દિવસ સમજવો. રાત્રિના ત્રીજા ભાગમાં રજસ્વલા થાય તો આવતો દિવસ તે પ્રથમ દિવસ સમજવો. અથવા મધ્યરાત્રથી પ્રથમ રજસ્વલા થાય તો ગયો દિવસ તે પ્રથમ, અને મધ્યરાત્ર પછી રજસ્વલા થાય તો બીજા દિવસ ને પ્રથમ દિવસ સમજવો. એ પ્રમાણે જન્મ અને મરણના આશૌચ (સૂતક) વિષે પણ સમજવું. ઘણુંકરીને જે સ્ત્રી એક માસે રજસ્વલા થતી હોય તે સત્તર દિવસની અંદર રજસ્વલા થાય તો તેની સ્નાન કરવાથી શુદ્ધિ જાણવી. અઢારમે દિવસે રજસ્વલા થાય તો એક રાત્રિ અસ્પૃશ્યપણું. ઓગણીશમે દિવસે રજસ્વલા થાય તો બે રાત્રિ અસ્પૃશ્યપણું અને વીસમા દિવસ પછી અડકાય તો ત્રણ રાત્રિ સુધી અડકવું નહિ. જે સ્ત્રી ઘણું કરીને પંદર પંદર દિવસે રજસ્વલા થાતી હોય, તે દશ દિવસની અંદર રજસ્વલા થાય તો તે સ્નાનવડે શુદ્ધ થાય છે. અગ્યારમે દિવસે રજસ્વલા થાય તો એક રાત્રિ પાળવું, બારમે દિવસે થાય તો બે રાત્રિ પાળવું અને તેરમા દિવસમે થાય તો ત્રણ રાત્રિ રજોદર્શન પાળવું. "જે સ્ત્રીને રોગનાં કારણથી નિત્ય રજોદર્શન થતું હોય તેને તે રજાદર્શનનનો બાધ નથી. પણ જ્યાં સુધી રજ દેખાય ત્યાં સુધી તેને રસોઈ કરવામાં અને દેવનાં તથા પિતૃનાં કર્મ કરવા વિષે અધિકાર નથી. રોગ સંબંધી રજસ્રાવ થાય છે, તેમ છતાં માસ સંબંધી રજસ્રાવ થાય જ છે, માટે તે વેળાએ સાવધાની રાખી તે સ્ત્રીએ ત્રણ રાત્રિ રજોદર્શન પાળવું. જે સ્ત્રી સગર્ભા છતાં પ્રસવ થયાથી પ્રથમ રોગના યોગે રજસ્વલા થાય તો તેણે ત્રણ દિવસ રજોદર્શન પાળવું. જે સ્ત્રીને પ્રસવ થયા પછી એક માસની અંદર રજોદર્શન થાય તો તેણે માત્ર સ્નાન કરવું. માસ પૂરો થયા પછી રજોદર્શનમાં ત્રણ રાત્રિ પાળવી. ઉચ્છિષ્ટ-પણામાં જે સ્ત્રી રજસ્વલા થાય તો ઉર્ધ્વોચ્છિષ્ટપણું છતાં શુદ્ધિ થયા પછી ત્રણ

દિવસ ઉપવાસ, અને અધરોચ્છિષ્ટપણું હોય તો એટલે નાભિથી નીચેનો ભાગ એંઠો હોય તો એક દિવસ ઉપવાસ કરવો. રજસ્વલા થયાનું જ્ઞાન થવા પહેલાં ઘરનો વ્યવહાર કરતાં તેણે ગોરસ, માટીનાં પાત્ર, જળ ઇત્યાદિ જે પદાર્થોનો સ્પર્શ કર્યો હોય તે પદાર્થ કાઢવા નહિ; કારણ કે સૂતકની પેઠે ખબર પડ્યા પછી જ દોષ લાગે છે. અસ્પૃશ્યપણું તો ખબર પડે ત્યાંથી ત્રણ દિવસ સુધી પાળવું એમ કેટલાએક ગ્રંથકારો કહે છે, ત્યારે બીજા ગ્રંથકારો, બીજા દિવસે ખબર પડે તો સૂતક પ્રમાણે બાકી રહેલા દિવસોવડે જ શુદ્ધિ થાય છે, આમ કહે છે.

साध्वाचारा न तावत्स्याद्रजो यावत्प्रवर्तते ॥ १७ ॥
रजोनिवृत्तौ गम्या स्त्री गृहकर्मणि चैव हि ।

જ્યાં સુધી સ્ત્રીને રજ વહે છે ત્યાં સુધી તે દેવકર્મ અને પિતૃકર્મ કરવાને યોગ્ય ગણાતી નથી; પરંતુ તેની રજોનિવૃત્તિ થયા પછી સ્ત્રી, પુરુષનો સહવાસ કરવાને તથા ઘરનું કામકાજ કરવાને યોગ્ય થાય છે. ૧૭

प्रथमेऽहनि चाण्डाली द्वितीये ब्रह्मघातिनी ॥ १८ ॥
तृतीये रजकी प्रोक्ता चतुर्थेऽहनि शुद्ध्यति ।

રજસ્વલા સ્ત્રીને પેહેલે દિવસે ચાણ્ડાલી, બીજે દિવસે બ્રહ્મઘાતિની અને ત્રીજે દિવસે ધોબણ કહી છે. ચોથે દિવસે તે શુદ્ધ થાય છે. ૧૮

૧૮ રજસ્વલાને (અડકાયલીને) પ્રથમ દિવસે ચંડાળ જાતિની સ્ત્રી સમાન કહી છે તેનું તાત્પર્ય એ છે કે, જે પુરુષ રજસ્વલા સ્ત્રીની સાથે પ્રથમ દિવસે ગમન કરે છે તેને ચંડાળ જાતિની સ્ત્રીના ગમનનું પાતક લાગે છે; બીજે દિવસે ગમન કરે છે તેને બ્રહ્મહત્યારી સ્ત્રીના ગમનનું પાતક લાગે છે અને ત્રીજે દિવસે ગમન કરે છે તેને ધોબણના ગમનનું પાતક લાગે છે. આવા અભિપ્રાયથી રજસ્વલા સ્ત્રીને ચંડાળણી, બ્રહ્મહત્યારી અને ધોબણ એવાં નામ આપ્યાં છે.

आतुरे स्नान उत्पन्ने दशकृत्वो ह्यनातुरः ॥ १९ ॥
स्नात्वा स्नात्वा स्पृशेदेनं ततः शुद्ध्येत्स आतुरः ।

રજસ્વલા સ્ત્રી અડી જવાથી અથવા તો કોઈ સંબંધી મરી જવાથી માંદા મનુષ્યને સ્નાન કરવાનો પ્રસંગ પડે તો બીજા સાજા માણસે માંદા મનુષ્યને સ્પર્શ કરીને પ્રત્યેકવાર સ્નાન કરવું; એમ દશવાર કરવું એટલે માંદો મનુષ્ય શુદ્ધ થાય છે. ૧૯

उच्छिष्टोच्छिष्टसंस्पृष्टः शुना शूद्रेण वा पुनः ॥ २० ॥
उपोष्य रजनीमेकां पञ्चगव्येन शुद्ध्यति ।

જમ્યા પછી જેણે પાણીથી મુખ ધોયું ન હોય તે ઉચ્છિષ્ટ–અજીઠો કહેવાય છે. તે ઉચ્છિષ્ટ બીજા ઉચ્છિષ્ટ પુરુષનો સ્પર્શ કરે છે તો તે બન્ને જણાએ કિંવા ઉચ્છિષ્ટને કુતરાંનો સ્પર્શ થાય કિંવા શૂદ્રનો સ્પર્શ થાય, તો તે ઉચ્છિષ્ટ એક રાત્રિ ઉપવાસ કરીને પંચગવ્યનું પાન કરવાથી શુદ્ધ થાય છે. ૨૦

૨૦ ઉપવાસ કરવા અશક્ત હોય તેણે દશવાર ગાયત્રી મંત્રનો જપ કરવો એવું અત્રિ સ્મૃતિમાં કહ્યું છે.

अनुच्छिष्टेन शूद्रेण स्पर्शे स्नानं विधीयते ॥ २१ ॥
तेनोच्छिष्टेन संस्पृष्टः प्राजापत्यं समाचरेत् ।

જે ઉચ્છિષ્ટ દ્વિજને ઉચ્છિષ્ટ ન હોય એવા શૂદ્રનો સ્પર્શ થાય તો તેણે સ્નાન કરવું; અને ઉચ્છિષ્ટ એવા શૂદ્રનો સ્પર્શ થાય તો સ્નાન કરીને પ્રાજાપત્ય વ્રત કરવું. ૨૧

भस्मना शुद्ध्यते कांस्यं सुरया यन्न लिप्यते ॥ २२ ॥
सुरामात्रेण संस्पृष्टं शुद्ध्यतेग्न्युपलेखनैः ।

૨૨ કાંસું રાખથી શુદ્ધ થાય છે; પરન્તુ તેને જો મદ્ય અડકયું ન હોય તો. પરંતુ કાંસાને જો મદ્ય અડકયું હોય તો, તે અગ્નિમાં તપાવવાથી અને છોલી નાંખવાથી શુદ્ધ થાય છે. ૨૨

૨૨. મૂત્રથી અને વિષ્ઠાથી અપવિત્ર થયું હોય તોપણ એ જ વિધિ જાણવો.

गवाघ्रातानि कांस्यानि श्वकाकोपहतानि च ॥ २३ ॥
शुद्ध्यन्ति दशभिः क्षारैः शूद्रोच्छिष्टानि यानि च ।

ગાયે, કુતરાએ અથવા તો કાગડાએ ચાટેલાં કે સુંઘેલાં કાંસાનાં વાસણ દશવાર રાખથી ઘસવાથી શુદ્ધ થાય છે. તેમ જ શૂદ્રે જેમાં ભોજન કર્યું હોય તેવાં કાંસાનાં વાસણો પણ એ જ રીતે શુદ્ધ થાય છે. ૨૩

गंडूषं पादशौचं च कृत्वा वै कांस्यभाजने ॥ २४ ॥
षण्मासान्भुवि निक्षिप्य उद्धृत्य पुनराहरेत् ।

કાંસાના વાસણોમાં કોગળો કર્યો હોય, કિંવા પગ ધોયા હોય તો તે વાસણોને છ મહિના સુધી જમીનમાં ડાટી મૂકવાં અને પછી બહાર કહાડી, અગ્નિમાં તપાવી, નવાં કરીને તેને ફરીને ઉપયોગમાં લેવાં. ૨૪

आयसेष्वायसानां च सीसस्याग्नौ विशोधनम् ॥ २५ ॥
दांतमस्थि तथा शृङ्गं रौप्यं सौवर्णभाजनम् ।
मणिपात्राणि शङ्खश्चेत्येतान्प्रक्षालयेज्जलैः ॥ २६ ॥
पाषाणेन तु सङ्घर्षः शुद्धिरेषामुदाहृता ।

લોઢાનાં વાસણો લોઢાની સાથે અથવા તો પથરાની સાથે ઘસવાથી શુદ્ધ થાય છે, સીસાનાં વાસણો અગ્નિ ઉપર તપાવીને ગાળ્યાથી શુદ્ધ થાય છે અને હાથીદાંતનાં વાસણો, હાથીના હાડકાનાં વાસણો તથા પશુઓનાં શિંગડાંનાં વાસણો, રૂપાનાં અને સોનાનાં વાસણો, મણિનાં વાસણો તથા પત્થરનાં વાસણો આ સર્વે ડાઘ વગરનાં હોય તો પાણીવડે ધોવાથી શુદ્ધ થાય છે, પણ તે જો ડાઘવાળાં હોય તો એઓને પથરાથી ઘસવાં એટલે તે શુદ્ધ થાય છે. ૨૫–૨૬

मृण्मये दहनाच्छुद्धिर्धान्यानां मार्ज्जनादपि ॥ २७ ॥

માટીના વાસણોની શુદ્ધિ બાળ્યાથી થાય છે અને ધાન્યોની શુદ્ધિ પાણી છાંટવાથી થાય છે. ૨૭

૨૭ પરંતુ માટીનાં વાસણોને જો ચાણ્ડાલાદિકનો સ્પર્શ થયો હોય તો તેઓને નાંખી દેવાં.

वेणुवल्कलचीराणां क्षौमकार्पासवाससाम् ।
और्णनेत्रपटानां च प्रोक्षणाच्छुद्धिरिष्यते ॥ २८ ॥

વાંસની સુંડલી, સુંડલા, વલ્કલ વસ્ત્રો, ક્ષૌમનાં વસ્ત્ર (અલસીની છાલમાંથી બનાવેલાં વસ્ત્ર), રુનાં વસ્ત્ર, ઊનનાં વસ્ત્ર અને ભોજપત્ર આ સર્વે અપવિત્ર થયાં હોય તો પાણીના પ્રોક્ષણથી શુદ્ધ થાય છે. ૨૮

मुञ्जोपस्करशूर्पाणां शाणस्य फलचर्मणाम् ।
तृणकाष्ठस्य रज्जूनामुदकाभ्युक्षणं मतम् ॥ २९ ॥

મુંજનાં આસનો તથા મેખલા વગેરે, વાંસનાં સુપડાં વગેરે, શણનાં વસ્ત્રો, આંબા વગેરેનાં ફળ, મૃગચર્મ, ઘાસ, લાકડાં અને ઝાડની છાલની દોરીઓ આ સર્વ પાણી છાંટવાથી શુદ્ધ થાય છે. ૨૯

तूलिकाद्युपधानानि रक्तवस्त्रादिकानि च ।
शोषयित्वार्कतापेन प्रोक्षणाच्छुद्धितामियुः ॥ ३० ॥

રુનાં ભરેલાં ગાદલાં ગોદડાં તથા ઓશીકાં અને રંગથી રંગેલાં વસ્ત્રો

કોઈપણ કારણથી અપવિત્ર થયાં હોય તો તેઓ સૂર્યનાં તડકામાં તપાવવાથી તથા જળ છાંટવાથી શુદ્ધ થાય છે. ૩૦

मार्जारमक्षिकाकीटपतङ्गकृमिदर्दुराः ।
मेध्यामेध्यं स्पृशन्तोपि न दोषो मनुरब्रवीत् ॥ ३१ ॥

મીંદડી, માંખી, કીડી, પતંગીયો, ઘનેડાં, ઇળ અને દેડકાં, આ પવિત્ર કે અપવિત્ર પદાર્થનો સ્પર્શ કરે છે તો પણ અપવિત્ર થતાં નથી, એમ મનુએ કહ્યું છે. ૩૧

महीं स्पृष्ट्वाऽगतं तोयं याश्चाप्यन्योन्यविप्रुषः ।
भुक्तोच्छिष्टं तथा स्नेहं नोच्छिष्टं मनुरब्रवीत् ॥ ३२ ॥

સ્નાનનું તથા આચમનનું ઉચ્છિષ્ટ પાણી જો પૃથ્વીનો સ્પર્શ કરીને આવતું હોય તો તે ઉચ્છિષ્ટ ગણાતું નથી. પરસ્પર બોલતાં મ્હોડામાંથી જે થૂંકના બિન્દુ ઉડે છે તે તથા જમતી વખતે ભોજનમાં રહેલાં ઘી, તેલ વગેરે હાથને ચોટી રહે અને ધોવાથી પણ જાય નહિ તે ઉચ્છિષ્ટ ગણાતાં નથી, એમ મનુએ કહ્યું છે. ૩૨

ताम्बूलेक्षुफले चैव भुक्तस्नेहानुलेपने ।
मधुपर्के च सोमे च नोच्छिष्टं धर्मतो विदुः ॥ ३३ ॥

તાંબૂલ ખાવાથી, શેરડી અને ફળ ખાવાથી તથા ભોજન કરતી વખતે હાથને ચોટી રહેલાં ઘી તેલ વગેરેથી તથા શરીર ઉપર ચંદનાદિકનો લેપ કરવાથી તથા મધુપર્કનું ભક્ષણ કરવાથી અને સોમપાન કરવાથી પુરુષ ઉચ્છિષ્ટ થતો નથી અર્થાત્ તેને આચમન કરવું પડતું નથી એમ ધર્મશાસ્ત્રમાં કહ્યું છે. ૩૩

रथ्याकर्दमतोयानि नावः पन्थास्तृणानि च ।
मारुतार्केण शुद्ध्यन्ति पक्वेष्टकचितानि च ॥ ३४ ॥

શેરીનું ગારાવાળું પાણી, નૌકા, માર્ગ, ઘાસ અને પાકી ઇંટથી કરેલા ઓટલા વગેરેને ચાણ્ડાલાદિક સ્પર્શ કરે તોપણ તે સૂર્યના તડકાથી તથા વાયુના સ્પર્શથી શુદ્ધ થાય છે. ૩૪

૩૪ રસ્તામાં પડેલાં ચીથરાં માટે અને ઠીકરાં માટે પણ એમ જ જાણવું.

अदुष्टा सन्तता धारा वातोद्धूताश्च रेणवः ।
स्त्रियो वृद्धास्तथा बाला न दुष्यन्ति कदाचन ॥ ३५ ॥

અટક્યા વગર પડનારી પાણીની ધારા, વાયુથી ઊડેલી ધૂળ, સ્ત્રીઓ, વૃદ્ધો અને બાળકો કદી પણ અપવિત્ર થતાં નથી. ૩૫

૩૫ બાળકો, વૃદ્ધો અને સ્ત્રીઓ એઓએ પ્રાતઃસ્નાન કર્યું ન હોય તથાપિ તેઓ ઘરનું કેટલુંક કામ કરવાને યોગ્ય ગણાય છે. એવું આ વચનનું તાત્પર્ય છે.

देशभङ्गे प्रवासे वा व्याधिषु व्यसनेष्वपि ।
रक्षेदेव स्वदेहादि पश्चाद्धर्मं समाचरेत् ॥ ३६ ॥

આખા દેશનો નાશ થવાનો પ્રસંગ આવ્યો હોય ત્યારે, પ્રવાસમાં, વ્યાધિમાં અને દુઃખનો સમય હોય ઈત્યાદિ પ્રસંગે પોતાના દેહાદિકનું જ પ્રથમ સંરક્ષણ કરવું અને પછી (સંકટ દૂર થયા પછી) ધર્માચરણ કરવું. ૩૬

૩૬ આપત્કાળમાં મુખ્ય ધર્મ પાળી શકાય નહિ માટે જેટલે અંશે ધર્મ પાળી શકાય તેટલો પાળીને પણ શરીરનું રક્ષણ કરવું.

येन केन च धर्मेण मृदुना दारुणेन च ।
उद्धरेद्दीनमात्मानं समर्थो धर्ममाचरेत् ॥ ३७ ॥

સહેલો કિંવા કઠણ એવો કોઇ પણ ધર્મ પાળીને દીન એવા પોતાના આત્માનું રક્ષણ કરવું; અને સંકટમાંથી મુક્ત થયા પછી યોગ્ય રીતે ધર્માચરણ કરવું. ૩૭

आपत्काले तु निस्तीर्णे शौचाचारं विचिन्तयेत् ।
शुद्धिं समुद्धरेत्पश्चात्स्वस्थो धर्मं समाचरेत् ॥ ३८ ॥

इति श्रीपाराशरसंहितायां प्रायश्चित्तकाण्डे द्रव्यशुद्धिर्नाम
सप्तमोऽध्यायः समाप्तः ॥

આપત્કાળ સમાપ્ત થયા પછી શાસ્ત્રોમાં કહેલા શૌચ તથા આચાર પાળવા. પ્રાયશ્ચિત્ત કરીને શુદ્ધ થવું તથા આરોગ્યને પ્રાપ્ત થયેલા પુરુષે ધર્માચરણ પણ કરવું. ૩૮

ઇતિ શ્રીપારાશર ધર્મશાસ્ત્રમાં 'પદાર્થની શુદ્ધિનો વિચાર' એ નામનો
અધ્યાય ૭ મો સમાપ્ત.



अध्याय ८ मो.

ગોહત્યાનું પ્રાયશ્ચિત્ત.

गवां बन्धनयोक्रेषु भवेन्मृत्युरकामतः ।
अकामकृतपापस्य प्रायश्चित्तं कथं भवेत् ॥ १ ॥

બંધનથી, યોક્ત્રથી (મોરી, ચોકડાં વગેરેથી) રોધથી (અટકાવ કરવાથી) તથા ઘાતથી એટલે લાકડી વગેરેના મારથી એમ કોઇએક કારણથી અજાણતાં ગાય મરણ પામે તો અજાણતાં જેણે ગાયનું મરણ નિપજાવ્યું હોય તેણે કેવી રીતે પ્રાયશ્ચિત્ત કરવું? ૧

૧ બંધન વગેરે ચાર શબ્દોના અર્થ નવમા અધ્યાયના આરંભમાં વિસ્તારથી કહેશે. સાતમા અધ્યાયમાં પ્રકીર્ણક, સંકરીકરણ અને મલિનીકરણ એ ત્રણ પાપનાં પ્રાયશ્ચિત્તો કહ્યાં. હવે ઉપપાતકોનાં પ્રાયશ્ચિત્ત કહેશે, તેમાંથી પ્રથમ ગાયની હત્યાનું પ્રાયશ્ચિત્ત આ અધ્યાયમાં કહેશે. તેના વિશે આ શ્લોકમાં પ્રશ્ન કરવામાં આવ્યો છે. કેટલાએક ધર્મશાસ્ત્રકારોનો મત એવો છે કે અજાણતાં પાપ થઈ જાય તો તે પાપનું પ્રાયશ્ચિત્ત શાસ્ત્રમાં કહ્યું છે, ત્યારે કેટલાએકનો મત એવો છે કે જાણીજોઇને કરેલાં પાપનું પ્રાયશ્ચિત્ત પણ શાસ્ત્રમાં કહ્યું છે. ભગવાન મનુ પ્રાયશ્ચિત્ત કોણે અને કેવા પ્રસંગમાં કરવું જોઇએ તે વિશે કહે છે કે;—

अकामतः कृते पापे प्रायश्चित्तं विदुर्बुधाः ।
कामकारकृतेप्याहुरेके श्रुतिनिदर्शनात् ॥ मनु. अ. ११–४५

ધર્મશાસ્ત્રવેત્તાઓ માને છે કે ઇચ્છા વગર—અજાણતાં પાપ થઈ ગયું હોય તો તેનું પ્રાયશ્ચિત્ત કરવું ત્યારે બીજા કેટલાએક ધર્મશાસ્ત્રકારો કહે છે કે જાણી-જોઇને કરેલાં પાપનું પણ પ્રાયશ્ચિત્ત કરવું જોઇએ. કારણ કે તેમાં શ્રુતિનું પ્રમાણ જોવામાં આવે છે. એ શ્રુતિ આ પ્રમાણે છે;—इन्द्रो यतीन्शालावृकेभ्यः प्रायच्छत्। तमश्लीला वागित्यवदत्। सप्रजापतिमुपाधावत्। तस्मात्तमुपहव्यं प्रायच्छत् सं. ३-१४-३१ ઇંદ્રે બુદ્ધિપૂર્વક નાસ્તિક સંન્યાસીઓને કાપીને કુતરાઓને અર્પણ કરી દીધા. તે પછી તેણે એવી ભયંકર વાણી સાંભળી કે તું બ્રહ્મહત્યા કરનારો છો. તે સાંભ-ળીને ઇંદ્ર પ્રજાપતિની પાસે પ્રાયશ્ચિત્ત લેવામાટે ગયો. તેણે તેને પ્રાયશ્ચિત્ત તરિકે અશ્વમેધ યજ્ઞનો ઉપદેશ આપ્યો."

આ શ્રુતિ જાણી જોઇને કરેલાં પાપનું પણ પ્રાયશ્ચિત્ત છે આમ સૂચવે છે. દેવલ કહે છે કે, એકવાર પાપ કર્યું હોય તેને માટે શાસ્ત્રમાં જે પ્રાયશ્ચિત્ત કહ્યું હોય તે કરવું. બીજીવાર કરે તો બમણું, ત્રીજીવાર કરે તો ત્રમણું અને ચોથીવાર પાપ કરે તો પછી શાસ્ત્રમાં તેનું પ્રાયશ્ચિત્ત નથી.

वेदवेदाङ्गविदुषां धर्मशास्त्रं विजानताम् ।
स्वकर्मरतविप्राणां स्वकं पापं निवेदयेत् ॥ २ ॥

પાપકર્મ કરનારા પુરુષે ચાર વેદ, વેદનાં (શિક્ષા, કલ્પ, વ્યાકરણ, નિરુક્ત, જ્યોતિષ અને છંદ) છ અંગને જાણનારા, ધર્મશાસ્ત્ર જાણનારા, પોતાનાં સંધ્યા વંદનાદિક નિત્ય કર્મમાં, ગ્રહણમાં સ્નાન વગેરે નૈમિત્તિક કર્મ કરવામાં પરાયણ રહેનારા એવા બ્રાહ્મણોની પાસે જઇને પોતાનું પાપ નિવેદન કરવું. ૨

૨ ધર્મશાસ્ત્ર જાણનારાઓ પણ પાપનું પ્રાયશ્ચિત્ત આપી શકે, તથાપિ વેદો જાણનારા બ્રાહ્મણોએ આપેલું પ્રાયશ્ચિત્ત પાપનો નાશ કરવાને વિશેષ સમર્થ હોવાથી વેદ જાણનારા બ્રાહ્મણો એમ વિશેષણ આપ્યું છે.

सावित्र्याश्चैव गायत्र्याः सन्ध्योपास्त्यग्निकार्ययोः ।
अज्ञानात्कृषिकर्तारो ब्राह्मणा नामधारकाः ॥ ३ ॥

સૂર્ય જેના દેવતા છે એવા तत्सवितुः નામના ગાયત્રી મંત્રને, સંધ્યા-વંદનને અને અગ્નિહોત્રનાં કર્મને નહિ જાણનારા અર્થાત્ સંધ્યા વગેરે નહિ કરનારા તથા ખેડ કરનારા બ્રાહ્મણોને નામના બ્રાહ્મણો જાણવા. ૩

अव्रतानाममन्त्राणां जातिमात्रोपजीविनाम् ।
सहस्रशस्समेतानां परिषत्त्वं न विद्यते ॥ ४ ॥

આવા નામધારી, વેદનાં વ્રતને નહિ પાળનારા તથા વેદનું અધ્યયન પણ નહિ કરનારા એવા હજારો બ્રાહ્મણો એકઠા મળે તો પણ તેઓની परिषद् (પ્રાયશ્ચિત્ત આપનારી સભા) ગણાતી નથી. ૪

यद्वदन्ति द्विजा मूढा मूर्खा धर्ममतद्विदः ।
तत्पापं शतधा भूत्वा तद्वक्तॄनधिगच्छति ॥ ५ ॥

બુદ્ધિ મંદ હોવાથી ન્યાયની સૂક્ષ્મતાને નહિ જાણનારા, પોતાને પંડિત માનનારા અને પ્રાયશ્ચિત્તના સ્વરૂપને નહિ જાણનારા જે બ્રાહ્મણો પાપનું ખોટું પ્રાયશ્ચિત્ત આપે છે, તેઓને તે પાપ સોગણું થઇને વળગે છે. ૫

अज्ञात्वा धर्मशास्त्राणि प्रायश्चित्तं ददाति यः ।
प्रायश्चित्ती भवेत्पूतः किल्बिषं पर्षदि व्रजेत् ॥ ६ ॥

વળી જે બ્રાહ્મણ ધર્મશાસ્ત્ર ભણ્યો ન હોય, પરંતુ ધર્મશાસ્ત્ર જાણ-નારાની પાસેથી પ્રાયશ્ચિત્ત સાંભળીને પાપીને પ્રાયશ્ચિત્ત આપે છે તો

પ્રાયશ્ચિત્તનો અધિકારી પાપી પવિત્ર થાય છે અને પાતક પ્રાયશ્ચિત્ત આપનારી સભાને લાગે છે. ૬

चत्वारो वा त्रयो वापि यं ब्रूयुर्वेदपारगाः ।
स धर्म इति विज्ञेयो नेतरैस्तु सहस्रशः ॥ ७ ॥

વેદમાં પારંગત એવા ત્રણ અથવા તો ચાર બ્રાહ્મણ જે નિર્ણય કહે તેને ધર્મ જાણવો; પરંતુ બીજા હજારો બ્રાહ્મણો કહે તો પણ તેને ધર્મ જાણવો નહિ. ૭

૭ વેદ પારંગત બ્રાહ્મણોના કહેવાને જ ધર્મનો નિર્ણય માનવો; મૂર્ખાઓના કહેવાને માનવો નહિ.

प्रमाणमार्गं मार्गन्तो ये धर्मं प्रवदन्ति वै ।
तेषामुद्विजते पापं सद्भूतगुणवादिनाम् ॥ ८ ॥

જેઓ ધર્મશાસ્ત્રનાં વચનોની વ્યવસ્થા કેવી રીતે કરવી તેને યથાર્થ રીતે જાણે છે, તેઓ સત્ય ધર્મનો નિર્ણય કરી શકે છે અને પાપ તેઓ-નાથી ઉદ્વેગ પામે છે. ૮

૮ આ શ્લોકનું તાત્પર્ય એવું છે કે, ધર્મશાસ્ત્ર ભણ્યા છતાં પણ જેઓને તેનાં પ્રમાણ વચનોની તથા શિષ્ટાચારની વચ્ચે વિરોધ ન આવે તે પ્રમાણે વ્યવસ્થા કરતાં આવડતી હોય, તેઓ જ પ્રાયશ્ચિત્ત આપવાને યોગ્ય ગણાય છે. પરંતુ કેવળ ધર્મશાસ્ત્ર ભણેલા હોય પરંતુ તેનાં વચનોની વ્યવસ્થાથી અજાણ્યા હોય, તેઓ પ્રાયશ્ચિત્ત આપવાને યોગ્ય ગણાતા નથી.

यथाश्मनि स्थितं तोयं मारुतार्केण शुद्ध्यति ।
एवं परिषदादेशान्नाशयेत्तस्य दुष्कृतम् ॥ ९ ॥

જેમ પત્થર ઉપર પડેલું પાણી વાયુના તથા સૂર્યના તાપથી શુકાઈ જાય છે, એમ જ વિદ્વાન્ બ્રાહ્મણની સભાની આજ્ઞાથી પાપીનું પાપ પણ નાશ પામે છે. ૯

नैव गच्छति कर्त्तारं नैव गच्छति पर्षदम् ।
मारुतार्कादिसंयोगात्पापं नश्यति तोयवत् ॥ १० ॥

પ્રાયશ્ચિત્ત કર્યા પછી પાપ, કર્તાની પાસે પણ જતું નથી, તેમ વિદ્વાન્ સભાની પાસે પણ જતું નથી. પરંતુ પવન અને સૂર્યનો તાપ લાગવાથી જેમ પત્થર ઉપર રહેલું પાણી સુકાઈ જાય છે, તેમ પાપીનું પાપ પણ નાશ પામે છે. ૧૦

૧૦ પ્રાયશ્ચિત્ત કર્મની શક્તિ એવી છે કે, તે કર્યાં પછી પાપીનું પાપ તુરત નાશ પામે છે.

चत्वारो वा त्रयो वापि वेदवन्तोऽग्निहोत्रिणः ।
ब्राह्मणानां समर्था ये परिषत्साऽभिधीयते ॥ ११ ॥

વેદ ભણેલા અને અગ્નિહોત્રમાં હોમ કરનારા બ્રાહ્મણોમાં જે મહા-સમર્થ બ્રાહ્મણો હોય તેવા ચારની અથવા તો ત્રણ બ્રાહ્મણની સભા પરિષદ્ કહેવાય છે. ૧૧

अनाहिताग्नयो येऽन्ये वेदवेदाङ्गपारगाः ।
पञ्च त्रयो वा धर्मज्ञाः परिषत्सा प्रकीर्त्तिता ॥ १२ ॥

અગ્નિહોત્રી ન હોય પરંતુ વેદોમાં તથા તેનાં છ અંગોમાં પારંગત હોય અને ધર્મશાસ્ત્ર ભણેલા હોય તેવા પાંચ અથવા તો ત્રણ બ્રાહ્મણની સભા પણ પરિષદ્ કહેવાય છે. ૧૨

मुनीनामात्मविद्यानां द्विजानां यज्ञयाजिनाम् ।
वेदव्रतेषु स्नातानामेकोऽपि परिषद्भवेत् ॥ १३ ॥

આત્માના સ્વરૂપનો વિચાર કરનારા, યજ્ઞયાગ કરનારા, વેદ ભણવા-માટે સૌમ્ય, પ્રાજાપત્ય વગેરે વેદનાં વ્રતો પાળનારા એવા બ્રાહ્મણોમાંથી એક બ્રાહ્મણની પણ પરિષદ્ કહેવાય છે. ૧૩

पञ्च पूर्वं मया प्रोक्तास्तेषां चासंभवे त्रयः ।
स्ववृत्तिपरितुष्टा ये परिषत् सा प्रकीर्त्तिता ॥ १४ ॥

મેં પૂર્વે પાંચ પ્રકારની પરિષદ્ (બ્રાહ્મણસભા) કહી છે. તેવા બ્રાહ્મણો ન મળે તો પોતાની બ્રાહ્મણજીવિકા ઉપર સંતોષ રાખીને આજીવિકા કર-નારા ત્રણ બ્રાહ્મણની સભા પણ પરિષદ્ કહેવાય છે. ૧૪

૧૧–૧૪ અગ્યારમા શ્લોકમાં પરિષદના બે પ્રકાર કહ્યા છે; તેમાં પ્રથમ મુખ્ય પક્ષ છે અને બીજો ગૌણ પક્ષ છે; બારમા શ્લોકમાં પણ બે પ્રકાર કહ્યા છે; તેમાં પણ મુખ્ય અને ગૌણ એમ બે પ્રકાર જાણવા અને તેરમા શ્લોકમાં એક પ્રકાર કહ્યો છે. જો તેવી જાતના બ્રાહ્મણો પણ ન મળે તો પછી બ્રાહ્મણના ધર્મથી આજીવિકા કરનારા ત્રણ બ્રાહ્મણની સભા મેળવવી અને તે પણ પરિષદ્ કહેવાય છે.

अत ऊर्ध्वं तु ये विप्राः केवलं नामधारकाः ।
परिषत्त्वं न तेष्वस्ति सहस्रगुणितेष्वपि ॥ १५ ॥

પરંતુ જે બ્રાહ્મણો કેવળ નામના જ બ્રાહ્મણો છે તેવા હજારો બ્રાહ્મણોની એકઠી મળેલી સભા પરિષદ્ (બ્રાહ્મણ સભા) કહેવાતી નથી. ૧૫

यथा काष्ठमयो हस्ती यथा चर्ममयो मृगः ।
ब्राह्मणस्त्वनधीयानस्त्रयस्ते नामधारकाः ॥ १६ ॥

જેમ લાકડાનો હાથી નામનો જ હાથી કહેવાય છે અને ચામડાનો મૃગ જેમ નામનો જ મૃગ કહેવાય છે તેમ વેદ તથા ધર્મશાસ્ત્ર નહિ જાણનારો બ્રાહ્મણ પણ નામનો જ બ્રાહ્મણ કહેવાય છે. આ ત્રણેય નામધારી છે. ૧૬

૧૬ હાથી અને મૃગ એ બે જાતિ છે અને તે બે શબ્દની પ્રવૃત્તિ તેની જાતિને લઇને કરવામાં આવે છે. અહીં કાષ્ઠમય અને ચર્મમય એ કંઈ જાતિ નાથી. છતાં હાથી અને મૃગ એ બે નામનો પ્રયોગ સાદશ્ય ધર્મને લઇને કરવામાં આવ્યો છે. તેમ જ વેદાધ્યયન નહિ કરનારા બ્રાહ્મણને વિશે પણ સાદશ્યને લઇને બ્રાહ્મણ શબ્દનો પ્રયોગ કરવામાં આવે છે.

ग्रामस्थानं यथा शून्यं यथा कूपस्तु निर्जलः ।
यथा हुतमनग्नौ च अमंत्रो ब्राह्मणस्तथा ॥ १७ ॥

જેમ મનુષ્યો વિનાનું ગામ, પાણી વગરનો કુવો અને અગ્નિ વગરનો હોમ આ ત્રણેય નિરુપયોગી છે, તેમ વેદ નહિ ભણેલો બ્રાહ્મણ પણ નિરુપયોગી છે. ૧૭

૧૭ કોઈ શંકા કરે કે, ઉપરના શ્લોકમાં લાકડાના હાથીની તથા ચામડાના મૃગની સાથે મૂર્ખ બ્રાહ્મણને સરખાવવામાં આવ્યો છે. પરંતુ તે દષ્ટાંતો વિષમ છે; કારણ કે લાકડાનો હાથી અને ચામડાનો મૃગ તો સર્વથા નામધારક (ખોટા) છે પરંતુ બ્રાહ્મણ તેવો નથી. મૂર્ખ બ્રાહ્મણના અવયવાર્થને તજી દેવાશે, પરંતુ તેની જાતિનો ત્યાગ કરી શકાશે નહિ. કારણ કે બ્રાહ્મણ માતા પિતાથી ઉત્પન્ન થયેલો પુરુષ બ્રાહ્મણ જાતિનો ગણાય છે, આમ ધર્મશાસ્ત્રમાં કહ્યું છે. આવી શંકાનો પરિહાર કરવા માટે બીજાં દષ્ટાંતો દઇને આ શ્લોકમાં મૂર્ખ બ્રાહ્મણનું નિરૂપયોગીપણું દર્શાવ્યું છે.

यथा षण्ढोऽफलः स्त्रीषु यथा गौरुषराऽफला ।
यथा चाज्ञेऽफलं दानं तथा विप्रोऽनृचोऽफलः ॥ १८ ॥

જેમ નપુંસક પુરુષ સ્ત્રીને વિશે નિષ્ફળ થાય છે (પ્રજા ઉત્પન્ન કરી શકતો નથી), જેમ ખારી ભૂમિ પણ નિષ્ફળ થઈ પડે છે અર્થાત્ તેમાં વાવેલું ધાન્ય ઉગતું નથી અને જેમ મૂર્ખ બ્રાહ્મણને આપેલું દાન નિષ્ફળ થાય છે તેમ વેદ અને શાસ્ત્ર નહિ ભણેલો બ્રાહ્મણ પણ નિષ્ફળ છે (પ્રાયશ્ચિત્ત આપવાને અયોગ્ય છે). ૧૮

૧૮ કોઈ શંકા કરે કે, યજ્ઞમાં જેમ સોમવલ્લી ન મળે ત્યારે પોઈના પાનથી કામ લેવામાં આવે છે અને ચોખા ન મળે ત્યારે યવ વગેરેનો ઉપયોગ કરવામાં આવે છે તેમ કોઈ સમય વિદ્વાન્ બ્રાહ્મણ ન મળે તો મૂર્ખ બ્રાહ્મણની પાસેથી પણ પ્રાયશ્ચિત્ત લેવું. તે શંકાનો પરિહાર કરવા માટે આ શ્લોકમાં કહે છે કે, મૂર્ખ બ્રાહ્મણ પ્રાયશ્ચિત્ત કહેવાને શક્તિમાન્ હોતો નથી. માટે તેવા પાસેથી લીધેલું પ્રાયશ્ચિત્ત પાપનો નાશ કરી શકતું નથી.

चित्रकर्म यथानेकैरंगैरुन्मील्यते शनैः ।
ब्राह्मण्यमपि तद्वद्धि संस्कारैर्मन्त्रपूर्वकैः ॥ १९ ॥

ચિત્રકાર પ્રથમ એક વસ્ત્ર ઉપર સાહીની રેખાથી મનુષ્યનાં સર્વ અવયવોને આળેખે છે. પણ તે અવયવો સ્પષ્ટ દેખાતા નથી. પરંતુ તે તે અવયવોમાં ધીરે ધીરે અનેક જાતના રંગો પૂરે છે, એટલે તે તે અવયવો સ્પષ્ટ રીતે દેખાય છે. તેની પેઠે જ બ્રાહ્મણપણું પણ ઉત્તરોત્તર વૈદિક સંસ્કારો કરવાથી તથા વિદ્યાદિક સંપાદન કરવાથી પ્રકટ થાય છે. ૧૯

૧૯ બ્રાહ્મણ પુરુષથી બ્રાહ્મણી સ્ત્રીમાં ઉત્પન્ન થયેલો પુરુષ બ્રાહ્મણ જાતિનો ગણાય છે. ભગવાન્ યાજ્ઞવલ્ક્ય કહે છે કે; सवर्णेभ्यः सवर्णासु जायन्ते हि सजातयः । अनिन्द्येषु विवाहेषु पुत्राः सन्तानवर्धनाः ॥ સમાન જાતિના પુરુષોથી સમાન જાતિની સ્ત્રીમાં સમાન જાતિના પુત્રો ઉત્પન્ન થાય છે અને ઉત્તમ પ્રકારના બ્રાહ્મ વગેરે વિવાહોથી ઉત્પન્ન થયેલા તે પુત્રો સંતાનની વૃદ્ધિ કરે છે.

આ વર્ણન પ્રમાણે મૂર્ખ બ્રાહ્મણમાં પણ મુખ્ય બ્રાહ્મણપણું શા માટે ન માનવું, એ પ્રશ્નના ઉત્તરમાં પરાશર ભગવાને આ શ્લોક કહ્યો છે અને આ શ્લોકનું તાત્પર્ય એવું છે કે, વેદના મંત્રોથી સંસ્કારો કર્યા પછી જ બ્રાહ્મણપણું આવે છે; પરંતુ કેવળ બ્રાહ્મણને ઘેર જન્મવાથી બ્રાહ્મણપણું આવતું નથી. તેના દૃષ્ટાંતમાં કહે છે કે, કેવળ શાહીની લીટીથી પુરુષના અવયવોની રૂપરેખા આંકવાથી પુરુષ સ્પષ્ટપણે જણાતો નથી, પરંતુ તેના અવયવોમાં લીલા પીળા વગેરે અનેક રંગો પૂરીને તેને સંસ્કાર કરવામાં આવે છે તો જ તે પુરુષ સ્પષ્ટપણે દેખાય છે. તેમ વૈદિક સંસ્કારો કરવાથી તથા વેદવિદ્યા ભણવાથી બ્રાહ્મણ જાતિના પુરુષમાં પણ ઉત્તમ પ્રકારનું બ્રાહ્મણપણું આવે છે.

प्रायश्चित्तं प्रयच्छन्ति ये द्विजा नामधारकाः ।
ते द्विजाः पापकर्माणः समेता नरकं ययुः ॥ २० ॥

જે નામધારી એટલે મૂર્ખ બ્રાહ્મણો પ્રાયશ્ચિત્ત આપે છે, તે બ્રાહ્મણો પાપકર્મ કરનારા થાય છે અને તે સર્વે એક સાથે જ નરકમાં જાય છે. ૨૦

ये पठन्ति द्विजा वेदं पञ्चयज्ञरताश्च ये ।
त्रैलोक्यं तारयन्ते ते पञ्चेन्द्रियरता अपि ॥ २१ ॥

જે બ્રાહ્મણો નિત્ય વેદનો સ્વાધ્યાય કરે છે અને જેઓ પાંચ મહાયજ્ઞ કરે છે, તેઓ પાંચ ઇંદ્રિયના વિષયોમાં પરાયણ હોય તોપણ ત્રણે લોકને તારે છે, (તો પછી પાપીને કેમ તારે નહિ?) ૨૧

सम्प्रणीतः श्मशानेषु दीप्तोऽग्निः सर्वभक्षकः ।
एवञ्च वेदविद्विप्रः सर्वभक्षोऽपि दैवतम् ॥ २२ ॥

સ્મશાનમાં લઇ જઇને સળગાવેલો અગ્નિ શબને બાળે છે અને સર્વનું ભક્ષણ કરે છે તથાપિ તે દેવતા ગણાય છે. તેમ જ વેદવેત્તા બ્રાહ્મણ સર્વ વસ્તુનું ભક્ષણ કરે છે, તો પણ દેવતા કહેવાય છે. ૨૨

૨૨–૨૧ મા ને ૨૨ મા શ્લોકમાં વેદનો સ્વાધ્યાય કરનારા બ્રાહ્મણની સ્તુતિ છે. અર્થાત્ બ્રાહ્મણ જો વેદનો સ્વાધ્યાય કરે છે તો જ તેનામાં બ્રાહ્મણપણું સચવાઈ રહે છે.

अमेध्यानि तु सर्वाणि प्रक्षिप्यन्ते यथोदके ।
तथैव किल्बिषं सर्वं प्रक्षिपेच्च द्विजानले ॥ २३ ॥

ગંગા વગેરે નદીના જળમાં સ્નાન કરવા માટે ઉતરેલા પુરુષો જેમ પોતાના શરીરના પરસેવા વગેરે સર્વ અપવિત્ર મળ ગંગાના જળમાં નાંખે છે, તેમ જ પ્રાયશ્ચિત્ત કરનારા પુરુષે પણ પોતાનું સર્વ પાપ બ્રાહ્મણરૂપી અગ્નિને વિશે નાખવું. ૨૩

૨૩ પાણી અને અગ્નિ પાપીને પવિત્ર કરનારાં છે, એમ વેદમાં કહ્યું છે; તેથી આ શ્લોકમાં બ્રાહ્મણને અગ્નિની ઉપમા આપી છે. અગ્નિમાં નાખેલો પદાર્થ જેમ બળીને ભસ્મ થઇ જાય છે, તેમ બ્રાહ્મણની પાસે નિવેદન કરેલું પાપ પણ નાશ પામે છે.

गायत्रीरहितो विप्रः शूद्रादप्यशुचिर्भवेत् ।
गायत्रीब्रह्मतत्वज्ञास्सम्पूज्यन्ते जनैर्द्विजाः ॥ २४ ॥

ગાયત્રી મંત્રનો જપ નહિ કરનારો બ્રાહ્મણ શૂદ્રના કરતાં પણ વિશેષ અપવિત્ર ગણાય છે અને જે બ્રાહ્મણો ગાયત્રીનાં સ્વરૂપને તથા વેદના અર્થને યથાર્થ રીતે જાણે છે, તે બ્રાહ્મણોની મનુષ્યો પૂજા કરે છે. ૨૪

૨૪ આ શ્લોકનું તાત્પર્ય એવું છે કે, બ્રાહ્મણ જાતે વિદ્વાન્ હોય, પરંતુ તે નિત્ય ગાયત્રીનો જપ કરતો ન હોય, તેમ જેને પરબ્રહ્મના સ્વરૂપનું પણ જ્ઞાન ન હોય

તો તે વિદ્વાન બ્રાહ્મણ શૂદ્રના કરતાં પણ અધમ ગણાય છે. કેવળ વિદ્યા ભણવાથી શ્રેષ્ઠતા આવતી નથી પરંતુ ધર્માચરણથી શ્રેષ્ઠતા આવે છે. માટે સંધ્યા, ગાયત્રી વગેરે નહિ કરનારા બ્રાહ્મણોની સભા પણ પરિષદ્ કહેવાતી નથી.

दुःशीलोपि द्विजः पूज्यो न तु शूद्रो जितेन्द्रियः ।
कः परित्यज्य गां दुष्टां दुहेच्छीलवतीं खरीम् ॥ २५ ॥

બ્રાહ્મણ નઠારા આચરણવાળો હોય તોપણ તે બ્રાહ્મણ તરિકે પૂજ્ય ગણાય છે અને શૂદ્ર જીતેંદ્રિય હોય તોપણ તે પૂજ્ય ગણાતો નથી. કયો પુરુષ લાત મારવી વગેરે દોષોથી દૂષિત હોવા છતાં પણ ગાયનો ત્યાગ કરીને સારા સ્વભાવની ગધેડીને દોહે? ૨૫

૨૫ આ શ્લોકનો અભિપ્રાય એવો છે કે, પાપનું પ્રાયશ્ચિત્ત તથા ધર્મનો નિર્ણય બ્રાહ્મણોને જ પૂછવો બીજાઓને પૂછવો નહિ.

धर्मशास्त्ररथारूढा वेदखङ्गधरा द्विजाः ।
क्रीडार्थमपि यद्ब्रूयुः स धर्मः परमः स्मृतः ॥ २६ ॥

યુદ્ધ કરવામાટે હાથમાં તરવાર લઈને રથમાં બેઠેલા પુરુષો હાથમાં તરવાર લઈને સામા લઢવામાટે આવનારા પુરુષોને આવતાં વિલંબ લાગશે તોપણ તેઓ યુદ્ધ શિવાય બીજી ક્રિયા કરશે નહિ. તેમ ધર્મશાસ્ત્રરૂપી રથમાં બેઠેલા અને વેદરૂપી તરવારને ધારણ કરનારા બ્રાહ્મણો રમતમાં પણ જે કંઇ બોલે તેને પરમ ધર્મ જાણવો. ૨૬

'चातुर्वेद्यो विकल्पी च अङ्गविद्धर्मपाठकः ।
त्रयश्चाश्रमिणो मुख्याः पर्षदेषा दशावरा ॥ २७ ॥

ચાતુર્વેદ્ય–ચાર વેદ જાણનારા, વિકલ્પી, વેદોનાં અંગો જાણનારા તથા ધર્મશાસ્ત્રોને જાણનારા, આવા બ્રહ્મચારી, ગૃહસ્થ અથવા તો વાનપ્રસ્થ એ ત્રણ આશ્રમના ઓછામાં ઓછા દશ બ્રાહ્મણોની સભા **પર્ષત્** (બ્રાહ્મણ-સભા) કહેવાય છે. ૨૭

૨૭ ઋગ્વેદ, યજુર્વેદ, સામવેદ અને અથર્વણ વેદ એમ ચાર વેદ જાણનારો ચાતુર્વેદ્ય કહેવાય છે અને ધર્મશાસ્ત્રની, પર્ષદની અને પ્રાયશ્ચિત્તની વ્યવસ્થાને જાણનારો વિકલ્પી કહેવાય છે. આ રીતે આ શ્લોકમાં કહેલા ગુણવાળા ત્રણ આશ્રમના બ્રાહ્મણોની સભા પરિષદ્ કહેવાય છે; ત્રણ આશ્રમના બ્રાહ્મણો એમ કહીને સંન્યાસીને પ્રાયશ્ચિત્ત આપવાનો અધિકાર નથી એમ જણાવ્યું છે. બ્રાહ્મણ સભામાં ઉપર દર્શાવેલા ગુણવાળા ઓછામાં ઓછા દશ બ્રાહ્મણ જોઇએ. અહીં કોઈ ટીકાકાર દશ બ્રાહ્મણની ગણત્રી આ પ્રમાણે કરે છે;–ઋગ્વેદ વગેરેને જાણનારા ચાર

બ્રાહ્મણ, એક વિકલ્પી બ્રાહ્મણ, એક ધર્મશાસ્ત્ર જાણનારો બ્રાહ્મણ, એક વેદનાં અંગ જાણનારો બ્રાહ્મણ અને બ્રહ્મચારી, ગૃહસ્થ તથા વાનપ્રસ્થ એમ ત્રણ બ્રાહ્મણ મળીને દશ બ્રાહ્મણની સભા ગણાય છે. પરંતુ આવો અર્થ કરવાથી પ્રથમ કહેલાં પરિષદ્‌ના લક્ષણમાં બાધ આવશે; પ્રથમ પરિષદ્‌ને માટે બ્રાહ્મણની યોગ્યતા દર્શાવતાં કહ્યું છે કે;—चत्वारो वा त्रयो वापि यं ब्रूयुर्वेदपारगाः ॥ ત્રણ આશ્રમના એક એક બ્રાહ્મણને લેશું તો તેમાં જ્ઞાનરૂપી ગુણનો બાધ આવશે. માટે આ રીતે દશ બ્રાહ્મણની ગણના કરવી એ ભગવાન પરાશરના વિચારથી વિરુદ્ધ જાય છે. માટે ત્રણ આશ્રમમાંના અને પ્રથમના બે ચરણમાં દર્શાવેલા ગુણવાળા દશ બ્રાહ્મણોની સભા પર્ષદ્ ગણાય છે આવો અર્થ કરવો યોગ્ય લાગે છે. ક્ષત્રિય જાતિના તથા વૈશ્ય જાતિના પાતકી પુરુષને પ્રાયશ્ચિત આપવા માટે કેટલા બ્રાહ્મણોની પરિષદ્ ભરવી તેના સંબંધમાં અંગિરા કહે છે કે;—परिषद्या ब्राह्मणानां सा राज्ञां द्विगुणा मता । वैश्यानां त्रिगुणा चैव परिषच्च व्रतं स्थितम् ॥ બ્રાહ્મણોને માટે જે પરિષદ્ કહી તેના કરતાં ક્ષત્રિયોને માટે બમણા બ્રાહ્મણોની પરિષદ્ કરવી અને વૈશ્યોને માટે ત્રણગણી કરવી. તથા બ્રાહ્મણને જે પ્રાયશ્ચિત્ત કહ્યું હોય તેના કરતાં ક્ષત્રિયને એકચતુર્થાંશ ઓછું આપવું. વૈશ્યને અર્ધું આપવું અને શૂદ્રને એક ચતુર્થાંશ પ્રાયશ્ચિત્ત આપવું.

राज्ञश्चानुमते स्थित्वा प्रायश्चित्तं विनिर्दिशेत् ।
स्वयमेव न कर्त्तव्यं कर्त्तव्या स्वल्पनिष्कृतिः ॥ २८ ॥

સભાસદોએ રાજાની અનુમતિ લઇને અપરાધીને પ્રાયશ્ચિત કહેવું. પરંતુ રાજાની અનુમતિ વિના પંડેજ પ્રાયશ્ચિત કહેવું નહિ. પરંતુ સાધારણ પ્રાયશ્ચિત આપવું હોય તો પંડે પણ આપવું. (રાજાની અનુમતિ લેવી નહિ.) ૨૮

૨૮ મહાપાપ વિનાનાં બીજાં પાપોનું પ્રાયશ્ચિત આપવું હોય તો રાજાની અનુમતિ વગર પણ આપી શકાય.

ब्राह्मणांस्तानतिक्रम्य राजा कर्त्तुं यदीच्छति ।
तत्पापं शतधा भूत्वा राजानमनुगच्छति ॥ २९ ॥

રાજા બ્રાહ્મણોની સંમતિ લીધા વગર સ્વતંત્રતાથી જો પાપનું પ્રાયશ્ચિત્ત આપવાની ઇચ્છા કરે છે તો તે પાપીનું પાપ સોગણું થઇને રાજાની પાછળ પડે છે અર્થાત્ તે પાપ રાજાને લાગે છે. ૨૯

प्रायश्चित्तं सदा दद्याद्देवतायतनाग्रतः ।
आत्मकृच्छ्रं ततः कृत्वा जपेद्वै वेदमातरम् ॥ ३० ॥

પાપીને પ્રાયશ્ચિત્ત આપવું હોય ત્યારે સદાય દેવમંદિરની સન્મુખ

બેસીને પ્રાયશ્ચિત્ત આપવું, અને પાપીને પ્રાયશ્ચિત્ત આપ્યા પછી પ્રાયશ્ચિત્ત કહેનારાઓએ કૃચ્છ્ર પ્રાયશ્ચિત્ત કરીને ગાયત્રીનો જપ કરવો. ૩૦

૩૦ આ શ્લોકમાં दद्यात् એ વિધિલિઙ્ અયોગવ્યવચ્છેદક છે અર્થાત્ પ્રાયશ્ચિત્ત માગનારાને બ્રાહ્મણોએ પ્રાયશ્ચિત્ત આપવું જોઇએ. સભામાં બેઠા પછી જો કોઈ બ્રાહ્મણ પ્રાયશ્ચિત્ત આપવાની ના કહે તો તેને પાતક લાગે છે, એમ અંગિરાસ્મૃતિમાં કહ્યું છે. અંગિરાસ્મૃતિમાં કહ્યું છે કે;—

आर्तानां मार्गमाणानां प्रायश्चित्तानि ये द्विजाः ।
जानन्तो न प्रयच्छन्ति ते तेषां समभागिनः ॥
तस्यादार्त्तं समासाद्य ब्राह्मणांस्तु विशेषतः ।
जानद्भिः पर्षदः पन्था न हातव्यः पराङ्मुखैः ॥
तस्य कार्यो व्रतादेशः पावनार्थे हितेप्सुभिः ।
अज्ञानामुपदेष्टव्यं क्रमशः सर्वमेव च ॥
यथाभ्युद्धरते कश्चिद्भयार्त्तं ब्राह्मणं क्वचित् ।
एवं पापात्समुद्धृत्य तेन तुल्यं फलं लभेत् ॥

પાપથી આર્ત થયેલા પુરુષો પ્રાયશ્ચિત્ત માગતા હોય પરંતુ પ્રાયશ્ચિત્ત જાણતાં છતાં જેઓ પ્રાયશ્ચિત્ત આપતા નથી તેઓ તેઓના પાપના સરખા ભાગી થાય છે. માટે કોઈ આતુર પુરુષ અને તેમાં પણ બ્રાહ્મણ પ્રાયશ્ચિત્ત પૂછવા માટે આવે તો પાપનું પ્રાયશ્ચિત્ત જાણનારા વિદ્વાન્ બ્રાહ્મણોએ પરાઙ્મુખ થવું નહિ, પરંતુ બ્રાહ્મણોની પર્ષદ્ મેળવવી અને તેનું હિત ઇચ્છીને તેને પવિત્ર કરવામાટે પ્રાયશ્ચિત્તનો ઉપદેશ કરવો. તથા જેઓ પ્રાયશ્ચિત્તના વિધિથી અજાણ્યા હોય તેઓને અનુક્રમથી પ્રાયશ્ચિત્તનો સર્વ વિધિ પણ કહી બતાવવો. આ રીતે પ્રાયશ્ચિત્ત આપીને જે પાપીનો પાપમાંથી ઉદ્ધાર કરે છે તે જેમ કોઈ ભયાતુર બ્રાહ્મણને ભયમાંથી મુક્ત કરે છે અને તેને જે પ્રમાણે ફળ મળે છે તે પ્રમાણે જ પ્રાયશ્ચિત્ત આપીને પાપીનો ઉદ્ધાર કરનારાને પણ ફળ મળે છે.

પાપીને કેવું તથા કેટલું પ્રાયશ્ચિત્ત આપવું તેના સંબંધમાં બૌધાયન કહે છે કે;–

शरीरं बलमायुश्च वयः कालं च कर्म च । समीक्ष्य धर्मविद्बुद्ध्या प्रायश्चित्तं प्रकल्पयेत् ॥

बौ. स्मृति. १–१–१–१५.

ધર્મવેત્તા પુરુષે, જેને પ્રાયશ્ચિત્ત આપવું હોય તેનાં શરીરને, બળને, આયુષ્યને, ઉમરને, ચાલતા સમયને તથા તેનાં કર્મને ધ્યાનપૂર્વક જોઇને તેનાથી કેવી રીતનું પ્રાયશ્ચિત્ત થઈ શકશે તેનો બુદ્ધિ સાથે વિચાર કરીને પાપીને પ્રાયશ્ચિત્ત આપવું.

બ્રાહ્મણસભાએ પાપીને કેવી રીતે પ્રાયશ્ચિત્ત આપવું તે વિશે અંગિરાસ્મૃતિમાં વિસ્તારથી કહ્યું છે;—

ततस्ते प्रणिपातेन दृष्ट्वा तं समुपस्थितम् ।
विप्राः पृच्छन्ति तत्कार्यमुपविश्यासने स्थितम् ॥

किन्ते कार्यं किमर्थं वा सदा मृगयसे द्विजान् ।
पर्षदि ब्रूहि तत्सर्वं यत्कार्यं हितमात्मनः ॥
सत्येन द्योतते राजा सत्येन द्योतते रविः ।
सत्येन द्योतते वह्निः सर्वं सत्ये प्रतिष्ठितम् ॥
भूर्भुवःस्वस्त्रयो लोकास्तेऽपि सत्ये प्रतिष्ठिताः ।
अस्माकं चैव सर्वेषां सत्यमेव परं बलम् ॥
यदि चेद्वक्ष्यसे सत्यं नियतं प्राप्स्यसे शुभम् ।
यथागतोऽस्यसत्येन न तु शुध्यसि केनचित् ॥
सत्येन तु विशुद्ध्यन्ति शुद्धिकामाश्च मानवाः ।
तस्मात्तद्वद यत्सत्यमादिमध्याऽवसानिकम् ॥
एवं तैः समनुज्ञातः सर्वं ब्रूयादशेषतः ।
यस्मिन्निवेदिते कार्ये निष्कास्यो यस्तु कार्यवान् ॥
तस्मिन्नुत्सारिते पापे यथावद्धर्मपाठकः ।
ते तथा तत्र जल्पेयुर्विमृशन्तः परस्परम् ॥
आपद्धर्मेषु यत्प्रोक्तं यच्च सानुग्रहं भवेत् ।
परिषत्संपदश्चैव कार्याणां च बलाबलम् ॥
प्राप्य देशं च कालं च यच्च कार्यान्तरं भवेत् ।
पर्षत्संश्चिन्त्य तत्सर्वं प्रायश्चित्तं विनिर्दिशेत् ॥
सर्वेषां निश्चितं यत्स्यात् यच्च प्राणान् न घातयेत् ।
आहूय श्रावयेदेकः पर्षदा जो नियोजितः ॥
शृणुष्व भो इदं विप्र यत्ते आदिश्यते व्रतम् ।
तत्प्रयत्नेन कर्तव्यमन्यथा ते वृथा भवेत् ॥
यथा भवेत्तथा चीर्णे तदा शुद्धिप्रकाशनम् ।
कार्यं सर्वं प्रयत्नेन शक्त्या विप्राभिभाषितम् ॥

પાપ કરનારાએ જ્યાં બ્રાહ્મણો આસન ઉપર બેઠા હોય ત્યાં આવી તેઓને પ્રણામ કરીને ઉભું રહેવું એટલે બ્રાહ્મણોએ હાજર થયેલા પાપીને પ્રશ્ન કરવો કે તારું કયું કાર્ય છે? તું સદાય શા માટે બ્રાહ્મણોને શોધ્યા કરે છે? તારું પોતાનું જે હિતકારી કાર્ય હોય તે સર્વ તું બ્રાહ્મણસભાની પાસે કહે! રાજા સત્ય ભાષણથી પ્રજા ઉપર રાજ્ય કરે છે, સૂર્ય સત્યથી પ્રકાસ્યા કરે છે, અને અગ્નિ પણ સત્યથી પ્રકાસ્યા કરે છે. આ રીતે સર્વ સત્યને આધારે રહેલું છે. ભૂર્લોક, ભુવર્લોક અને સ્વર્ગલોક આ ત્રણ લોક પણ સત્યને આધારે રહેલા છે. અમારા સર્વનું પરમ બળ પણ સત્યને આધારે રહેલું છે. તું પણ જો સત્ય ભાષણ કરીશ તો તારું અવસ્ય શુભ થાશે. પરંતુ તું જો અસત્ય ભાષણ કરીશ તો કોઈ પણ રીતે શુદ્ધ થઈશ નહિ. મનુષ્યોને પવિત્ર થવાની ઇચ્છા હોય તો તેઓ સત્ય ભાષણથી શુદ્ધ (પવિત્ર) થાય

છે. માટે તારે પણ આરંભમાં, મધ્યમાં અને અંતમાં સત્ય ભાષણ કરવું. આવી રીતે બ્રાહ્મણો આજ્ઞા કરે, એટલે પાતકીએ પોતાની સર્વ વાર્તા કહેવી. પાપી પોતાનું પાપ કહી રહે, એટલે તેને સભામાંથી બહાર કાઢવો અને પછી ધર્મપાઠકોએ (પ્રાયશ્ચિત્ત આપનારા ધર્મશાસ્ત્રીઓએ) પ્રાયશ્ચિત્તના સંબંધમાં પરસ્પર વિચાર કરવો. આપદ્ધર્મમાં જે પ્રાયશ્ચિત્ત કહ્યું હોય તેનો, જે પ્રાયશ્ચિત્તથી પાપીનો અનુગ્રહ થતો હોય તેવાં પ્રાયશ્ચિત્તનો, પાપના બળાબળનો, પરિષદની સંપત્તિનો, દેશનો, કાળનો તથા બીજાં તેને લગતાં સર્વ કાર્યોનો વિચાર કરીને પાપીને પ્રાયશ્ચિત્ત આપવું. એ પ્રાયશ્ચિત્ત સર્વેએ એકમતથી નિશ્ચય કરેલું હોવું જોઇએ તથા જે કરવાથી પ્રાણનો નાશ થાય નહિ, તેવું હોવું જોઇએ. તે પછી પર્ષદે જેની યોજના કરી હોય તેવા એક અનુવાદક પુરુષે પાપીને બોલાવીને કહેવું કે, હે દ્વિજ! સાંભળ! આ સભા તને જે પ્રાયશ્ચિત્ત કરવાની આજ્ઞા કરે છે, તે પ્રાયશ્ચિત્ત તારે પ્રયત્નથી કરવું; જો પ્રયત્નપૂર્વક કરીશ નહિ તો તારું પાપ નાશ પામશે નહિ. પરંતુ તું જો કહ્યા પ્રમાણે પ્રાયશ્ચિત્ત કરીશ તો શુદ્ધ થઇશ. માટે તારે બ્રાહ્મણોના કહેવા પ્રમાણે પ્રયત્નથી શક્તિપૂર્વક સર્વ પ્રાયશ્ચિત્ત કરવું. આ રીતે અનુવાદકે સભાસદોના તરફથી અપરાધીને કહેવું. આ પ્રાયશ્ચિત્ત બ્રાહ્મણોએ શિવમંદિર, વિષ્ણુમંદિર વગેરે કોઇ દેવસ્થાનમાં બેસીને આપવું અને પ્રાયશ્ચિત્ત આપ્યા પછી પ્રાયશ્ચિત્ત આપનારાઓએ પણ કૃચ્છ્ર વ્રત કરીને ગાયત્રીનો જપ કરવો.

હવે આ અધ્યાયના આરંભમાં પૂછેલું ગાયની હત્યાનું પ્રાયશ્ચિત્ત કહે છે;–

सशिखं वपनं कृत्वा त्रिसन्ध्यमवगाहनम् ।
गवां मध्ये वसेद्रात्रौ दिवा गाश्चाप्यनुव्रजेत् ॥ ३१ ॥

જેણે ગાયનો વધ કર્યો હોય (ગોહત્યા કરી હોય), તેણે માથા ઉપરનો થોડો ભાગ બાકી રાખીને મુંડન કરાવવું, સવારે, મધ્યાહ્ને અને સાયંકાળે નદી તળાવ વગેરે નવાણમાં સ્નાન કરવું, રાત્રે ગાયોની વચ્ચે વાસ કરવો અને દિવસે ગાયો વનમાં ચરવા જાય ત્યારે તેની પાછળ પાછળ વનમાં જાવું.

उष्णे वर्षति शीते वा मारुते वाति वा भृशम् ।
न कुर्वीतात्मनस्त्राणं गोरकृत्वा स्वशक्तितः ॥ ३२ ॥

ઉનાળામાં ગાયને છાયામાં બેસાર્યા પછી પંડે છાયામાં બેસવું, વરસાદ વરસતો હોય ત્યારે ગાયોને માટે ઝુંપડી વગેરે કરીને તેની રક્ષા કર્યા પછી પોતાની રક્ષા કરવી, શિયાળામાં ટાઢ પડતી હોય ત્યારે ગાયને ધાબળી વગેરેથી ઢાંકીને તેની ટાઢ પ્રથમ દૂર કરવી અને પછી પોતાની ટાઢ દૂર કરવી, પવન અત્યંત વાતો હોય ત્યારે પણ ગાયનું પવનથી રક્ષણ

ર્ક્યા પછી પોતાનું રક્ષણ કરવું. આ રીતે ગોહત્યા કરનારાએ શક્તિ પ્રમાણે ગાયનું રક્ષણ કર્યા વગર પોતાનું રક્ષણ કરવું નહિ. ૩૨

आत्मनो यदि वान्येषां गृहे क्षेत्रेऽथवा स्वके ।
भक्षयन्तीं न कथयेत्पिबन्तं चैव वत्सकम् ॥ ३३ ॥

પોતાના અથવા તો બીજાના ઘરમાં, ક્ષેત્રમાં અથવા તો ખળામાં ગાય અનાજ વગેરે ખાતી હોય તો પણ તેના ધણીને કહેવું નહિ તથા ગાયને વાછડું ધાવી જાતું હોય, તોપણ તેના ધણીને કહેવું નહિ. ૩૩

पिबन्तीषु पिबेत्तोयं संविशन्तीषु संविशेत् ।
पतितां पङ्कमग्नां वा सर्वप्राणैस्समुद्धरेत् ॥ ३४ ॥

ગાયોની પાછળ જનારા ગોહત્યારાએ ગાયોને પાણી પાયા પછી પોતે પીવું, ગાયો બેઠા પછી પોતે બેસવું, ગાય ટેકરા વગેરેપરથી પડી જાય અથવા તો ગારામાં ખુંચી જાય તો પોતાના પ્રાણોની પણ દરકાર ર્ક્યા વગર ગાયને ખાડામાંથી અથવા તો ગારામાંથી બહાર કાઢવી. ૩૪

ब्राह्मणार्थे गवार्थे वा सद्यः प्राणान्परित्यजेत् ।
मुच्यते ब्रह्महत्याया गोप्ता गोब्राह्मणस्य च ॥ ३५ ॥

ગાયોનાં રક્ષણમાટે તથા બ્રાહ્મણોનાં રક્ષણમાટે પુરુષે પોતાના પ્રાણો ત્યાગ કરી દેવા. ગાયોનું અને બ્રાહ્મણોનું રક્ષણ કરનારો પુરુષ બ્રહ્મહત્યાના પાપમાંથી મુક્ત થાય છે. ૩૫

૩૫ આ શ્લોકનો તાત્પર્ય એવો છે કે, ગાયોનું તથા બ્રાહ્મણોનું રક્ષણ કરવાથી બ્રહ્મહત્યાનું પાપ નાશ પામે છે તો પછી ગોહત્યાનું પાપ નાશ પામે, એમાં તો કહેવું જ શું ?

गोवधस्यानुरूपेण प्राजापत्यं विनिर्दिशेत् ।
प्राजापत्यं ततः कृच्छ्रं विभजेत्तच्चतुर्विधम् ॥ ३६ ॥

ગોવધનું (ગાયની હત્યાનું) પ્રાયશ્ચિત્ત આપનારાએ ચાર પ્રકારની ગોહત્યાના પાપનો વિચાર કરીને તે હત્યાના પ્રમાણમાં ચાર પ્રકારનું પ્રાજાપત્ય કૃચ્છ્ર અપરાધીને આપવું. ૩૬

૩૬ જેણે જેવી રીતની ગોહત્યા કરી હોય, તેને તેના પાપના પ્રમાણમાં પ્રાજાપત્યના ચાર વિભાગ કરીને તેના પાપના પ્રમાણમાં પ્રાજાપત્ય વ્રતનો ઉપદેશ કરવો.

एकाहमेकभक्ताऽशी एकाहं नक्तभोजनः ।
अयाचिताश्येकमहरेकाहं मारुताशनः ॥ ३७ ॥

ગોહત્યા કરનારાએ એક દિવસ એકવાર ભોજન કરવું, એક દિવસ રાત્રે ભોજન કરવું, એક દિવસ માગ્યા વગર જે મળે તે ખાઇને અને એક દિવસ વાયુનું ભક્ષણ કરીને રહેવું, અર્થાત્ ઉપવાસ કરવો. ૩૭

૩૭ આ પ્રથમ પ્રકારનું પ્રાજાપત્ય વ્રત છે.

दिनद्वयं चैकभक्तो द्विदिनं नक्तभोजनः ।
दिनद्वयमयाची स्याद्विदिनं मारुताशनः ॥ ३८ ॥

બે દિવસ એકવાર દિવસે ભોજન કરવું, બે દિવસ એકવાર રાત્રે ભોજન કરવું, બે દિવસ માગ્યા વગર જે મળે તે ખાઇને રહેવું અને બે દિવસ પવનનો આહાર કરવો, અર્થાત્ ઉપવાસ કરવો. ૩૮

૩૮ આ બીજા પ્રકારનું પ્રાજાપત્ય વ્રત છે.

त्रिदिनं चैकभक्ताशी त्रिदिनं नक्तभोजनः ।
दिनत्रयमयाची स्यात्रिदिनं मारुताशनः ॥ ३९ ॥

ત્રણ દિવસ એક વખત દિવસના ભોજન કરવું, ત્રણ દિવસ રાત્રે એક વખત ભોજન કરવું, ત્રણ દિવસ માગ્યા વગર જે મળે તે ખાઇને રહેવું અને ત્રણ દિવસ વાયુનો આહાર કરીને રહેવું. ૩૯

૩૯ આ ત્રીજા પ્રકારનું પ્રાજાપત્ય વ્રત છે.

चतुरहं त्वेकभक्ताशी चतुरहं नक्तभोजनः ।
चतुर्दिनमयाची स्याच्चतुरहं मारुताशनः ॥ ४० ॥

ચાર દિવસ એક વખત દિવસના ભોજન કરવું, ચાર દિવસ રાત્રે ભોજન કરવું, ચાર દિવસ માગ્યા વગર ભોજન કરવું અને ચાર દિવસ વાયુનો આહાર કરીને રહેવું. ૪૦

૪૦ આ ત્રીજા પ્રકારનું પ્રાજાપત્ય વ્રત છે.

प्रायश्चित्ते ततश्चीर्णे कुर्याद्ब्राह्मणभोजनम् ।
विप्राणां दक्षिणां दद्यात्पवित्राणि जपेद्द्विजः ॥ ४१ ॥

ગોહત્યાનું પ્રાયશ્ચિત્ત કર્યા પછી દ્વિજ જાતિના પુરુષે બ્રાહ્મણોને ભોજન કરાવવું, તેઓને દક્ષિણા આપવી તથા વેદના મંત્રોનો જપ કરવો. ૪૧

૪૧ આ ચોથા પ્રકારનું પ્રાજાપત્ય વ્રત છે.

૪૧ ગાયને અટકાવતાં અથવા તો કોઝ વગેરેમાં પૂરતાં તેનું મરણ નિપજ્યું હોય તો પ્રથમ પ્રકારનું પ્રાજાપત્ય કરવું, ગાયને બાંધતાં તેનું મરણ નિપજે તો બીજા પ્રકારનું પ્રાજાપત્ય કરવું, મોરી બાંધતાં મરણ નિપજે તો ત્રીજા પ્રકારનું અને લાકડી વગેરે મારતાં મરણ નિપજે તો ચોથા પ્રકારનું પ્રાજાપત્ય કરવું. માધવાચાર્ય આ ચાર પ્રકારનાં પ્રાયશ્ચિત્ત આપવાના સંબંધમાં એવો નિર્ણય આપે છે કે, એક વર્ષની ગાયની હત્યા કરી હોય તો પ્રથમ પ્રકારનું, બે વર્ષની ગાયની હત્યા કરી હોય તો બીજા પ્રકારનું, ત્રણ વર્ષની ગાયની હત્યા કરી હોય તો ત્રીજા પ્રકારનું અને ચાર વર્ષની ગાયની અથવા તો તેથી વિશેષ વર્ષની ગાયની હત્યા કરી હોય તો ચોથા પ્રકારનું પ્રાયશ્ચિત્ત કરવું. ભગવાન્ મનુએ ગોવધનું પ્રાયશ્ચિત્ત આના કરતાં વધારે કઠિન કહ્યું છે. ગાયોની રક્ષા કરવાથી જેમ અદૃષ્ટ ફળ છે, તેમ દૃષ્ટ ફળ પણ છે. કારણ કે ભારતવર્ષની ખેતીવાડીનો જેના ઉપર મોટો આધાર છે, એવા બળદોની ઉત્પત્તિનો આધાર ગાયો ઉપર છે, એટલુંજ નહિ પરંતુ જન્મ થતાં વેંત જ ગાયના દૂધ ઉપર બાળકોનો આધાર રહેલો છે. તેના દુધ, દહિ અને ઘીમાં બીજા દુધાળાં ઢોર કરતાં વિશેષ ગુણ રહેલો છે. આ સર્વ તરફ જોઇને ગાયની રક્ષા અવશ્ય કરવી જ જોઇએ.

ब्राह्मणान्भोजयित्वा तु गोघ्नः शुद्ध्येन्न संशयः ॥ ४२ ॥

इतिश्री पराशरसंहितायां प्रायश्चित्तकाण्डे गोवधनिष्कृतिर्नाम अष्टमोऽध्यायः समाप्तः ॥

ગોહત્યા કરનારા પુરુષે પ્રાયશ્ચિત્ત કર્યા પછી બ્રાહ્મણોને જમાડવા. એમ કરવાથી તે શુદ્ધ થાય છે, એમાં સંદેહ નથી. ૪૨

ઇતિ શ્રીપારાશર ધર્મશાસ્ત્રમાં 'ગોહત્યાના પાપના પ્રાયશ્ચિત્તનો નિર્ણય' એ નામનો અધ્યાય ૮ મો સમાપ્ત.



अध्याय ९ मो.

गोवधना प्रायश्चित्तनो निर्णय.

આઠમા અધ્યાયમાં ગોહત્યાનું સામાન્ય પ્રાયશ્ચિત્ત કહ્યું. હવે આ નવમા અધ્યાયમાં ગાયને રોધ, બંધન વગેરે કરવાથી ગોહત્યા થઈ જાય તો તેનું પ્રાયશ્ચિત્ત કહે છે;—

गवां संरक्षणार्थाय न दुष्येद्रोधबन्धयोः ।
तद्वधं तु न तं विद्यात्कामाकामकृतं तथा ॥ १ ॥

ગાયને તેના રક્ષણને માટે ગોશાળામાં પૂરી રાખી હોય અથવા તો તેને દોરડાવડે બાંધી રાખી હોય અને તેમ કરતાં ગાયનું મરણ નિપજે તો તેથી પૂરી રાખનારાને અથવા તો બાંધનારાને પાતક લાગતું નથી. કારણ કે એ પ્રમાણે કરવાથી ગાયનું મરણ નિપજે છે, તેને ગાયનો વધ (નાશ) કર્યો જાણવો નહિ. પરંતુ ગાયને કોઈ પણ જાતનો ભય ન હોય, છતાં જે ગાયને ગોશાળામાં પૂરી રાખે અથવા તો દોરડાવડે બાંધી મૂકે અને તેમ કરતાં તેનું મરણ નિપજે તો પૂરનારાને તથા બાંધનારાને ગોહત્યાનું પાતક લાગે છે. ૧

૧ ખડ ખાઇ જવાના ભયથી ગાયને ગોશાળામાં પૂરી રાખવી, તેને रोध કહે છે અને દોહોતી વખતે ગાયના ગળામાં દોરડું નાખવું અથવા તો તેના બન્ને પગ નોઝણાથી બાંધવા, તેને बंध એટલે બંધન કહે છે. આમાં એક रोध હિતકારક છે અને બીજો रोध અહિતકારક છે. ગાય માંદી પડી હોય અને ગમે તે ખાઇ જતી હોય, તેને ખાતાં અટકાવવા માટે ગોશાળામાં રુંધવામાં આવે તે હિતકારક રોધ કહેવાય છે અને ભુખી તથા તરસી ગાયને ગોશાળામાં કે ગોંદરામાં રુંધી રાખવી તે અહિતકારક રોધ કહેવાય છે. એ રીતે જ બંધનના સંબંધમાં પણ સમજવું. તેમાં ગાયના હિતને માટે ગાયને પૂરવામાં અથવા તો બાંધવામાં આવે તો તેથી પ્રાયશ્ચિત્તના નિમિત્તરૂપ પાપ ઉત્પન્ન થતું નથી. અંગિરા કહે છે કે;— सायं संगोपनार्थं तु न दुष्येद्रोधबन्धयोः ॥ સાયંકાળે ગાયની રક્ષા કરવા માટે તેને ગોશાળામાં પૂરવામાં આવે અથવા તો બાંધવામાં આવે તો તેથી પૂરનારાને અથવા તો બાંધનારાને પાપ લાગતું નથી.

दण्डादूर्ध्वं यदन्येन प्रहाराद्यदि पातयेत् ।
प्रायश्चित्तं तदा प्रोक्तं द्विगुणं गोवधे चरेत् ॥ २ ॥

દંડના કરતાં વધારે લાંબી લાકડી જો કોઈ ગાયને મારીને તેને જમીન ઉપર પાડી નાંખે તો તેણે અજાણતાં કરેલી ગોહત્યાનું જે પ્રાયશ્ચિત્ત (આઠમા અધ્યાયમાં) કહ્યું છે, તેનાથી બમણું પ્રાયશ્ચિત્ત કરવું. ૨

૨ અધ્યાય ૮ માનો ૩૧ મો શ્લોક જુવો. તેમાં ગોહત્યાનું પ્રાયશ્ચિત્ત લખ્યું છે, તેનાથી બમણું પ્રાયશ્ચિત્ત કરવું.

रोधबन्धनयोक्त्राणि घातश्चेति चतुर्विधम् ।
एकपादं चरेद्रोधे द्वौ पादौ बन्धने चरेत् ॥ ३ ॥
योक्त्रेषु पादहीनं स्याच्चरेत्सर्वं निपातने ।

रोध, बंधन, योक्त्र અને घात એવાં ચાર કારણોથી ગાયનો વધ થાય છે. તેમાં रोध કરવાથી જો ગાયનું મરણ નિપજે તો એક પાદ પ્રાયશ્ચિત્ત

કરવું, बंधनथी મરણુ નિપજે તો બે પાદ પ્રાયશ્ચિત્ત કરવું, योक्त्र ચઢાવતાં મરણુ નિપજે તો ત્રણુ પાદ પ્રાયશ્ચિત્ત કરવું અને घाતથી મરણુ નિપજે તો સંપૂર્ણુ પ્રાયશ્ચિત્ત કરવું. ૩

૩ કોઇને શંકા થાય કે;—આઠમા અધ્યાયમાં ગોહત્યાનું પ્રાયશ્ચિત્ત સોળ રાત્રિનું કહ્યું છે અને આ અધ્યાયમાં જાણી જોઇને કરેલી ગોહત્યાનું પ્રાયશ્ચિત્ત ચાર દિવસનું કહ્યું છે. માટે પૂર્વાપરનાં વચનોમાં વિરોધ આવશે. પરંતુ અહીં વિરોધ જેવું કંઇ પણ નથી. અહીં જે ચાર દિવસનું પ્રાયશ્ચિત્ત કહ્યું છે, તે અજાણતાં વાછડા વગેરેની હત્યા થઇ ગઈ હોય તેનું પ્રાયશ્ચિત્ત જાણવું. કોઇ કહેશે કે આઠમા અધ્યાયમાં ચાર, આઠ, બાર અને સોળ રાત્રિએ પૂરું થનારું પ્રાજાપત્ય નામનું જે કૃચ્છ્ર વ્રત કહ્યું છે, તેમાં નાનાં વાછડાં વગેરેની હત્યાનું પ્રાયશ્ચિત્ત પણુ સમાઈ જાય છે. માટે અહીં જે કહ્યું છે તે પુનરુક્તિરૂપ ગણાશે; પરંતુ તેમ જાણવું નહિ. આઠમા અધ્યાયમાં જે પ્રાયશ્ચિત્ત કહ્યું છે, તે કેવળ રાત્રે રક્ષણુ કરવા માટે ગોશાળામાં પૂરેલી અથવા તો બાંધેલી ગાયનું મરણુ દૈવેચ્છાથી થઇ જાય તેનું પ્રાયશ્ચિત્ત કહ્યું છે અને આ અધ્યાયમાં ગાય વગેરેનો રોધાદિક કરતાં મરણુ નિપજે તો તેને માટે પ્રાયશ્ચિત્ત કહ્યું છે.

રોધ વગેરે શબ્દની વ્યાખ્યા કરે છે;—

गोवाटे वा गृहे वापि दुर्गे वाप्यसमस्थले ॥ ४ ॥
नदीष्वथ समुद्रेषु त्वन्येषु च नदीमुखे ।
दग्धे देशे मृता गावस्तम्भनाद्रोध उच्यते ॥ ५ ॥

ગાયના વાડામાં, ઘરમાં, પર્વતના સંકીર્ણુ પ્રદેશોમાં, વિષમ સ્થળમાં, નદીઓના પ્રદેશોમાં, સમુદ્રોના તીર ઉપર, વાવ, કુવા, તળાવ વગેરેના પ્રદેશોમાં, સમુદ્રના તથા નદીના સંગમ ઉપર તથા જ્યાં દાવાનળ લાગ્યો હોય તેવા પ્રદેશોમાં ગાયને પૂરી રાખી હોય ને તેથી ગાય મરણુ પામે તો તે रोधमरण કહેવાય છે. ૪–૫

योक्त्रदामकदोरैश्च कण्ठाभरणभूषणैः ।
गृहे वापि वने वापि बद्धः स्याद्गौर्मृता यदि ॥ ६ ॥
तदेव बन्धनं विद्यात्कामाकामकृतं च यत् ।

योक्त्र એટલે જોતર, દામ એટલે દોરડું, સાધારણુ દોરડું તથા ગળામાં આભૂષણુ તરિકે બાંધવામાં આવતી ઘંટા વગેરે, આમાંના કોઇ એકથી બાંધેલી ગાય અથવા તો બળદ ઘરમાં અથવા તો વનમાં મરણુ પામે તો તે बन्धनमरण કહેવાય છે. તેમાં એક કામનાપૂર્વક કરેલું હોય છે

અને બીજું કામનાવિના—અજાણતાં કરેલું હોય છે. આમ તેના બે વિભાગ છે. ૬

हले वा शकटे पङ्क्तो पृष्ठे वा पीडितो नरैः ॥ ७ ॥
गोपतिर्मृत्युमाप्नोति योक्त्रो भवति तद्वधः ।

બળદને હળમાં, ગાડામાં અથવા તો મેઢી (ખળાની વચ્ચેની થાંભલી)માં જોડીને અથવા તો તેની પીઠ ઉપર ભાર ભરીને મનુષ્યો તેને દુઃખી કરે અને તેથી બળદ મરણ પામે તો તેનું योक्त्रमरण કહેવાય છે. ૭

૭ योक्त्र એટલે જોતર. જે બળદના ગળામાં બાંધવામાં આવે છે તે.

मत्तः प्रमत्त उन्मत्तश्चेतनो वाप्यचेतनः ॥ ८ ॥
कामाकामकृतक्रोधो दण्डैर्हन्यादथोपलैः ।
प्रहृता वा मृता वापि तद्धि हेतुर्निपातने ॥ ९ ॥

મત્ત (સંપત્તિ વગેરેથી ગર્વિષ્ઠ થયેલો), પ્રમત્ત (મદિરાપાનથી પરાધીન થયેલો), ઉન્મત્ત (વ્યાધિ વગેરેથી ભ્રાંત થયેલો), ચેતન (લોકવ્યવહારમાં કુશળ) અથવા તો અચેતન (મૂર્ખ) એવો પુરુષ જાણીજોઇને અથવા તો અજાણતાં ક્રોધમાં આવી જઇને પથરાથી અથવા તો લાકડીથી ગાયને અથવા તો બળદને મારે છે અને તેથી તે મરી જાય છે તો તે घातमरण કહેવાય છે. ૮–૯

अङ्गुष्ठमात्रस्थूलस्तु बाहुमात्रं प्रमाणतः ।
आर्द्रस्तु सपलाशश्च दण्ड इत्यभिधीयते ॥ १० ॥

જે લાકડું અંગુઠા જેવડું જાડું હોય, એક હાથ જેવડું લાંબું હોય, લીલું હોય અને પાંદડાવાળું હોય, તે દંડ કહેવાય છે. ૧૦

૧૦ આ દંડ લીલો અને પાંદડાવાળો કહ્યો છે તેથી એમ સૂચવ્યું છે કે ગાયને, વાછડાને તથા બળદને હાંકવાનો દંડ એવો હોવો જોઇએ કે, જે મારવાથી તેને પીડા કરે નહિ. આ દંડથી ગાય, બળદ વગેરેને માત્ર ભય જ ઉપજાવવો, પરંતુ તેને મારીને દુઃખ દેવું નહિ.

मूर्छितः पतितो वापि दण्डेनाभिहतः स तु ।
उत्थितस्तु यदा गच्छेत्पंच सप्त दशाथवा ॥ ११ ॥
ग्रासं वा यदि गृह्णीयात्तोयं वापि पिबेद्यदि ।
पूर्वं व्याध्युपसृष्टश्चेत्प्रायश्चित्तं न विद्यते ॥ १२ ॥

ઉપર વર્ણવેલો દંડ મારવાથી ઘણા દહાડાનો રોગી એવો બળદ મૂર્છા પામે અથવા તો પડી જાય, પરંતુ પાછો ઉઠીને પાંચ, સાત અથવા તો દશ ડગલાં ભરે, ચાલવાને અશક્ત હોય, પરંતુ ખડ ખાય અને ખડ ખાઇ શકે નહિ તો પાણી પીએ અને તે પછી મરણ પામે તો મારનારાને મારવાનું પ્રાયશ્ચિત્ત લાગતું નથી. ૧૧-૧૨

૧૧-૧૨ પરંતુ મારતાં વેંત જ જો મરણ પામે તો મારનારાને પાપ લાગે છે.

पिण्डस्थे पादमेकं तु द्वौ पादौ गर्भसंमिते ।
पादोनं व्रतमुद्दिष्टं हत्वा गर्भमचेतनम् ॥ १३ ॥

ગાયના પિંડસ્થ ગર્ભનો (એટલે પંદર દિવસના ગર્ભનો), ગર્ભસંમિતનો (એટલે મહિનાના ગર્ભનો) અને અચેતનગર્ભનો (એટલે છ મહિનાના ગર્ભનો) નાશ કરે, તેણે અનુક્રમે પ્રાજાપત્યનું એક પાદ, બે પાદ અને ત્રણ પાદ પ્રાયશ્ચિત્ત કરવું. ૧૩

पादेऽङ्गरोमवपनं द्विपादे श्मश्रुणोपि च ।
त्रिपादे तु शिखावर्जं सशिखं तु निपातने ॥ १४ ॥

એક પાદ (ચતુર્થાંશ) કૃચ્છ્ર પ્રાયશ્ચિત્ત કરનારાએ કંઠથી નીચેના કેશ કપાવી નાખવા, અર્ધકૃચ્છ્ર પ્રાયશ્ચિત્ત કરનારાએ મૂંછો ઉતરાવી નાખવી, ત્રણ પાદના પ્રાયશ્ચિત્તમાં શિખા વિના શરીરના સર્વ કેશો ઉતરાવી નાખવા અને નિપાતનમાં (ગર્ભની હત્યામાં) શિખા સાથે સર્વ કેશો ઉતરાવી નાખવા. ૧૪

पादे वस्त्रयुगं चैव द्विपादे कांस्यभाजनम् ।
त्रिपादे गोवृषं दद्याच्चतुर्थे गोद्वयं स्मृतम् ॥ १५ ॥

એક પાદ કૃચ્છ્ર પ્રાયશ્ચિત્તમાં બે વસ્ત્ર, અર્ધ કૃચ્છ્ર પ્રાયશ્ચિત્તમાં કાંસાનું વાસણ, ત્રણ પાદ કૃચ્છ્ર પ્રાયશ્ચિત્તમાં ગાય તથા બળદ અને સંપૂર્ણ પ્રાયજાપત્ય નામના પ્રાયશ્ચિત્તમાં બે ગાય બ્રાહ્મણને આપવી. ૧૫.

૧૫ કૃચ્છ્ર વ્રત એટલે પ્રાજાપત્ય વ્રત જાણવું.

निष्पन्नसर्वगात्रस्तु दृश्यते वा सचेतनः ।
अङ्गप्रत्यङ्गसम्पूर्णो द्विगुणं गोव्रतं चरेत् ॥ १६ ॥

પરંતુ ગાયના જે ગર્ભનાં સર્વે ગાત્રો ઉત્પન્ન થયાં હોય, જેનામાં ચેતના (જીવ) હોય તથા જેનાં અંગો અને પ્રત્યંગો પણ સંપૂર્ણ થયાં હોય તેવા ગર્ભની હત્યા કરવાથી બમણું પ્રાયશ્ચિત્ત કરવું. ૧૬

૧૬ આઠમે મહિને ગાયનો ગર્ભ સંપૂર્ણ અંગો અને પ્રત્યંગોવાળો થાય છે તથા પ્રસવ સમયે ચેતનાવાળો પણ હોય છે, માટે તેવા ગર્ભની હત્યા કરનારાએ બે પ્રાજાપત્ય વ્રત કરવાં.

पाषाणेनाथ दण्डेन गावो येनाभिघातिताः ।
शृङ्गभङ्गे चरेत्पादं द्वौ पादौ नेत्रघातने ॥ १७ ॥
लाङ्गूले पादकृच्छ्रं तु द्वौ पादावस्थिभञ्जने ।
त्रिपादं चैव कर्णे तु चरेत्सर्वं निपातने ॥ १८ ॥

જે પુરુષે પથરો મારીને અથવા તો લાકડી મારીને ગાયનાં શિંગડાને ભાંગી નાંખ્યું હોય તો પ્રાજાપત્યનું એક પાદ પ્રાયશ્ચિત્ત તરિકે કરવું, આંખ ફોડી નાખી હોય તો બે પાદ પ્રાયશ્ચિત્ત કરવું, પુછડું કાપી નાખ્યું હોય તો એક પાદ, હાડકાં ભાંગી નાખ્યાં હોય તો બે પાદ, કાન કાપી નાખ્યા હોય તો ત્રણ પાદ અને જીવથી મારી નાખી હોય તો આખું પ્રાજાપત્ય વ્રત કરવું. ૧૭-૧૮

૧૭-૧૮ ગાયનું હાડકું અથવા તો શિંગડું તૂટી જાય અથવા તો તેનું પૂછડું તૂટી જાય તો પંદર દિવસ સૂધી યવની કાજી પીવી, એમ જે અંગિરા કહે છે તે ગાયને મારવા પછી તેનું કાલાંતરે મરણ થાય તો તે પ્રાયશ્ચિત્ત કરવું.

शृङ्गभङ्गेऽस्थिभङ्गे च कटिभङ्गे तथैव च ।
यदि जीवति षण्मासान्प्रायश्चित्तं न विद्यते ॥ १९ ॥

એક ગાયને અથવા તો બળદને મારવામાં આવે અને તેને મારતાં તેનાં શિંગડાં ભાંગી જાય, હાડકાં ભાંગી જાય, અથવા તો કેડ ભાંગી જાય છતાં ગાય કે બળદ છ મહિના સૂધી જીવતો રહે તો તેની હત્યાનું પ્રાયશ્ચિત્ત કરવું નહિ. પરંતુ તેના જે જે અવયવો ભાંગી નાખ્યા હોય, તેનું પ્રાયશ્ચિત્ત કરવું. ૧૯

व्रणभङ्गे च कर्त्तव्यः स्नेहाभ्यङ्गस्तु पाणिना ।
यवसश्चोपहर्त्तव्यो यावद्दृढबलो भवेत् ॥ २० ॥

ગાયને અથવા તો બળદને મારવાથી તેના શરીરમાં વ્રણ (ઘાવ) થાય, અથવા તો તેના શરીરનું હાડકું ભાંગી જાય તો મારનારાએ તેના શરીર ઉપર પોતાને હાથે તેલ ચોળવું, ઔષધ લગાડવાં અને તેને ખડ ખવરાવવું. આ પ્રમાણે ગાય અથવા તો બળદ દૃઢ બળવાન્ થાય ત્યાં સૂધી તેની સેવા કરવી. ૨૦

यावत्संपूर्णसर्वाङ्गस्तावत्तं पोषयेन्नरः ।
गोरूपं ब्राह्मणस्याग्रे नमस्कृत्वा विसर्जयेत् ॥ २१ ॥

અને ગાયના અથવા તો બળદના સર્વે અવયવો સંપૂર્ણ રીતે સારા થાય ત્યાં સૂધી તેનું મારનારા પુરુષે પોષણ કરવું તથા તે હૃષ્ટપુષ્ટ થાય એટલે તે ગાયને અથવા તો બળદને બ્રાહ્મણની આગળ લાવી, તેને નમસ્કાર કરીને છોડી દેવાં. ૨૧

૨૧ બ્રાહ્મણને દેખાડવાથી મારનારા ઉપર ગોહત્યાનો અભિશાપ આવે નહિ.

यद्यसम्पूर्णसर्वाङ्गो हीनदेही भवेत्तदा ।
गोघातकस्य तस्यार्द्धं प्रायश्चित्तं विनिर्दिशेत् ॥ २२ ॥

પરંતુ જો તે ગાયનાં કે બળદનાં સર્વે અંગો સારાં થાય નહિ અને તે મરણ પામે તો ગોહત્યા કરનારાને ગોહત્યાનું અર્ધું પ્રાયશ્ચિત્ત આપવું. ૨૨

काष्ठलोष्टकपाषाणैः शस्त्रेणैवोद्धतो बलात् ।
व्यापादयति यो गां तु तस्य शुद्धिं विनिर्दिशेत् ॥ २३ ॥

જે પુરુષ ઉદ્ધતાઇથી બળપૂર્વક કાષ્ઠથી (લાકડી ધોકા વગેરેથી) માટીનાં ઢેફાથી, પથરાથી અથવા તો શસ્ત્રથી (દાતરડાં વગેરેથી) ગાયને મારી નાખે તો તેને નીચે પ્રમાણે પ્રાયશ્ચિત્ત કહેવું. ૨૩

चरेत्सांतपनं काष्ठे प्राजापत्यं तु लोष्टके ।
तप्तकृच्छ्रं तु पाषाणे शस्त्रे चैवातिकृच्छ्रकम् ॥ २४ ॥

ગાયને કાષ્ઠથી (લાકડી ધોકા વગેરેથી) મારી હોય તો સાંતપન નામનું વ્રત કરવું, માટીના ઢેફાથી મારી હોય તો પ્રજાપત્ય નામનું વ્રત કરવું, પથરાથી મારી હોય તો તપ્તકૃચ્છ્ર નામનું વ્રત કરવું અને શસ્ત્રથી (દાતરડાં વગેરેથી) મારી હોય તો અતિકૃચ્છ્ર નામનું વ્રત કરવું. ૨૪

पञ्च सान्तपने गावः प्राजापत्ये तथा त्रयः ।
तप्तकृच्छ्रे भवन्त्यष्टावतिकृच्छ्रे त्रयोदश ॥ २५ ॥

સાંતપન વ્રત કરનારાએ બ્રાહ્મણને પાંચ ગાય આપવી, પ્રાજાપત્ય વ્રત કરનારાએ ત્રણ ગાય આપવી, તપ્ત કૃચ્છ્ર વ્રત કરનારાએ આઠ ગાય આપવી અને અતિકૃચ્છ્ર વ્રત કરનારાએ તેર ગાય આપવી. ૨૫

प्रमापणे प्राणभृतां दद्यात्तत्प्रतिरूपकम् ।
तस्यानुरूपं मूल्यं वा दद्यादित्यब्रवीन्मनुः ॥ २६ ॥

પાડો, ઘોડો વગેરે કોઇ પણ પ્રાણીને માર્યું હોય તો તેજ જાતિનું અને તેના જેવુંજ પ્રાણી તેના ધણીને આપવું અને જો તેવું પ્રાણી મળી શકે નહિ તો તે પ્રાણીની કિંમત તેના ધણીને આપવી. આમ મનુએ કહ્યું છે અને તે પછી તે પ્રાણીની હત્યાનું પ્રાયશ્ચિત્ત કરવું. ૨૬

अन्यत्राङ्कनलक्ष्मभ्यां वाहने मोचने तथा ।
सायं सङ्गोपनार्थं च न दुष्येद्रोधबन्धयोः ॥ २७ ॥

જે બળદને નીલોત્સર્ગ વગેરેમાં અગ્નિવડે ડાંભીને આંકવામાં આવ્યો ન હોય અથવા તો જેના શરીર ઉપર છાણનું કે હળદરનું ચિહ્ન કરવામાં આવ્યું ન હોય તેવા બળદને ગાડીમાં જોડવામાં અથવા તો તેની પાસે ભાર ઉપડાવવામાં દોષ લાગતો નથી. તેમ સાયંકાળે તેની રક્ષા કરવા માટે તેને ગોશાળામાં પૂરવાથી અથવા તો દોરડાં વગેરેથી બાંધવાથી પણ દોષ લાગતો નથી. ૨૭

૨૭ નીલોદ્વાહ વગેરે ક્રિયામાં બળદને આંક્યા પછી છૂટા મૂકી દેવામાં આવે છે. આવા બળદને ગાડીમાં જોડવાથી અથવા તો તેની પાસે ભાર ઉપડાવવાથી પાપ લાગે છે. તેમ તેની રક્ષા કરવા માટે તેને ગોશાળામાં પૂરવાથી અથવા તો બાંધવાથી પણ પાપ લાગે છે. તેઓને તો છૂટા જ ફરવા દેવા. આવા બળદોને સાંઢ કહેવામાં આવે છે.

अतिदाहेऽतिवाहे च नासिकाभेदने तथा ।
नदीपर्वतसञ्चारे प्रायश्चित्तं विनिर्दिशेत् ॥ २८ ॥

ગાયને અથવા તો બળદને રોગ મટાડવા માટે અથવા તો આંકવા માટે અત્યંત ડાંભ દેવા, તેનાથી ઉપાડી શકાય નહિ તેટલો ભાર તેના ઉપર લાદીને તેની પાસે ખેંચાવવો, તેનાં નાક છેદીને તેમાં નાથ પરોવવી, જ્યાં પડી જવાનો અથવા તો મરણનો સંભવ હોય તેવી નદીઓ ઉપર અથવા તો પર્વતો ઉપર ચરાવવા લઈ જવા. આ પ્રમાણે ગાય અથવા તો બળદને કરનારા પુરુષને નીચેના શ્લોકમાં કહેલું પ્રાયશ્ચિત્ત કહેવું. ૨૮

अतिदाहे चरेत्पादं द्वौ पादौ वाहने चरेत् ।
नासिक्ये पादहीनं तु चरेत्सर्वं निपातने ॥ २९ ॥

વધારે ડાંભ દીધો હોય તો ડાંભ દેનારાએ કૃચ્છ્રનો એકચતુર્થાંશ પ્રાયશ્ચિત્ત કરવું, વધારે ભાર લાદ્યો હોય તો લાદનારાએ અર્ધ કૃચ્છ્ર પ્રાયશ્ચિત્ત કરવું, નાસિકાનું છેદન કર્યું હોય તો ત્રણ ચતુર્થાંશ કૃચ્છ્ર કરવું અને નદીમાં

પડીને અથવા તો પર્વત ઉપરથી પડીને મરણ પામે તો ત્યાં ચારવા લઇ જનારાએ પ્રાજાપત્ય વ્રત કરવું. ૨૯

दहनात्तु विपद्येत अनड्वान्योक्त्रयन्त्रितः ।
उक्तं पराशरेणैव ह्येकं पादं यथाविधि ॥ ३० ॥

એક બળદને ઘરમાં ચામડાની દોરીથી બાંધ્યો હોય અને ઘર બળવાથી બળદ પણ બળીને મરણ પામે તો પરાશર કહે છે કે, તે ઘરમાં બાંધનારાએ શાસ્ત્રમાં કહેલા વિધિ પ્રમાણે કૃચ્છ્રનો ચોથો ભાગ પ્રાયશ્ચિત્ત કરવું (ચાર દિવસનું પ્રાજાપત્ય કરવું.) ૩૦

रोधनं बन्धनं चैव भारः प्रहरणं तथा ।
दुर्गप्रेरणयोक्त्रं च निमित्तानि वधस्य षट् ॥ ३१ ॥

રોધન (વાડો, ગોશાળા વગેરે સ્થાનમાં પૂરી રાખવાં તે), બંધન (દોરડાવતી બાંધવાં તે), ભાર ઉપડાવવો, હથિયારથી મારવાં, વિષમ સ્થાનમાં લઇ જવાં તથા ચામડાનાં જોતરથી બાંધવાં. આ છ ગાયના અથવા તો બળદનાં મરણનાં નિમિત્ત છે. ૩૧

बन्धपाशसुगुप्तांगो म्रियते यदि गोपशुः ।
भवने तस्य पापी स्यात्प्रायश्चित्तार्द्धमर्हति ॥ ३२ ॥

ગાયના અથવા તો બળદના પગ વગેરે અવયવોને દોરડાથી સારી રીતે બાંધ્યા હોય અને તેવી સ્થિતિમાં તે ઘરમાં મરણ પામે તો તે ઘરનો ધણી પાપી થાય છે અને તેણે અર્ધ કૃચ્છ્ર પ્રાયશ્ચિત્ત કરવું. ૩૨

૩૨ द्वौ पादौ बंधने चरेत् એ શ્લોકથી જ આ પાપનું પ્રાયશ્ચિત્ત પૂર્વે કહેવામાં આવ્યું છે, છતાં અહીં ફરીને કહેવાનું તાત્પર્ય એવું છે કે, શાસ્ત્રમાં જે દોરડું બાંધવાનો નિષેધ કરવામાં આવ્યો હોય તેવાં દોરડાંથી જો બાંધવામાં આવે અને તેથી મરણ નિપજે તો સંપૂર્ણ પ્રાયશ્ચિત્ત કરવું.

न नारिकेलेन न शाणवालैर्नवापि मौञ्जैर्न च वल्कशृङ्खलैः ।
एतैस्तु गावो न निबन्धनीया बध्वापि तिष्ठेत्परशुं गृहीत्वा ॥ ३३ ॥

નારીયેલનાં દોરડાથી, શણના દોરડાંથી, વાળના દોરડાંથી, મુંજના દોરડાંથી, વાંસના રેસામાંથી બનાવેલાં દોરડાંથી અથવા તો લોઢાની સાંકળોથી ગાયોને બાંધવી નહિ અને જો બાંધી હોય તો તેને કાપી નાખવા-માટે હાથમાં ફરસી લઇને ઉભા રહેવું. અર્થાત્ તેવી જાતનાં દોરડાંથી બાંધવી જ નહિ. ૩૩

कुशैः काशैश्च बध्नीयाद्गोपशुं दक्षिणामुखम् ।
पाशलग्नाग्निदग्धेषु प्रायश्चित्तं न विद्यते ॥ ३४ ॥

ગાયને અથવા તો બળદને દર્ભનાં અથવા તો કાંસડાનાં દોરડાંથી દક્ષિણ દિશા તરફ બાંધવાં અને તે દોરડાંને અગ્નિ લાગવાથી ગાય અથવા તો બળદ દાઝી જાય તો પણ બાંધનારાને પાતક લાગતું નથી. ૩૪

यदि तत्र भवेत्काष्ठं प्रायश्चित्तं कथं भवेत् ।
जपित्वा पावनीं देवीं मुच्यते तत्र किल्बिषात् ॥ ३५ ॥

ગાયના અથવા તો બળદના ગળામાં દોરીથી લાકડું બાંધ્યું હોય અને દોરી બળવા માંડે, તેથી પેલું લાકડું પણ બળવા માંડે અને તેના સ્પર્શથી ગાયની અથવા તો બળદની ચામડી દાઝી જાય તો તેનું કયું પ્રાયશ્ચિત્ત કરવું? આ પ્રશ્નનો ઉત્તર એવો છે કે; પવિત્ર કરનારી ગાયત્રી દેવીનો એકસો ને આઠ વાર જપ કરવાથી પાતકી પાપમાંથી મુક્ત થાય છે. ૩૫

प्रेरयन्कूपवापीषु वृक्षच्छेदेषु पातयन् ।
गवाशनेषु विक्रीणंस्ततः प्राप्नोति गोवधम् ॥ ३६ ॥

ગાયોને તથા બળદોને ચારનારો, કૂવાઓ અથવા તો વાવોની પાસે ગાયોને તથા બળદોને ચારવા લઇ જાય, અથવા તો જ્યાં ઝાડની મોટી શાખા પડવાનો ભય હોય તેવા સ્થાનમાં ચારવા લઇ જાય અને ત્યાં ગાયનું અથવા તો બળદનું મરણ નિપજે તો ચારનારાને ગોહત્યાનું પાપ લાગે છે તથા ગોમાંસનું ભક્ષણ કરનારાને ત્યાં ગાયને અથવા તો બળદને વેંચનારાને પણ ગોહત્યાનું પાપ લાગે છે અને આ પાપનું પ્રાયશ્ચિત્ત પ્રાજાપત્ય વ્રત કરવું. ૩૬

आराधितस्तु यः कश्चिद्भिन्नकक्षो यदा भवेत् ।
श्रवणं हृदयं भिन्नं मग्नो वा कूपसङ्कटे ॥ ३७ ॥
कूपादुत्क्रमणे चैव भग्नो वा ग्रीवपादयोः ।
स एव म्रियते तत्र त्रीन्पादांस्तु समाचरेत् ॥ ३८ ॥

બળદની પૂજા કરીને તેને દોડાવવામાં આવે, તે સમયે દોડતાં દોડતાં બળદની કાખમાં, કાનમાં અથવા તો હૃદયમાં વાગે અને તે ચીરાઈ જાય અથવા તો તે કૂવામાં પડી જાય અને કૂવામાંથી બહાર કાઢતાં તેની ડોક અથવા તો બન્ને ચરણ ભાંગી જાય અને તે જ બળદ મરી

જાય તો દોડાવનારાએ કૃચ્છ્રનાં ત્રણ ચરણ પ્રાયશ્ચિત્ત કરવું. એટલે પોણું પ્રાજાપત્ય કરવું. ૩૭–૩૮

૩૭–૩૮ આષાઢ અથવા તો શ્રાવણ મહિનાની અમાવાસ્યાને દિવસે બળદોનાં શિંગડાંઓને રંગથી રંગવામાં આવે છે, તેના ગળામાં તથા બન્ને શિંગડાંઓ ઉપર ફુલની માળાઓ તથા રંગબેરંગી કાગળોની માળાઓ લટકાવવામાં આવે છે અને તે દિવસે બળદોને દોડાવવામાં આવે છે. હમણાં પણ બળદના પાળકો દક્ષિણ દેશમાં આ ક્રિયા મોટા ઉત્સાહથી કરે છે.

कूपखाते तटाबन्धे नदीबन्धे प्रपासु च ।
पानीयेषु विपन्नानां प्रायश्चित्तं न विद्यते ॥ ३९ ॥

ઉંડા કુવામાં, ચોતરફથી બાંધેલાં મોટાં તળાવમાં, નદીના પૂલ ઉપરથી તથા ઉનાળામાં ગાયો પાણી પીવામાટે પત્થરના બાંધેલા હવાડાઓમાં ઉતરે અને અંદર ઉતરતાં પડીને મરણ પામે તો તેના ધણીને તેનું પ્રાયશ્ચિત્ત લાગતું નથી. ૩૯

कूपखाते तटाखाते दीर्घीखाते तथैव च ।
अन्येषु धर्मखातेषु प्रायश्चित्तं न विद्यते ॥ ४० ॥

ધર્મમાટે કોઈએ પાણીનો કૂવો ખોદાવેલો હોય, તળાવ બંધાવેલું હોય, મોટી વાવ ખોદાવેલી હોય, તેમ જ ધર્માર્થે પાણીની કુંડી વગેરે પાણી પીવામાટે બંધાવેલી હોય અને તેમાં કોઈ ગાય કે બળદ પડી જાય અને તેનું મરણ નિપજે તો તેથી તેના બંધાવનારાને પાતક લાગતું નથી. ૪૦

वेश्मद्वारे निवासेषु यो नरः खातुमिच्छति ।
स्वकार्यगृहखातेषु प्रायश्चित्तं विनिर्दिशेत् ॥ ४१ ॥

ઘરનાં બારણા આગળ અથવા તો ગાયોને બાંધવાની કોડ આગળ ખાડો ખોદ્યો હોય અથવા તો પોતાના ઘરની ભીંત કરવા માટે અથવા તો ઘરની આગળ આંગણામાં ઓટલા વગેરે કરવા માટે આગણામાં, ઉપવનોમાં અથવા તો જ્યાં ગાયોને હરવા ફરવાનો સંભવ હોય તેવા પ્રદેશમાં પંડે ખાડા ખોદ્યા હોય અને તેમાં ગાય પડીને દુઃખી થાય તો પ્રાજાપત્યના ત્રણ પાદ પ્રાયશ્ચિત્ત કરવું. ૪૧

निशि बन्धनिरुद्धेषु सर्पव्याघ्रहतेषु च ।
अग्निविद्युद्विपन्नानां प्रायश्चित्तं न विद्यते ॥ ४२ ॥

રાત્રે ગાયોને તથા બળદોને રક્ષા કરવા માટે કોડમાં બાંધી રાખ્યા હોય અથવા તો પૂરી રાખ્યા હોય અને તે સમયે તેને સર્પ કરડે અથવા તો વાઘ ફાડી ખાય, અથવા તો અગ્નિથી કે વિજળી પડવાથી તે બળી મરે તો તેના સ્વામીને પાતક લાગતું નથી. ૪૨

ग्रामघाते शरौघेण वेश्मभङ्गान्निपातने ।

अतिवृष्टिहतानां च प्रायश्चित्तं न विद्यते ॥ ४३ ॥

શત્રુની સેના ગામ ઉપર ચઢાઈ કરીને બાણોનો મારો ચલાવે અને તેથી ગાયોનું મરણ નિપજે, અથવા તો ઘર પડી જાય અને તેથી ગાયો મરણ પામે તથા અત્યંત વરસાદ વરસવાથી ગાયો મરણ પામે તો તેનું પ્રાયશ્ચિત્ત તેના સ્વામીને લાગતું નથી. ૪૩

सङ्ग्रामे प्रहतानां च ये दग्धा वेश्मकेषु च ।

दावाग्निग्रामघातेषु प्रायश्चित्तं न विद्यते ॥ ४४ ॥

યુદ્ધમાં શત્રુને હાથે ગાયો મરણ પામવાથી, ઘરને આગ લાગવાથી તેમાં ગાયો બળી મરે તો, અથવા તો વનમાં દવ લાગ્યો હોય અને તેથી તેની નજીકમાં આવેલું ગામ બળી જાય તે સમયે ત્યાં બાંધેલી ગાયો પણ બળી મરે તો તેના સ્વામીને તેનું પ્રાયશ્ચિત્ત લાગતું નથી. ૪૪

यन्त्रिता गौश्चिकित्सार्थं गूढगर्भविमोचने ।

यत्ने कृते विपद्येत प्रायश्चित्तं न विद्यते ॥ ४५ ॥

કોઈ ગાયને શરીરમાં ઘાવ પડ્યો હોય અથવા તો તે માંદી હોય ત્યારે ઔષધ કરવા માટે ગાયને બાંધવામાં આવે અને તેમ કરતાં પ્રમાદથી ગાયનું મરણ નિપજે અથવા તો ગાયની યોનીમાં મરી ગયેલો ગર્ભ આવી રહ્યો હોય, તેને કાઢવાનો પ્રયત્ન કરવા જતાં ગાયનું મરણ નિપજે તો તેથી તેના ધણીને પાતક લાગતું નથી. ૪૫

व्यापन्नानां बहूनां तु रोधने बन्धनेऽपि वा ।

भिषङ्मिथ्योपचारे च प्रायश्चित्तं विनिर्दिशेत् ॥ ४६ ॥

બાંધવાથી અથવા તો ગોશાળામાં પૂરવાથી ઘણી ગાયો કે બળદો મરણ પામે અથવા તો વૈદ્ય ઉંધો ઉપાય કરે અને તેથી ગાયો કે બળદો મરણ પામે તો પૂરનારાને અથવા તો ઉપચાર કરનારાને પ્રથમ કહેલા પ્રાયશ્ચિત્તથી બમણું પ્રાયશ્ચિત્ત કહેવું. ૪૬

૪૬ પ્રત્યેક ગાય કે બળદને માટે જૂદું જૂદું પ્રાયશ્ચિત્ત કરવું નહિ, પરંતુ કહ્યા કરતાં બમણું પ્રાયશ્ચિત્ત કરવું.

गोवृषाणां विपत्तौ च यावन्तः प्रेक्षका जनाः ।
अनिवारयतां तेषां सर्वेषां पातकं भवेत् ॥ ४७ ॥

ગાયો તથા બળદો દુઃખ ભોગવતા હોય અને તે સમયે જે મનુષ્યો ઉભા ઉભા જોયા કરે પરંતુ પોતાની શક્તિ અનુસાર તેઓનું દુઃખ દૂર કરે નહિ તો તે સર્વને પાતક લાગે છે. ૪૭

૪૭ મૂળ શ્લોકમાં प्रेक्षकाः પદ છે, તેનો દુઃખ જોઇને તેને દૂર કરવાનો પ્રયત્ન નહિ કરનારા પરંતુ ઉપેક્ષા કરનારા, એવો અર્થ જાણવો.

एको हतो यैर्बहुभिस्समेतैर्न ज्ञायते यस्य हतोऽभिघातात् ।
दिव्येन तेषामुपलभ्य हन्ता निवर्तनीयो नृपसन्नियुक्तैः ॥४८॥

ઘણા જણાઓએ એકઠા થઇને એક બળદને મારી નાખ્યો હોય, પરંતુ તેમાં કોના મારથી તે બળદ મરણ પામ્યો છે એ જાણવામાં આવતું ન હોય તો રાજાના અધિકારીઓએ દિવ્ય આપીને તેઓમાંથી મારનારાને શોધી કાઢવો અને તેની પાસે ગોહત્યાનું પ્રાયશ્ચિત્ત કરાવવું. ૪૮

एका चेद्बहुभिः काचिद्दैवाद्व्यापादिता क्वचित् ।
पादं पादं तु हत्यायाश्चरेयुस्ते पृथक् पृथक् ॥ ४९ ॥

ઘણા પુરુષોએ એકઠા મળીને દૈવયોગથી એક ગાયને કદાચિત્ મારી નાખી હોય તો તે પુરુષોમાંથી પ્રત્યેક પુરુષે ગોહત્યાના વ્રતનો એક એક ચતુર્થાંશ કરવો. ૪૯

हते तु रुधिरं दृश्यं व्याधिग्रस्तः कृशो भवेत् ।
लालाभवति दष्टेषु एवमन्वेषणं भवेत् ॥ ५० ॥

ગાયને અથવા તો બળદને કોઇએ પ્રહાર કર્યો હોય તો તેના શરીર ઉપર લોહી જોવામાં આવે છે, તેને વ્યાધિ થઈ હોય તો તે દુર્બળ થઇ જાય છે અને તેના મોઢામાંથી લાળ ઝરે છે ત્યારે તેને સર્પ કરડ્યો છે એમ જાણવું. આમ જૂદાં જૂદાં ચિહ્નો ઉપરથી ગાયના મરણનાં કારણોને શોધી કાઢવાં. ૫૦

ग्रासार्थं चोदितो वापि अध्वानं नैव गच्छति ।

ચારવા માટે વનમાં લઈ જવામાં આવે તો પણ ગાય કે બળદ માર્ગ ઉપર ચાલે જ નહિ. ત્યારે પણ ગાયને અથવા તો બળદને કંઈક પીડા થઈ છે, એમ જાણવું.

આ શ્લોકમાં તથા તેની પહેલાના શ્લોકમાં જે જે ચિહ્નો દર્શાવ્યાં છે, તે તે ઉપરથી તેનાં કારણો શોધી કાઢવાં ને તેના પ્રમાણમાં તેના કરનારાને પ્રાયશ્ચિત્ત આપવાં.

मनुना चैवमेकेन सर्वशास्त्राणि जानता ॥ ५१ ॥
प्रायश्चित्तं तु तेनोक्तं गोघ्नश्चान्द्रायणं चरेत् ।

સર્વ શાસ્ત્રોને જાણનારા અને મુનિઓમાં મુખ્ય એવા ભગવાન્ મનુએ પણ કહ્યું છે કે; ગોહત્યા કરનારાએ પ્રાયશ્ચિત્ત તરિકે ચાંદ્રાયણ વ્રત કરવું. ૫૧

૫૧ કલિના ધર્મનું રહસ્ય તથા તેને પ્રતિપાદન કરનારાં વેદ અને ધર્મશાસ્ત્રોને હું જાણું છું અને તેમાં કહ્યા પ્રમાણે મેં ગોહત્યાનાં ભિન્ન ભિન્ન પ્રાયશ્ચિત્તો કહ્યાં છે. તેમ જ મનુએ પણ સર્વ ઉપપાતકમાં ઉપયોગી થાય તેવું ગોવધને ઉદ્દેશીને ચાંદ્રાયણ પ્રાયશ્ચિત્ત કહ્યું છે; 'गोघ्नश्चांद्रायणं चरेत् ગોહત્યા કરનારાએ ચાંદ્રાયણ કરવું.' આ શ્લોકમાં एकेन એવું વિશેષણ આપ્યું છે, તેનો અભિપ્રાય એવો છે કે, મનુ સર્વ મુનિઓમાં મુખ્ય છે; તેથી તેના આ વિચારથી કોઈ પણ મુનિ વિરુદ્ધ થઈ શકે તેમ નથી.

केशानां रक्षणार्थाय द्विगुणं व्रतमाचरेत् ॥ ५२ ॥
द्विगुणे व्रतआदिष्टे दक्षिणा द्विगुणा भवेत् ।

કોઇને પોતાના કેશ શોભાને માટે ઉતરાવવા ન હોય તો તેણે બમણું પ્રાયશ્ચિત્ત કરવું; અને દક્ષિણા પણ બમણી આપવી. ૫૨

૫૨ જ્યાં પ્રાયશ્ચિત્તને અંગે ડાઢી મૂછના કેશ કપાવવાનું કહ્યું હોય ને તેવો પ્રસંગ આવતાં કોઇને તેમ કરવું અરુચિકર લાગે તો તેણે બમણું પ્રાયશ્ચિત્ત કરવું. પરંતુ મહાપાપના પ્રાયચિશ્ચત્તમાં તેમ થઈ શકે નહિ. તેમાં તો ડાઢી મૂછ ઉતરાવવાં જ પડે.

राजा वा राजपुत्रो वा ब्राह्मणो वा बहुश्रुतः ॥ ५३ ॥
अकृत्वा वपनं तेषां प्रायश्चित्तं विनिर्दिशेत् ।

રાજા, રાજપુત્ર અથવા તો બહુશ્રુત (વિદ્વાન્) બ્રાહ્મણને કેશ ઉતરાવ્યા વિના પણ પ્રાયશ્ચિત્તનો ઉપદેશ કરવો. ૫૩

सर्वान्केशान्समुद्धृत्य छेदयेदङ्गुलद्वयम् ॥ ५४ ॥
एवं नारी कुमारीणां शिरसोमुंडनं स्मृतम् ।

સ્ત્રીના તથા કન્યાઓના મસ્તક મુંડનનો પ્રસંગ આવે ત્યારે તેના માથાના સર્વ કેશોને એકઠા કરીને તેમાંથી બે આંગળ કેશ કાપી નાખવા, એટલે તેઓનું મસ્તક મુંડન થયું ગણાય છે. ૫૪

न स्त्रियाः केशवपनं न दूरे शयनासनम् ॥ ५५ ॥
न च गोष्ठे वसेद्रात्रौ न दिवा गा अनुव्रजेत् ।
नदीषु सङ्गमे चैव अरण्येषु विशेषतः ॥ ५६ ॥
न स्त्रीणामजिनं वासो व्रतमेव समाचरेत् ।

ગૌહત્યા કરનારી સ્ત્રીએ ગોહત્યાનું પ્રાયશ્ચિત્ત કરતી વખતે પુરુષની પેઠે મસ્તક મુંડાવવું નહિ, પુરુષની પેઠે ગાયની શાળામાં જઇને સુવું નહિ, ગાયની પાછળ જઇને તે બેસે ત્યારે બેસવું અને ઉઠે ત્યારે ઉઠવું એ ક્રિયા પણ કરવી નહિ, રાત્રે ગોશાળામાં રહેવું નહિ, દિવસે ગાયની પાછળ અરણ્યમાં જવું નહિ, નદીઉપર, નદીના સંગમ ઉપર અને વિશેષે કરીને અરણ્યમાં જઇને વાસ કરવો નહિ તથા શરીર ઉપર ચામડું પણ ઓઢવું નહિ. પરંતુ સાદું વ્રત જ કરવું. ૫૫–૫૬

त्रिसन्ध्यं स्नानमित्युक्तं सुराणामर्चनं तथा ॥ ५७ ॥
बन्धुमध्ये व्रतं तासां कृच्छ्रचान्द्रायणादिकम् ।

સ્ત્રીઓએ દિવસમાં ત્રણવાર સ્નાન કરવું, દેવતાઓનું પૂજન કરવું અને સંબંધીઓની વચ્ચે રહીને કૃચ્છ્ર (પ્રાજાપત્ય) તથા ચાંદ્રાયણ આદિ વ્રત કરવાં. ૫૭

गृहेषु नियतं तिष्ठेच्छुचिर्नियममाचरेत् ॥ ५८ ॥

વળી સ્ત્રીઓએ નિત્ય ઘરમાં રહેવું અને સ્નાનથી પવિત્ર થઇને નિયમને પાળવા. ૫૮

इह यो गोवधं कृत्वा प्रच्छादयितुमिच्छति ।
स याति नरकं घोरं कालसूत्रमसंशयम् ॥ ५९ ॥

જે પુરુષ અથવા તો સ્ત્રી આ લોકમાં ગોહત્યા કરીને તેને છૂપાવવાની ઇચ્છા કરે છે, તે કાલસૂત્ર નામના ઘોર નરકમાં અવશ્ય પડે છે; ૫૯

विमुक्तोनरकात्तस्मान्मर्त्यलोके प्रजायते ।
क्लीबो दुःखी च कुष्ठी च सप्तजन्मानि वै नरः ॥ ६० ॥

અને તે નરકમાંથી છૂટ્યા પછી મનુષ્ય લોકમાં સાત જન્મ સૂધી નપુંસક, દુઃખી અને કોઢીયો થઇને અવતરે છે. ૬૦

૬૦ મરણ પછી નરકમાં પડે છે તે દિવ્ય નરક જાણવું અને મર્ત્યલોકમાં જન્મવા પછી નપુંસક વિગેરે થઇને અવતરે છે, તે ભૂમિનું નરક જાણવું. માટે જે પાપ થઈ ગયું હોય તે છૂપાવવું નહિ, પરંતુ તેનું પ્રાયશ્ચિત્ત કરવું.

तस्मात्प्रकाशयेत्पापं स्वधर्मं सततं चरेत् ।
स्त्रीबालभृत्यगोविप्रेष्वतिकोपं विवर्जयेत् ॥ ६१ ॥

इतिश्री पाराशरसंहितायां प्रायश्चित्तकाण्डे गोहत्यायां
निष्कृतिर्नाम नवमोऽध्यायः समाप्तः ॥

તે માટે પોતે કરેલું પાપ બ્રાહ્મણની સભા આગળ પ્રકટ કરવું અને તે જે પ્રાયશ્ચિત્ત કહે તે નિત્ય કરવું તથા સ્ત્રીઓ, બાળક, સેવક, ગાય અને બ્રાહ્મણોના ઉપર અતિકોપ કરવો નહિ. ૬૧

ઇતિ શ્રી પારાશર ધર્મશાસ્ત્રમાં 'ગોહત્યાનું પ્રાયશ્ચિત્ત' એ નામનો
અધ્યાય ૯ મો સમાપ્ત.



अध्याय १० मो.

अगम्या स्त्रीनी साथे गमनादिकनुं प्रायश्चित्त.

चातुर्वर्ण्येषु सर्वेषु हितां वक्ष्यामि निष्कृतिम् ।
अगम्यागमने चैव शुद्ध्यै चान्द्रायणं चरेत् ॥ १ ॥

હવે હું બ્રાહ્મણ, ક્ષત્રિય, વૈશ્ય અને શૂદ્ર તથા અનુલોમ અને પ્રતિલોમ જાતિનું હિત કરનારું પ્રાયશ્ચિત્ત કહું છું. અગમ્યા એવી સ્ત્રીના ગમનના પાપમાંથી શુદ્ધ થવા માટે ચાંદ્રાયણ વ્રત કરવું. ૧

૧ આઠમા તથા નવમા અધ્યાયમાં ગોવધનું સામાન્ય તથા વિશેષ પ્રાયશ્ચિત્ત કહ્યું. હવે દશમા અધ્યાયમાં અગમ્યાની એટલે જેની સાથે સમાગમ થઈ શકે નહિ તેવી સ્ત્રીની સાથે સમાગમ કરવારૂપી ઉપપાતકનું સામાન્ય તથા વિશેષ પ્રાયશ્ચિત્ત આ અધ્યાયમાં કહેવામાં આવશે. શાસ્ત્રમાં પોતાની એક સ્ત્રીને જ ગમ્યા (સમાગમ યોગ્ય) કહી છે. શ્રુતિમાં કહ્યું છે કે ऋतौ भार्यामुपेयात् ઋતુકાળમાં પોતાની ભાર્યા સાથે સમાગમ કરવો; પોતાની ભાર્યા શિવાયની બીજી સર્વ સ્ત્રીઓ અગમ્યા છે. તેની સાથે ગમન કરવામાં આવે તો પાપ લાગે અને તેની શુદ્ધિને માટે ઉપરના શ્લોકમાં કહેલું ચાંદ્રાયણ વ્રત કરવું. આ પ્રાયશ્ચિત્ત સંબંધવગરની સાધારણ સ્ત્રીની સાથે ગમન કરવાનું જાણવું.

एकैकं ह्रासयेद्ग्रासं कृष्णे शुक्ले च वर्धयेत् ।
अमावास्यां न भुञ्जीत ह्येष चान्द्रायणो विधिः ॥ २ ॥

કૃષ્ણ પક્ષમાં દરરોજ એક એક કોળીયો ઓછો કરવો અને શુકલ પક્ષમાં દરરોજ એક એક કોળીયો વધારવો અને અમાવાસ્યાને દિવસે ઉપવાસ કરવો, આ ચાંદ્રાયણનો વિધિ છે. ૨

૨ પૂનેમથી ચાંદ્રાયણનો આરંભ કરવો, એટલે પુનેમને દિવસે મુંડન કરાવીને ઉપવાસ કરવો અને પડવાને દિવસે ચૌદ કોળીયા યવ, ઘઉં અથવા તો ચોખાના પદાર્થના ખાવા અને બીજને દિવસથી એક એક કોળીઓ ઓછો કરતાં જવો અને અમાવાસ્યાને દિવસે ઉપવાસ કરવો. પડવાથી પાછો એક એક કોળીયો દરરોજ વધારતાં જવો. આમ કરવાથી પુનેમને દિવસે પંદર કોળીયા થાય. આનું નામ ચાંદ્રાયણ વ્રત કહેવાય છે. આ ચાંદ્રાયણના બે ભેદ છે, એક યવમધ્ય અને બીજું પિપીલિકામધ્ય. યવ જેમ વચ્ચેથી જાડો હોય છે અને તેના બન્ને છેડા સૂક્ષ્મ હોય છે તેના જેવું ચાંદ્રાયણ વ્રત યવમધ્ય કહેવાય છે. શુકલ પક્ષના પડવાથી દરરોજ એક એક કોળીયો વધારતાં જવો, એટલે પૂનેમે પંદર કોળીયા થાય અને કૃષ્ણ પક્ષના પડવાથી દરરોજ એક એક કોળીયો ઘટાડતાં જવો, એટલે અમાવસ્યાને દિવસે ઉપવાસ આવે. આ રીતે મધ્ય ભાગમાં કોળીયાનો વધારો કરવો અને આદિમાં તથા અંતમાં કોળીયાનો ઘટાડો કરવો, તે યવના મધ્ય કહેતાં યવના મધ્ય ભાગ જેવું ચાંદ્રાયણ કહેવાય છે. બીજું ચાંદ્રાયણ પિપીલિકા મધ્ય કહેવાય છે. પિપીલિકાનો કહેતાં કીડીનો મધ્ય ભાગ સૂક્ષ્મ–પાતળો હોય છે અને તેનો આદિ તથા અંત ભાગ સ્થૂલ એટલે જાડો હોય છે. તેમ જે ચાંદ્રાયણમાં મધ્યભાગમાં એટલે અમાવાસ્યાને દિવસે ઉપવાસ આવે, તે પિપીલિકા ચાંદ્રાયણ કહેવાય છે. ભગવાન્ પરાશરે પિપીલિકામધ્ય નામનું ચાંદ્રાયણ કરવાની આજ્ઞા કરી છે, માટે કળિયુગમાં આ ચાંદ્રાયણને મુખ્ય જાણવું.

कुक्कुटाण्डप्रमाणं तु ग्रासं वा परिकल्पयेत् ।
अन्यथाभाव दोषेण न धर्मो न च शुद्धयति ॥ ३ ॥

ચાંદ્રાયણમાં જે હવિષ્યાન્નના કોળીયા ખાવાના છે, તે કુકડાના ઇંડા જેવડા લેવા. જો તેના કરતાં અધિક લેવામાં આવે છે તો તેનું વ્રત પૂર્ણ થતું નથી અને તેથી વ્રત કરનારો પાપમાંથી શુદ્ધ પણ થતો નથી. ૩

प्रायश्चित्ते ततश्चीर्णे कुर्याद्ब्राह्मणभोजनम् ।
गोद्वयं वस्त्रयुग्मं च दद्याद्विप्रेषु दक्षिणाम् ॥ ४ ॥

વ્રત કર્યા પછી પ્રાયશ્ચિત્તને અંગે કર્તાએ બ્રાહ્મણોને જમાડવા તથા બ્રાહ્મણોને બે ગાય, બે વસ્ત્ર અને દક્ષિણા આપવી. ૪

चाण्डालीं वा श्वपाकीं वा ह्यनुगच्छति यो द्विजः ।
त्रिरात्रमुपवासित्वा विप्राणामनुशासनात् ॥ ५ ॥

सशिखं वपनं कृत्वा प्राजापत्यद्वयं चरेत् ।
गोद्वयं दक्षिणां दद्याच्छुद्धिं पाराशरोऽब्रवीत् ॥ ६ ॥

જે બ્રાહ્મણ ચંડાળ જાતિની સ્ત્રી સાથે તથા શ્વપાક જાતિની સ્ત્રી સાથે વ્યભિચાર કરે છે, તેણે બ્રાહ્મણોની આજ્ઞાથી ત્રણ દિવસ ઉપવાસ કરવા અને પછી શિખા સાથે (થોડીક શિખા બાકી રાખીને) મુંડન કરાવવું, બે પ્રાજાપત્ય વ્રત કરવાં અને બે ગાયો દાનમાં આપવી. આ રીતે પારાશરે શુદ્ધ થવા માટે પ્રાયશ્ચિત્ત કહ્યું છે. ૫–૬

૫–૬ નૈષ્ઠિક બ્રહ્મચારી અથવા તો સંન્યાસી પરસ્ત્રીમાં પ્રજાને ઉત્પન્ન કરે, તેને ચંડાળ કહેવામાં આવે છે અથવા તો શૂદ્ર જાતિનો પુરુષ બ્રાહ્મણીમાં પ્રજાને ઉત્પન્ન કરે, તેને પણ ચાંડાળ કહેવામાં આવે છે તથા સગોત્ર સ્ત્રી સાથે વિવાહ કરીને તેમાંથી ઉત્પન્ન કરેલી પ્રજાને પણ ચંડાળ કહેવામાં આવે છે. ક્ષત્રિય જાતિનો પુરુષ શૂદ્ર જાતિની સ્ત્રીમાં જે પ્રજાને ઉત્પન્ન કરે છે, તે ઉગ્ર જાતિ કહેવાય છે અને તે ઉગ્ર જાતિનો પુરુષ ક્ષત્રિય જાતિની સ્ત્રીમાં પ્રજાને ઉત્પન્ન કરે છે, તે શ્વપાક જાતિ કહેવાય છે.

क्षत्रियो वाऽथ वैश्यो वा चण्डालीं गच्छतोपि वा ।
प्राजापत्यद्वयं कुर्याद्दद्याद्गोमिथुनद्वयम् ॥ ७ ॥

ક્ષત્રિય જાતિનો અથવા તો વૈશ્ય જાતિનો પુરુષ જો ચંડાળ જાતિની સ્ત્રીની સાથે ગમન કરે તો તેમણે પ્રથમ મુંડન કરાવવું, ત્રણ દિવસ સુધી ઉપવાસ કરવા અને પછી બે પ્રાજાપત્ય કરવાં અને પ્રાયશ્ચિત્ત પૂરું થયા પછી બે બળદ અને બે ગાય દક્ષિણામાં આપવી. ૭

૭ શ્વપાક જાતિની સ્ત્રી સાથે ગમન કરનારાને માટે પણ એ પ્રમાણે જ પ્રાયશ્ચિત્ત સમજી લેવું.

श्वपाकीं वाथ चण्डालीं शूद्रो वा यदि गच्छति ।
प्राजापत्यं चरेत्कृच्छ्रं चतुर्गोमिथुनं ददेत् ॥ ८ ॥

શૂદ્ર જો શ્વપાક જાતિની અથવા તો ચંડાળ જાતિની સ્ત્રી સાથે ગમન કરે તો તેણે એક પ્રાજાપત્ય વ્રત કરવું અને ચાર ગાયો તથા ચાર બળદો બ્રાહ્મણને દાનમાં આપવાં. ૮

मातरं यदि गच्छेत्तु भगिनीं स्वसुतां तथा ।
एतास्तु मोहितो गत्वा त्रीणि कृच्छ्राणि सञ्चरेत् ॥ ९ ॥

चान्द्रायणत्रयं कुर्याच्छिश्नच्छेदेन शुद्धयति ।
मातृष्वसृगमे चैवमात्ममेढ्रनिकृन्तनम् ॥ १० ॥

પોતાની ઓરમાન માતા, બેન અથવા તો પોતાની પુત્રીની સાથે અજાણતાં એકવાર ગમન થઈ જાય તો ત્રણ પ્રાજાપત્ય વ્રત કરવાં અને પછી ત્રણ ચાંદ્રાયણ કરીને ઇન્દ્રિયને કાપી નાંખવી, એટલે પાતક દૂર થાય છે તથા માસીની સાથે જાણી જોઇને ગમન કરે તો જનારાએ પોતાની ઇન્દ્રિયને કાપી નાંખવી. ૯–૧૦

૯–૧૦ ભગવાન્ યાજ્ઞવલ્કય કઈ કઈ સ્ત્રીની સાથે ગમન કરનારો ગુરુપત્નીના ગમનરૂપ મહાપાતકી થાય છે, તે વિશે કહે છે કે;

पितुः स्वसारं मातुश्च मातुलानां स्नुषामपि । मातुःसपत्नीं भगिनीमाचार्यतनयां तथा ॥ आचार्यपत्नीं स्वसुतां गच्छंस्तु गुरुतल्पगः ॥

याज्ञ ३–२३२–२३३.

ફઇ, માસી, મામી, પુત્રની વહુ, ઓરમાન માતા, બેન તથા આચાર્યની સ્ત્રી તથા પોતાની પુત્રી સાથે ગમન કરનારો, ગુરુપત્ની સાથે ગમન કરનારો ગણાય છે અને ગુરુપત્નીની સાથે ગમનને ભગવાન્ મનુએ गुर्वंगनागमः એ પદથી ગુરુપત્નીની સાથે ગમનને મહાપાતક કહ્યું છે અને ગુરુપત્નીની સાથે ગમન કરનારાને માટે પ્રાયશ્ચિત્ત લખતાં કહે છે કે;—

गुरुतल्प्यभिभाष्यैनस्तप्ते स्वप्यादयोमये ।
सूर्मीं ज्वलंतीं वाश्लिष्य मृत्युना च विशुद्धयति ॥
स्वयं वा शिश्नवृषणावुत्कृत्याधाय चाञ्जलौ ।
नैर्ऋतीं दिशमातिष्ठेदानिपातादजिह्मगः ॥

म. स्मृ. ११–१०३–१०४

ગુરુસ્ત્રીની સાથે ગમન કરનારાએ પોતાનું પાતક જાહેરમાં કહેવું અને પછી ધગાવેલી લોઢાની પાટ ઉપર સુવું, અથવા તો ધગધગતી લોઢાની પુતળીને આલિંગન કરીને મરણ પામવું, એટલે તે શુદ્ધ થાય છે. અથવા તો ગુરુપત્નીગમન કરનારાએ પંડે પોતાના લિંગને અને વૃષણને કાપી નાખી, ખોબામાં લઇને નૈર્ઋત્ય દિશા તરફ સીધાં મરણપર્યંત ચાલ્યા જવું.

अज्ञानेन तु यो गच्छेत्कुर्याच्चांद्रायणत्रयम् ।
दश गोमिथुनं दद्याच्छुद्धिं पाराशरोऽब्रवीत् ॥ ११ ॥

જે પુરુષ અજાણતાં માસીની સાથે ગમન કરે, તેણે ચાંદ્રાયણ વ્રત કરવું અને દશ ગાયો ને બળદોનું દાન દેવું, એટલે શુદ્ધ થાય છે એમ પારાશરે કહ્યું છે. ૧૧

पितृदारान्समारुह्य मातुराप्तां तु भ्रातृजाम् ।
गुरुपत्नीं स्नुषां चैव भ्रातृभार्यां तथैव च ॥ १२ ॥
मातुलानीं सगोत्रां च प्राजापत्यत्रयं चरेत् ।
गोद्वयं दक्षिणां दत्वा शुद्धयते नात्र संशयः ॥ १३ ॥

પોતાની બીજી જાતની ઓરમાન માતાઓ, માની બેનપણી, નાના અથવા તો મોટા ભાઈની પુત્રી, ગુરુની અન્ય વર્ણની સ્ત્રી, પુત્રની વહુ, ભાઈની સ્ત્રી, મામી અને સગોત્રની સ્ત્રી આટલાની સાથે ગમન કરનારાએ બે પ્રાજાપત્ય વ્રત કરવાં ને બે ગાયો દાનમાં આપવી, એટલે તે પાપ-માંથી મુક્ત થાય છે, એમાં સંશય નથી. ૧૨-૧૩

૧૨-૧૩ આ વચન અજાણતાં થયેલા ગમનના પ્રાયશ્ચિત્તને માટે છે એમ જાણવું. અહીં બુદ્ધિપૂર્વક, અબુદ્ધિ પૂર્વક, એકવાર તથા વારંવાર એ રીતે પાતકનાં સ્વરૂપને જોઇને તથા ગુરુનાં તારતમ્ય તરફ અને તેની સ્ત્રીનાં તારતમ્ય તરફ તથા તેની સાથે થયેલા સંયોગના તારતમ્ય તરફ જોઇને પ્રાયશ્ચિત્ત આપવું.

पशुवेश्यादिगमने महिष्युष्ट्रीकपीस्तथा ।
खरीं च सूकरीं गत्वा प्राजापत्यव्रतं चरेत् ॥ १४ ॥

પશુ જાતિની સ્ત્રી સાથે, વેશ્યા વગેરેની સાથે, ભેંસ, ઉંટડી, વાનરી, ગધેડી ને ડુક્કરીની સાથે ગમન કરનારા પુરુષે પ્રાજાપત્ય વ્રત કરવું. ૧૪

गोगामी च त्रिरात्रेण गामेकां ब्राह्मणे ददन् ।
महिष्युष्ट्रीखरीगामी त्वहोरात्रेण शुद्धयति ॥ १५ ॥

ગાયની સાથે ગમન કરનારાએ ત્રણ દિવસ ઉપવાસ કરવા અને બ્રાહ્મણને એક ગાયનું દાન દેવું, એટલે તે શુદ્ધ થાય છે અને ભેંસ, ઉંટડી તથા ગધેડીની સાથે ગમન કરનારો એક દિવસ અને એક રાત્રિ ઉપવાસ કરવાથી શુદ્ધ થાય છે. ૧૫

૧૫ ધરણીધર આ શ્લોકને આ પ્રમાણે ભણે છે;

महिष्युष्ट्रीखरीगामी त्वहोरात्रेण शुद्धयति ।
गोगामी च त्रिरात्रेण गामेकां ब्राह्मणे ददन् ॥

ભેંસ, ઉંટડી અને ગધેડીની સાથે ગમન કરનારો એક દિવસ અને એક રાત્રિ ઉપવાસ કરવાથી શુદ્ધ થાય છે અને ગાયની સાથે ગમન કરનારો ત્રણ રાત્રિ ઉપવાસ કરવાથી તથા બ્રાહ્મણને તે એક ગાય દાનમાં આપવાથી શુદ્ધ થાય છે. બીજાં પશુઓનાં કરતાં ગાય પવિત્ર ગણાય છે, તેથી તેનું પ્રાયશ્ચિત્ત વિશેષ કહ્યું છે.

डामरे समरे वापि दुर्भिक्षे वा जनक्षये ।
बन्दिग्राहे भयार्तौ वा सदा स्वस्त्रीं निरीक्षयेत् ॥ १६ ॥
चण्डालैस्सह संपर्कं या नारी कुरुते ततः ।
विप्रान्दशावरान्कृत्वा स्वकं दोषं प्रकाशयेत् ॥ १७ ॥
आकण्ठसम्मिते कूपे गोमयोदककर्दमे ।
तत्र स्थिता निराहारा त्वहोरात्रेण निष्क्रमेत् ॥ १८ ॥

ધાડું પડયું હોય તે સમયે, યુદ્ધ સમયે, દુષ્કાળ સમયે, મરકીના સમયમાં, શત્રુ રાજા દેશ ઉપર ચઢી આવી કેદ પકડીને ગુલામ કરતો હોય તે સમયે અથવા તો ચોર વગેરેનો ભય હોય ત્યારે પુરુષે સદાય રક્ષણ કરવું જોઇએ. તેવા સમયમાં જે સ્ત્રીને ચંડાલની સાથે સમાગમ થઈ જાય તો તે સ્ત્રીએ દશ બ્રાહ્મણોની સભા ભરીને તેમની પાસે પોતાનો દોષ નિવેદન કરવો અને પછી પોતાના ગળા સૂધી ખાડો ખોદી તેમાં ગાયનું છાણ તથા પાણી ભરીને એક દિવસ તથા એક રાત્રિ તે ખાડામાં નિરાહાર ઉભાં રહેવું અને બીજે દિવસે તેમાંથી બહાર નિકળવું. ૧૬-૧૮

सशिखं वपनं कृत्वा भुञ्जीयाद्यावकौदनम् ।
त्रिरात्रमुपवासित्वा त्वेकरात्रं जले वसेत् ॥ १९ ॥
शङ्खपुष्पीलतामूलं पत्रं वा कुसुमं फलम् ।
सुवर्णं पञ्चगव्यं च क्काथयित्वा पिबेज्जलम् ॥ २० ॥
एकभक्तं चरेत्पश्चाद्यावत्पुष्पवती भवेत् ।
व्रतं चरति तद्यावत्तावत्संवसते बहिः ॥ २१ ॥

તે પછી માથાની શિખા સાથે સર્વ કેશ ઉતરાવી નાખવા અને જવ તથા ચોખાની ખીચડી ખાવી. તે પછી ત્રણ દિવસ સૂધી ઉપવાસ કરવો અને છઠ્ઠે દિવસે પ્રથમની પેઠે ગળા સૂધી કરેલા ખાડામાં એક દિવસ એકલાં પાણીમાં ઉભા રહેવું અને સાતમે દિવસે ખાડામાંથી બહાર નિકળીને શંખાવળીનાં મૂળ, પાંદડાં, ફુલ અથવા તો ફળ વગેરે કોઇ પણ ભાગ તથા સુવર્ણ એ બન્નેને પંચગવ્યમાં નાખી, તેનો ઉકાળો કરીને પીવો અને રજસ્વલા થતાં સૂધી એક વખત જમવું અને ઘરનું કામકાજ કરવું નહિ, પરંતુ ઘરની બહાર રહેવું. ૧૯-૨૧

૧૯-૨૧-પ્રાયશ્ચિત્ત નિમિત્તે સ્ત્રીઓના કેશ ઉતારવાની વાત જ્યાં આવે, ત્યાં માથાના કેશની બે આંગળ લટ કાપવી, એમ સમજવું.

प्रायश्चित्ते ततश्चीर्णे कुर्याद्ब्राह्मणभोजनम् ।
गोद्वयं दक्षिणां दद्याच्छुद्धिं पाराशरोऽब्रवीत् ॥ २२ ॥

આ રીતે પ્રાયશ્ચિત્ત કર્યા પછી બે બ્રાહ્મણોને જમાડવા અને તેમને એક એક ગાય દાનમાં આપવી, એટલે તે શુદ્ધ થાય છે, આમ પારાશરે કહ્યું છે. ૨૨

૨૨–૧૭ મા શ્લોકથી અહીં સુધી જે પ્રાયશ્ચિત્ત કહેવામાં આવ્યું છે, તે અજાણતાં પુરુષની સાથે ગમન કરનારી સ્ત્રીને માટે કહ્યું છે.

चातुर्वर्ण्यस्य नारीणां कृच्छ्रं चान्द्रायणं व्रतम् ।
यथा भूमिस्तथा नारी तस्मात्तां न तु दूषयेत् ॥ २३ ॥

ચાર વર્ણની સ્ત્રીઓ જો ચાંડાલની સાથે સમાગમ કરે અને તે સમાગમ પૂર્ણ રીતે થયો નહોય તો, એટલે વીર્ય સ્ખલિત થયું નહોય તો સ્ત્રીઓએ ચાંદ્રાયણ વ્રત કરવું. કારણ કે સ્ત્રી પૃથ્વીના સમાન છે. માટે સ્ત્રીને દૂષિત ઠરાવીને તેનો ત્યાગ કરવો નહિ. ૨૩

૨૩ સ્ત્રી ચંડાલની સાથે સમાગમ કરે તો તે કર્મ અત્યંત દોષવાળું હોવાથી તેનો ત્યાગ જ કરવો જોઇએ. પ્રાયશ્ચિત્ત કરવાથી સ્ત્રીની શુદ્ધિ થાય નહિ. આવી કોઇને શંકા થાય તે દૂર કરવા માટે પરાશરમુનિએ આ શ્લોકના ઉત્તરાર્દ્ધમાં પૃથ્વીનું દૃષ્ટાંત આપ્યું છે. પૃથ્વી ઉપર ચંડાલ આદિ વાસ કરે છે અને તેથી તે દૂષિત થાય છે–અભડાય છે પરંતુ તેને ખોદી નાંખવાથી, છાણ વગેરેથી લીંપવાથી શુદ્ધ કરીને તેનો ફરીને ઉપયોગ કરવામાં આવે છે તેમ જ અપવિત્ર થયેલી સ્ત્રી પણ જો પ્રાયશ્ચિત્ત કરીને શુદ્ધ થાય તો તેનો પાછી સ્વીકાર કરવો. પરંતુ તેનો ત્યાગ કરવો નહિ. આ શ્લોકમાં ચારેય વર્ણની સ્ત્રીને માટે ચંડાલ વગેરેની સાથે ગમન કરવા માટે ચાંદ્રાયણ વ્રત કહ્યું છે, પરંતુ બ્રાહ્મણીને માટે સંવર્ત સ્મૃતિમાં ચંડાલાદિકની સાથે ગમન કરે તો ચાર ચાંદ્રાયણ કરવાની આજ્ઞા કરી છે.

આ શ્લોકમાં સ્ત્રીઓને ચંડાલોની સાથે ગમન કરવાનો પ્રસંગ પડતાં જે પ્રાયશ્ચિત્ત કહેવામાં આવ્યું છે, તે આપત્કાળના સમયમાં ચંડાલો અથવા તેવી બીજી નીચ જાતિના પુરુષો સ્ત્રીને પરાણે પકડીને લઈ જાય અને તેની સાથે બલાત્કાર કરે અથવા તો માત્ર ઉપલક સંભોગ જ કરે, તેના સંબંધમાં પ્રાયશ્ચિત્ત કહેવામાં આવ્યું છે એમ જાણવું.

बन्दीग्राहेण या भुक्ता हत्वा बध्वा बलाद्भयात् ।
कृत्वा सान्तपनं कृच्छ्रं शुद्ध्येत्पाराशरोऽब्रवीत् ॥ २४ ॥

સ્રીને કેદ કરીને લઈ જાય અને ત્યાં માર મારીને, દોરડાથી બાંધીને, બળાત્કાર કરીને અથવા તો ભય દેખાડીને જે સ્રીનો ઉપભોગ કરવામાં આવે તે સ્રી સાંતપન કૃચ્છ્ર નામનું વ્રત કરવાથી શુદ્ધ થાય છે, એમ પારાશર કહે છે. ૨૪

सकृद्भुक्ता तु या नारी नेच्छन्ती पापकर्मभिः ।
प्राजापत्येन शुद्ध्येत ऋतुप्रस्रवणेन च ॥ २५ ॥

સ્રીની ઇચ્છા ન હોય, પરંતુ ચંડાલોએ બળાત્કાર કરીને તે સ્રીને એકવારજ ભોગવી હોય તો તે સ્રી પ્રાજાપત્ય વ્રત કરવાથી તથા ઋતુ-કાલમાં રુધિરનો સ્રાવ થયા પછી શુદ્ધ થાય છે. ૨૫

૨૫ ષટ્‌ત્રિંશતમત નામના ગ્રંથમાં આ વિષય ઉપર કહ્યું છે કે;–

ब्राह्मणी क्षत्रियवैश्यसेवायामतिकृच्छ्रकृच्छ्रातिकृच्छ्रौ चरेत् ।
क्षत्रिययोषितो ब्राह्मणराजन्यवैश्यसेवायां कृच्छ्रार्धं प्राजापत्यमतिकृच्छ्रं च ॥
वैश्ययोषितो ब्राह्मणराजन्य वैश्यसेवायां कृच्छ्रपादः कृच्छ्रार्धं प्राजापत्यं च ।
शूद्रायाः शूद्रसेवने प्राजापत्यं ब्राह्मणराजन्यवैश्यसेवायामहोरात्रं त्रिरात्रं कृच्छ्रार्द्धम् ॥

બ્રાહ્મણ જાતિની સ્રી ક્ષત્રિય તથા વૈશ્ય જાતિના પુરુષની સાથે વ્યભિચાર કરે તો તેણે અનુક્રમે અતિકૃચ્છ્ર તથા કૃચ્છ્રાતિકૃચ્છ્ર નામનાં વ્રત કરવાં, ક્ષત્રિય જાતિની સ્રીઓ જો બ્રાહ્મણ, ક્ષત્રિય અથવા તો વૈશ્ય જાતિના પુરુષની સાથે વ્યભિચાર કરે તો તેઓએ અર્ધકૃચ્છ્ર પ્રાજાપત્ય અને અતિકૃચ્છ્ર નામનાં વ્રત અનુક્રમે કરવાં. વૈશ્ય જાતિની સ્રી જો બ્રાહ્મણ, ક્ષત્રિય અથવા તો વૈશ્ય જાતિના પુરુષની સાથે વ્યભિચાર કરે તો તેણે અનુક્રમે એક ચતુર્થાંશ કૃચ્છ્ર, અર્ધકૃચ્છ્ર, તથા પ્રાજાપત્ય વ્રત કરવું. શૂદ્રજાતિની સ્રી શૂદ્રજાતિના પુરુષની સાથે વ્યભિચાર કરે તો તેણે પ્રાજાપત્ય નામનું વ્રત કરવું અને શૂદ્રજાતિની સ્રી જો બ્રાહ્મણ, ક્ષત્રિય, અને વૈશ્યની સાથે વ્યભિચાર કરે તો તેણે અનુક્રમે એક દિવસ તથા એક રાત્રિ ઉપવાસ કરવો, ત્રણ રાત્રિ ઉપવાસ કરવો તથા અર્ધકૃચ્છ્ર પ્રાયશ્ચિત્ત કરવું.

એક સ્રી, ગર્ભ રહ્યા પછી શૂદ્રાદિકની સાથે વ્યભિચાર કરે તો, ઉત્તમ જાતિની સ્રીને અધમ જાતિના પુરુષની સાથે વ્યભિચાર કરવાનું પ્રાયશ્ચિત્ત કઠિન હોય છે, માટે પાતકી સ્રીએ પ્રસવ થયા પછી પ્રાયશ્ચિત્ત કરવું.

સ્રી પાપ કરે છે તેથી કેવળ સ્રીને જ પ્રાયશ્ચિત્ત કરવું પડતું નથી, પરંતુ તેના પતિને પણ પ્રાયશ્ચિત્ત કરવું પડે છે, એ વાત નીચેના શ્લોકથી દર્શાવે છે;–

पतत्यर्द्धं शरीरस्य यस्य भार्या सुरां पिबेत् ।
पतितार्द्धशरीरस्य निष्कृतिर्न विधीयते ॥ २६ ॥

જે પુરુષની ભાર્યા સુરાનું મદિરાનું–પાન કરે છે, તે પુરુષનો અર્ધ ભાગ એટલે સ્ત્રી પતિત (પાતકી) થાય છે અને પતિત થયેલી તે સ્ત્રીએ મદિરાપાનનું પ્રાયશ્ચિત્ત કરવું. સાધારણ પ્રાયશ્ચિત્તથી તેનું પાતક દૂર થતું નથી. ૨૬

૨૬ વેદમાં કહ્યું છે કે, अर्धो वा एष आत्मनो यत् पत्नी પત્ની પુરુષનો અર્ધ ભાગ ગણાય છે. માટે સ્ત્રી જો અભક્ષ ભક્ષણ, અપેય પાન વગેરે કરીને પાતકી થાય તો તેનો પતિ પણ તેના પાતકનો ભાગી થાય છે. કારણ કે સ્ત્રી પુરુષનું અર્ધ અંગ છે. માટે પુરુષે પણ શુદ્ધ થવામાટે પ્રાયશ્ચિત્ત કરવું જોઇએ, પરંતુ પુરુષ પ્રાયશ્ચિત્ત કરે, તેથી તેની સ્ત્રી શુદ્ધ થાય એમ માનવું નહિ. સ્ત્રીએ પણ પોતાના પાપનું પ્રાયશ્ચિત્ત કરવું જ જોઇએ.

જેની સ્ત્રી પતિત થઈ હોય, તેના પતિએ કેવું પ્રાયશ્ચિત્ત કરવું તે કહે છે;–

गायत्रीं जपमानस्तु कृच्छ्रं सान्तपनं चरेत् ।

પતિત થયેલી ભાર્યાના પતિએ ગાયત્રીનો જપ કરવો તથા સાંતપન નામનું વ્રત કરવું.

આ શ્લોકમાં જપમાનઃ એવો વર્તમાન પ્રયોગ છે, તે વ્રત પૂર્ણ થાય ત્યાં સુધી જપ કરવો, એમ સૂચવે છે.

गोमूत्रं गोमयं क्षीरं दधिं सर्पिः कुशोदकम् ॥ २७ ॥
एकरात्रोपवासश्च कृच्छ्रं सान्तपनं स्मृतम् ।

એક દિવસ ગોમૂત્રનું, એક દિવસ છાંણનું, એક દિવસ દહિનું, એક દિવસ ઘીનું અને એક દિવસ દર્ભોદકનું પાન કરવું અને એક દિવસ તથા રાત્રિ ઉપવાસ કરવો, તેનું નામ સાંતપન કૃચ્છ્ર વ્રત જાણવું. ૨૭

૨૭ આ સંહિતામાં બે રાત્રિનું તથા સાત રાત્રિનું એમ બે પ્રકારનું સાંતપન કૃચ્છ્ર કહ્યું છે. પરંતુ અહીં સાત રાત્રિનું જ સાંતપન વ્રત કરવું, એમ આ વચનથી પરાશર મુનિ આજ્ઞા કરે છે.

जारेण जनयेद्गर्भं मृतेऽव्यक्ते गते पतौ ॥ २८ ॥
तां त्यजेदपरे राष्ट्रे पतितां पापकारिणीम् ।

પતિ મરણ પામ્યો હોય અથવા તો પરદેશમાં ચાલ્યો ગયો અને તેના સમાચાર મળતા ન હોય અને તેથી તેની સ્ત્રી શૂદ્ર જાતિના પુરુષની સાથે વ્યભિચાર કરીને ગર્ભ ધારણ કરે તો પાપ કર્મ કરનારી તે વ્યભિચારિણી સ્ત્રીને દેશપાર કરવી. ૨૮

૨૮ જે સ્ત્રી અધમ જાતિના પુરુષની સાથે જાણી જોઇએ વ્યભિચાર કરે અને પ્રાયશ્ચિત્ત કરે નહિ તથા વ્યભિચારથી સંતાન ઉત્પન્ન કરે તેવી સ્ત્રીને દેશપાર કરવી, એમ પારાશર આ વચનથી આજ્ઞા કરે છે. કોઇને શંકા થાય કે, ચતુર્વિંશતિ મત નામના ધર્મશાસ્ત્રના સંગ્રહ ગ્રંથમાં તથા બીજા ધર્મશાસ્ત્રમાં સ્ત્રીનો ત્યાગ કરવાનો નિષેધ કરવામાં આવ્યો છે;—

स्त्रीणां नास्ति परित्यागो ब्रह्महत्यादिभिर्विना ।
तत्रापि गृहमध्ये तु प्रायश्चित्तानि कारयेत् ॥

બ્રહ્મહત્યા આદિ પાતક વિનાનાં બીજા પાતકમાં સ્ત્રીઓનો ત્યાગ કરવાનું કહ્યું નથી અને સ્ત્રીએ બ્રહ્મહત્યાદિક પાતક કર્યું હોય, તોપણ તેને ઘરમાં રાખીને તેની પાસે પ્રાયશ્ચિત્ત કરાવવાં વગેરે વગેરે.

આ શ્લોકમાં જે સ્ત્રીનો ત્યાગ કરવાનો નિષેધ કર્યો છે, તે કરેલાં પાપનો પશ્ચાત્તાપ કરનારી અને પ્રાયશ્ચિત્તની અધિકારિણી સ્ત્રીનો ત્યાગ નહિ કરવામાટે કહ્યું છે. પરંતુ જે સ્ત્રી પ્રાયશ્ચિત્ત કરવાને રાજી ન હોય, તેવી સ્ત્રીને માટે નિષેધ કર્યો નથી. ચતુર્વિંશતિ મતમાં તથા વસિષ્ઠ સ્મૃતિમાં કહ્યું છે કે;

चतस्रस्तु परित्याज्याः शिष्यगा गुरुगा च या ।
पतिघ्नी तु विशेषेण जुङ्गितोपगता च या ॥

શિષ્યની સાથે અને ગુરુની સાથે (સસરા વગેરે વડીલની સાથે) ગમન કરનારી, પતિને મારનારી તથા નીચ લોકોની સાથે વ્યભિચાર કરનારી, આવી ચાર પ્રકારની સ્ત્રીઓનો ત્યાગ કરવો. તેમાં પણ પતિને મારનારીનો તો વિશેષે કરીને ત્યાગ કરવો. મનુએ પાપ કરનારી સ્ત્રીના વિષયમાં કહ્યું છે કે;—

विप्रदुष्टां स्त्रियं भर्ता निरुंध्यादेकवेश्मनि ।

ભર્તારે પાપ કરનારી સ્ત્રીને એક ઘરને વિશે કેદ કરવી. મનુનાં આ વચનનો અને પરાશરનાં વચનનો વિષય સમાન નથી. મનુએ निरुंध्यात् એમ કહીને ભર્તારનું કર્તવ્ય કહ્યું છે અને પછી તે સ્ત્રીને કરવાનું પ્રાયશ્ચિત્ત કહ્યું છે. માટે જાણીને પાપ કરનારી અને તેને માટે પ્રાયશ્ચિત્ત નહિ કરનારી સ્ત્રીનો ત્યાગ કરવામાં કોઈ પણ જાતનો દોષ નથી.

ब्राह्मणी तु यदा गच्छेत्परपुंसा समन्विता ॥ २९ ॥
सा तु नष्टा समुद्दिष्टा न तस्यागमनं पुनः ।

બ્રાહ્મણ જાતિની સ્ત્રી પરાયા પુરુષની સાથે બહારગામ નિકળી જાય તો તે જાતિ બહાર થઈ છે, એમ જાહેર કરવી અને તે સ્ત્રીને ઘરમાં આવવા દેવી નહિ. ૨૯

૨૯ મનુ સ્ત્રીના ત્રણ રક્ષક ગણાવે છેઃ—

पिता रक्षति कौमारे भर्ता रक्षति यौवने ।
पुत्रस्तु स्थविरे भावे न स्त्री स्वातंत्र्यमर्हति ॥

પિતા સ્ત્રીનું કુમારી અવસ્થામાં રક્ષણ કરે છે, ભર્તાર તરુણ અવસ્થામાં રક્ષણ કરે છે અને પુત્ર વૃદ્ધાવસ્થામાં રક્ષણ કરે છે. સ્ત્રી સ્વતંત્રપણાને યોગ્ય નથી. આ શ્લોકમાં જે ત્રણ પુરુષ ગણાવ્યા છે તે તથા કુટુંબી ન હોય તેવા પુરુષને પરપુરુષ જાણવો અને તેવા પુરુષની સાથે જે સ્ત્રી પરગામ જઇને અથવા તો ગામમાં રહીને હાસ્યવિનોદ કરે, તે સ્ત્રીને જાતિમાંથી બહાર કાઢવી અને ફરીને એકવાર ભાગી ગયા પછી પાછી આવે તો પણ તેને ઘરમાં સંઘરવી નહિ.

कामान्मोहाच्च या गच्छेत्त्यक्त्वा बन्धून्सुतान्पतिम् ॥ ३० ॥
सातु नष्टा परे लोके मानुषेषु विशेषतः ।

જે સ્ત્રી કામનાને લીધે અથવા તો સ્ત્રીના ધર્મને યથાર્થ રીતે નહિ જાણવાથી પોતાના ભાઇઓનો, પુત્રોનો તથા પતિનો ત્યાગ કરીને સ્વતંત્ર રીતે પરગામ ચાલી જાય (અથવા તો એક ગામમાં જ રહે), તે સ્ત્રીને પરલોક મળતો નથી અને મનુષ્ય લોકમાં તો તે વિશેષે કરીને ભ્રષ્ટ થાય છે. ૩૦

૩૦ કામનાથી અથવા તો પોતાનો ધર્મ નહિ જાણવાથી જે સ્ત્રી પોતાના કુટુંબીઓનો ત્યાગ કરીને પરપુરુષની સાથે જઇને રહે છે, તે સ્ત્રીને પરલોક મળતો નથી. પરંતુ કાલાંતરે તે સ્ત્રીને જો પશ્ચાત્તાપ થાય ને તે સ્ત્રી જો પ્રાયશ્ચિત્ત કરે છે તો તેને પરલોક મળે છે. પરન્તુ પ્રાયશ્ચિત્ત કર્યાં પછી પણ તેનાં બાંધવો તેને સંઘરતા નથી. તેથી ભગવાન્ પરાશર મૂળમાં લખે છે કે मानुषेषु विशेषतः ॥ મનુષ્ય લોકમાં તો પ્રાયશ્ચિત્ત કર્યાં છતાં પણ તે વ્યભિચારિણી સ્ત્રીનો સંઘરો થતો નથી.

ઉપર કહેલી બાબતનો અપવાદ કહે છે;—

मदमोहगता नारी क्रोधाद्दण्डादिताडिता ॥ ३१ ॥
अद्वितीयगता चैव पुनरागमनं भवेत् ।

મદથી (પતિ, સાસુ, સસરા વગેરે અપમાન કરવાથી મનમાં ઉપજેલા ક્રોધથી) અથવા તો સ્ત્રી જાતિના ધર્મને ભૂલી જવાથી જે સ્ત્રી ઉદ્ધત થઇ ગઇ હોય, તેને તેનો પતિ અથવા તો સસરો વગેરે કોઇ લાકડી વગેરેથી મારે અને તે માતાપિતા વિનાની એકલી હોવાથી પંડે એકલી જ ઘરમાંથી નાશી જાય, પરંતુ તે ફરીને જો પાછી આવે તો તેને ઘરમાં રાખવી. ૩૧

નાશી ગયેલી સ્ત્રી કેટલા દિવસમાં આવે તો રાખવી તે કહે છે;-

दशमे तु दिने प्राप्ते प्रायश्चित्तं न विद्यते ॥ ३२ ॥

दशाहं न त्यजेन्नारीं त्यजेन्नष्टश्रुतां तथा ।

એક સ્ત્રીને લાકડી વગેરે મારી હોય અને તે સ્ત્રી ક્રોધ કરીને નાશી જાય અને દશ દિવસની અંદર પાછી આવે તો તેનો ત્યાગ કરવો નહિ. પરંતુ તે વટલી ગઈ છે એમ સાંભળવામાં આવે તો તેનો ત્યાગ કરવો. પરંતુ તે જો પ્રાયશ્ચિત્ત કરે તો તેને ઘરમાં રાખવી. ૩૧

વટલી ગયેલી સ્ત્રીને ઘરમાં રાખનારા ભર્તાર વગેરેને પ્રાયશ્ચિત્ત કહે છે;-

भर्ताचैव चरेत्कृच्छ्रं कृच्छ्रार्द्धं चैव बांधवाः ॥ ३३ ॥

એક સ્ત્રી ઘરમાંથી નાશી ગઇ હોય તથા વટલી ગઈ હોય અને ઘેર આવે ત્યારે તેનો ભર્તાર તેને ઘરમાં રાખે તો તેણે કૃચ્છ્ર વ્રત કરવું ને તેના ભાઇઓ પિતા વગેરેએ અર્ધકૃચ્છ્ર કરવું. ૩૩

तेषां भुक्त्वा च पीत्वा च अहोरात्रेण शुद्ध्यति ।

વટલી ગયેલી સ્ત્રીનો ભર્તાર, સસરો અને તેની સાથે રહેનારા દીયેર, જેઠ વગેરે જો પ્રાયશ્ચિત્ત કરે નહિ તો તેવાઓની સાથે ભોજન કરવાથી તથા જળપાન કરવાથી પાતક લાગે છે અને તે એક દિવસ અને એક રાત્રિ ઉપવાસ કરવાથી દૂર થાય છે.

ब्राह्मणी तु यदा गच्छेत्परपुंसा विवर्जिता ॥ ३४ ॥

गत्वा पुंसां शतं याति त्यजेयुस्तान्तु गोत्रिणः ।

બ્રાહ્મણ જાતિની સ્ત્રી પરપુરુષ વગર એકલી પણ જો ઘરમાંથી નાશી જાય, તો તે કાલાંતરે સેંકડો પુરુષોની પાસે પણ ગઈ હશે, એમ સંભાવના થાય છે માટે તેવી સ્ત્રીનો પણ તેના સગોત્રી પુરુષોએ ત્યાગ કરવો. ૩૪

૩૪ જે સ્ત્રી ઘરમાંથી એકલી નાશી જાય, તે સ્ત્રી સ્વતંત્ર હોવાથી સેંકડો પુરુષની સાથે શા માટે વિહાર કરે નહિ ? માટે જો તેના દુરાચાર જાણવામાં આવે તો તેને ઘરમાં સંઘરવી નહિ, પરન્તુ જો નિર્દોષ જાણવામાં આવે તો સંઘરવી.

पुंसो यदि गृहं गच्छेत्तदशुद्धं गृहं भवेत् ॥ ३५ ॥

पितृमातृगृहं यच्च जारस्यैव तु तद्गृहम् ।

જો નિકળી ગયેલી વ્યાભિચારિણી સ્ત્રી પોતાના પતિના ઘરમાં અથવા તો પોતાનાં માતાપિતાના ઘરમાં આવીને રહે છે તો તેઓનું ઘર પણ અશુદ્ધ થાય છે અને તેનાં ઘરને જારનું જ ઘર છે એમ જાણવું. ૩૫

उल्लिख्य तद्गृहं पश्चात्पञ्चगव्येन शोधयेत् ॥ ३६ ॥
त्यजेच्च मृण्मयं पात्रं वस्त्रं काष्ठं च शोधयेत् ।
संभाराञ्छोधयेत्सर्वान्गोवालैश्च फलोद्भवान् ॥ ३७ ॥
ताम्राणि पञ्चगव्येन कांस्यानि दश भस्मभिः ।
प्रायश्चित्तं चरेद्विप्रो ब्राह्मणैरुपपादितम् ॥ ३८ ॥
गोद्वयं दक्षिणां दद्यात्प्राजापत्यद्वयं चरेत् ।
इतरेषामहोरात्रं पञ्चगव्यं च शोधनम् ॥ ३९ ॥

વ્યાભિચારિણી સ્ત્રી જે ઘરમાં આવીને રહી હોય, તે ઘરને તેના ગયા પછી ખોદી નાખવું તથા પંચગવ્ય છાંટીને શુદ્ધ કરવું. માટીનાં વાસણોને નાખી દેવાં, વસ્ત્રોને તથા લાકડાંનાં પાત્રોને ધોઇને શુદ્ધ કરવાં, નાળીયેર, તુબડાં, બીલી, કોંઠ વગેરે ફળનાં પાત્રોને ગાયના વાળની પીછીથી ધોઇને સાફ કરવાં, તાંબાનાં વાસણોને પંચગવ્યથી શુદ્ધ કરવાં, કાંસાનાં વાસણોને દશવાર રાખથી શુદ્ધ કરવાં, ઘરના ધણીએ બ્રાહ્મણો કહે તે પ્રાયશ્ચિત્ત કરવું, બે પ્રાજાપત્ય કરવાં અને બે ગાય દક્ષિણામાં આપવી. ઘરમાં રહેનારા બીજાઓએ પંચગવ્યનું પાન કરીને એક અહોરાત્ર ઉપવાસ કરવો. ૩૬–૩૯

उपवासैर्व्रतैः पुण्यैः स्नानसन्ध्यार्चनादिभिः ।
जपहोमदयादानैः शुद्ध्यन्ते ब्राह्मणादयः ॥ ४० ॥

ઉપવાસ કરવાથી, પુણ્યપ્રદ વ્રતો કરવાથી, સ્નાન, સંધ્યા તથા દેવપૂજા વગેરે કરવાથી, જપ, હોમ કરવાથી, દયા રાખવાથી તથા દાન દેવાથી બ્રાહ્મણ આદિ વર્ણ શુદ્ધ થાય છે. ૪૦

आकाशं वायुरग्निश्च मेध्यं भूमिगतं जलम् ।
न दुष्यन्ति च दर्भाश्च यज्ञेषु चमसा यथा ॥ ४१ ॥

इति श्रीपाराशरसंहितायां प्रायश्चित्तकाण्डेऽगम्यागमनादिप्रायश्चित्तं नाम दशमोऽध्यायः समाप्तः ॥

આકાશ, વાયુ, અગ્નિ, પૃથ્વી ઉપર રહેલું પાણી અને દર્ભ, આ સર્વે કોઇ પણ દિવસ અભડાતાં નથી, પરંતુ પવિત્ર રહે છે. ઉદાહરણ તરિકે યજ્ઞમાં ઋત્વિજો ચમસ નામનાં પાત્રોને મુખમાં ઘાલીને સોમરસ પીએ છે, તોપણ તે ઉચ્છિષ્ટ થતાં નથી. ૪૧

૪૧ ઘરના આકાશ વગેરેને એટલે ઉપરના માળ વગેરેને શુદ્ધ કરવાનો પ્રયત્ન કરવો નહિ, કારણ કે તેને કંઈ લેપ લાગતો નથી. તેમ જ ઘરમાં ટાંકું વગેરે હોય તો તેનું પાણી પણ ઉલેચી નાખવું નહિ. ઉપરના શ્લોકોમાં જે પ્રાયશ્ચિત્ત કહ્યું છે તે કોઈ પણ વ્યભિચારિણી સ્ત્રી ઘણો વખત સુધી જો એક ઘરમાં રહી હોય તો તેને માટે કહ્યું છે; પરન્તુ જો તેણે એકવાર ઘરમાં પ્રવેશ કર્યો હોય તો સાવરણીથી ઘરને વાળીને શુદ્ધ કરવું.

ઇતિ શ્રી પારાશર ધર્મશાસ્ત્રમાં 'અગમ્યાગમનાદિનાં પ્રાયશ્ચિત્ત' એ નામનો અધ્યાય ૧૦ મો સમાપ્ત.

अध्याय ११ मो.

अभक्ष भक्षणनुं प्रायश्चित्त.

અધ્યાય ૧૦ મામાં ઉપપાતકરૂપ અગમ્યાગમનનું તથા તે પ્રસંગે ગુરુપત્નીગમન વગેરે મહાપાતકનું પ્રાયશ્ચિત્ત કહ્યું. હવે આ અગ્યારમાં અધ્યાયમાં અભોજ્ય અન્નના ભોજનનું પ્રાયશ્ચિત્ત મુખ્યત્વે કરીને કહેવામાં આવશે. કેટલાએક અભોજ્ય ભોજનને અનુપાતક કહે છે. મનુએ અભોજ્યભોજન (અભક્ષ્યભક્ષણ)ને સુરાપાનસમાન કહ્યું છે;–

गर्हितानाद्ययोर्जग्धिः सुरापानसमानि षट् ॥

ગર્હિત કહેતાં ચાંડાળાદિકના સંસર્ગથી દૂષિત થયેલું અને અનાદ્ય કહેતાં ઉત્પત્તિથી જ ખાવાને અયોગ્ય લસણ ડુગળી વગેરેનું ભક્ષણ સુરાપાનના સમાન જાણવું. કેટલાએક ગર્હિત અન્નના ભોજનને ઉપપાતક કહે છે. મનુએ જ કહ્યુંછે કે;

आत्मार्थे च क्रियारंभो निन्दितान्नादनं तथा । चोपपातकम् ॥

પોતાને માટે પાક તૈયાર કરવો તથા નિંદિત અન્નનું ભોજન આ ઉપપાતક કહેવાય છે. આ વિષયમાં આ પ્રમાણે નિર્ણય છે;–કોઈ અભક્ષ્ય પદાર્થની શાસ્ત્રમાં અધિક નિંદા કરવામાં આવી હોય અને તેનું ઇચ્છાપૂર્વક અથવા તો વારંવાર ભોજન કરવાનું અધિક પ્રાયશ્ચિત્ત શાસ્ત્રમાં કહ્યું હોય, તેવા અભક્ષ્ય પદાર્થનું ભક્ષણ અનુપાતક કહેવાય છે અને જે અભક્ષ્ય પદાર્થની શાસ્ત્રમાં નિંદા ઓછી હોય અને જેનું ભક્ષણ અજાણતાં તથા એકવાર જ થઈ ગયું હોય તથા જેનું પ્રાયશ્ચિત્ત અલ્પ હોય, તે ઉપપાતક કહેવાય છે. ઉદાહરણ તરિકે, માતા, ભગિની તથા પરસ્ત્રીઓ સર્વ અગમ્યા છે. છતાં પરસ્ત્રીની સાથે ગમન કરવાનું પ્રાયશ્ચિત્ત અલ્પ છે અને ગુરુપત્ની, ભગિની વગેરેની સાથે ગમન કરવાનું પ્રાયશ્ચિત્ત અધિક છે. તેથી પરસ્ત્રીનું ગમન ઉપપાતક કહેવાય છે અને ગુરુપત્ની વગેરેનું ગમન અતિપાતક–મહાપાતક કહેવાય છે. આમ વિષ્ણુસ્મૃતિમાં કહ્યું

છે. આ રીતે અગમ્યાગમનના ગૌરવને અને લાઘવને લઇને તેના પ્રાયશ્ચિત્તનો નિર્ણય કરવો. આ અધ્યાયમાં પ્રથમ અમેધ્ય (અપવિત્ર) આદિક પદાર્થના ભોજનનું પ્રાયશ્ચિત્ત કહે છે:–

अमेध्यरेतोगोमांसं चण्डालान्नमथापि वा ।
यदि भुक्तं तु विप्रेण कृच्छ्रं चान्द्रायणं चरेत् ॥ १ ॥

અમેધ્ય (વિષ્ઠા, મૂત્ર, હાડકાં વગેરે અપવિત્ર) પદાર્થનું, રેતનું (વીર્યનું) અને ચંડાલના અન્નનું, બ્રાહ્મણ અજાણતાં ભોજન કરે તો તેણે પ્રાજાપત્ય વ્રત કરવું અને જાણી જોઇને ભોજન કરે તો ચાંદ્રાયણ વ્રત કરવું. ૧

૧ શાસ્ત્રમાં અમેધ્ય (અપવિત્ર) પદાર્થ નીચે પ્રમાણે ગણાવ્યા છે;–

मानुषास्थि शवं विष्ठा रेतो मूत्रार्तवं वसा ।
स्वेदाश्रुदूषिका श्लेष्मा मद्यं चामेध्यमुच्यते ॥

મનુષ્યનાં હાડકાં, શબ, વિષ્ઠા, વીર્ય, મૂત્ર, અટકાવનું રુધિર, વસા (ચરબી), પરસેવો, આંખના ચીપડા, બડખા અને મદ્ય આ સર્વ અમેધ્ય (અપવિત્ર) પદાર્થ કહેવાય છે.

तथैव क्षत्रियो वैश्योप्यर्द्धं चान्द्रायणं चरेत् ।
शूद्रोप्येवं यदा भुङ्क्ते प्राजापत्यं समाचरेत् ॥ २ ॥

ક્ષત્રિય તથા વૈશ્ય જાતિનો પુરુષ પણ જો ઉપરના પદાર્થમાંના કોઇ પણ પદાર્થનું ભક્ષણ કરે તો તેણે અર્ધું ચાંદ્રાયણ વ્રત કરવું અને શૂદ્ર જો ઉપરના પદાર્થમાંના કોઇ પણ પદાર્થનું ભક્ષણ કરે તો તેણે પ્રાજાપત્ય વ્રત કરવું. ૨

पञ्चगव्यं पिबेच्छूद्रो ब्रह्मकूर्चं पिबेद्द्विजः ।
एकद्वित्रिचतुर्गा वा दद्याद्विप्राद्यनुक्रमात् ॥ ३ ॥

પ્રાયશ્ચિત્ત કર્યા પછી શૂદ્રે પંચગવ્યનું પ્રાશન કરવું અને દ્વિજ વર્ણના પુરુષોએ બ્રહ્મકૂર્ચનું પ્રાશન કરવું અને તે પછી બ્રાહ્મણે એક, ક્ષત્રિયે બે, વૈશ્યે ત્રણ અને શૂદ્રે ચાર ગાય દક્ષિણામાં આપવી. ૩

૩ ગાયો બળદની સાથે આપવી, એમ કેટલાએક ટીકાકાર કહે છે. પંચગવ્ય અને બ્રહ્મકૂર્ચનો વિધિ હવે પછી કહેવામાં આવશે. તેમાં દ્વિજવર્ણે મંત્ર ભણીને બ્રહ્મકૂર્ચ પીવું અને શૂદ્રે મંત્ર ભણ્યા વગર બ્રહ્મકૂર્ચનું પાન કરવું. મૂળ શ્લોકમાં वा શબ્દ છે, તેનો અભિપ્રાય એવો છે કે, જો ગાય ન હોય તો તેના બદલામાં સુવર્ણનું દાન દેવું. પ્રજાપતિ સુવર્ણના દાનનું પરિમાણ આ રીતે કહે છે;

गवामलाभे निष्कं वा निष्कार्द्धं पादमेव वा ।

ગાય ન મળે તો એક નિષ્ક, અર્ધ નિષ્ક અથવા તો એકચતુર્થાંશ નિષ્ક (સુવર્ણનો સિક્કો) આપવો.

शूद्रान्नं सूतकान्नं च अभोज्यस्यान्नमेव च ।
शङ्कितं प्रतिषिद्धान्नं पूर्वोच्छिष्टं तथैव च ॥ ४ ॥
यदि भुक्तं तु विप्रेण अज्ञानादापदापि वा ।
ज्ञात्वा समाचरेत्कृच्छ्रं ब्रह्मकूर्चं तु पावनम् ॥ ५ ॥

શૂદ્રનું અન્ન, જનનાશૌચવાળા અથવા તો મરણાશૌચવાળા પુરુષનું અન્ન અથવા તો જે અન્ન ઉપર ચંદ્રગ્રહણ અથવા તો સૂર્યગ્રહણ વીતી ગયું હોય તેવું અન્ન, નટ, ભાંડ, ભવૈયા, રાજા, ચોર વગેરેનું શાસ્ત્રમાં નિષિદ્ધ કરેલું અન્ન તથા જે અન્નને માટે ખાવા યોગ્ય છે કે નથી, આવી શંકા થઈ હોય તેવું અન્ન તથા શાસ્ત્રમાં જે અન્ન ખાવાનો નિષેધ કર્યો હોય તેવું અન્ન તથા પૂર્વ ઉચ્છિષ્ટ અન્ન જો બ્રાહ્મણ અજાણતાં અથવા તો આપત્તિને લીધે ખાય તો તેણે બ્રહ્મકૂર્ચનું પાન કરવું તથા કૃચ્છ્ર વ્રત કરવું, એટલે તે પવિત્ર થાય છે. ૪–૫

૪–૫ એક પાત્રમાં અન્ન ભરેલું હોય તેમાંથી અર્ધું ખાવામાં આવે અને અર્ધું બાકી રહે, તેને બીજા સમયમાં જો ખાવામાં આવે તો તે અન્નને પૂર્વ ઉચ્છિષ્ટ અન્ન કહેવામાં આવે છે. આ રીતે સૂતકીના અન્નથી લઇને પૂર્વ ઉચ્છિષ્ટ અન્ન સુધીનાં પાંચ પ્રકારનાં અન્નનું ભક્ષણ કરનારાએ કૃચ્છ્ર વ્રત કરવું તથા બ્રહ્મકૂર્ચનું પાન કરવું.

बालैर्नकुलमार्जारैरन्नमुच्छेषितं यदा ।
तिलदर्भोदकैः प्रोक्ष्य शुद्ध्यते नात्र संशयः ॥ ६ ॥

(પાંચ વર્ષ સૂધીના) બાળકોએ, નોળીયાંએ તથા બીલાડાંએ જો અન્નને ઉચ્છિષ્ટ કર્યું હોય તો, એટલે તેમાં મોઢું અરાડ્યું હોય તો તલ અને દર્ભનાં પાણીથી તે અન્નને પ્રોક્ષણ કરવું, એટલે તે શુદ્ધ થાય છે. એમાં જરા પણ સંશય નથી. ૬

૬ પ્રોક્ષણ કર્યા વગર ખાય તો પ્રાયશ્ચિત્ત કરવું પડે.

एकपङ्क्त्युपविष्टानां विप्राणां सह भोजने ।
यद्येकोपि त्यजेत्पात्रं शेषमन्नं न भोजयेत् ॥ ७ ॥

બ્રાહ્મણો એક પંક્તિમાં સાથે બેસીને જમતા હોય, તેમાંથી એક બ્રાહ્મણ પણ જો પોતાનું પાત્ર તજી દઇને પંક્તિમાંથી ઉઠી જાય તો બાકીના અન્નને ઉચ્છિષ્ટ ગણીને તેનું ભોજન કરવું નહિ. ૭

मोहाद्भुञ्जीत यस्तत्र पङ्क्तावुच्छिष्टभाजने ।
प्रायश्चित्तं चरेद्विप्रः कृच्छ्रं सान्तपनं तदा ॥ ८ ॥

આ ઉચ્છિષ્ટપાત્રવાળી પંક્તિમાં બેઠેલો જે બ્રાહ્મણ અજાણતાં તે ઉચ્છિષ્ટ અન્નનું ભોજન કરે, તેણે કૃચ્છ્રવ્રત તથા સાંતપન વ્રત પ્રાયશ્ચિત્ત તરિકે કરવાં. ૮

૮ બ્રાહ્મણોની પંક્તિ જમવા બેઠી હોય અને તેમાંથી એક બ્રાહ્મણ પણ આચમન કરી, હાથ ધોઇને ઉઠી જાય તો બીજા બ્રાહ્મણોએ બાકીનું ભોજન કરવું નહિ. કદાચ કોઈ આ શાસ્ત્રીય નિષેધથી અજાણ્યો હોય અને જો જમે તો તેણે સાંતપન વ્રત કરવું. આ સાંતપન વ્રત બે રાત્રિનું જાણવું. તેમાં પહેલે દિવસે પંચગવ્ય અને દર્ભના જલનું પાન કરવું અને બીજે દિવસે ઉપવાસ કરવો. આ બે દિવસનું સાંતપન કૃચ્છ્ર વ્રત કહેવાય છે.

पीयूषं श्वेतलशुनं वृन्ताकफलगृञ्जने ।
पलाण्डुवृक्षनिर्यासान्देवस्वकवकानि च ॥ ९ ॥
उष्ट्रीक्षीरमविक्षीरमज्ञानाद्भुञ्जते द्विजाः ।
त्रिरात्रमुपवासेन पञ्चगव्येन शुद्ध्यति ॥ १० ॥

જે ગાયને અથવા તો ભેંસને વીયાવાને દશ દિવસ થયા ન હોય, તેવી ગાયનું અથવા તો ભેંસનું દુધ, ધોળું લસણ, ધોળાં રીંગણાં, ગાજર, ડુંગળી, ઝાડનો ગુંદર, દેવતાને અર્પણ કરેલાં ક્ષેત્રમાં ઉત્પન્ન થયેલું અન્ન અથવા તો દેવતાઓના ધણીપણાવાળું અન્ન, બીંદડાની બળી, ઉંટડીનું દુધ અને બકરીનું દુધ જો દ્વિજ જાતિનો પુરુષ અજાણતાં પીએ અથવા તો ખાય તો તે ત્રણ રાત્રિ ઉપવાસ કરવાથી તથા ચોથે દિવસે પંચગવ્યનું પ્રાશન કરવાથી શુદ્ધ થાય છે. ૯–૧૦

૯–૧૦ દેવમંદિરોમાં દેવતાઓને માટે રાંધવામાં આવતાં અન્નના ભોજનનો શાસ્ત્રમાં નિષેધ કર્યો છે. એવાં અન્નનું તપોધનો જ ભોજન કરે છે. હમણાં ઘણા પુરુષો દેવમંદિરોના પ્રસાદને પવિત્ર માનીને હોંસે હોંસે ખાય છે; પરંતુ શાસ્ત્રમાં દેવતાની મૂર્ત્તિઓ આગળ ધરાવેલું અન્ન ખાવાનો નિષેધ કર્યો છે. વિષ્ણુને ધરાવેલું અન્ન પવિત્ર ગણાય છે, પરંતુ તે વિષ્ણુનું ગૃહામાં પૂજન થતું હોય તો. પરંતુ જાહેર મંદિરોમાં–દેવતાઓની મીલકત તરિકે ગણાતાં દેવમંદિરોમાં મૂર્ત્તિઓ આગળ ધરાવેલું અન્ન ખાવાનો શાસ્ત્રમાં નિષેધ કર્યો છે અને કોઈ ખાય છે તો તેને પાતક લાગે છે.

मण्डूकं भक्षयित्वा तु मूषिकामांसमेव च ।
ज्ञात्वा विप्रस्त्वहोरात्रं यावकान्नेन शुद्ध्यति ॥ ११ ॥

કોઈ બ્રાહ્મણ અજાણતાં દેડકું તથા ઉંદરનું અથવા તો ઉંદરડીનું માંસ ખાઈ જાય અને તે જાણવામાં આવે તો તે એક દિવસ અને એક રાત્રિ જવની રાબડી પીવાથી શુદ્ધ થાય છે. ૧૧

क्षत्रियश्चापि वैश्यश्च क्रियावन्तौ शुचिव्रतौ ।
तद्गृहे तु द्विजैर्भोज्यं हव्यकव्येषु नित्यशः ॥ १२ ॥

ક્ષત્રિય તથા વૈશ્ય વેદાધ્યયન, યજન વગેરે દ્વિજનાં કર્મ કરતા હોય તથા સ્મૃતિમાં કહેલા પવિત્ર ધર્મનું આચરણ કરતા હોય તો બ્રાહ્મણોએ તેમને ઘેર દેવકર્મમાં, એટલે યજ્ઞ યાગમાં તથા પિતૃકર્મમાં એટલે શ્રાદ્ધમાં નિત્ય ભોજન કરવું. ૧૨

૧૨ બ્રાહ્મણને શૂદ્રના ઘરનું અન્ન જમવાનો શાસ્ત્રમાં નિષેધ કર્યો છે, તેમ જ ક્ષત્રિય અને વૈશ્ય પણ બ્રાહ્મણના કરતાં ઉતરતા વર્ણના હોવાથી તથા 'राजान्नं तेज आदत्ते રાજાનું અન્ન જમવાથી તેજનો નાશ કરે છે.' વગેરે વચનોથી ક્ષત્રિયાદિના અન્નનું ભોજન કરવામાં પણ બ્રાહ્મણને પ્રાયશ્ચિત્ત કરવાનો પ્રસંગ આવે, તે માટે આ શ્લોકમાં સંસ્કારી ક્ષત્રિયનું તથા સંસ્કારી વૈશ્યનું અન્ન જમવાની આજ્ઞા આપવામાં આવી છે.

घृतं क्षीरं तथा तैलं गुडं स्नेहेन पाचितम् ।
गत्वा नदीतटे विप्रो भुञ्जीयाच्छूद्रभोजनम् ॥ १३ ॥

બ્રાહ્મણે શૂદ્રના ઘરનું ઘી, દૂધ, તેલ, ગોળ વગેરે રસ અથવા તો તેલમાં તળેલી પુરી વગેરે શૂદ્રના ઘરમાં બેસીને ખાવા નહિ. પરંતુ નદીના તીર ઉપર જઈને ત્યાં શૂદ્રના ઘરના પદાર્થનું ભોજન કરવું. ૧૩

૧૩ શૂદ્રના ઘરમાં રાંધેલી જે પાકી રસોઈ હોય, તેમાં જળનો સ્પર્શ હોય નહિ, પરંતુ દૂધમાં બાંધેલા લોટની ઘીમાં અથવા તો તેલમાં તળેલી પુરીઓ હોય તો તે ખાઈ શકાય છે. તેમ જ તેના ઘરના ઘી, દુધ, દહીં વગેરે રસ પણ ઉપયોગમાં લઈ શકાય છે. પરંતુ તેના ઘરમાં બેસીને ભોજન કરવું નહિ, એમ આ શ્લોકમાં જણાવ્યું છે. મૂલમાં વિપ્ર પદ છે, એ બ્રાહ્મણ, ક્ષત્રિય અને વૈશ્ય ત્રણેને માટે છે. પરંતુ વિપ્ર શબ્દ કહીને બ્રાહ્મણને માટે ખાસ નિયમ કરવામાં આવ્યો છે. જ્યાં સુધી ગામમાં બ્રાહ્મણનું ઘર હોય ત્યાં સુધી બ્રાહ્મણે ક્ષત્રિયને કે વૈશ્યને ઘેર પણ ભોજન કરવું નહિ; પરંતુ બ્રાહ્મણનું ઘર ન હોય તો ક્ષત્રિયને, વૈશ્યને અને છેવટે શૂદ્રને ઘેર જઈને પણ વિશ્રાંતિ લેવી. પરન્તુ ભોજનની વ્યવસ્થા તો આ શ્લોકમાં કહ્યા પ્રમાણે કરવી. ઉપરના શ્લોકમાં દર્શાવેલા પદાર્થો શૂદ્રને ઘેરથી પણ

લેવા; પરન્તુ તેના ઘરમાં બેસીને તે પદાર્થ ખાવા નહિ. પણ નદી વગેરેના તીર ઉપર જઇને ખાવા. આપત્કાળમાં એટલે અન્ન વગર પ્રાણ જવાની તૈયારીમાં હોય, તેવે સમયે જેટલા અન્નથી પ્રાણની રક્ષા થતી હોય તેટલું અન્ન હરકોઇનું પણ ભક્ષણ કરવાની શાસ્ત્રમાં આજ્ઞા કરી છે. તેનાથી અધિક અન્નની આજ્ઞા કરી નથી. છાંદોગ્ય ઉપનિષદમાં ઉદ્ગીથપર્વમાં ઉષસ્તિનું આખ્યાન છે. તેમાં જણાવ્યું છે કે;–કુરુદેશમાં તીડના ઉપદ્રવથી ઉગેલાં ધાન્યોનો નાશ થઈ ગયો અને દુકાળને લીધે અન્નના સાંસા પડવા લાગ્યા. તે ઉપરથી ઉષસ્તિ પોતાની સ્ત્રીને સાથે લઇને ભોજનને માટે પૃથ્વીપર આડો અવળો ભટકવા લાગ્યો અને ભટકતો ભટકતો એક ગામમાં કોઈ એક હાથીના માવતને ઘેર જઈ ચઢ્યો. ત્યાં હાથીનો માવત હલકી જાતના બાફેલા અડદ ખાતો હતો; તેની પાસે એકદમ ગયો અને ખાવામાટે અડદ માગ્યા, એટલે હાથીના રક્ષકે ઉષસ્તિને કહ્યું કે;–હું જે આ અડદ ખાઉં છું, તે બધા ઉચ્છિષ્ટ છે. તે વિના બીજા અડદ મારી પાસે નથી. જે અડદ મારા ભાણામાં છે તે જ અડદને મેં આ બાફેલા અડદના ઢગલામાં પણ નાખ્યા છે. માટે બોલ! મારે શું કરવું? ઉષસ્તિએ ઉત્તર આપ્યો કે; આ તમારા ઉચ્છિષ્ટ અડદ મને આપો. એટલે હાથીના પાલકે પોતાના ઉચ્છિષ્ટ અડદ ઉષસ્તિને આપ્યા અને ઉષસ્તિએ હાથીપાલકના ઉચ્છિષ્ટ અડદ પણ ખાધા. તે પછી હાથીપાલકે કહ્યું કે,–મારી પાસે પાણી છે, તે પણ પીવા માટે લે એટલે ઉષસ્તિએ કહ્યું કે; તારું જળ ઉચ્છિષ્ટ છે, માટે હું તે નહિ પીઉં. હાથીના પાલકે કહ્યું;–ત્યારે મારા આ અડદ ઉચ્છિષ્ટ નથી કે? ઉષસ્તિએ ઉત્તર વાળ્યો કે, હું જો આ અડદ ખાત નહિ તો મરણ પામત; પરંતુ જળ તો ઇચ્છા પ્રમાણે ગમે ત્યાંથી મળી શકશે. માટે પાણી પીશ નહિ. જ્યારે પ્રાણ જવાનો સમય આવ્યો હોય ત્યારે ઉતરતા વર્ણના પુરુષનું પણ અન્ન ખાઇને પ્રાણની રક્ષા કરવી. પરંતુ પ્રાણ જવાની આપત્તિ ન હોય અને સર્વ પ્રકારની અનુકૂળતા હોય ત્યારે ગમે તેનું અન્ન ખાવાથી અથવા તો જળપાન કરવાથી પાતક લાગે છે. માટે વિલાયત વગેરે પરદેશમાં જનારાઓ ત્યાં મહાપાતકીઓની સાથે તેઓના હાથથી રાંધેલું અન્ન તેઓનાં જ જમવાના વાસણોમાં જમે છે અને તે પણ જાણી જોઇને, વર્ષો સુધી જમે છે; તેઓને આ શ્લોકમાં તથા ટીકામાં કરેલી આજ્ઞા લાગુ પડે નહિ. કારણ કે શાસ્ત્રો આપત્તિમાં આવી પડેલાને જ આજ્ઞા કરે છે, પરન્તુ ખાનપાનની વ્યવસ્થા કરવાને સમર્થ એવા પુરુષને આજ્ઞા કરતાં નથી.

मद्यमांसरतं नित्यं नीचकर्मप्रवर्त्तकम् ।
तं शूद्रं वर्जयेद्विप्रः श्वपाकमिव दूरतः ॥ १४ ॥

જે શૂદ્ર નિત્ય મદિરા પીતો હોય, માંસ ખાતો હોય તથા વેચતો હોય, જોડા શીવવા વગેરે નીચ કર્મ કરતો હોય તેવા શૂદ્રનો બ્રાહ્મણે શ્વપાકની પેઠે દૂરથી જ ત્યાગ કરવો. ૧૪

૧૪ ચંડાલની એક જાતિ શ્વપાકના નામથી ઓળખાય છે.

द्विजशुश्रूषणरतान्मद्यमांसविवर्जितान् ।
स्वकर्मनिरतान्नित्यं ताञ्छूद्रान्न त्यजेद्द्विजः ॥ १५ ॥

પરંતુ જે શૂદ્રો બ્રાહ્મણોની સેવામાં પરાયણ રહેતા હોય, મદ્ય તથા માંસનો ત્યાગ કરનારા હોય અને પોતાનું કર્મ જે ત્રણ વર્ણની સેવા તે કરવામાં નિત્ય તત્પર રહેતા હોય, તેવા શૂદ્રોનો દ્વિજવર્ણે કદી પણ ત્યાગ કરવો નહિ. ૧૫

૧૫ જે શૂદ્ર અત્યંત નીચ હોય અને હલકાં કામ કરનારા હોય, તેના ઘરનાં દુધ, દહીં, ઘી, તેલ વગેરે રસો તથા ઘીમાં તળેલી પુરી વગેરે પદાર્થ ખાવાથી દોષ લાગે છે, પરંતુ જે શૂદ્રો મંત્રરહિત પંચમહાયજ્ઞો કરતા હોય તેવા ધર્મનિષ્ઠ શૂદ્રના ઘરના રસો તથા તળ્યો તાળ્યો પદાર્થ ખાવામાં દોષ લાગતો નથી. અત્યારે પણ ઉત્તર હિંદુસ્તાનમાં બ્રાહ્મણો ઘીમાં તળેલી પુરી તથા દુધ, દહીં વગેરે શૂદ્ર જાતિના હાથનાં પણ ખાય છે.

अज्ञानाद्भुञ्जते विप्राः सूतके मृतकेऽपि वा ।
प्रायश्चित्तं कथं तत्र वर्णे वर्णे विनिर्दिशेत् ॥ १६ ॥

બ્રાહ્મણો અજાણતાં મૃત્યુસૂતકમાં અથવા તો વૃદ્ધિ સૂતકમાં શૂદ્ર, વૈશ્ય અથવા તો ક્ષત્રિયના ઘરનું ખાય તો ખાનારાઓને પ્રત્યેક વર્ણનું અન્ન ખાવામાટે કેવી રીતે પ્રાયશ્ચિત્ત કહેવું? ૧૬

गायत्र्यष्टसहस्रेण शुद्धिः स्याच्छूद्रसूतके ।
वैश्ये पञ्चसहस्रेण त्रिसहस्रेण क्षत्रिये ॥ १७ ॥
ब्राह्मणस्य यदा भुङ्क्ते द्वे सहस्रेण दापयेत् ।
अथवा वामदेव्येन साम्नैवैकेन शुद्ध्यति ॥ १८ ॥

સૂતકી શૂદ્રના ઘરનું અન્ન ખાધું હોય તો આઠ હજાર ગાયત્રીનો જપ કરવાથી, સૂતકી વૈશ્યના ઘરનું અન્ન ખાધું હોય તો પાંચ હજાર ગાયત્રીનો જપ કરવાથી અને સૂતકી ક્ષત્રિયના ઘરનું જો અન્ન ખાધું હોય તો ત્રણ હજાર ગાયત્રીનો જપ કરવાથી શુદ્ધિ થાય છે અને સૂતકી બ્રાહ્મણના ઘરનું જો અન્ન ખાધું હોય તો બે હજાર ગાયત્રીનો જપ કરવાથી શુદ્ધિ થાય છે. અથવા તો સામવેદમાં વામદેવ્ય નામનો એક સામ છે, તેનો જ જપ કરવાથી શુદ્ધિ થાય છે. ૧૭–૧૮

शुष्कान्नं गोरसं स्नेहं शूद्रवेश्मन आहृतम् ।
पक्कं विप्रगृहे भुक्तं भोज्यान्नं मनुरब्रवीत् ॥ १९ ॥

કાચું અન્ન, દુધ, માખણુ વગેરે ગોરસ તથા તેલ ઘી વગેરે સ્નેહ, આ સર્વ શૂદ્રના ઘરમાંથી આણ્યાં હોય અને તે પદાર્થોમાંથી બ્રાહ્મણુના ઘરમાં ભોજન તયાર કરવામાં આવ્યું હોય તો તે ખાવાયોગ્ય છે, આમ મનુ કહે છે. ૧૯

आपत्कालेषु विप्रेण भुक्तं शूद्रगृहे यदि ।
मनस्तापेन शुद्ध्येत द्रुपदां वा शतं जपेत् ॥ २० ॥

બ્રાહ્મણે આપત્કાળમાં કદાચ શૂદ્રના ઘરમાં ભોજન કર્યું હોય, તો પણુ તે પશ્ચાત્તાપ કરવાથી શુદ્ધ થાય છે. અથવા તો દ્રુપદાદિવ નામનો મંત્ર એકસો અને આઠવાર જપવાથી શુદ્ધ થાય છે. ૨૦

૨૦ અગ્નિહોત્રી પશ્ચાત્તાપ કરવાથી શુદ્ધ થાય છે અને વેદપાઠી દ્રુપદાદિવ મંત્રનો જપ કરવાથી શુદ્ધ થાય છે.

दासनापितगोपालकुलमित्रार्द्धसीरिणः ।
एते शूद्रेषु भोज्यान्ना यश्चात्मानं निवेदयेत् ॥ २१ ॥

શૂદ્રોમાંના દાસ, નાપિત, ગોપાલ, કુલનો મિત્ર, અર્ધસીરી તથા હું તમારો છું આમ કહીને આત્માને અર્પણુ કરનારો (આત્મનિવેદક), આટલા શૂદ્રજાતિના[1] પુરુષોનું અન્ન ખાવાયોગ્ય છે. ૨૧

शूद्रकन्यासमुत्पन्नो ब्राह्मणेन तु संस्कृतः ।
संस्कारात्तु भवेद्दासः असंस्कारात्तु नापितः ॥ २२ ॥
क्षत्रियाच्छूद्रकन्यायां समुत्पन्नस्तु यः सुतः ।
स गोपाल इति ख्यातो भोज्यो विप्रैर्न संशयः ॥ २३ ॥
वैश्यकन्यासमुत्पन्नो ब्राह्मणेन तु संस्कृतः ।
स ह्यार्धिक इति ज्ञेयो भोज्यो विप्रैर्न संशयः ॥ २४ ॥

બ્રાહ્મણે શૂદ્રની કન્યાને પરણીને તેને વિશે ઉત્પન્ન કર્યો હોય અને મંત્ર વિના ગર્ભાધાનાદિક સંસ્કારોથી જેને સંસ્કારો કર્યા હોય, તે પુત્ર દાસ કહેવાય છે અને જેને સંસ્કાર કરવામાં આવ્યા ન હોય તેવો બ્રાહ્મણુથી શૂદ્રની કન્યાને વિશે ઉત્પન્ન થયેલો પુત્ર નાપિત કહેવાય છે. ક્ષત્રિયે શૂદ્રની કન્યાને પરણીને તેમાં ઉત્પન્ન કરેલો પુત્ર ગોપાલ કહેવાય છે અને તેને

ઘેર બ્રાહ્મણો સંદેહ વિના ભોજન કરી શકે છે. બ્રાહ્મણે વાણીયણની કન્યામાં ઉત્પન્ન કરીને જેને સંસ્કાર કર્યાં હોય, તેને અર્ધસીરી જાણવો અને બ્રાહ્મણો તેના ઘરનું અન્ન પણ સંદેહ વગર ખાઈ શકે છે તથા કુલપરંપરાથી આપણા કુળની સાથે જે શૂદ્રને મિત્રતા હોય, તેવા શૂદ્રનું અન્ન પણ સંદેહ વગર ખાઈ શકાય છે તથા જે પુરુષ હું તમારો છું, આમ કહીને પોતાનો આત્મા નિવેદન કરે છે, તે આત્મનિવેદકના ઘરનું અન્ન પણ સંદેહ વગર ખાઈ શકાય છે. ૨૨-૨૪

भाण्डस्थितमभोज्यानां जलं दधि घृतं पयः ।
अकामतस्तु यो भुङ्क्ते प्रायश्चित्तं कथं भवेत् ॥ २५ ॥
ब्राह्मणः क्षत्रियो वैश्यः शूद्रो वा उपसर्पति ।
ब्रह्मकूर्चोपवासेन याज्यवर्णस्य निष्कृतिः ॥ २६ ॥

જેઓનું અન્ન ખાઈ શકાય નહિ તેવા પુરુષોના વાસણમાં રહેલું પાણી, દહીં, ઘી અને દૂધ જો અજાણતાં કોઈ ખાઈ જાય તો તેનું પ્રાયશ્ચિત્ત કેવી રીતે કરવું ? આ રીતે બ્રાહ્મણ, ક્ષત્રિય, વૈશ્ય અને શૂદ્ર પ્રશ્ન પૂછવા માટે આવે તો બ્રાહ્મણ, ક્ષત્રિય અને વૈશ્ય આ ત્રણ યજન કરાવવાયોગ્ય વર્ણને એક દિવસ અને એક રાત્રિ ઉપવાસ કરાવવો અને બીજે દિવસે બ્રહ્મકૂર્ચનું પાન કરાવવું. એટલે દ્વિજ વર્ણની પાપમાંથી શુદ્ધિ થાય છે. ૨૫-૨૬

शूद्राणां नोपवासः स्याच्छूद्रो दानेन शुद्ध्यति ।
ब्रह्मकूर्चमहोरात्रं श्वपाकमपि शोधयेत् ॥ २७ ॥

શૂદ્રોએ ઉપવાસ કરવો નહિ, પરંતુ શૂદ્ર દાન દેવાથી શુદ્ધ થાય છે. શૂદ્રે પણ દાન દીધા પછી બ્રહ્મકૂર્ચનું પાન કરવું. બ્રહ્મકૂર્ચનું પાન એક દિવસ અને રાત્રિ કર્યું હોય તો તે શ્વપાકને પણ પવિત્ર કરે છે. ૨૭

गोमूत्रं गोमयं क्षीरं दधि सर्पिः कुशोदकम् ।
निर्दिष्टं पञ्चगव्यं तु पवित्रं पापशोधनम् ॥ २८ ॥

ગોમૂત્ર, ગોમય (છાંણ), ગાયનું દૂધ, ગાયનું દહી અને ગાયનું ઘી તથા દર્ભનું પાણી, આ પાંચ પંચગવ્ય કહેવાય છે અને તે પવિત્ર તથા પાપનો નાશ કરનારું છે. ૨૮

બ્રહ્મકૂર્ચમાં પંચગવ્ય લેવાનું કહ્યું છે, તે જૂદા જૂદા રંગની પાંચ ગાયોમાંથી લેવું અને તે પાંચ ગાયો કેવી તથા તેની કઈ વસ્તુ લેવી તે કહે, છે.

गोमूत्रं कृष्णवर्णायाः श्वेतायाश्चैव गोमयम् ।
पयश्च ताम्रवर्णाया रक्ताया गृह्यते दधि ॥ २९ ॥
कपिलाया घृतं ग्राह्यं सर्वं कापिलमेव वा ।

કાળા રંગની ગાયનું ગોમૂત્ર લેવું, શ્વેત રંગની ગાયનું છાણ લેવું, તાંબા જેવા રંગની ગાયનું દૂધ લેવું, રાતી ગાયનું દહી લેવું, કપિલા ગાયનું ઘી લેવું અને તે પ્રમાણે જૂદા જૂદા રંગની ગાય મળે નહિ તો સર્વે પદાર્થો કપિલા ગાયના જ લેવા. ૨૯

मूत्रमेकपलं दद्यादंगुष्ठार्धं तु गोमयम् ॥ ३० ॥
क्षीरं सप्तपलं दद्याद्दधि त्रिपलमुच्यते ।
घृतमेकपलं दद्यात्पलमेकं कुशोदकम् ॥ ३१ ॥

મૂત્ર એક પલ લેવું, છાણ અર્ધા અંગુઠા જેટલું લેવું, સાત પલ દૂધ લેવું, ત્રણ પળ દહી લેવું, એક પળ ઘી લેવું અને એક પલ કુશોદક લેવું. આ રીતે પંચગવ્યનું પ્રાશન કરતી વખતે પ્રત્યેક પદાર્થ લેવો. ૩૦-૩૧

गायत्र्यादाय गोमूत्रं गंधद्वारेति गोमयम् ।
आप्यायस्वेति च क्षीरं दधिक्राव्णस्तथा दधि ॥ ३२ ॥
तेजोसि शुक्रमित्याज्यं देवस्य त्वा कुशोदकम् ।
पञ्चगव्यमृचा पूतं स्थापयेदग्निसन्निधौ ॥ ३३ ॥

તેમાં ગાયત્રી મંત્ર ભણીને ગોમૂત્ર લેવું, गन्धद्वारां दुराधर्षां એ મંત્ર ભણીને છાણ લેવું, आप्यायस्व ઈત્યાદિ મંત્રો ભણીને દૂધ લેવું, दधिक्राव्णो એ મંત્ર ભણીને દહીં લેવું, तेजोसि शुक्रम એ મંત્ર ભણીને ઘી લેવું, देवस्य त्वा એ મંત્ર ભણીને કુશોદક (દર્ભોદક) લેવું. આ રીતે વેદની ઋચાઓથી પંચગવ્યને પવિત્ર કરીને અગ્નિની સમીપમાં મૂકવું. ૩૨-૩૩

आपोहिष्ठेति चालोड्य मानस्तोकेति मन्थयेत् ।

તે પછી आपोहिष्ठा એ ત્રણ ઋચા ભણીને પંચગવ્યને હલાવવું અને मानस्तोके એ મંત્ર ભણીને તેને મથવું.

सप्तवरास्तु ये दर्भा अच्छिन्नाग्राः शुकत्विषः ॥ ३४ ॥
एतैरुद्धृत्य होतव्यं पञ्चगव्यं यथाविधि ।
इरावती इदं विष्णुर्मानस्तोकेति शंवती ॥ ३५ ॥
एताभिश्चैव होतव्यं हुतशेषं पिबेद्द्विजः ।

તે પછી જેની અણીઓ તૂટેલી ન હોય, તેવી લીલા રંગની ઓછામાં ઓછી સાત દર્ભની શલાકા લેવી અને તેનાથી પંચગવ્યને ગ્રહણ કરીને વિધિપ્રમાણે इरावती, इदं विष्णु:, मानस्तोके, शंवती, એ મંત્રો ભણીને વિધિપ્રમાણે હોમ કરવો અને હોમ કરતાં બાકી બચેલા પંચગવ્યનું દ્વિજવર્ણના પુરુષે પાન કરવું. ૩૪–૩૫

आलोडय प्रणवेनैव निर्मथ्य प्रणवेन तु ॥ ३६ ॥
उद्धृत्य प्रणवेनैव पिबेच्च प्रणवेन तु ।

તે પંચગવ્યને પ્રણવ ભણીને જ એટલે ઓંકાર ભણીને જ હુલાવવું. પ્રણવથી જ તેને મથવું અને પ્રણવ ભણીને જ તેને ગ્રહણ કરવું અને પ્રણવ ભણીને જ તેનું પાન કરવું. ૩૬

यत्त्वगस्थिगतं पापं देहे तिष्ठति देहिनाम् ॥ ३७ ॥
ब्रह्मकूर्चं दहेत्सर्वं प्रदीप्तोग्निरिवेन्धनम् ।

પ્રદીપ્ત થયેલો અગ્નિ જેમ કાષ્ઠને બાળી નાખે છે, તેમ બ્રહ્મકૂર્ચ પણ દેહધારીઓના દેહમાં ચામડીને વિશે રહેલાં તથા હાડકાને વિશે રહેલાં સર્વ પાતકનો નાશ કરે છે. ૩૭

पवित्रं त्रिषु लोकेषु देवताभिरधिष्ठितम् ॥ ३८ ॥
वरुणश्चैव गोमूत्रे गोमये हव्यवाहनः ।
दध्नि वायुस्समुदिष्टस्सोमः क्षीरे घृते रविः ॥ ३९ ॥

બ્રહ્મકૂર્ચમાં દેવતાઓનો વાસો છે. તેથી તે ત્રણે લોકોમાં પવિત્ર ગણાય છે. ગોમૂત્રમાં વરુણનો વાસ, ગોમયમાં (છાણમાં) અગ્નિનો વાસ, દહીંમાં વાયુનો વાસ, દૂધમાં સોમનો વાસ અને ઘીમાં સૂર્યનો વાસ છે. ૩૮–૩૯.

पिबतः पतितं तोयं भाजने मुखनिःसृतम् ।
अपेयं तद्विजानीयाद्भुक्त्वा चान्द्रायणं चरेत् ॥ ४० ॥

પાણી પીતાં પીતાં મુખમાંથી નિકળીને વાસણમાં પડે છે, તે પાણી પીવાને અયોગ્ય થાય છે અને તેવું પાણી પીવામાં આવે તો ચાંદ્રાયણ વ્રત કરવું. ૪૦

कूपे च पतितं दृष्ट्वा श्वसृगालं च मर्कटम् ।
अस्थिचर्मादि पतितं पीत्वाऽमेध्या अपो द्विजः ॥ ४१ ॥

કુતરું, શિયાળ, વાંદરાં, હાડકાં તથા ચામડાં વગેરે કુવામાં પડ્યાં હોય તો તે કુવાનું પાણી અપવિત્ર થાય છે અને તે પાણીને જાણી જોઇને પીનારા દ્વિજ વર્ણે હવે પછી કહેવામાં આવનારું પ્રાયશ્ચિત્ત કરવું. ૪૧

नारं तु कुणपं काकं विड्वराहं खरोष्ट्रकम् ।
गावयं सौप्रतीकं च मायूरं खाड्गकं तथा ॥ ४२ ॥
वैयाघ्रमार्क्षं सैंहं वा कूपे यदि निमज्जति ।
तटाकस्याथ दुष्टस्य पीतं स्यादुदकं यदि ॥ ४३ ॥
प्रायश्चित्तं भवेत्पुंसः क्रमेणैतेन सर्वशः ।
विप्रः शुद्ध्येत्त्रिरात्रेण क्षत्रियस्तु दिनद्वयात् ॥ ४४ ॥
एकाहेन तु वैश्यस्तु शूद्रो नक्तेन शुद्ध्यति ।

મનુષ્યનું શબ, કાગડાનું શબ, ગામમાં રહેનારા ડુક્કરનું શબ, ગધેડાનું શબ, ઊંટનું શબ, રોઝનું શબ, હાથીનું શબ, મોરનું શબ, ગેંડાનું શબ, વાઘનું શબ, રીંછનું શબ અથવા તો સિંહનું શબ જો કુવામાં અથવા તો તળાવમાં પડ્યું હોય અને તેનું અભડાઈ ગયેલું પાણી પુરુષના પીવામાં આવ્યું હોય તો પાણી પીનારા પુરુષે જાતિ અનુસાર નીચે પ્રમાણે પ્રાયશ્ચિત્ત કરવું. બ્રાહ્મણ તેવું પાણી પીવામાં આવે તો ત્રણ દિવસ ઉપવાસ કરવાથી, ક્ષત્રિય બે દિવસ ઉપવાસ કરવાથી, વૈશ્ય એક દિવસ ઉપવાસ કરવાથી અને શૂદ્ર રાત્રિભોજન કરવાથી શુદ્ધ થાય છે. ૪૨-૪૪

૪૨-૪૪ ટીકાકાર કહે છે કે, આ પ્રાયશ્ચિત્ત કરનારાએ પંચગવ્યનું પાન કરવું. શૂદ્રે તથા સ્ત્રીએ બ્રહ્મકૂર્ચનું પાન ઓંકાર ભણ્યા વગર કરવું, એમ શાસ્ત્રમાં કહ્યું છે.

परपाकनिवृत्तस्य परपाकरतस्य च ।॥ ४५ ॥
अपचस्य तु भुक्त्वान्नं द्विजश्चान्द्रायणं चरेत् ।

પરપાકથી નિવૃત્ત થયેલાનું, પરપાક ઉપર આસક્તિ રાખનારાનું તથા અપચનું અન્ન જો બ્રાહ્મણ ખાય તો તેણે ચાંદ્રાયણ કરવું. ૪૫

अपचस्य च यद्दानं दातुश्चास्य कुतः फलम् ॥४६॥
दाता प्रतिग्रहीता च द्वौ तौ निरयगामिनौ

અપચને દાન આપવાથી દાતાને ફળ કેમ મળે? અપચને દાન આપનારો અને દાન લેનારો બન્ને નરકમાં પડે છે. ૪૬

गृहीत्वाग्निं समारोप्य पञ्चयज्ञान्न निर्वपेत् । ॥ ४७ ॥
परपाकनिवृत्तोऽसौ मुनिभिः परिकीर्तितः ।
पञ्चयज्ञान्स्वयं कृत्वा परान्नेनोपजीवति ॥ ४८ ॥
सततं प्रातरुत्थाय परपाकरतस्तु सः ।
गृहस्थधर्मा यो विप्रो ददातिपरवर्जितः ॥ ४९ ॥
ऋषिभिर्धर्मतत्वज्ञैरपचः परिकीर्त्तितः ।

જે બ્રાહ્મણ વિવાહ કરીને કેવળ સ્માર્ત અગ્નિની ઉપાસના કરીને તેનો આત્માને વિશે સમારોપ કરે છે, પરંતુ તેને વિશે વૈશ્વદેવાદિક ક્રિયા કરતો નથી, તે પુરુષને મુનિઓ પરપાકથી નિવૃત્ત થયો કહે છે. જે બ્રાહ્મણ નિત્ય પ્રભાતમાં પંચ મહાયજ્ઞ કરીને પારકાના અન્ન ઉપર આજીવિકા કરે છે, તે પુરુષને પરપાક ઉપર આસક્તિવાળો કહે છે અને જે બ્રાહ્મણ ગૃહસ્થાશ્રમી હોય તો પણ દાન કરતો ન હોય, તે બ્રાહ્મણને ધર્મનું તત્વ જાણનારા ઋષિઓ અપચ કહે છે. ૪૭–૪૯

૪૭–૪૯ પાંચ મહાયજ્ઞ કર્યાં વિના જે દ્વિજવર્ણ ભોજન કરે છે, તેને પાપ લાગે છે, એમ ધર્મશાસ્ત્રમાં કહ્યું છે. માટે દ્વિજવર્ણે પાંચ મહાયજ્ઞ અવશ્ય કરવા જોઇએ. પંચમહાયજ્ઞમાં પોતાના વેદનો નિત્ય સ્વાધ્યાય કરવો, એ પ્રથમ યજ્ઞ છે. પિતૃઓનું તર્પણ કરવું, એ બીજો યજ્ઞ છે. વિશ્વેદેવતાને ઉદ્દેશીને અગ્નિમાં હોમ કરવો, એ ત્રીજો યજ્ઞ છે. ભૂતોને બળિ આપવા તે ચોથો અને અતિથિને ભોજન કરાવવું એ પાંચમો યજ્ઞ છે. આ પાંચ યજ્ઞ ગૃહસ્થાશ્રમીએ ઘરમાં નિત્ય પાણિયારે, ચુલામાં, ખાંડણિયામાં, ઘંટીમાં તથા વાસીદું વાળતી વખતે જે જીવહિંસા થાય છે, તે દૂર કરવા માટે અવશ્ય કરવા જોઇએ.

युगे युगे तु ये धर्मास्तेषु तेषु च ये द्विजाः ॥ ५०॥
तेषां निन्दा न कर्तव्या युगरूपा हि ते द्विजाः ।

યુગ યુગમાં જે ધર્મો હોય છે, તે તે યુગના તે તે ધર્મોનું બ્રાહ્મણો આચરણ કરે છે. માટે બ્રાહ્મણોની નિંદા કરવી નહિ. કારણ કે બ્રાહ્મણો યુગના સમાન હોય છે. ૫૦

૫૦ આ શ્લોક પ્રથમના અધ્યાયમાં ૩૩ મો છે અને તે શ્લોકને ફરીને આ અધ્યાયમાં ભણીને પ્રાયશ્ચિત્ત શાસ્ત્રનું ઉપયોગીપણું દર્શાવે છે. ઉપર કહ્યા પ્રમાણે આ કળિયુગમાં જેઓનું અન્ન પણ ખાઈ શકાય નહિ, તેવા મનુષ્યો છે તથા અભક્ષ્યનું પણ ભક્ષણ કરનારા મનુષ્યો છે માટે આ પ્રાયશ્ચિત્ત શાસ્ત્ર કહ્યું છે તે નિરર્થક થઈ પડશે.

પ્રાયશ્ચિત્ત કર્યાં છતાં પણ મનુષ્યો પાપમાંથી વિરામ પામતા નથી, પરંતુ ફરી ફરીને પાપ કર્મ કરવા માટે પ્રવૃત્ત થાય છે. તેમ જ પ્રાયશ્ચિત્તને આપનારી સભા કરવી પણ વ્યર્થ છે. કારણ કે પરિષદની યોગ્યતાવાળા બ્રાહ્મણો પણ આ યુગમાં નથી. પરાશરે જ આઠમા અધ્યાયમાં પરિષદના બ્રાહ્મણોની યોગ્યતા વર્ણવતાં કહ્યું છે કે, स्वधर्मरतविप्राणां જે બ્રાહ્મણો સ્વધર્મમાં પરાયણ રહેતા હોય, તેવા બ્રાહ્મણોની પરિષદ કહેવાય છે. પરંતુ આ કળિયુગમાં અભક્ષ્ય ભક્ષણ નહિ કરનારા તથા સંપૂર્ણ વેદાધ્યયન કરનારા અને અગ્નિહોત્રાદિક કર્મ કરનારા શિષ્ટ બ્રાહ્મણો મળવા દુર્લભ છે. માટે કળિયુગને ઉદ્દેશીને પારાશર ધર્મશાસ્ત્ર રચવામાં આવ્યું છે, તે નિરર્થક થઈ પડશે. આવી કોઈને શંકા થાય, તેટલા માટે પરાશર મુનિ કહે છે કે; યુગયુગમાં જૂદા જૂદા ધર્મ હોય છે અને તે તે યુગના બ્રાહ્મણો તે તે યુગના ધર્મનું આચરણ કરે છે તે બ્રાહ્મણોની નિંદા કરવી નહિ. કારણ કે બ્રાહ્મણો યુગના સમાન હોય છે. આ શ્લોકનો અભિપ્રાય આ પ્રમાણે છેઃ—અધર્મની બે પ્રકારે પ્રવૃત્તિ થાય છે. એક તો યુગને અનુસરીને અધર્મની પ્રવૃત્તિ થાય છે અને બીજી પ્રમાદ, આળસ વગેરેથી અધર્મની પ્રવૃત્તિ થાય છે. તેમાં યુગને લીધે જે અધર્મની પ્રવૃત્તિ થાય છે, તેને તો અટકાવી શકાતી નથી. પરંતુ પ્રમાદ, આળસ વગેરેથી થનારી અધર્મની પ્રવૃત્તિને અટકાવી શકાય છે અને તેને અટકાવવા માટે જ પરાશર મુનિએ પ્રાયશ્ચિત્ત શાસ્ત્ર રચ્યું છે. પ્રમાદ, આળસ વગેરેથી અધર્મની પ્રવૃત્તિ થતી હોય તો તેને શાસ્ત્ર અટકાવી શકે છે. અધ્યયનવિધિમાં અંગો સાથે અર્થ સહિત વેદનું અધ્યયન કરવાનું કહ્યું છે. પરંતુ કળિયુગમાં આપણને તેવો કોઈપણ બ્રાહ્મણ મળશે નહિ. વળી બ્રહ્મચારીના પ્રકરણમાં બ્રહ્મચર્ય આશ્રમના તથા વેદાધ્યયન કરતી વખતે ઘણા ધર્મ પાળવાના કહ્યા છે. આ સર્વે ધર્મને પાળનારો એક પણ બ્રહ્મચારી આ યુગમાં મળતો નથી. જ્યારે અધ્યયનની જ આવી દશા છે, તો પછી અંગોની સાથે સંપૂર્ણ વેદના અર્થને જાણનારા તથા તે પ્રમાણે કર્મ કરનારા બ્રાહ્મણો તો કેમ જ મળે? આ રીતે શાસ્ત્રોક્ત બ્રાહ્મણ્યવાળો એક પણ બ્રાહ્મણ હમણા નથી અને સંસ્કૃત ક્ષત્રિય જાતિનો તથા સંસ્કૃત વૈશ્ય જાતિનો તો નાશ જ થઈ ગયો છે. સેવા કરવા યોગ્ય બ્રાહ્મણો જ્યારે નથી તો પછી તેની સેવા કરનારા મુખ્ય શૂદ્રના અભાવની તો સર્વથા શંકા જ કરવાની નથી. આ રીતે ચારેય વર્ણનો લોપ થઈ ગયો છે, માટે ચાર વર્ણને માટે રચવામાં આવેલું આ પારાશર ધર્મશાસ્ત્ર નિરર્થક થઈ પડશે અથવા મુખ્ય ચાર વર્ણનો અભાવ છતાં પણ હમણા જે ચાર વર્ણ છે, તેને લઈને પારાશર ધર્મશાસ્ત્રની જગતમાં પ્રવૃત્તિ રહેશે. આ રીતે વિચાર કરવો પ્રાપ્ત થયો છે, તેનો નિર્ણય એવો છે કે; ધર્મનો સર્વથા નાશ કરવા કરતાં બની શકે તેટલું ધર્માચરણ કરવું એ ઉત્તમ છે. આવા અભિપ્રાયથી યુગને લીધે જે અધર્મ પ્રવૃત્ત થાય છે, તે તો કોઈથી પણ અટકાવી શકાતો નથી; માટે તેને નિર્દોષ ગણીને તેનો સ્વીકાર કરવો. આવા અભિપ્રાયથી तेषां निंदा न कर्तव्या

આ શ્લોક ભગવાન્ પરાશરે કહ્યો છે. જેઓ વેદાધ્યયનાદિક કરનારા છે, તેઓ પ્રમાદ અને આળસ તજી દઇને ધર્મ આચરણ કરી શકે છે અને તેવા બ્રાહ્મણોની પરિષદ્ શા માટે કહેવાય નહિ? તેમ જ જેઓ પ્રાયશ્ચિત્ત કરશે, તેઓ પણ પ્રમાદનો અને આળસનો ત્યાગ કરી શકશે, તેથી પરાશરનું આ રચેલું પ્રાયશ્ચિત્ત શાસ્ત્ર પણ સફળ થશે.

हुंकारं ब्राह्मणस्योक्त्वा त्वङ्कारं च गरीयसः ॥ ५१ ॥
स्नात्वा तिष्ठन्नहःशेषमभिवाद्य प्रसादयेत् ।

જે પુરુષ વેદવેત્તા બ્રાહ્મણના ઉપર લૌકિક અથવા તો શાસ્ત્રીય વ્યવહારમાં હુંકાર કરીને ચઢી આવે તથા પોતાનાથી ઉમરમાં અથવા તો વિદ્યામાં શ્રેષ્ઠ હોય, તેને તુંકારાથી બોલાવે તેણે સ્નાન કરીને આખો દિવસ નિરાહાર ઉભા રહેવું અને જેનું પંડે અપમાન કર્યું હોય તેને રાત્રિએ નમસ્કાર કરીને પ્રસન્ન કરવો. તેમ કરવાથી તે પવિત્ર થાય છે. ૫૧

ताडयित्वा तृणेनापि कंठे बध्वापि वाससा ॥ ५२ ॥
विवादेनापि निर्जित्य प्रणिपत्य प्रसादयेत् ।

વેદવેત્તા વિદ્વાન્ બ્રાહ્મણને કોઈ તણખલાથી પણ મારે, અથવા તો તેના ગળામાં વસ્ત્રનો ફાંસો નાખે, અથવા તો શાસ્ત્રનો વિવાદ કરીને તેનો પરાજય કરે તો અપરાધીએ તે બ્રાહ્મણને નમસ્કાર કરીને પ્રસન્ન કરવો. ૫૨

अवगूर्य त्वहोरात्रं त्रिरात्रं क्षितिपातने ॥ ५३ ॥
अतिकृच्छ्रं च रुधिरे कृच्छ्रोऽभ्यन्तरशोणिते ।

બ્રાહ્મણને મારવા માટે લાકડી ઉગામે તો એક દિવસ ઉપવાસ કરવો, બ્રાહ્મણને પૃથ્વીપર પાડી નાખે તો ત્રણ રાત્રિ ઉપવાસ કરવો, લાકડી મારે અને તેથી લોહી નિકળે તો અતિકૃચ્છ્ર કરવું અને મૂઢ માર મારવાથી લોહી અંદર જ જામી જાય તો મારનારાએ કૃચ્છ્ર વ્રત કરવું. ૫૩

नवाहमतिकृच्छ्रः स्यात्पाणिपूरान्नभोजनः ॥ ५४ ॥
त्रिरात्रमुपवासः स्यादतिकृच्छ्रः स उच्यते ।

હાથની હથેલી ભરાઇ રહે તેટલું અન્ન નવ દિવસ સૂધી ખાવું, એટલે ત્રણ દિવસ મધ્યાહ્ને, ત્રણ દિવસ રાત્રિએ અને ત્રણ દિવસ માગ્યા વગર જો મળે તો એમ નવ દિવસ સૂધી હથેલી ભરાઈ તેટલું અન્ન ખાવું અને ચોથા ત્રણ દિવસ ઉપવાસ કરવા. આ વ્રત અતિકૃચ્છ્ર કહેવાય છે. ૫૪

પારાશર સ્મૃતિના અધ્યાય ચોથાના अतिमानादतिक्रोधात् એ શ્લોકથી આરંભીને અગ્યારમા અધ્યાયના कृच्छ्रोऽभ्यन्तरशोणिते એ શ્લોક સુધી આઠ અધ્યાયમાં અનેક જાતનાં પાપો કહ્યાં અને તેનાં પ્રાયશ્ચિત્ત પણ કહ્યાં. પરંતુ જે પાતકોને માટે પરાશરે પંડે સાક્ષાત્ પ્રાયશ્ચિત્ત કહ્યું નથી અને જે પાપ શંકાવાળાં છે તેવાં પાપોનું પરાશર સાધારણ પ્રાયશ્ચિત્ત કહે છે:-

सर्वेषामेव पापानां संकरे समुपस्थिते ॥ ५५ ॥
दशसाहस्रमभ्यस्ता गायत्री शोधनं परम् ।

इतिश्री पाराशरसंहितायां प्रायश्चित्तकांडेऽभक्ष्यभक्षणादिप्रायश्चित्त-
वर्णनं नामैकादशोऽध्यायः समाप्तः ॥

સર્વ જાતનાં પાપોનો એક સાથે સંકર થઈ જાય, જેમકે સુંઘવાને અયોગ્ય વસ્તુ સુંઘી હોય, જોવાને અયોગ્ય વસ્તુ જોઇ હોય તો એક હજાર ગાયત્રી મંત્રનો જપ કરવાથી શુદ્ધિ થાય છે. ૫૫

૫૫ નાનાં નાનાં પાપને માટે આ પ્રાયશ્ચિત્ત કહ્યું, પરંતુ મોટાં પાપોને માટે તો પરાશરે કહેલાં ખાસ પ્રાયશ્ચિત્ત કરવાથીજ શુદ્ધિ થાય છે.

ઇતિશ્રી પારાશર ધર્મશાસ્ત્રમાં અભક્ષ્ય ભક્ષણાદિકનાં પ્રાયશ્ચિત્તનું વર્ણન એ નામનો
અધ્યાય ૧૧ મો સમાપ્ત.



अध्याय १२ मो.

परिशिष्ट तथा महापातकनां प्रायश्चित्त.

આરંભમાં આચાર કાંડના ત્રણ અધ્યાયમાં આચારનું વર્ણન કરવામાં આવ્યું છે; અને તે પછીના આઠ અધ્યાયમાં જૂદાં જૂદાં પાપનાં પ્રાયશ્ચિત્ત કહેવામાં આવ્યાં છે અને તેનાથી અતિરિક્ત તથા અવશિષ્ટ એવો આચાર તથા પ્રાયશ્ચિત્ત કહેવા માટે આ બારમા અધ્યાયનો આરંભ કરવામાં આવે છે. તેમના આરંભમાં ખરાબ સ્વપ્ન વગેરે આવે તો તે દોષ દૂર કરવા માટે પ્રાયશ્ચિત્ત કહે છે;

दुःस्वप्नं यदि पश्येत्तु वान्ते च क्षुरकर्मणि ।
मैथुने प्रेतधूमे च स्नानमेव विधीयते ॥ १ ॥

જે નઠારું સ્વપ્ન જુવે, જેને ઉલટી થઈ હોય, જેણે હજામત કરાવી હોય, જેણે ઋતુ કાળમાં મૈથુન (સ્ત્રીસંગ) કર્યું હોય તથા જેણે શબના ધૂમાડાનો ગંધ લીધો હોય (શ્મશાનમાં ગયો હોય), તે પુરુષ સ્નાન કરવાથી શુદ્ધ થાય છે. ૧

૧ સ્વપ્ન બે પ્રકારનાં છે. એક સારાં અને બીજાં ખરાબ. સારાં સ્વપ્ન જોયાથી જોનારાને ભવિષ્યમાં દુઃખ થાય છે. એ વિશે સ્વપ્નાધ્યાયમાં તથા તેને લગતા ગ્રંથોમાં વિસ્તારથી વર્ણન કરવામાં આવ્યું છે. ઋતુ સમયમાં સ્ત્રીની સાથે મૈથુન કરીને અવશ્ય સ્નાન કરવું જોઇએ.

अज्ञानात्प्राश्य विण्मूत्रं सुरासंस्पृष्टमेव च ।
पुनः संस्कारमर्हन्ति त्रयो वर्णा द्विजातयः ॥ २ ॥

બ્રાહ્મણ, ક્ષત્રિય અથવા તો વૈશ્ય જાતિનો પુરુષ અજાણતાં વિષ્ઠા (નરક) ખાઇ જાય, પુરુષનું મૂત્ર પી જાય અથવા તો મદિરાનો જેને સ્પર્શ થયો હોય તેવી કોઇ વસ્તુ ખાઈ જાય તો તેને પુનઃસંસ્કાર કરવા. ૨

૨ અહીં મૂળ શ્લોકમાં સુરા શબ્દ છે, તે ચોખાના લોટમાંથી બનાવેલો દારુ જાણવો. બ્રાહ્મણ, ક્ષત્રિય અથવા તો વૈશ્ય આ શ્લોકમાં કહેલા અપવિત્ર પદાર્થને અજાણતાં ખાઈ જાય તો તેને ફરીને ઉપનયન સંસ્કાર કરવો અને તે પુનઃ ઉપનયન સંસ્કાર પ્રાયશ્ચિત્ત કર્યાં પછી કરવો.

પ્રથમ સંસ્કારમાં જેમ મૃગચર્મ, મેખલા વગેરે બાંધવાં પડે છે, તેમ પુનઃ સંસ્કારમાં પણ તેનો ઉપયોગ પ્રાપ્ત થાય તેનો નિષેધ કરવામાટે કહે છે;—

अजिनं मेखला दंडो भैक्ष्यचर्या व्रतानि च ।
निवर्तन्ते द्विजातीनां पुनःसंस्कारकर्मणि ॥ ३ ॥

બ્રાહ્મણ, ક્ષત્રિય અને વૈશ્યને પુનઃ સંસ્કાર કરતી વખતે મૃગચર્મની, મુંજની, મેખલાની, પલાશ વગેરેના દંડની તથા ભિક્ષાચર્યાની (ભિક્ષા માગવાની તથા સૌમ્ય, પ્રાજાપત્ય વગેરે વ્રતો પાળવાની પણ જરૂર નથી. ૩

विण्मूत्रभोजी शुद्ध्यर्थं प्राजापत्यं समाचरेत् ।
पञ्चगव्यञ्च कुर्वीत स्नात्वा पीत्वा शुचिर्भवेत् ॥ ४ ॥

અજાણતાં વિષ્ઠા ખવાઈ જાય અથવા તો મૂત્રનું પાન થઈ જાય તો પુરુષે તેની શુદ્ધિને માટે પ્રાજાપત્ય વ્રત કરવું અને તે પછી પંચગવ્યવડે સ્નાન કરીને તથા પંચગવ્યનું પાન કરીને શુદ્ધ થવું. ૪

બ્રાહ્મણાદિક વર્ણનો કોઇપણ પુરુષ આત્મહત્યા કરવા માટે ઉદ્યમ કરે, પરંતુ પાછળથી અટકી જાય છે, તો તેવા પુરુષને કેવું પ્રાયશ્ચિત્ત આપવું, તે કહે છે;—

जलाग्निपतने चैव प्रव्रज्याऽनाशकेषु च ।
प्रत्यावसितवर्णानां कथं शुद्धिर्विधीयते ॥ ५ ॥

ચાર વર્ણમાંના કોઈપણ પુરુષે પાણીમાં પડીને, અગ્નિમાં પડીને, ઉંચા પર્વત ઉપરથી પડીને, મહાપ્રસ્થાન કરીને અથવા તો અન્ન પાણીનો ત્યાગ કરીને આત્મહત્યા કરવાનો વિચાર કર્યો હોય, પરંતુ પાછળથી તેમ કરતાં તે અટકી જાય તો તે પુરુષની કેવી રીતે શુદ્ધિ થાય? ૫

प्राजापत्यद्वयेनैव तीर्थाभिगमनेन च ।
वृषैकादशदानेन वर्णाः शुद्ध्यन्ति ते त्रयः ॥ ६ ॥

ક્ષત્રિય બે પ્રાજાપત્ય કરવાથી, વૈશ્ય તીર્થયાત્રા કરવાથી અને શૂદ્ર દશ ગાય અને એક બળદનું દાન કરવાથી શુદ્ધ થાય છે. ૬

ब्राह्मणस्य प्रवक्ष्यामि वनं गत्वा चतुष्पथे ।
सशिखं वपनं कृत्वा प्राजापत्यद्वयं चरेत् ॥ ७ ॥

હવે હું બ્રાહ્મણને કરવાનું પ્રાયશ્ચિત્ત કહું છું:-બ્રાહ્મણે અરણ્યમાં જઈ જ્યાં ચાર માર્ગ એકઠા થતા હોય તેવા ભાગ ઉપર બેસીને શિખા સાથે મુંડન કરાવવું અને બે પ્રાજાપત્ય વ્રત કરવાં; ૭

गोद्वयं दक्षिणां दद्याच्छुद्धिं पाराशरोऽब्रवीत् ।
मुच्यते तेन पापेन ब्राह्मणत्वं च गच्छति ॥ ८ ॥

તથા બે ગાય દક્ષિણામાં આપવી. આ રીતે પ્રાયશ્ચિત્ત કરવાથી બ્રાહ્મણ આત્મહત્યાના પાપમાંથી મુક્ત થાય છે અને બ્રાહ્મણપણાને પામે છે, આમ પરાશરે કહ્યું છે. ૮

૮ નદીમાં, તળાવમાં, સમુદ્રમાં વગેરે જળાશળમાં પડીને, અગ્નિમાં પ્રવેશ કરીને, પર્વત ઉપરથી પડીને, મહાપ્રસ્થાન કરીને અથવા તો અનશન વ્રત લઇને એટલે નિરાહાર રહીને, એમ પાંચ પ્રકારે મનુષ્ય આત્મહત્યા કરે છે. આ આત્મહત્યા ત્રણ પ્રકારની છે. એક વિહિત એટલે શાસ્ત્રમાં કહેલી, બીજી પ્રતિષિદ્ધ એટલે શાસ્ત્રમાં જેને માટે નિષેધ કર્યો હોય તેવી અને ત્રીજી અનુજ્ઞા-રૂપ. તેમાં શાસ્ત્રોક્ત આત્મત્યાગ બે પ્રકારનો છે, એક કામ્યતપરૂપ અને બીજો પ્રાયશ્ચિત્તરૂપ છે. તેમાં તપરૂપે દેહત્યાગની વાત કૂર્મપુરાણમાં નર્મદાના માહાત્મ્યમાં આ પ્રમાણે કહી છે:-જે પુરુષ નર્મદા નદીના તીર ઉપર અગ્નિમાં પ્રવેશ કરે છે, તેના પાણીમાં પાત કરે છે અથવા તો અન્નનો અને જળનો ત્યાગ કરીને અનશન વ્રત ધારણ કરે છે, તે ફરીને મનુષ્યરૂપે જન્મતો નથી. જેણે મહાપાપ કર્યું હોય, તેણે મહાપ્રસ્થાન કરવું, એટલે અટક્યા વગર ઈશાન ખુણામાં ચાલ્યા જવું અને અન્નનો આહાર તજી દેવો વગેરે પ્રાયશ્ચિત્તરૂપે દેહત્યાગ મનુસ્મૃતિ વગેરે ધર્મ-શાસ્ત્રમાં કહ્યો છે. પરંતુ ક્રોધથી આત્મહત્યા કરવાનો ધર્મશાસ્ત્રમાં નિષેધ કરવામાં

આવ્યો છે. કોઇને કોઢ વગેરે મહારોગ થયો હોય અને તે જળ વગેરેમાં પડીને આત્મહત્યા કરે, તેનું શાસ્ત્રમાં વિધાન પણ કર્યું નથી, તેમ તેનો નિષેધ પણ કરવામાં આવ્યો નથી. છતાં મહારોગીને પોતાનો દુઃખી દેહ પાડી નાખવાની ઇચ્છા હોય તો શાસ્ત્ર તેને અનુમોદન આપે છે. કોઇ રોગીને આત્મહત્યા કરવાની ઇચ્છા થાય, તે વિશે શાસ્ત્રે પણ અનુમોદન આપ્યું હોય અને તે મરવાને તયાર થયો હોય, પરંતુ ભયાદિકથી તેમ કરતાં અટકી જાય તો તેને ફળનો પણ લાભ થતો નથી, તેમ તેને પ્રાયશ્ચિત્ત પણ લાગતું નથી. તથા જે પુરુષ પ્રાયશ્ચિત્તને માટે મરવાને તયાર થયો હોય, પરંતુ તે ભયથી મરી શકે નહિ તો તેનું પ્રથમનું પાપ દૂર થતું નથી, એટલી જ તેને હાનિ થાય છે. પરંતુ તેને તેટલા માટે બીજું પ્રાયશ્ચિત્ત કરવું પડતું નથી. અહીં જે આ વચન છે તે તો માત્ર શાસ્ત્રમાં નિષેધ કરેલી આત્મહત્યા જે કરે છે, તેના પ્રાયશ્ચિત્તને માટે કહેલું છે. તેમાં પણ જે આત્મહત્યા કરે છે તે તો મરણ પામે છે. માટે તેને તો આ પ્રાયશ્ચિત્તવિધાયક વચન નિરર્થક છે. પરન્તુ જે પુરુષ આપઘાત કરવાને તયાર થાય છે, પરન્તુ ભયાદિકથી આપઘાત કરતાં અટકી જાય છે, તેવા પુરુષને માટે આ શ્લોકમાં પ્રાયશ્ચિત્ત કહ્યું છે. કોઈ કહે કે, આપઘાત કરતાં અટકી ગયેલાને માટે પણ આ પ્રાયશ્ચિત્ત યોગ્ય નથી. કારણ કે શાસ્ત્રમાં આત્મહત્યાનો નિષેધ કરવામાં આવ્યો છે. તેમ તેનાથી નિવૃત્ત થવું (અટકી જવું), એ પણ શાસ્ત્રોક્ત જ ગણાશે. આ વાત ખરી છે. પરન્તુ અહીં જે પ્રાયશ્ચિત્ત કહેવામાં આવ્યું છે, તે કંઈ નિવૃત્તિને ઉદ્દેશીને કહેવામાં આવ્યું નથી; પરન્તુ શાસ્ત્રવિરુદ્ધ આત્મહત્યા કરનારાને માટે કહેવામાં આવ્યું છે.

स्नानानि पञ्च पुण्यानि कीर्तितानि मनीषिभिः ।
आग्नेयं वारुणं ब्राह्मं वायव्यं दिव्यमेव च ॥ ९ ॥

હવે જૂદી જૂદી જાતનાં સ્નાન કહે છે;—આગ્નેય, વારુણ, બ્રાહ્મ, વાયવ્ય અને દિવ્ય આ રીતે પાંચ પ્રકારનાં પવિત્ર સ્નાન ઋષિઓએ કહ્યાં છે. ૯

आग्नेयं भस्मना स्नानमवगाह्य तु वारुणम् ।
आपोहिष्ठेति च ब्राह्मं वायव्यं गोरजः स्मृतम् ॥ १० ॥
यत्तु सातपवर्षेण स्नानं तद्दिव्यमुच्यते ।
तत्र स्नात्वा तु गङ्गायां स्नातो भवति मानवः ॥ ११ ॥

ईशानः सर्ववेवानां ઇત્યાદિક મંત્રો ભણીને મસ્તકથી માંડીને આખા શરીરમાં ભસ્મનો લેપ કરવો તેનું નામ આગ્નેય સ્નાન, જળમાં સ્નાન કરવું તેનું નામ વારુણ સ્નાન, आपो हि ष्ठा मयोभुवः વગેરે મંત્ર ભણીને માર્જન કરવું તેનું નામ બ્રાહ્મ સ્નાન, સાયંકાળે ગાયો ચરીને ગામમાં આવતી હોય, તે સમયે તેઓનાં ચરણની રજ વાયુથી ઉડતી હોય તેને શરીર ઉપર

ધારણ કરવી તે વાયવ્ય સ્નાન અને સૂર્યના તડકામાં વરસાદ આવતો હોય તેમાં સ્નાન કરવું તે દિવ્ય સ્નાન કહેવાય છે. આ દિવ્ય સ્નાન કરવાથી મનુષ્યને ગંગામાં સ્નાન કરવાનું પુણ્ય મળે છે. ૧૦-૧૧

૧૧ મનુષ્ય રોગાદિકથી અશક્ત હોય અને તેનાથી સ્નાન થઈ શકે તેમ ન હોય ત્યારે તેને ભસ્મ સ્નાન કરાવવું. નિત્ય પ્રભાતમાં જે સ્નાન કરવામાં આવે છે, તે વારુણ સ્નાન કહેવાય છે. आपो हि ष्ठा मयोभुवः વગેરે મંત્ર ભણીને દર્ભથી જે માર્જન કરવામાં આવે છે, તે ब्राह्म સ્નાન કહેવાય છે. આ ब्राह्म સ્નાન ત્રણ ઠેકાણે ત્રણવાર કરવાનું બૌધાયન કહે છે; भुवि मूर्ध्नि तथाकाशे मूर्ध्न्याकाशे तथा भुवि । आकाशे भुवि मूर्ध्नीति मंत्रस्नानं विधीयते ॥ પ્રથમ आपोहिष्ठा એ ત્રણ ઋચાથી પૃથ્વીઉપર, મસ્તક ઉપર તથા આકાશમાં માર્જન કરવું, બીજીવાર મસ્તક ઉપર, આકાશમાં તથા પૃથ્વી ઉપર માર્જન કરવું અને ત્રીજીવાર આકાશમાં, પૃથ્વી ઉપર તથા મસ્તક ઉપર માર્જન કરવું. આ માર્જનને મંત્રસ્નાન કહે છે. આ પાંચ પ્રકારનાં સ્નાનમાં વારુણ સ્નાન મુખ્ય છે અને બીજાં સ્નાન ગૌણ છે.

स्नातुं यान्तं द्विजं सर्वे देवाः पितृगणैः सह ।
वायुभूतास्तु गच्छन्ति तृषार्ताः सलिलार्थिनः ॥ १२ ॥
निराशास्ते निवर्तन्ते वस्त्रनिष्पीडने कृते ।
तस्मान्न पीडयेद्वस्त्रमकृत्वा पितृतर्पणम् ॥ १३ ॥

દ્વિજ વર્ણનો પુરુષ તીર્થમાં સ્નાન કરવા (નહાવા) જાય છે ત્યારે દેવતાઓ પિતૃગણોની સાથે વાયુરૂપ થઇને તેની પાછળ જાય છે અને તે સમયે તેઓ તૃષાથી આર્ત હોય છે અને તેઓને પાણી પીવાની ઇચ્છા હોય છે. માટે સ્નાન કરવાને જનારા દ્વિજ વર્ણના પુરુષે સ્નાન કર્યા પછી વસ્ત્રને નિચોવ્યા પહેલાં પિતૃઓનું તર્પણ કરવું. જો પિતૃતર્પણ કર્યા વગર તે વસ્ત્રને નીચોવે છે તો પિતૃઓ નિરાશ થઈને પાછા ચાલ્યા જાય છે. ૧૨-૧૩

रोमकूपेष्ववस्थाप्य तिलैस्तर्पयते पितॄन् ।
तर्पितास्तेन ते सर्वे रुधिरेण मलेन च ॥ १४ ॥

હાથના વાળવાળા ભાગ ઉપર તલ મૂકીને જે પિતૃઓનું તર્પણ કરે છે, તે લોહીથી અથવા તો મેલથી પોતાના સર્વે પિતૃઓનું તર્પણ કરે છે, એમ જાણવું. ૧૪

अवधूनोति यः केशान्स्नात्वा मस्रवते द्विजः ।
आचामेद्वा जलस्थोऽपि स बाह्यः पितृदैवतैः ॥ १५ ॥

જે દ્વિજ સ્નાન કર્યા પછી પોતાના પાણીથી નિતરતા કેશને ઝાટકે છે, જે સ્નાન કર્યા પછી ભીનાં વસ્ત્રો સાથે પાણીમાં મૂતરે છે અથવા તો ઝાડે જાય છે તથા જે દ્વિજ સ્નાન કરવાનો સમય ન હોય તેવે સમયે પાણીની વચ્ચે ઉભો રહીને આચમન કરે છે, તે દ્વિજ પિતૃનાં કર્મ અને દેવનાં કર્મ કરવાને અયોગ્ય થાય છે. ૧૫

शिरः प्रावृत्य कण्ठं वा मुक्तकच्छशिखोऽपि वा ।
विना यज्ञोपवीतेन आचान्तोऽप्यशुचिर्भवेत् ॥ १६ ॥

આચમન કરનારા પુરુષે વસ્ત્રથી માથાને ઢાંકીને અથવા તો ગળે વસ્ત્ર વિટીને આચમન કરવું નહિ, કાછડી કાઢીને આચમન કરવું નહિ, માથાના કેશ છૂટા રાખીને આચમન કરવું નહિ તથા જનોઇ વગર પણ આચમન કરવું નહિ. ઉપર નિષેધ કરેલી સ્થિતિમાં આચમન કરે, તો પણ આચમન કરનારો અશુદ્ધ રહે. ૧૬

जले स्थलस्थो नाचामेज्जलस्थश्च बहिःस्थले ।
उभे स्पृष्ट्वा समाचामेदुभयत्र शुचिर्भवेत् ॥ १७ ॥

જે દ્વિજ નદીના કે તળાવના શુદ્ધ તીર ઉપર બેસીને પાણીમાં જળનાં બિંદુઓ પડે, તેમ આચમન કરે છે અથવા તો જે દ્વિજ પાણીમાં ઉભો રહીને તીર ઉપર પાણીના છાંટા ઉડે, તે પ્રમાણે આચમન કરે છે, તે આચમન કરવાથી શુદ્ધ થતો નથી; પરંતુ એક પગ પાણીમાં રાખીને અને એક પગ તીર ઉપર રાખીને, આમ જળનો અને સ્થળનો બન્નેનો સ્પર્શ કરીને આચમન કરે છે, તે શુદ્ધ થાય છે. ૧૭

स्नात्वा पीत्वा क्षुते सुप्ते भुक्त्वा रथ्याप्रसर्पणे ।
आचान्तः पुनराचामेद्वासो विपरिधाय च ॥ १८ ॥

સ્નાન કર્યા પછી, કંઇક પીધા પછી, છિંક ખાધા પછી, સુઇ ઉઠયા પછી, ભોજન કર્યા પછી, શેરી, ગલી વગેરેમાં ફરી આવ્યા પછી અને ધોતીયું બદલ્યા પછી બે વાર આચમન કરવું. ૧૮

क्षुते निष्ठीवने चैव दन्तोच्छिष्टे तथानृते ।
पतितानां च संभाषे दक्षिणं श्रवणं स्पृशेत् ॥ १९ ॥

છીંક આવ્યા પછી, થુંક્યા પછી, દાંતમાં ભરાઇ રહેલું એઠું કાઢયા પછી, અસત્ય બોલ્યા પછી તથા પતિતોની (પાપીઓની) સાથે ભાષણ કર્યા પછી જમણા કાનનો સ્પર્શ કરવો. ૧૯

अग्निरापश्च वेदाश्च सोमसूर्यानिलास्तथा ।
सर्वे एव तु विप्रस्य श्रोत्रे तिष्ठन्ति दक्षिणे ॥ २० ॥

અગ્નિ, પાણી, ચાર વેદો, ચંદ્ર, સૂર્ય અને વાયુ આ સર્વે બ્રાહ્મણના જમણા કાનમાં વાસ કરીને રહ્યાં છે. ૨૦

भास्करस्य करैः पूतं दिवा स्नानं प्रशस्यते ।
अप्रशस्तं निशि स्नानं राहोरन्यत्र दर्शनात् ॥ २१ ॥

દિવસે સૂર્યનાં કિરણોથી પવિત્ર થયેલું સ્નાન કરવું, એ શ્રેષ્ઠ કહેવાય છે. પરંતુ રાત્રે સ્નાન કરવું સારું કહેવાતું નથી. પરંતુ રાત્રે જો ગ્રહણનો યોગ હોય તો સ્નાન કરવું. ૨૧

स्नानं दानं जपो होमः कर्तव्यो राहुदर्शने ।
अन्यदा त्वशुची रात्रिस्तस्मात्तां परिवर्जयेत् ॥ २२ ॥

ગ્રહણનો યોગ હોય ત્યારે રાત્રે પણ સ્નાન કરવું, દાન દેવું, જપ કરવો તથા અગ્નિમાં હોમ કરવો. પરંતુ ગ્રહણ ન હોય ત્યારે રાત્રિ અપવિત્ર છે, માટે ઉપર કહેલાં કર્મ કરવામાં રાત્રિનો ત્યાગ કરવો. ૨૨

मारुतो वसवो रुद्रा आदित्याश्चाथ देवताः ।
सर्वे सोमे प्रलीयन्ते तस्माद्दानं तु संग्रहे ॥ २३ ॥

પવન, વસુઓ, રુદ્રો અને આદિત્ય દેવતાઓ, આ સર્વે દેવતાઓ ચંદ્રના ગ્રહણને સમયે ચંદ્રવિશે લય પામે છે, માટે ચંદ્રના ગ્રહણ સમયે દાન દેવાં. ૨૩

खलयज्ञे विवाहे च संक्रान्तौ ग्रहणे तथा ।
शर्वर्यां दानमस्त्येव नान्यत्रैवं विधीयते ॥ २४ ॥

ખળારૂપી યજ્ઞમાં, વિવાહમાં, સંક્રાંતિમાં અને ગ્રહણ હોય ત્યારે રાત્રિએ પણ દાન દેવું; પરંતુ તે શિવાય બીજા પ્રસંગમાં રાત્રિએ દાન દેવું નહિ. ૨૪

पुत्रजन्मनि यज्ञे च तथाचात्ययकर्मणि ।
राहोश्च दर्शने दानं प्रशस्तं नान्यदा निशि ॥ २५ ॥

પુત્રનો જન્મ થયો હોય, યજ્ઞ ચાલતો હોય, કોઇ મરવા પડ્યો હોય તથા ચંદ્રગ્રહણ થયું હોય ત્યારે રાત્રિએ દાન દેવું ઉત્તમ ગણાય છે. પરંતુ તે શિવાય બીજા પ્રસંગમાં રાત્રિએ દાન દેવું ઉત્તમ ગણાતું નથી. ૨૫

महानिशा तु विज्ञेया मध्यस्थमहरद्वयम् ।
प्रदोषपश्चिमौ यामौ दिनवत्स्नानमाचरेत् ॥ २६ ॥

રાત્રિના વચલા બે પહોર એટલે બીજો અને ત્રીજો પહોર મહાનિશા કહેવાય છે અને પ્રદોષ કાળ એટલે પહેલો પહોર અને પાછલો પહોર દિવસના જેવો કહેવાય છે, માટે તે બે પહોરમાં સ્નાન કરવું. ૨૬

चैत्यवृक्षश्चितिर्यूपश्चाण्डालः सोमविक्रयी ।
एतांस्तु ब्राह्मणः स्पृष्ट्वा सवासा जलमाविशेत् ॥ २७ ॥

સ્મશાનમાં ઉભેલા વૃક્ષનો, ચિતાનો, યૂપનો—યજ્ઞમાં પશુને બાંધવાના થાંભલાનો, ચંડાલનો અને સોમવલ્લી વેચનારાનો:—આટલાનો સ્પર્શ કરીને (અડકીને) બ્રાહ્મણે વસ્ત્રો સાથે સ્નાન કરવું. ૨૭

अस्थिसंचयनात्पूर्वं रुदित्वा स्नानमाचरेत् ।
अन्तर्दशाहे विप्रस्य ह्यूर्ध्वमाचमनं स्मृतम् ॥ २८ ॥

મનુષ્ય મરી ગયા પછી તેને પ્રથમ દિવસે બાળવામાં આવે છે અને ચોથે દહાડે અસ્થિસંચયન (હાડકાં એકઠાં કરીને તેને તીર્થમાં પધરાવવામાં આવે છે) નામની ક્રિયા કરવામાં આવે છે. આ ક્રિયાની પહેલાં જે બ્રાહ્મણ રુવે, તેણે સ્નાન કરવું અને અસ્થિસંચયન કર્યા પછી દશ દિવસમાં જે રુવે, તેણે રુદન કર્યા પછી આચમન કરવું. ૨૮

सर्वं गंगासमं तोयं राहुग्रस्ते दिवाकरे ।
सोमग्रहे तथैवोक्तं स्नानदानादिकर्मसु ॥ २९ ॥

સૂર્ય અને ચંદ્રનાં ગ્રહણ સમયે સર્વ જળ ગંગાજળ સમાન થઈ જાય છે. માટે ગ્રહણ સમયે સ્નાન, દાન વગેરે કર્મમાં હર કોઈ પણ નવાણના જળને ગ્રહણ કરવું. ૨૯

कुशपूतं तु यत्स्नानं कुशेनोपस्पृशेद्द्विजः ।
कुशेनोद्धृततोयं यत्सोमपानसमं भवेत् ॥ ३० ॥

દર્ભવડે માર્જન કરીને જે સ્નાન કરવામાં આવે છે, તે કુશપૂત સ્નાન કહેવાય છે. અનામિકા નામની આંગળીમાં દર્ભની પવિત્રી પહેરીને જે આચમન કરવામાં આવે છે, તે આચમન પણ કુશોદકાચમન કહેવાય છે તથા સંધ્યાવંદનાદિકમાં માર્જન માટે દર્ભના અગ્રભાગથી જળના બિંદુઓને ગ્રહણ કરવામાં આવે છે, તે જળ સોમપાનના જેવું પવિત્ર છે. ૩૦

अग्निकार्यात्परिभ्रष्टाः संध्योपासनवर्जिताः ।
वेदं चैवानधीयानाः सर्वे ते वृषलाः स्मृताः ॥ ३१ ॥

જેઓ અગ્નિહોત્રમાં હોમ કરતા નથી, જેઓ સંધ્યાવંદન કરતા નથી તથા જેઓ વેદનો અભ્યાસ કરતા નથી, તે સર્વેને વૃષલ (શૂદ્ર) જાણવા. ૩૧

૩૧ વેદાધ્યયન નહિ કરનારા તેમજ સંધ્યાવંદનાદિક ષટ્ કર્મ નહિ કરનારા બ્રાહ્મણોની આ શ્લોકમાં નિંદા કરી છે.

तस्माद्वृषलभीतेन ब्राह्मणेन विशेषतः ।
अध्येतव्योऽप्येकदेशो यदि सर्वं न शक्यते ॥ ३२ ॥

તે માટે બ્રાહ્મણે વિશેષે કરીને શૂદ્ર થઇ જવાના ભયથી જો આખો વેદ ભણી શકાય નહિ તો વેદનો એક ભાગ પણ અવશ્ય ભણવો. ૩૨

૩૨ આખો વેદ ભણી શકાય નહિ તો વેદનો એક ભાગ પણ બ્રાહ્મણે ભણવો, કે જેથી પોતાની બ્રાહ્મણજાતિનો નાશ થાય નહિ. આ શ્લોકમાં બ્રાહ્મણને વેદ ભણવા માટે ખાસ કરીને કહ્યું છે. જેમ સર્વ વેદ ભણી શકાય નહિ તો વેદનો એક ભાગ પણ ભણવાની આજ્ઞા કરવામાં આવી છે, તે ઉપરથી અગ્નિહોત્ર, સંધ્યાવંદન પણ જો આખું થઈ શકે નહિ તો તેનો એક એક ભાગ કરવો, એમ જાણવું નાહ. કારણ કે અગ્નિહોત્રાદિક કર્મ અધૂરાં કરવાથી તેનું સંપૂર્ણ ફળ મળતું નથી. તેમ તે કરવામાં અશક્તિનો પણ અસંભવ છે, તેથી તે તો પૂરેપૂરાંજ કરવાં જોઇએ.

शूद्रान्नरसपुष्टस्याप्यधीयानस्य नित्यशः ।
जपतो जुह्वतो वापि गतिरूर्ध्वा न विद्यते ॥ ३३ ॥

જે બ્રાહ્મણ શૂદ્રનું અન્ન ખાઇને હૃષ્ટપુષ્ટ થયો હોય, તે નિત્ય વેદનું અધ્યયન કરે છે, ગાયત્રીનો જપ કરે છે અને અગ્નિમાં હોમ કરે છે, તો પણ તેને ઉત્તમ ગતિ મળતી નથી. ૩૩

शूद्रान्नं शूद्रसंपर्कः शूद्रेण च सहासनम् ।
शूद्राज्ज्ञानागमश्चापि ज्वलन्तमपि पातयेत् ॥ ३४ ॥

શૂદ્રનાં અન્નનું ભોજન, શૂદ્રની સાથે સંસર્ગ, શૂદ્રની સાથે એક આસન ઉપર બેસવું તથા શૂદ્રની પાસેથી જ્ઞાન સંપાદન કરવું (શાસ્ત્રનો અભ્યાસ કરવો), આ સર્વ મોટા તેજસ્વી પુરુષને પણ પાતકી કરે છે. ૩૪

૩૪ એક ઘરમાંજ શૂદ્રની સાથે વાસ કરવો, તેનું નામ શૂદ્ર સાથે સંસર્ગ કર્યો કહેવાય છે. શૂદ્રની સાથે ગાડી વગેરેમાં સાથે બેસીને ફરવાથી નિત્ય બ્રહ્મનિષ્ઠ પુરુષની બુદ્ધિમાં ફેરફાર થાય છે અને તેથી તે નર્કમાં પડે છે.

यः शूद्रया पाचयेन्नित्यं शूद्री च गृहमेधिनी ।
वर्जितः पितृदेवेभ्यो रौरवं याति स द्विजः ॥ ३५ ॥

જે દ્વિજ જાતિનો પુરુષ પોતાના ઘરમાં શૂદ્ર જાતિની સ્ત્રી પાસે નિત્ય રસોઈ કરાવે છે તથા જે દ્વિજને ઘરમાં શૂદ્ર જાતિની સ્ત્રી હોય છે, તે પુરુષ પિતૃઓના અને દેવનાં કર્મ કરવાને યોગ્ય ગણાતો નથી અને મરણ પછી રૌરવ નામના નરકમાં પડે છે. ૩૫

मृतसूतकपुष्टाङ्गं द्विजं शूद्रान्नभोजिनम् ।
अहं तन्न विजानामि कां कां योनिं गमिष्यति ॥ ३६ ॥

મૃત્યુ સૂતકનું અન્ન ખાનારો તથા શૂદ્રોનું અન્ન ખાનારો દ્વિજ મરણ પછી કઈ કઈ યોનિમાં અવતાર લેશે, તે હું જાણુતો નથી. ૩૬

गृध्रो द्वादश जन्मानि दश जन्मानि सूकरः ।
श्वयोनौ सप्त जन्मानि इत्येवं मनुरब्रवीत् ॥ ३७ ॥

મનુ કહે છે કે;–તે પુરુષ બારવાર ગીધની જાતિમાં જન્મે છે, દશ વાર ડુક્કરની જાતિમાં અને સાતવાર કુતરાની જાતિમાં અવતરે છે. ૩૭

૩૭ અગ્યારમું તથા બારમું જમનારા બ્રાહ્મણોએ પરાશરનાં આ વચન ઉપર ખાસ ધ્યાન આપવાનું છે. તેમ જ સઈ, સુતાર, ધોબી વગેરેનું ગોરપદું કરનારાઓએ પણ આ વચનં ઉપર ખાસ ધ્યાન આપવાની જરુર છે. બ્રાહ્મણોનો મોટો ભાગ અત્યારે શૂદ્રનું ગોરપદું કરે છે અને તેનાં મરણ પાછળ પ્રેતાન્ન ખાય છે તથા શય્યા વગેરે દાન પણ લે છે. તેથી તેઓની બુદ્ધિ ભ્રષ્ટ થઇ ગઇ છે. આ કારણથી તેઓ સંધ્યાવંદનાદિક બ્રાહ્મણનાં ષટ્ કર્મ તજી બેઠા છે અને નામનાજ બ્રાહ્મણો રહ્યા છે. તેઓએ પોતાના ઉદ્ધાર માટે શાસ્ત્રોક્ત કર્મ કરવાં જોઇએ તથા શાસ્ત્રવિહિત ભોજન, દાન વગેરે લેવાં, પરંતુ શાસ્ત્રનિષિદ્ધ ભોજનાદિકનો ત્યાગ કરવો જોઇએ.

दक्षिणार्थं तु यो विप्रः शूद्रस्य जुहुयाद्धविः ।
ब्राह्मणस्तु भवेच्छूद्रः शूद्रस्तु ब्राह्मणो भवेत् ॥ ३८ ॥

જે બ્રાહ્મણ દક્ષિણામાટે વેદના મંત્રોથી શૂદ્રનાં શાંતિ પૌષ્ટિક કર્મ કરે છે, તો તે બ્રાહ્મણ શૂદ્ર થાય છે અને શૂદ્ર બ્રાહ્મણ થાય છે અર્થાત્ શૂદ્રને શાંતિ પૌષ્ટિક કર્મનું ફળ મળે છે. ૩૮

मौनव्रतं समाश्रित्य आसीनो न वदेद्द्विजः ।
भुञ्जानो हि वदेद्यस्तु तदन्नं परिवर्जयेत् ॥ ३९ ॥

જે બ્રાહ્મણે ભોજન કરતી વખતે બોલવું નહિ, આ પ્રમાણે મૌન વ્રત ધારણ કર્યું હોય, તે બ્રાહ્મણે ભોજન સમયે બોલવું નહિ અને તે જો ભોજન કરતી વખતે બોલે તો તેણે બાકી રહેલું અન્ન ખાવું નહિ. ૩૯

अर्द्धे भुक्ते तु यो विप्रस्तस्मिन्पात्रे जलं पिबेत् ।
हतं दैवं च पित्र्यं च आत्मानं चैव घातयेत् ॥ ४० ॥

જે બ્રાહ્મણ અર્ધું ભોજન કર્યા પછી જે પાત્રમાં પોતે જમતો હોય, તેજ પાત્રમાં પાણી રેડીને પીએ તો તેનું કરેલુ પિતૃનું કર્મ તથા દેવતાનું કર્મ નિષ્ફળ થાય છે અને તે દોષને લીધે તે પોતાના આત્માને નરકમાં નાખે છે. ૪૦

भुञ्जानेषु तु विप्रेषु योऽग्रे पात्रं विमुञ्चति ।
स मूढः स तु पापिष्ठो ब्रह्मघ्नः स खलूच्यते ॥ ४१ ॥

જે બ્રાહ્મણ બીજા બ્રાહ્મણો ભોજન કરતા હોય, તે સમયે પોતાનું પાત્ર છોડી, આચમન લઈને પંક્તિમાંથી ઉઠી જાય છે, તે બ્રાહ્મણ મૂઢ, મહાપાપી અને બ્રહ્મહત્યા કરનારો કહેવાય છે. ૪૧

૪૧ પૂર્વે બ્રાહ્મણ, ક્ષત્રિય તથા વૈશ્યની પંક્તિ ભોજન કરવા બેસતી ત્યારે સર્વે જમી રહ્યા પછી આચમન કરતા અને પછી સૌ સાથે ઉઠતા હતા અને આ સંપ્રદાય હમણા પણ શિષ્ટ બ્રાહ્મણોની જ્ઞાતિઓમાં ચાલુ છે. પરંતુ હમણા શાસ્ત્રાનભિજ્ઞ તરુણ બ્રાહ્મણયુવકો બ્રાહ્મણો જમી રહ્યા ન હોય, છતાં પંક્તિમાંથી ઉઠી જવાની ઉદ્ધતાઇ કરે છે, એ શાસ્ત્રવિરુદ્ધ છે. ભોજનના આરંભમાં ને અંતમાં આચમન કરવાની રીત તો સર્વથા લુપ્ત જ થઈ ગઈ છે. તોપણ કેટલાએક શિષ્ટ બ્રાહ્મણોની સંસ્કારી જ્ઞાતિમાં હજી એ રીત પણ જોવામાં આવે છે.

भाजनेषु च तिष्ठत्सु स्वस्ति कुर्वन्ति ये द्विजाः ।
न देवास्तृप्तिमायान्ति निराशाः पितरस्तथा ॥ ४२

ભોજનનાં પાત્રો પડ્યાં હોય ને બ્રાહ્મણો જો શ્રાદ્ધમાં સ્વસ્તિવાચન કરે છે તો દેવતાઓ અને પિતૃઓ તૃપ્તિ પામતા નથી, પરંતુ નિરાશ થઈને ચાલ્યા જાય છે. ૪૨

अस्नात्वा नैव भुञ्जीत अजप्त्वाग्निमहूय च ।
पर्णपृष्ठेन भुञ्जीत रात्रौ दीपं विना तथा ॥ ४३ ॥

સ્નાન કર્યા વિના (નહાયા વિના) ભોજન કરવું જ નહિ, તેમ જપ કર્યા વિના અને અગ્નિમાં હોમ કર્યા વિના પણ ભોજન કરવું નહિ. તેમ

પત્રાવળીમાં ભોજન કરનારાએ પાંદડાના પાછલા ભાગ ઉપર પણ ભોજન કરવું નહિ, પરંતુ સવળી બાજુ ઉપર ભોજન કરવું તથા રાત્રિએ દીવા વગર અંધારે ભોજન કરવું નહિ. ૪૩

૪૩ ભોજન કર્યા પહેલાં સ્નાન, સંધ્યા, જપ હોમ વગેરે કરવાં પડે છે અને તે પછી ભોજનનો સમય હોય છે, તેથી સ્નાન કરીને ભોજન કરવું એમ કહ્યું છે તે વ્યર્થ છે. આમ કોઇને શંકા થાય તેનું સમાધાન એ છે કે;–કદાચિત્ કોઇએ કોઇ કારણને લઇને પોતપોતાને સમયે કર્મ કર્યાં ન હોય અને ભોજનનો સમય થઇ ગયો હોય તો સ્નાન કર્યાં વગર ભોજન કરવું નહિ, એમ દર્શાવવા માટે ભોજન સમયે સ્નાન કરવાનું કહ્યું છે અને एवकारથી સ્નાન અવશ્ય કરવું જોઇએ, આમ દર્શાવ્યું છે.

गृहस्थस्तु दयायुक्तोधर्ममेवानुचिन्तयेत् ।
पोष्यवर्गार्थसिद्ध्यर्थं न्यायवर्ती सुबुद्धिमान् ॥ ४४ ॥

ગૃહસ્થે દયાપરાયણ થઇને પોષ્ય (ભરણ પોષણ કરવાયોગ્ય) મનુષ્યોનું ભરણ પોષણ કરવામાટે યાજન, અધ્યાપન વગેરે ધર્મશાસ્ત્રમાં ધન સંપાદન કરવાના જે ઉપાયો કહ્યા છે, તે ઉપાયથી ધન સંપાદન કરવું તથા ન્યાય પ્રમાણે વર્તવું. આ પ્રમાણે વર્તનારો ગૃહસ્થ જ્ઞાની કહેવાય છે. ૪૪

૪૪ નીચે પ્રમાણે પોષ્ય વર્ગ કહ્યો છે.

पिता माता गुरुर्भ्राता प्रजा दीनाः समाश्रिताः ।
अभ्यागतोऽतिथिश्चैव पोष्यवर्ग उदाहृतः ॥

પિતા, માતા, ગુરુ, ભાઇ, દીન પ્રજા, આશ્રિત વર્ગ, અભ્યાગત અને અતિથિ આ સર્વે પોષ્યવર્ગ કહેવાય છે.

न्यायोपार्जितवित्तेन कर्तव्यं स्वात्मरक्षणम् ।
अन्यायेन तु यो जीवेत्सर्वकर्मबहिष्कृतः ॥ ४५ ॥

ગૃહસ્થે ન્યાયથી ધન સંપાદન કરીને પોતાનું તથા પોતાના પોષ્ય વર્ગનું રક્ષણ કરવું. જે ગૃહસ્થ અન્યાયથી ધન સંપાદન કરીને જીવે છે, તે સર્વ ધર્મકર્મ કરવાને અયોગ્ય છે. ૪૫

अग्निचित्कपिला सत्री राजा भिक्षुर्महोदधिः ।
दृष्टमात्राः पुनन्त्येते तस्मात्पश्येत्तु नित्यशः ॥ ४६ ॥

અગ્નિચયન નામનો યાગ કરનાર, કપિલા ગાય, યજ્ઞ કરનારો, પ્રજાનું પાલન કરનારો રાજા, સંન્યાસી અને સમુદ્ર, આ દર્શન કરવાથી દર્શન કરનારાને પવિત્ર કરે છે, માટે નિત્ય તેઓનાં દર્શન કરવાં. ૪૬

૪૬ દર્ભ, સુવર્ણુ વગેરે તો શરીર ઉપર ધારણુ કરવાથી પવિત્ર કરે છે, પરંતુ આ શ્લોકમાં કહેલા પદાર્થો તો દર્શન કરવાથી જ પવિત્ર કરે છે, તેથી મૂળમાં दृष्टमात्राः એમ કહ્યું છે.

अरणिं कृष्णमार्जारं चन्दनं सुमणिं घृतम् ।
तिलान् कृष्णाजिनं छागं गृहे चैतानि रक्षयेत् ॥ ४७ ॥

અરણી, કાળી મીંદડી, ચંદન, પુખરાજ વગેરે મણિ, ઘી, તલ, કાળિયારનું ચામડું અને બકરી આટલાં ઘરમાં રાખવાં. ૪૭

गवां शतं सैकवृषं यत्र तिष्ठत्ययन्त्रितम् ।
तत्क्षेत्रं दशगुणितं गोचर्म परिकीर्तितम् ॥ ४८ ॥

સો ગાયો અને એક બળદ સંકડાયા વગર જેટલી ભૂમિમાં બેસી શકે, તેનાથી દશગણી ભૂમિને गोचर्म કહી છે. ૪૮

ब्रह्महत्यादिभिर्मर्त्यो मनोवाक्कायकर्मजैः ।
एतद्गोचर्मदानेन मुच्यते सर्वपातकैः ॥ ४९ ॥

મનુષ્યે મન, વાણી તથા કાયાથી બ્રહ્મહત્યા આદિક મહાપાપ કર્યાં હોય તો, તે સર્વ પાપમાંથી गोचर्म જેટલી ભૂમિનું દાન કરવાથી મુક્ત થાય છે. ૪૯

कुटुम्बिने दरिद्राय श्रोत्रियाय विशेषतः ।
यद्दानं दीयते तस्मै तद्दानं शुभकारकम् ॥ ५० ॥

કુટુંબવાળા અને દરિદ્ર એવા શ્રોત્રિય બ્રાહ્મણુને જે દાન આપવામાં આવે છે, તે દાન શુભ ફળ આપે છે. ૫૦

वापीकूपतडागाद्यैर्वाजपेयशतैरपि ।
गवां कोटिप्रदानेन भूमिहर्ता न शुद्ध्यति ॥ ५१ ॥

જે મનુષ્ય બીજાની જમીન હરી લે છે, (બળથી અથવા છળ કપટથી પારકાની જમીનને હરી લે છે) તે મનુષ્ય વાવ, કૂવા, તળાવ, વગેરે ખોદાવે તથા સો વાજપેય યજ્ઞ કરે તથા કરોડો ગાયોનાં દાન દે, તોપણુ શુદ્ધ થતો નથી. ૫૧

अष्टादशदिनादर्वाक्स्नानमेव रजस्वला ।
अत ऊर्ध्वं त्रिरात्रं स्यादुशना मुनिरब्रवीत् ॥ ५२ ॥

એક સ્ત્રીને અડકાવ આવે, તે ચોથે દિવસે સ્નાન કરે અને ફરીને તેને અઢાર દિવસની પહેલાં અટકાવ આવે તો તેણે સ્નાન જ કરવું, પરંતુ

ત્રણ રાત્રિ દૂર બેસવું નહિ. પરંતુ અઢાર દિવસ પછી જો અટકાવ આવે તો ત્રણ દિવસ સૂધી અટકાવ પાળવો અને ચોથે દિવસે સ્નાન કરવું, આમ ઉશના–શુક્ર ઋષિએ કહ્યું છે. ૫૨

युगं युगद्वयं चैव त्रियुगञ्च चतुर्युगम् ।
चण्डालसूतिकोदक्यापतितानामधः क्रमात् ॥ ५३ ॥

ચંડાળથી એક યુગ, સુવાવડીથી બે યુગ, અટકાવવાળી સ્ત્રીથી ત્રણ યુગ અને પતિતથી (વટલી ગયેલાથી) ચાર યુગ અનુક્રમે દૂર (છેટા) રહેવું. ૫૩

યુગ એટલે ચાર હાથ અથવા તો એક વામ.

ततः सन्निधिमात्रेण सचैलं स्नानमाचरेत् ।
स्नात्वाऽवलोकयेत्सूर्यमज्ञानात्स्पृशते यदि ॥ ५४ ॥

જે પુરુષ ઉપર કહેલાં પ્રમાણ કરતાં ઓછાં પ્રમાણમાં દૂર રહે અર્થાત્ તેઓની પાસે જાય તો તેણે વસ્ત્રની સાથે સ્નાન કરવું; પરંતુ જો તેઓનો અજાણતાં સ્પર્શ થઈ જાય (તેને અડી જવાય) તો વસ્ત્રસાથે સ્નાન કરીને સૂર્યનાં દર્શન કરવાં. ૫૪

विद्यमानेषु पात्रेषु ब्राह्मणो ज्ञानदुर्बलः ।
तोयं पिबति वक्त्रेण श्वयोनौ जायते ध्रुवम् ॥ ५५ ॥

જે મૂર્ખ બ્રાહ્મણ પોતાની પાસે વાસણ હોય (હાથ હોય), છતાં પણ મોહોડાથી પાણી પીએ છે, તે કુતરાની યોનિમાં અવશ્ય જન્મે છે. ૫૫

અહીં પ્રાયશ્ચિત્તકાંડ પૂર્ણ થાય છે અને હવે શેષ પ્રાયશ્ચિત્ત કહે છે;–

यस्तु क्रुद्धः पुमान् ब्रूयाज्जायाया मातृगम्यताम् ।
पुनरिच्छति चेदेनां विप्रमध्ये तु श्रावयेत् ॥ ५६ ॥

કોઈ પુરુષ ક્રોધમાં આવી જઈને પોતાની સ્ત્રીને કહે કે, તું તો મારી માતા છો, બહેન છો, આમ અગમ્યા કહે અને ક્રોધ શાંત પડે, એટલે ફરીને તેની પાસે જવાની ઈચ્છા કરે તો તેણે બ્રાહ્મણસભાની પાસે જઈને તેને પોતાના ક્રોધનું કારણ સંભળાવવું. ૫૬

श्रान्तः क्रुद्धस्तमोन्धो वा क्षुत्पिपासाभयार्दितः ।
दानं पुण्यमकृत्वा तु प्रायश्चित्तं दिनत्रयम् ॥ ५७ ॥
उपस्पृशेत्त्रिषवणं महानद्योस्तु सङ्गमे ।
चीर्णान्ते चैव गा दद्याद्ब्राह्मणान्भोजयेद्दश ॥ ५८ ॥

પરગામ જવાથી અથવા તો ઘરનાં કામકાજ કરવાથી હું થાકી ગયો હતો, તથી મેં મારી સ્ત્રીને માતા, બેન વગેરે કહીને તેની પાસે નહિ જવાના સોગન લીધા હતા, તેણે મારું વચન ઉલ્લંઘન કર્યું હતું તેથી મને ક્રોધ ચઢયો હતો, અને મેં તેની પાસે નહિ જવાના સોગન લીધા હતા, અથવા તો મારી સ્ત્રીનો અપરાધ ન હતો, પરંતુ હું ભ્રાંતિથી વિવેક રહિત થઈ ગયો હતો તેથી મેં તેની પાસે નહિ જવાના સોગન લીધા હતા, અથવા તો ભુખ, તરસ કે રાજાદિકના ભયથી હું ગભરાઇ ગયો હતો તેથી મેં મારી સ્ત્રીની પાસે નહિ જવાના સોગન લીધા હતા. આ રીતે પોતાના ક્રોધનું કારણ બ્રાહ્મણસભાની પાસે નિવેદન કરવું. તે સમયે બ્રાહ્મણસભા તેને કહે કે; તારે સુપાત્ર બ્રાહ્મણને દાન આપવું અથવા તો તીર્થયાત્રા કરવી. પરંતુ પાતકી એ બેમાંથી એક પણ કરે નહિ તો પછી તેણે બ્રાહ્મણોની આજ્ઞાથી બે મહાનદીનો જ્યાં સંગમ થતો હોય, ત્યાં જઇને દિવસમાં ત્રણ વખત સ્નાન કરવું અને ત્રણ રાત્રિ ઉપવાસ કરવા. આ રીતે પ્રાયશ્ચિત્ત કર્યા પછી ચોથે દિવસે ગાયનું દાન દેવું તથા દશ બ્રાહ્મણોને જમાડવા. ૫૭–૫૮

दुराचारस्य विप्रस्य निषिद्धाचरणस्य च ।
अन्नं भुक्त्वा द्विजः कुर्याद्दिनमेकमभोजनम् ॥ ५९ ॥

જે બ્રાહ્મણ દુરાચારી હોય અને શાસ્ત્રથી વિરુદ્ધ રીતે આચરણ કરતો હોય.તે બ્રાહ્મણનું અન્ન જો કોઈ દ્વિજ જમે તો તેણે તેમાંથી શુદ્ધ થવા માટે એક દિવસ ઉપવાસ કરવો. ૫૯

सदाचारस्य विप्रस्य तथा वेदान्तवेदिनः ।
भुक्त्वान्नं मुच्यते पापादहोरात्रान्तरान्नरः ॥ ६० ॥

જો ઉપર કહેલું પ્રાયશ્ચિત્ત થઈ શકે નહિ તો સદાચારવાળા તથા વેદ અને ઉપનિષદને જાણનારા બ્રાહ્મણને ઘેર ભોજન કરવું, એટલે એક દિવસ અને રાત્રિ દુરાચારી બ્રાહ્મણને ઘેર ભોજન કરવાથી જે પાપ લાગ્યું હોય, તે પાપમાંથી પુરુષ મુક્ત થાય છે. ૬૦

ऊर्ध्वोच्छिष्टाधरोच्छिष्टमंतरिक्षमृतौ तथा ।
कृच्छ्रत्रयं प्रकुर्वीत आशौचमरणे तथा ॥ ६१ ॥

એક મનુષ્યને મરણ વખતે ઉલટી થાય, ઝાડો થાય અથવા તો મરનાર ખાટલામાં મરી જાય, અથવા તો મૃત્યુ સૂતકમાં મરી જાય (સ્ત્રી

અટકાવમાં અથવા તો સુવાવડમાં મરણ પામે) તો તેનો દાહાદિક સંસ્કાર કરનારા પુત્રાદિકે ત્રણ કૃચ્છ્ર (પ્રાજાપત્ય) કરવાં. ૬૧

પ્રાજાપત્ય થઇ શકે નહિ તો તેના પ્રતિનિધિ તરિકે પ્રત્યામ્નાય કહે છે;–

कृच्छ्रं देव्ययुतं चैव प्राणायामशतद्वयम् ।
पुण्यतीर्थेऽनार्द्रशिरःस्नानं द्वादशसंख्यया ॥
द्वियोजने तीर्थयात्रा कृच्छ्रमेकं प्रकल्पितम् ॥ ६२ ॥

(૧) દશ હજાર ગાયત્રી મંત્રનો જપ કરવો, (૨) બસો પ્રાણાયામ કરવા, (૩) પવિત્ર તીર્થમાં માથા બોળ સ્નાન કરીને માથાના કેશ સૂકાઇ જાય, એટલે ફરીને માથા બોળ સ્નાન કરવું. આમ બાર વાર સ્નાન કરવું તથા બે યોજન સૂધી તીર્થયાત્રા કરવી. આ ચારમાંનું કોઇ પણ એક કૃચ્છ્ર વ્રતના પ્રતિનિધિ તરિકે ગણાય છે. ૬૨

गृहस्थः कामतः कुर्याद्रेतसः स्खलनं भुवि ।
सहस्रं तु जपेद्देव्याः प्राणायामैस्त्रिभिस्सह ॥ ६३ ॥

ગૃહસ્થ પુરુષ ઇચ્છાપૂર્વક પૃથ્વી ઉપર વીર્યનો પાત કરે તો તેણે એક હજાર ગાયત્રીનો જપ તથા ત્રણ પ્રાણાયામ પ્રાયશ્ચિત્ત તરિકે કરવા. ૬૩

चतुर्विद्योपपन्नस्तु विधिवद्ब्रह्मघातके ।
समुद्रसेतुगमनं प्रायश्चित्तं विनिर्दिशेत् ॥ ६४ ॥

ઋગ્વેદ વગેરે ચાર વેદ જાણનારા તથા તેમાં કહેલાં કર્મ કરનારા બ્રાહ્મણે બ્રહ્મહત્યા કરનારા બ્રાહ્મણને વિધિપૂર્વક સમુદ્ર સેતુની (સેતુબંધ રામેશ્વરની) યાત્રાએ જવાનું પ્રાયશ્ચિત્ત કહેવું. ૬૪

કેવી રીતે યાત્રામાં વર્તવું, તેનો વિધિ કહે છે;

सेतुबंधपथे भिक्षां चातुर्वर्ण्यात्समाचरेत् ।
वर्जयित्वा विकर्मस्थाञ्छत्रोपानद्विवर्जितः ॥ ६५ ॥

ભારતવર્ષની દક્ષિણ દિશામાં શ્રી રામચંદ્રે સમુદ્ર ઉપર સેતુ બાંધી છે. તે સેતુનાં દર્શન કરવા માટે મહાપાતકીએ ઘરમાંથી બહાર નિકળ્યા પછી માર્ગમાં શાસ્ત્રમાં કહ્યા પ્રમાણે વર્ણ તથા આશ્રમના ધર્મ પાળનારા ચાર વર્ણની પાસે ભિક્ષા માગવી, પરંતુ જેઓ અધર્માચરણ કરતા હોય, તેઓને ત્યાંથી ભિક્ષા લેવી નહિ. યાત્રા કરતી વખતે પગમાં જોડા પહેરવા નહિ અને માથે છત્રી ઓઢવી નહિ. ૬૫

अहं दुष्कृतकर्मा वै महापातककारकः ।
गृहद्वारेषु तिष्ठामि भिक्षार्थी ब्रह्मघातकः ॥ ६६ ॥

ભિક્ષા માગતી વખતે મહાપાતકીએ કહેવું કે, મેં મહાપાપ કર્યું છે અને હું બ્રહ્મહત્યારો છું; માટે તમારા ઘરના બારણામાં ઉભો છું અને ભિક્ષાને માટે આવ્યો છું. ૬૬

गोकुलेषु वसेद्वापि ग्रामेषु नगरेषु च ।
तपोवनेषु तीर्थेषु नदीप्रस्रवणेषु च ॥ ६७ ॥
एतेषु ख्यापयन्नेनः पुण्यं गत्वा तु सागरम् ।

બ્રહ્મહત્યા કરનારાએ યાત્રામાં ગાયોના નેસડામાં વાસ કરવો અથવા તો ગામમાં કે નગરમાં વાસ કરવો હોય તો જ્યાં ગોશાળા હોય, દેવમંદિર હોય તેવા સ્થાનમાં નિવાસ કરવો, અથવા તો તપોવનમાં, તીર્થોમાં કે નદીઓના ઝરણાંઓ ઉપર નિવાસ કરવો અને એ સર્વ સ્થાનોમાં પોતાનું પાપ સંભળાવતાં સંભળાવતાં પવિત્ર એવા સમુદ્ર ઉપર જવું. ૬૭

दशयोजनविस्तीर्णं शतयोजनमायतम् ॥ ६८ ॥
रामचन्द्रसमादिष्टनलसञ्चयसञ्चितम् ।
सेतुं दृष्ट्वा समुद्रस्य ब्रह्महत्यां व्यपोहति ॥ ६९ ॥

આ રીતે દશ યોજનમાં વિસ્તારવાળી અને સો યોજન લાંબી તથા રામચંદ્રની આજ્ઞાથી નલ નામના વાંદરાએ પથરાઓ ગોઠવીને બાંધેલી એવા સમુદ્રની સેતુનાં (પાજનાં) દર્શન કરીને મનુષ્ય બ્રહ્મહત્યાના પાપનો નાશ કરે છે. ૬૮-૬૯

सेतुं दृष्ट्वा विशुद्धात्मा त्ववगाहेत सागरम् ।
यजेत वाश्वमेधेन राजा तु पृथिवीपतिः ॥ ७० ॥

સેતુનાં દર્શન કરીને શુદ્ધ થયેલા પુરુષે સમુદ્રમાં સ્નાન કરવું. પૃથ્વીપતિ રાજાથી જો સમુદ્રસેતુનાં દર્શન થઈ શકે તેમ ન હોય તો તેણે અશ્વમેધ યજ્ઞ કરવો. ૭૦

૭૦ અશ્વમેધ યજ્ઞ પણ થઇ શકે તેમ ન હોય તો બૃહદારણ્યકમાં તથા તૈત્તિરીય બ્રાહ્મણમાં કહેલી અશ્વમેધની ઉપાસના કરવી.

पुनः प्रत्यागतो वेश्म वासार्थमुपसर्पति ।
सपुत्रः सहभृत्यश्च कुर्याद्ब्राह्मणभोजनम् ॥ ७१ ॥

गाश्चैवैकशतं दद्याच्चातुर्विद्येषु दक्षिणाम् ।
ब्राह्मणानां प्रसादेन ब्रह्महा तु विमुच्यते ॥ ७२ ॥

સમુદ્રસેતુનાં દર્શન કરીને પોતાને ઘેર આવ્યા પછી બ્રહ્મહત્યા કરનારાએ બ્રાહ્મણોને જમાડવા અને પછી પોતાના પુત્રો, સ્ત્રી તથા સેવકો સાથે ઘરમાં પ્રવેશ કરવો. ચાર વેદ ભણેલા બ્રાહ્મણોને એકસો ગાયો દાનમાં આપવી અને બ્રાહ્મણો પ્રસન્ન થઇને કહે કે, તું પાપરહિત થયો છો, એટલે બ્રહ્મહત્યા કરનારો પાપમાંથી છૂટે છે. ૭૧-૭૨

૭૨ મનુ બ્રહ્મહત્યાનું પ્રાયશ્ચિત્ત બાર વર્ષ સુધી કરવાનું કહે છે. મનુએ બ્રહ્મહત્યાને માટે કહેલાં પ્રાયશ્ચિત્તો પરાશરના પ્રાયશ્ચિત્ત કરતાં કઠિન છે. પરાશરે કળિયુગ તથા તેમાં ઉત્પન્ન થયેલા મનુષ્યોની શક્તિ, શ્રદ્ધા વગેરે જોઇને પ્રાયશ્ચિત્તનો સંકોચ કર્યો છે.

सवनस्थां स्त्रियं हत्वा ब्रह्महत्याव्रतं चरेत् ॥ ॥ ७३ ॥

અગ્નિહોત્રી બ્રાહ્મણની સ્ત્રીની હત્યા કરનારાએ પણ બ્રહ્મહત્યાનું પ્રાયશ્ચિત્ત કરવું. ૭૩

મદિરાપાનનું પ્રાયશ્ચિત્તઃ-

मद्यपश्च द्विजः कुर्यान्नदीं गत्वा समुद्रगाम् ।
चान्द्रायणे ततश्चीर्णे कुर्याद्ब्राह्मणभोजनम् ॥ ७४ ॥
अनडुत्सहितां गां च दद्याद्विप्रेषु दक्षिणाम् ॥

મદિરાપાન કરનારા પુરુષે સમુદ્રની સાથે મળનારી નદીના તીર ઉપર જવું અને ત્યાં ચાંદ્રાયણ વ્રત કરીને બ્રાહ્મણોને જમાડવા, એક ગાય તથા એક બળદનું દાન દેવું તથા બ્રાહ્મણોને દક્ષિણા આપવી. ૭૪

૭૪ આ શ્લોકમાં જે મદ્યપાનનું પ્રાયશ્ચિત્ત લખ્યું છે, તે ફણસ, દ્રાક્ષ, ખજૂર, તાડ, શેરડી, મહુડાં, નાળિયેર વિગેરે ફળોમાંથી બનાવેલા આસવનું પ્રાયશ્ચિત્ત જાણવું. જેમાં જીવની હિંસા થોડી થાય છે અને જે પીધાથી મનુષ્ય બે ભાન થઇ જતો નથી, તેને આસવ જાણવો.

सुरापानं सकृत्कृत्वा अग्निवर्णां सुरां पिबेत् ।
स पातयेतदात्मानमिह लोके परत्र च ॥ ७५ ॥

જેણે એક વાર પણ સુરાનું પાન કર્યું હોય, તેણે સુરાને અગ્નિના જેવી લાલ ચોળ તપાવીને પીવી. સુરાનું પાન કરનારો પુરુષ પોતાના આત્માને આલોકમાંથી અને પરલોકમાંથી એમ ઉભય લોકમાંથી ભ્રષ્ટ કરે છે. ૭૫

૭૫ સુરા બહુ જ તીક્ષ્ણ પ્રકારનો અને બેભાન કરનારો દારુ છે. અને તે જવ, ચોખા વગેરેના લોટમાંથી તે બનાવવામાં આવે છે. મનુએ પણ સુરાપાનનું પ્રાયશ્ચિત્ત પરાશરને મળતું જ કહ્યું છે. વિલાયત વગેરે પરદેશમાં મુસાફરી કરનારાઓને અને ત્યાં અભ્યાસ, વ્યાપાર, આદિકને માટે ઘણાં વર્ષો સૂધી રહેનારા હિંદુઓને સુરાપાનનો પ્રસંગ આવે છે; કેટલાએક સુરાપાન કરતા નથી, પરંતુ તેઓને સુરાપાન કરનારાઓની સાથે વારંવાર ભોજન કરવાનો પ્રસંગ પડે છે, સુરાપાન કરનારાઓવડે રાંધેલું અન્ન ખાવાનો પ્રસંગ આવે છે, સુરાપાન કરનારા જેમાં જમ્યા હોય તેવાં કાચનાં વાસણોમાં ભોજન કરવાનો પ્રસંગ આવે છે, તેઓના રાંધવાના ચુલાઓ ઉપર તેઓનાં જ વાસણોમાં રાંધવાનો પ્રસંગ પણ પડે છે; તેથી તેઓ પણ સુરાપાન કરનારના જેવા જ પાતકી થાય છે, એ વાત ભગવાન્ પરાશરે જ ૭૮ મા શ્લોકમાં કહી છે. પતિતની સાથે કેટલો વખત સૂધી અને કેવી રીતનો સંસર્ગ રાખવાથી પુરુષ પતિત (પાપી) થાય છે, એ વિશે ભગવાન્ મનુ કહે છે કે;—

"संवत्सरेण पतति पतितेन सहाचरन् ।
याजनाध्यापनाद्यौनान्न तु यानासनाशनात् ॥

પતિતની સાથે એક વર્ષ સૂધી એક ગાડીમાં બેશીને જવા આવવાથી, એક આસન ઉપર બેસવાથી તથા એક પંક્તિમાં બેસીને ભોજન કરવાથી પુરુષ પતિત થાય છે. પરંતુ યજ્ઞ હોમ કરાવવાથી, વેદ તથા શાસ્ત્રોનું અધ્યાપન કરાવવાથી, તથા પરસ્પર કન્યા લેવા દેવાથી તો એક વર્ષે નહિ પરંતુ તુરત જ પતિત થાય છે." બીજા સ્મૃતિકારોએ પણ આ પ્રમાણેજ કહ્યું છે. જેઓ ઘણાં વર્ષો સૂધી જાણી જોઇને પતિતોનો સંસર્ગ કરે છે, તેઓને માટે શાસ્ત્રમાં પ્રાયશ્ચિત્ત કહ્યું નથી. પરંતુ અજાણતાં થયેલાં પાપને માટે શાસ્ત્રમાં પ્રાયશ્ચિત્ત કહ્યું છે.

બ્રાહ્મણના સુવર્ણની ચોરીનું પ્રાયશ્ચિત્ત;—

अपहृत्य सुवर्णं तु ब्राह्मणस्य ततः स्वयम् ।
गच्छेन्मुसलमादाय राजानं स वधाय तु ॥ ७६ ॥
हतः शुद्धिमवाप्नोति राज्ञासौ मुक्त एव च ।
कामतस्तु कृतं यत्स्यान्नान्यथा वधमर्हति ॥ ७७ ॥

જેણે બ્રાહ્મણનું સુવર્ણ ચોર્યું હોય, તેણે પંડે હાથમાં મુસલ (સાંબેલું) લઇને પોતાનો વધ કરાવવા માટે રાજાની પાસે જવું અને તેને કહેવું કે; "મેં બ્રાહ્મણનું સુવર્ણ ચોર્યું છે, માટે તમે મને આ મુસલ મારો!" એટલે રાજાએ તેને મુસલ મારવું. તેનાથી પાતકી મરણ પામીને શુદ્ધ થાય છે અને તે કદાચ મરણ પામતો નથી તો પણ રાજા તેને માર્યા પછી છોડી દે છે

અને તે શુદ્ધ થાય છે. જો ઇચ્છાથી જાણી જોઇને બ્રાહ્મણનું સુવર્ણ ચોર્યું હોય તો તે રાજાને હાથે વધયોગ્ય ગણાય છે, પરંતુ અજાણતાં ચોરી કરી હોય તો તે વધને યોગ્ય ગણાતો નથી. ૭૬–૭૭

आसनाच्छयनाद्यानात्संभाषात्सहभोजनात् ।
संक्रामन्तीह पापानि तैलबिन्दुरिवांभसि ॥ ७८ ॥

પાપીઓની સાથે એક આસન ઉપર બેસવાથી, એક શય્યામાં સાથે સુવાથી, એક વાહનમાં સાથે બેસવાથી, તેઓની સાથે ભાષણ કરવાથી તથા તેઓની સાથે ભોજન કરવાથી પાપીઓનાં પાપો પાણીમાં નાખેલું તેલનું ટીપું જેમ પાણીમાં ફેલાઈ જાય છે, તેમ સંસર્ગ કરનારા પુરુષના શરીરમાં ફેલાઈ જાય છે. ૭૮

चान्द्रायणं यावकश्च तुलापुरुष एव च ।
गवां चैवानुगमनं सर्वपापप्रणाशनम् ॥ ७९ ॥

ચાંદ્રાયણ વ્રત, જવની રાબડીનું પાન, તુલાપુરુષ તથા ગાયોની પાછળ જવું; આ સર્વ વ્રત સર્વ પાપનો નાશ કરનારાં છે. ૭૯

૭૯ તુલાપુરુષ એક જાતનું વ્રત–પ્રાયશ્ચિત્ત છે અને તેનો વિધિ શાસ્ત્રમાં આ પ્રમાણે લખ્યો છે;–पिण्याकश्च तथाचामं तक्रं चोदकसक्तवः ।
त्रिरात्रमुपवासश्च तुलापुरुष उच्यते ॥

એક દિવસ ખોળ ખાવો, એક દિવસ ચોખાનું ધોણ પીવું, એક દિવસ છાસ પીવી, એક દિવસ જળ પીવું, એક દિવસ સાથવો ખાવો અને ત્રણ રાત્રિ ઉપવાસ કરવો, આ આઠ દિવસનું વ્રત તુલાપુરુષ કહેવાય છે.

ભગવાન્ યાજ્ઞવલ્કય આ વ્રત પંદર દિવસ સુધી કરવાનુ કહે છે; તેનું વચન આ પ્રમાણે છે;—एषां त्रिरात्रमभ्यासादेकैकस्य यथाक्रमम् ।
तुलापुरुष इत्येव ज्ञेयः पञ्चदशाहिकः ॥

ઉપર કહેલા પાંચ પદાર્થોમાંના એક એક પદાર્થને અનુક્રમે ત્રણ ત્રણ દિવસ સુધી ખાઇને રહેવું, તેનું નામ તુલાપુરુષ કહેવાય છે; અને તે વ્રત પંદર દિવસે પૂર્ણ થાય છે.

एतत्पाराशरं शास्त्रं श्लोकानां शतपञ्चकम् ।
द्विनवत्या समायुक्तं धर्मशास्त्रस्य संग्रहः ॥ ८० ॥

ભગવાન્ પરાશર ઋષિએ પાંચસો અને બાણુ શ્લોકથી આ ધર્મશાસ્ત્ર કહ્યું છે અને તેમાં ધર્મશાસ્ત્રનો સંગ્રહ કરવામાં આવ્યો છે. ૮૦

૮૦ આ શ્લોકમાં આ સંહિતાના ૫૮૨ શ્લોક છે એમ કહ્યું છે, પરંતુ બારેય અધ્યાયના શ્લોકની સંખ્યા ગણતાં ૫૮૧ શ્લોક થાય છે. તેમાં ચાર પાંચ ક્ષેપક શ્લોક ઉમેરતાં પણ આ શ્લોકમાં કહેલી સંખ્યા પૂરી થતી નથી.

यथाध्ययनकर्माणि धर्म्मशास्त्रमिदं तथा ।
अध्येतव्यं प्रयत्नेनं नियतं स्वर्गकाम्यया ॥ ८१ ॥

इति श्रीपाराशरसांहितायां प्रायश्चित्तकाण्डे महापातकप्रायश्चित्तपरिशिष्ट प्रायश्चित्तवर्णनं नाम द्वादशोऽध्यायः समाप्तः ॥

જેમ વેદનો પાઠ કરવાથી સ્વર્ગ મળે છે, તેમ આ ધર્મશાસ્ત્રનો પાઠ કરવાથી પણ સ્વર્ગ મળે છે. માટે સ્વર્ગમાં જવાની ઇચ્છાવાળા પુરુષે આ ધર્મશાસ્ત્રનો અવશ્ય પ્રયત્નથી પાઠ કરવો. ૮૧

૮૧ ધર્મશાસ્ત્રના ગ્રંથોમાં અર્થાનુષ્ઠાનનું મુખ્યપણું હોય છે, માટે તેનો પાઠ કરવાથી કંઈ પણ ફળ નથી. આમ કોઈના મનમાં સંદેહ થાય તે દૂર કરવા માટે આ ધર્મશાસ્ત્રના પાઠનું ફળ આ શ્લોકમાં કહ્યું છે.

ઇતિશ્રી પારાશર ધર્મશાસ્ત્રમાં પરિશિષ્ટ તથા મહાપાતકનાં પ્રાયશ્ચિત્તનું વર્ણન, એ નામનો અધ્યાય ૧૨ મો સમાપ્ત.

॥ पाराशरसंहिता समाप्ता ॥

શુદ્ધિપત્ર.

પૃષ્ઠ.	પંક્તિ.	અશુદ્ધ.	શુદ્ધ.
૧	૧૪	કળિયુગમાં લૌકિક.	કળિયુગમાં મનુષ્યોનું લૌકિક.
૧	૧૭	બીજા.	આ.
૧	૨૨	ઉપલા.	આ.
૫	૨૫	જણાવ્યો.	જણાયો.
૬	૧૭	વ્યાધ.	વ્યાધિ.
૮	૩૦	એમજ બહુવન.	એમ બહુવચન.
૧૪	૨૦	ધર્મશાસ્ત્ર.	આ ધર્મશાસ્ત્ર.
૧૬	૨૨	દેવાકેવો.	દેવો.
૧૮	૨૬	કરવું.	કરવો.
૨૨	૨૬	કરે તો.	કરનારાએ.
૨૪	૩	તેઓને.	તેઓને અધમ દ્વિજ જાણવા.
૪૬	૧૪	સૂતકં.	સૂતકમ્.
૬૧	૧૬	આશૌચ રુપાત.	આશૌચ સંપાત.
૭૭	૧૬	પ્રાયશ્ચિત્તોમાં.	પ્રાયશ્ચિત્તોમાં પક્ષની સંખ્યા પ્રમ
૯૬	૧૬	ધર્મરૂપ કહ્યો નથી.	અધર્મરૂપ કહ્યો નથી.
૯૬	૧૯	પ્રસંગ નહિ આવે.	પ્રસંગ આવે.
૯૭	[illegible]	થઇ શકે.	થઇ શકે નહિ.
૯૮	૧૨	પાલન અર્થમાં.	પાલન કરનારના અર્થમાં.
[illegible]	૩૦	પ્રસૂતા.	અપ્રસૂતા.
[illegible]૫	૩૦	બ્રાહ્મણ.	બ્રાહ્મણો.
૧૧૩	૧૨	ચૌર.	ચૌરી.
૧૧૩	૧૬	પ્રાશન કરવું.	પ્રાશન કરવાથી તે શુદ્ધ થાય છે.
૧૧૫	૨૬	દ્વિજ વરના.	દ્વિજના.
૧૨૨	૯	મુક્ઃ.	મુક્તે.
૧૪૫	૨૬	स्त्रार्णं.	स्नार्णं.
૧૬૮	૧૦	સહાય રક્ષણ.	સદા પોતાની સ્ત્રીનું રક્ષણ.
૧૭૪	૧૯	तान्तु.	तांतु.
૨૭૬	૧૧	अमक्ष.	अमक्ष्य.